નિવેદન

વડોદરાના મ સ વિશ્વવિદ્યાલયની કાર્યવાહક સમાએ (સાન્ડિકેટે) મંજૂર કરેલી યોજના અનુસાર, આ 'પ્રાચીન ગુર્જર ગ્રન્થમાલા' શરૂ થાય છે પ્રાચીન ગુજરાતી સાહિત્યની અપ્રસિદ્ધ કૃતિઓની સમીક્ષિત વાચનાઓનુ પ્રકાશન સામાન્ય રીતે એમા થશે, પરન્તુ આ પહેલા છપાઈ ગયેલી છતા જેના શાસ્ત્રીય સપાદનો ન થયા હોય એવી વિશિષ્ટ રચનાઓની સમીક્ષિત વાચનાઓને તથા પ્રસિદ્ધ કે અપ્રસિદ્ધ રચનાઓમાથી અભ્યાસની દૃષ્ટિએ કરેલા સમુચ્ચયોને પણ એમા સ્થાન રહેશે પ્રત્યેક સંપાદન સાથે પ્રસ્તાવના ઉપરાત તે તે કૃતિમા પ્રયોજાયેલા નોંધપાત્ર શબ્દોનો એક કોશ આપવામા આવશે, જેમા એ શબ્દો ઉપર વ્યુત્પત્તિ તેમ જ અર્થવિકાસની દૃષ્ટિએ સક્ષિપ્ત ટાચણો અપાશે જૂના ગુજરાતી ભાષાસાહિત્યના તુલનાત્મક અધ્યયનમા ઉપયોગી થાય એ પ્રકારના સ્વાધ્યાયગ્રન્થોને પણ પ્રસગોપાત્ત આ ગ્રન્થમાલામા અવકાશ રહેશે

વિક્રમના બારમા શતકમા થયેલા, અપભ્રંશ વ્યાકરણકાર આચાર્ય હેમચન્દ્રના સમયથી માડી ઓગણીસમા શતક સુધી જૂના ગુજરાતી સાહિત્યમા રચાયેલા સંકડો ગ્રંથો હજી અપ્રસિદ્ધ છે એ વિપુલ સાહિત્ય ભંડારમાથી પસદ કરેલી, જુદા જુદા સાહિત્યપ્રકારોની પ્રતિનિધિરૂપ ગદ્યપદ્યાત્મક કૃતિઓનુ પ્રકાશન તે તે કૃતિરૂપે અગત્યનુ હોવા ઉપરાત તે તે સાહિત્યપ્રકારના વિકાસના અધ્યયનમા ઘણુ ઉપયોગી છે

શક સ ૬૯૯ (વિ સ ૮૩૪)મા 'કુવલયમાલા' નામે સુપ્રસિદ્ધ પ્રાકૃત કથા રચનાર દાક્ષિણ્યાક ઉદ્યોતનસૂરિએ ગુર્જરોની ભાષાનો એક નાનો નમૂનો ટાક્યો છે, પણ છેલ્લા લગભગ સાડા આઠસો વર્ષ થયા

प्राचीन गुजराती साहित्य बहोळा प्रमाणमा उपलब्ध छे. काळना प्रवाहमा घणु नाश पाम्यु हशे, परन्तु जे वस्तु छे ते पण विपुल छे. विक्रमना बारमा शतकथी आ तरफ आवता एक पण शताब्दी एवी नथी, जेमा जूना गुजराती साहित्यमा विकसेला विविध साहित्यप्रकारोना प्रतिनिधिरूप नमूना मळता न होय. गुजराती भाषानो शताब्दीवार सिलसिलाबध इतिहास उकेलवा माटे, जगतनी कोई पण भाषाने ईर्ष्या आवे एवी वैविध्यपूर्ण अने सुसंगोपित पुष्कळ साधनसामग्री बहुसंख्य हस्तप्रतोरूपे विद्यमान छे ए एक सद्भाग्य गणवु जोईए. गुजराती भाषा माटे ऐतिहासिक सिद्धान्तानुसार रचायेला बृहद् कोशनी जरूरियात घणा समयथी ऊभेली छे—एवो कोश, जेमा बहोळो शब्दसचय के क्रमिक व्युत्पत्ति आपी होय एटलु ज नहि, पण साहित्यिक प्रमाणो अने अवतरणोने आधारे कालानुक्रमिक अर्थविकास बताव्यो होय. पण एवा कोशना व्यवस्थित कार्यनो आरभ थाय त्यार पहेला केटलाक भूमिकारूप कामो—जूना ग्रन्थोनी शास्त्रीय वाचनाओ अथवा ते ते ग्रन्थना अने विशिष्ट युगोना शब्दकोशनी रचनाना तथा विशिष्ट शब्दो के शब्दसमूहोना कालानुक्रमिक अध्ययनना कामो—थवा जोईए. आ ग्रन्थमालाना प्रकाशनमा आ रीतनु भूमिकारूप अध्ययन रजू करवानो ख्याल पण रहेलो छे. आ ग्रन्थमालामा प्रसिद्ध थती कृतिओ तथा एना शब्दकोशो* ऐतिहासिक गुजराती शब्दकोश माटे सामग्री पूरी

* छेल्ला केटलाक वर्षोमा आ देशमा तेम ज परदेशमा थयेला नव्य भारतीय आर्यभाषाना जूना ग्रन्थोना संपादनोमा संपादित कृतिना प्रत्येक शब्दनी सूचि आपवानी प्रथा घणी वार जोवामा आवे छे. ज्यारे छूटक छूटक रूपे एकाद कृतिनु संपादन थतु होय त्यारे आ प्रकारनी संपूर्ण शब्दसूचिना उपयोगिता खरी. पण एक ग्रन्थमालाना प्रत्येक ग्रन्थ माटे जो एम करवामा आवे तो बीजा ज प्रकाशनथी एमा बिनजरूरी पुनरावृत्तिना दोष अनिवार्य रीते आवे अने संपादकना समयनो अने मुद्रणना नाणानो निरर्थक व्यय थवे. आथी पसद करेला शब्दोनो कोश

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय,
वडोदरा-सचालित
प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमाला

सामान्य सपादक
डॉ भोगीलाल ज साडेसरा
एम ए, पीएच डी
अध्यक्ष, गुजराती विभाग
म स विश्वविद्यालय वडोदरा



ग्रन्थ १

नेमिचन्द्र भडारी-विरचित
षष्टिशतक प्रकरण
त्रण बालावबोध सहित

पाडशे तथा अन्य भगिनीभाषाओना प्राचीनतर युगोना अध्ययनमा पण उपयोगी थशे एवी आशा छे

आम साहित्य तेम ज भाषाना तुलनात्मक अने ऐतिहासिक अभ्यासनो द्विविध उद्देश आ ग्रन्थमालाना प्रकाशनमा छे आ विषयना विद्यार्थीओ अने अभ्यासीओने आ रीते जुदा जुदा दृष्टिकोणथी उपयोगी थाय एवा प्रकाशनो आपवा माटे अमे सतत प्रयत्नशील रहीशु योग्य सूचनो द्वारा तथा प्रकाशनोना विवेचनो द्वारा आ कार्यमा सहकार आपवा तज्ञोने विनती छे

अध्यापकनिवास '
वडोदरा
कार्तिकी पूर्णिमा, स २० ९

भोगीलाल जयचदभाई साडेसरा
सामान्य सपादक

आपवानी पद्धति सामान्य रीते आ सपादनोमा रहेशे आ कृतिओ तेम ज काई एक अपेक्षाए विशिष्ट कृतिना सपादनमां जरूर जणाये सर्व शब्दोनो कोश न आपी शकाय एवु नथी

प्रस्तावना

जूनुं गुजराती गद्य

जूना गुजराती साहित्यमां गद्य लखाणो अणळतां के विरल हता एवो एक सामान्य ख्याल प्रवर्ते छे, पण जूना साहित्यनी शोध थती जाय छे तेम तेम ए ख्याल प्रमाणपुरःसर नथी ए निश्चित थाय छे ठेठ विक्रमना चौदमा शतकथी मांडी जूनी गुजरातीमां (अथवा डॉ टेसीटरीए प्रचलित करेलो शब्द वापरीए तो जूनी पश्चिम राजस्थानीमां)* गद्यसाहित्य मळे छे अने उत्तरोत्तर एनुं वैपुल्य वधतुं जाय छे अर्वाचीन काळमां गद्य साहित्यना घणाखरा प्रकारोनुं वाहन बन्युं छे

---

* आ काळमां सैकामां तथा त्यार पहेलांना समयमां 'जूनी गुजराती' अने 'जूनी पश्चिम राजस्थानी' ए बन्ने शब्दप्रयोगो वडे एक ज वस्तुनो बोध थाय छे समर्थित बोलाभेदोवाळी एक ज सामान्य भाषा गुजरात अने राजस्थानमां—खास करीने पश्चिम राजस्थानमां—बोलाती हती आ भाषाकीय एकताना कारणमां पूर्वकाळनो राजकीय तेम ज सांस्कृतिक इतिहास रहेलो छे जेनी वीगतमां ऊतरवुं अहीं प्रस्तुत नथी पण गुजरातनुं एक वारनुं पाटनगर श्रीमाळ अत्यारे राजस्थानमां गणाय छे अने गुजरातनी अनेक ब्राह्मण वणिक अने कारीगर ज्ञातिओनां नामो सूचित करे छे के एक काळे ए बधा प्रजासमूह अत्यारे जने पश्चिम राजस्थान कहेवामां आवे छे ए प्रदेशमांथी अत्यारना गुजरातमां आवीने वस्यो हतो, एवी केटलीक हकीकत लक्षमां राखवा जेवी छे आ ऐतिहासिक पार्श्वभूमिका जो ख्यालमां न होय तो 'जूनी गुजराती' अने 'जूनी पश्चिम राजस्थानी' जेवा प्रयोगो वास्तविक अर्थबोधमां थोडो संभ्रम ऊभो करे खरा एथी आपणी भाषानी ए प्राचीन भूमिका माटे श्री उमाशंकर जोशीए 'मारु-गुर्जर' एवो शब्द सूचव्यो हतो अने पण राजस्थाननी भाषा एना बंधारणनी दृष्टिए हिन्दी करतां गुजरातीने वधारे मळती छे ए वस्तु आ ऐतिहासिक परिस्थितिना प्रत्यक्ष समर्थनरूप छे आ प्राचीन गुर्जर प्रथमाग मां आपणी भाषाना आ 'मारु-गुर्जर' युगनी पण केटलीक कृतिओ प्रसिद्ध थशे—अने आ प्रथम पुष्प तो ए युगनुं ज छे—ए कारणे आटलुं स्पष्टीकरण के विषयान्तर जरूरी गण्युं छे

नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित

षष्टिशतक प्रकरण

त्रण बालावबोध सहित

प्रस्तावना, परिशिष्टो अने शब्दकोश साथे

संपादक

डॉ भोगीलाल ज सांडेसरा

श्रीमती हंसाबहेन महेता

वाइस चान्सेलर, म स विश्वविद्यालय–वडोदरा

एमना आमुख सहित



एवु जो के ए समयमा नहोतु, गद्यनु प्रयोगक्षेत्र सीमित हतु, तो पण ए सीमित क्षेत्रमा ये थोडाक अलग अलग प्रकारो मळे छे संस्कृत के प्राकृत ग्रन्थोना अनुवाद के टीकारूप बालावबोधो, अक्षरना रुपना मात्राना अने लयना बधनथी मुक्त छतां पद्यमा लेवानी वधी छूट भोगवता प्रासयुक्त गद्य–' बोली 'मां रचायेलां 'पृथ्वीचद्रचरित्र ' (स १४७८) जेवा गद्यकाव्यो के 'समाशृगार' जेवा वर्णकसंग्रहो, अनातक्षर्कृत 'कालकाचार्य कथा ' (स १५५० आसपास)* जेवी, क्वचित् अलकार प्रचुर अने क्वचित् सहेला रसळना गद्यमां रचायेली कथाओ अने 'कादम्बरी कथानक ' (विना १८मा शतकनो पूर्वार्ध)+ जेवा कथासंक्षेपो, दार्शनिक चर्चाओ, वादविवादो अने प्रश्नोत्तरीओ, 'औक्तिक' तरीके ओळखाता, गुजराती द्वारा संस्कृत शीखवा माटेना सव्यावध व्याकरण ग्रथो—जेमा संग्रामसिंहकृत 'बालशिक्षा' (सं १३३६) अने कुलमडनगणिकृत 'मुग्धावबोध औक्तिक' (सं १४५०) जेवां भाषाना इतिहासना सीमाचिह्नोनो समावेश थाय छे—ए जूना गद्य साहित्यना प्राप्त विविध प्रकारो छे अत्यारे उपलब्ध थतु जूनु गद्य पण एटलु विपुल छे के एनु प्रकाशन करवामा आवे तो 'बृहत्काव्य दोहन 'ना सुप्रसिद्ध ग्रथो जेवडा ओछामा ओछा सो ग्रथो तो सहेजे भराय जो के जुदा जुदा प्राचीन ग्रन्थभडारो अने संग्रहोमा जे गद्य साहित्य भाग ओतामां आव्यु छे ए विचारतां मने लागे छे के आ विधानमां सभव अत्युक्तिनो नहि पण अल्पोक्तिनो छे

आ गद्यसाहित्यनो मात्र एक अल्प अश अत्यार सुधीमा बहार आव्यो छे गायकवाड्झ ओरियेन्टल सिरीझमा ए ग्रथमाळाना आद्य संपादक श्री चिमनलाल डाह्याभाई दलाले छपावेल 'प्राचीन गुर्जर

* प्रसिद्ध मारा वड संपादित 'प्रस्थान ' फागण चैत्र, स १९८८
+ प्रसिद्ध, श्री आचार्य जिनविजयजी, पुरातत्त्व,' पुस्तक ३ अंक ४

प्रकाशक
डॉ. भोगीलाल ज. सांडेसरा,
अध्यक्ष गुजराती विभाग
म. स. विश्वविद्यालय
वडोदरा

आवृत्ति पहेली
प्रत ५००

वि. सं. २००९
ई. स. १९५३

मूल्य पांच रूपिया

प्राप्तिस्थान
प्राच्य विद्यामन्दिर,
वडोदरा

मुद्रक
रमणलाल जी. पटेल, व्यवस्थापक
साधना प्रेस, रावपुरा, वडोदरा

काव्यसंग्रह'मा तथा आचार्य जिनविजयजी-संपादित 'प्राचीन गुजराती गद्यसन्दर्भ'मा उपलब्ध प्राचीनतम गद्यसाहित्यनी उत्तम वानगी छे डॉ टी एन दवेए लंडन युनिवर्सिटी समक्ष रजू करेला पोताना बृहन्निबंधमा (A Study of the Gujarati Language in the 16th Century V S) स १५४३मा रचायेला 'उपदेशमाला'ना बालावबोधनु संपादन करेलु छे त्यार पछी बृहन्निबंधरूपे आवा एकबे संपादनो थया छे, पण ते हजी प्रकाशित थया नथी गुजरात तथा राजस्थानमाथी बहार पडता सामयिकोमा केटलीक नानीमोटी प्राचीन गद्यकृतिओ प्रसंगोपात्त प्रसिद्ध थई छे प्राचीन गद्यना प्रेरक बळो अर्वाचीन गद्यना प्रेरक बळोथी विभिन्न छे, अने परिणामे ए बन्ने युगमा विकसेला गद्य-साहित्यप्रकारो पण विभिन्न छे वळी अर्वाचीन युगमा साहित्यनु मुख्य वाहन गद्य बन्यु छे अने ए रीते एनु महत्त्व वध्यु छे पण जूनामा जूनी उपलब्ध गद्यकृतिओथी माडी प्राचीन युगना छेल्ला प्रतिनिधि दयारामकृत 'सतसैया' उपरनी स्वरचित गुजराती टीका तथा स्वामीनारायणना 'वचनामृतो' सुधीनी गद्यरचनाओ उपरथी जूना गुजराती गद्यना बंधारण अने शैलीनो ऐतिहासिक दृष्टिए कालानुक्रमिक अभ्यास थाय त्यारे विचारोनी स्पष्ट अने रुचिर अभिव्यक्ति माटे जूना गद्यनु सातत्य अर्वाचीन गद्यमा केटले अंशे रहेलु छे तथा कई अने केवी नवी लढणो भाषामा विकसी छे ए चोक्कस स्वरूपे समजी शकाय वळी पद्य करता गद्य ए बोलाती भाषानु विशेष निकटवर्ती होय, ए कारणे पण अभ्यास माटे एनु एक खास महत्त्व छे आ दृष्टिए नेमिचन्द्रकृत प्राकृत 'षष्टिशतक प्रकरण' उपरना—अनुक्रमे सोमसुन्दरसूरि, जिनसागरसूरि अने मेरुसुन्दर उपाध्यायकृत—त्रण प्राचीन गुजराती बालावबोधोना संपादननु आ ग्रंथमालाना प्रथम पुष्परूपे थतु प्रकाशन अभ्यासीओने उपयोगी थशे एवी आशा छे

आमुख

प्राच्य विद्यामंदिर तरफथी मुख्यत्वे संस्कृत हस्तलिखित पोथीओ मेळवी एमाथी योग्य पोथीनु प्रकाशन वर्षोथी चाली रह्यु छे 'गायकवाड ओरियेन्टल सिरीझ' मा एना सो उपरात पुस्तको प्रसिद्ध थया छे जूना गुजराती साहित्यनो हस्तलिखित भंडार पण विपुल छे एमाथी योग्य साहित्यनु प्रकाशन पण इच्छवा योग्य छे आ हेतु लक्ष्यमा राखी, वडोदरा विश्वविद्यालयना गुजराती विभाग द्वारा प्राचीन गुर्जर ग्रन्थमालानी योजना तैयार करवामा आवी छे ए योजना अनुसार आ प्रथम पुस्तक बहार पडे छे, अने एवु एक पुस्तक दर वर्षे बहार पाडवानी आशा रखाय छे

आ प्रकारना संशोधननो उपयोग एकदम पहेली नजरे चढे नहि ए स्वाभाविक छे परतु भाषानी दृष्टिए तेम ज सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए आ प्रकारना संशोधनो पुष्कळ प्रकाश पाडे छे अने माटे ज उपयोगी छे आ पुस्तकना निवेदनमा डॉ साडेसरा लखे छे के –
"आ ग्रंथमालामा प्रसिद्ध थती कृतिओ तथा एना शब्दकोशो ऐतिहासिक गुजराती शब्दकोश माटे सामग्री पूरी पाडशे तथा अन्य भगिनीभाषाओना प्राचीनतर युगोना अध्ययनमा पण उपयोगी थशे एवी आशा छे" पुस्तक पाछळ जे शब्दकोश आप्यो छे ते भाषानी दृष्टिए अतिशय उपयोगी थई पडशे एमा तो जरा पण शका नथी आशा छे के आ प्रकाशनने गुजरातना विद्वानो तेम ज अन्य भाषाशास्त्रीओ योग्य सत्कार करशे

ता १४ २ '५३ हंसा महेता

'बालावबोध' एटले शु ?

आ प्रस्तावनाना प्रारभमां कह्यु छे के बालावबोध ए मूळ संस्कृत के प्राकृत ग्रथना अनुवाद के टीकारूप होय छे 'बाल' एटले वयमां नहि, पण समज के ज्ञानमा बाल एना 'अवबोध' माटे थयेली रचनाओ ते 'बालावबोध' गुजरातीनु जूनामा जूनु गद्यसाहित्य जैन शास्त्रग्रथोना बालावबोधरूपे छे बालावबोध आम जो के जैन साहित्यनो शब्द छे, पण एनो अर्थ सहेज विस्तारीने 'भागवत,' 'भगवद्गीता,' 'गीतगोविन्द,' 'चाणक्य नीतिशास्त्र,' 'योगवासिष्ठ,' 'सिंहासनबत्रीसी,' 'पचाख्यान,' 'गणितसार' आदि जे बीजी अनुवादरूप रचनाओ मळे छे ते माटे पण साहित्यना इतिहासमां ए शब्द प्रयोजी शकाय, केम के आ बधा गद्यानुवादोनो उद्देश एक ज छे बालावबोधमा केटलीक वार मूळ ग्रन्थोनु भाषान्तर होय छे, तो केटलीक वार दृष्टान्तकथाओ के अवान्तर चर्चाओ द्वारा मूळनो अनेकगणो विस्तार करेलो होय छे पण 'बालावबोध'नो जे एक उत्तरकालीन प्रकार 'स्तबक' अथवा 'टबा' रूपे ओळखाय छे एमा मात्र शब्दश भाषान्तर ज होय छ एमा 'स्तबक'नी पोथीओनी लेखनपद्धति कारण भूत छे बालावबोधना वाचको करता पण जेमनु शास्त्रज्ञान मर्यादित होय एवा वाचकोने ध्यानमा राखीने 'स्तबक'नी रचना थयेली छे एमां पोथीना प्रत्येक पृष्ठ उपर त्रण के चार पक्ति मोटा अक्षरोमां मूळ शास्त्र ग्रन्थनी लखवामा आवती अने प्रत्येक पक्तिनी नीचे झीणा अक्षरोमा एनो अर्थ लखवामा आवतो, जेथी वाचकने प्रत्येक शब्दनो भाव समजवामा सरळता थाय आ प्रकारनी लेखनपद्धतिने कारणे प्रत्येक पृष्ठ उपर नाना अने मोटा अक्षरोमा लखायेली पक्तिओनां जाणे के 'स्तबक' —झूमखा रचाया होय एम जणातु ए उपरथी आ प्रकारना अनुवादो माटे 'स्तबक' शब्द वपरायो, जेमाथी गुजराती 'टबो' व्युत्पन्न थयो

बालावबोधना कर्ताओ पोताना विषयना जाणकार विद्वानो हता, ए कारणे एमना अनुवादो शिष्ट होय छे अने शब्दोनी पसंदगी मूळने अनुसरती तेम ज समुचित अर्थनी वाहक होय छे एमनो प्रथम उद्देश साहित्यिक आनंद आपवानो नहि, पण वाचकने मूळ वस्तुनु ज्ञान करावावानो छे छता तरुणप्रभसूरिकृत 'षडावश्यक बालावबोध' (सं १४११) जेवी केटलीक रचनाओना कथानकोमा वर्णनशैलीना अलंकार प्रचुर गद्यना आगळनी भूमिकाओ वरताय छे खरी परन्तु मूळ ग्रन्थने सादी भाषामा समजाववानो 'बालावबोध'ना साहित्यप्रकारनो प्रथम उद्देश छे ते तो भाग्ये ज कोई बालावबोधमा असफळ रहेलो जणाशे जूना गुजराती साहित्यमा बालावबोध पाच-पचीस नहि पण कुटीबध छे, अने संस्कृत प्राकृत भाषाओमा संघरायेला शास्त्रज्ञानने लोकभाषाओ द्वारा बहुजनसमाज समक्ष सरळ स्वरूपमा मूकवानी जे प्रवृत्ति मध्यकाळमा समस्त भारतवर्षमा नजरे पडे छे ए ≡ आ बालावबोधोनी वहोळी अनुवादप्रवृत्तिमा पण एक भाळक मळवे छे एम कहेवामा भाग्ये ज अतिशयोक्ति गणाशे

एक ज मूल ग्रन्थना एक करता वधु बालावबोधो जेमा साथोसाथ प्रसिद्ध थता होय एवु, मने स्मरण छे त्या सुधी, आ पहेलु ज प्रकाशन छे एक ज मूल 'षष्टिशतक प्रकरण'नो त्रण जुदा जुदा विद्वानोए करेलो अनुवाद एमा एक साथे जोई शकाशे ए त्रणे विद्वानो लगभग एक ज समयमा थयेला छे, सोमसुन्दरसूरिनो बालावबोध विक्रमना पदरमा शतकना अतमा रचायेल छे, ज्यारे जिनसागरसूरि अने मेरुसुन्दर उपाध्यायना बालावबोधो विक्रमना सोळमा शतकना प्रारभमा रचाया छे रचना उपरथी जणाय छे के त्रणेनो आशय मूळनी अनुवादरूप समजूती आपवानो छे, जो के काई कोई स्थळे त्रणेए थोडोक विस्तार करी दीधो छे मूळ प्राकृत गाथा तथा ते उपरना त्रणे य बालावबोधो एक साथे छापेला

अनुक्रम

मुखपृष्ठ–उपयोगमां लेवायेली हस्तप्रतोमांथी त्रणना फोटा

होवाथी आवां स्थानो अनायासे जोई शकाशे केटलाक विस्तृत बालावबोधोमां आवे छे एवी अवान्तर चर्चाओ के दृष्टान्तो प्रस्तुत अनुवादोमां नथी त्रण समसामयिक विद्वानोए एक ज मूल ग्रन्थना करेला त्रण जुदा जुदा गद्यानुवादो मूलना विविध भाषान्तर उपरांत एक ज भावना वाचक विविध शब्दो तेम ज एक मूल शब्दनी तत्कालीन जुदी जुदी अर्थच्छायाओ तथा एना रूपभेदो—जेमां तत्कालीन बोलीभेदोनुं प्रतिबिंब पण पड्युं होय एवो पूरो संभव छे—जाणवामां उपयोगी थशे

‘षष्टिशतक प्रकरण’ अने तेनो कर्ता

धर्म के तत्त्वज्ञानने लगता कोई एक विषय उपर प्राकृत पद्यमां रचायेली संक्षिप्त कृतिओने जैन साहित्यमां ‘प्रकरण’ कहे छे ‘षष्टिशतक’ आवुं एक प्रकरण छे, अने एमां १६० गाथाओ छे (१६१मी गाथा केवल पुष्पिका रूप छे), ते उपरथी एने ‘षष्टिशतक’ नाम आपवामां आवेलुं छे* एना कर्ता नेमिचन्द्र भंडारी नामे श्रावक गृहस्थ छे आ कृतिनुं चोक्कस रचनावर्ष मळतुं नथी, पण विक्रमना तेरमा शतकमां नेमिचन्द्र विद्यमान हता ए निश्चित छे जैन श्वेताम्बर सम्प्रदायना खरतर गच्छनी विविध पट्टावलीओमां तेम ज मेरुसुन्दर उपाध्यायकृत बालावबोध (पृ २)मां उल्लेख छे ते प्रमाणे, तेओ मारवाडमां मरोट्ट

* मूळ ‘षष्टिशतक’ ते उपरनी तपोरत्न अने गुणरत्ननी टीका (सं १५०१) सहित जैन आत्मविजय ग्रन्थमाळाना छठ्ठा पुष्प तरीके अमदावादथी ई स १९२४मां प्रसिद्ध थयेल छे गुजराती अनुवाद साथे ‘षष्टिशतक’ मूळ सं १९७६मां जामनगरवाळा पं हीरालाल हंसराजे छपावेल छे, वळी मोहनलालजी जैन ग्रन्थमाळाना बीजा पुष्प तरीके ई स १९१७मां बनारसथी एनो मूळ पाठ बहार पडेल छे उपर नोंधेल तपोरत्न अने गुणरत्ननी संस्कृत टीका उपरांत ‘षष्टिशतक’ उपर सहजमंडनकृत व्याख्यान, धर्ममंडनगणिकृत टीका तथा कोई अज्ञात कर्तारचित अवचूरि जाणवामां आवेल छे (जुओ श्री वेलणकरकृत जिनरत्नकोश, पृ ४०४)

शुद्धिपत्रक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३	०	दीधादि नगनी	दीक्षा दिनरानी
८०	१८	नाणनी	जाणनी
८९	१६	जागी गमइ	आगीगमइ
९१	४	आज्ञागहितह०	आज्ञारहितहूइ
१०१	१७	आमीगमई	आगीगमइ
,,	,	ए व	ब व

गामना वतनी हता ए काळे जैन संप्रदायमा चैत्यवासी यतिओनु प्राबल्य हतु अने महावीरे प्रबोधेला आकरा संयममार्गनी अपेक्षाए एमनामां ठीक ठीक शिथिलाचार प्रवर्तेलो हतो आथी 'द्रव्य, क्षेत्र, काल अने भावना मेळवी' सद्गुरुनी शोध करता नेमिचन्द्र पाटणमा आव्या तथा त्या खरतर गच्छना आचार्य जिनपतिसूरि (सं १२१०-१२७७)नी कथा जोईने परम सत्यनी गुरु तरीके एमना आचारोनु अवलोकन करी, एमनो उपदेश सांभळीने व्रतो स्वीकार्यां पछी पोताने वतन पाछा आवीने पोताना पुत्र आम्बडने नेमिचन्द्र जिनपतिसूरि पासे लई गया, अने तेमनी पासे पुत्रने महोत्सवपूर्वक दीक्षा अपावी नेमिचन्द्रना आ पुत्र दीक्षित थया पछी आचार्य जिनेश्वरसूरि (सं १२४५-१३३१) तरीके प्रसिद्ध थया आ जिनेश्वरसूरिनी दीक्षानु वर्णन विक्रमना चौदमा शतकमा थयेला कवि सोममूर्तिकृत 'जिनेश्वरसूरि संयमश्री विवाहवर्णन' ए नामना ३३ कडीना संक्षिप्त काव्यमा छे (प्रसिद्ध श्री जिनविजयजी संपादित 'जैन ऐतिहासिक गुर्जर काव्यसंचय'मा तथा श्री अगरचंद नाहटा संपादित 'ऐतिहासिक जैन काव्यसंग्रह'मा)

'षष्टिशतक'नी गाथाओमा शुद्ध धर्म, मिथ्यात्व, सदाचार, सद्गुरु, कुगुरु आदिनु स्वरूप बताए मुखपाठे करी शकाय एवी गाथाओमा संक्षेपमां समजाव्यु छे निरूपणमा जे अभिनिवेश अने शिथिलाचार सामेनो प्रकोप जणाय छे एनु कारण उपर सूचव्यु छे तेनी ए समयनी धार्मिक-सामाजिक परिस्थितिमा रहेलु छे

वळी आ प्रकरणनी रचनामा नेमिचन्द्रथी थोडा ज समय पूर्वे थई गयेला आचार्य जिनवल्लभसूरि (स्वर्गवास स ११६७)कृत 'पिंड विशुद्धि प्रकरण'नु वाचन पण एक प्रेरक कारण हतु जिनवल्लभसूरि पहेलां कूर्चपुरगच्छीय चैत्यवासी जिनेश्वरसूरिना शिष्य हता पण एक

वार 'दशवैकालिक सूत्र' वाचतां, सावद्य औषध आदि करता पोताना अति प्रमादी गुरुने जोई तेओ उद्वेग पाम्या, अने पछी शुद्ध क्रियानिधि, नवांगी वृत्तिकार–जैन आगमसाहित्यना नव अंगो उपर प्रमाणभूत संस्कृत टीकाओ रचनार–अभयदेवसूरि (विक्रमना बारमा शतकनो पूर्वार्ध) पासे जई शास्त्राध्ययन कर्युं अने एमना शिष्य थया, तथा 'पिंडविशुद्धि प्रकरण', 'सार्ध शतक' आदि संख्याबंध ग्रन्थो रच्या * जिनवल्लभसूरिए जे चैत्यो बंधाव्यां एने 'विधिचैत्य' नाम आपी एमां शास्त्रविरुद्ध कार्य थाय नहि ए प्रकारना श्लोको तेमणे कोतराव्या + नेमिचन्द्रने पोताना अनुभव अने अवलोकनने परिणामे जे कहेवानु हतु एने आ

* खरतर गच्छ पट्टावली संग्रह' (सं जिनविजयजी) पृ १ १४

+ सामाजिक इतिहासनी दृष्टिए रसप्रद एवा एमांना बे श्लोक नीचे प्रमाणे छे–

अत्रोत्सूत्रजनक्रमो न च न च स्नात्र रजन्यां सदा
साधूनां ममताश्रयो न च न च स्त्रीणां प्रवेशो निशि ।
जातिज्ञातिकदाग्रहो न च न च श्राद्धेषु ताम्बूलमि
त्याज्ञाऽत्रेयमनिश्रिते विधिकृते श्रीजैनचैत्यालये ॥

(अर्थात् अनिश्राए विधिपूर्वक थयेला आ जैन चैत्यमां एवी आज्ञा छे के एमां उत्सूत्र जनानो संचार नथी एमां रात्रे स्नात्र-स्नान नथी, साधुओए एमां ममतापूर्वक रहेवानु नथी एमां रात्रे स्त्रीओनो प्रवेश नथी, एमां जाति अने ज्ञातिनो कदाग्रह नथी अने एमां श्रावकोए तांबूल खावानु नथी)

इह न खलु निषेधः कस्यचिद् वन्दनादौ
श्रुतविधिबहुमानी त्वत्र सर्वोऽधिकारी ।
त्रिचतुरजनदृष्ट्या चात्र चैत्यार्थवृद्धि
व्ययविनिमयरक्षाचैत्यकृत्यादि कार्यम् ॥

(अर्थात् अहीं कोइने पण वंदनादिनो निषेध नथी, शास्त्रविधिने मान आपनार सौ कोईनो अहीं अधिकार छे आ चैत्यना धननी वृद्धि व्यय विनिमय रक्षा तथा धार्मिक कार्यो त्रणचार जणनी नजर नीचे करवानां छे)

'षष्टिशतक' नी १६१मी गाथामां विधिमार्गरत भव्य जनो माटे पोते ए

सप्राप्य सिद्धिकारणमादेश मेरुसुन्दरस्तेषाम् ।
कुर्वे बालकबोध विदग्धमुखमडनस्य ॥ ५ ॥

शास्त्रारम्भे शास्त्रकारो विशिष्टेष्टदेवतानमस्कारलक्षण मङ्गलाचरण करोति। इह ■ धर्मदासगणि विशिष्टेष्टदेव शौद्धोदनिं स्तुवन् वक्ति। तस्यायमादिश्लोक ।

सिद्धौषधानि भवदु खमहागदाना
पुण्यात्मना परमकर्णरसायनानि ।
प्रक्षालनैकसलिलानि मनोमलाना
शौद्धोदने प्रवचनानि चिर जयन्ति ॥ १ ॥

शौद्धोदनेर्बौद्धस्य प्रवचनानि चिर चिरकाल यावत् जयति सर्वो त्कर्षेण वर्तते। शौद्धोदनि बौद्धना वचन चिरकाल सीम जयवत वर्त्तइ। किंविशिष्टानि प्रवचनानि। भवदु खमहागदाना सिद्धौषधानि। भव ससार तणा छइ जे दु ख तेह जि भणित रोग तेह टालिवानइ अर्थि सिद्ध औषध छइ। छ। पुन किंलक्षणानि वचनानि। पुण्यात्मना परमकर्णरसायनानि। पुण्यवतना कर्णनइ विषयि रसायन समान छइ। तथा मनोमलाना प्रक्षा लनैकसलिलानि। मनोमल मनना तापक पषालवानइ अर्थि एक सलिल पाणी छइ। उ।

जयन्ति सन्त सुकृतैकभाजन परार्थसम्पादनसद्व्रतस्थिता ।
करस्थनीरोपमविश्वदर्शिनो जयन्ति वैदग्ध्यभुव कवेगिर ॥ २ ॥

सन साधु जयवत वर्त्तइ। किंविशिष्टा सत । सुकृतैकभाजन। सुकृत पुण्यनू एक भाजन पात्र छइ। किंविशिष्टा सन । परार्थसम्पादन- सद्व्रतस्थिता । पर अनेराना अर्थसपादन कार्यकरण तेह जि भणित सद्व्रत तेहनइ विषयि स्थित रह्या छइ। तथा करस्थनीरोपमविश्वदर्शिन । कर हस्तनइ विषयि स्थिर रह्यु छइ जे नीर पाणी तेहनी परिइ अनित्य विश्व देषता छइ। तथा कवेगिर जयति। कवीश्वरनी वाणी जयवत वर्त्तइ। कथभूता गिर । वैदग्ध्यभुव । वैदग्ध्य चतुरमानी भू उत्पत्तिस्थानक छइ। छ।

पूर्वकालीन आचार्योना जीवनकार्य अने ग्रन्थरचनाओमांथी अनुमोदन मळ्युं अने परिणामे तेमणे 'षष्टिशतक'नी गाथा १०७-८मां तथा १२०मां जिनवल्लभसूरिने बहुमानपूर्वक बिरदाव्या छे अने 'प्रभु जिनवल्लभ जेवा तो मात्र जिनवल्लभ छे' (पहु जिणवल्लहसरिसो पुणो वि जिणवल्लहो चेव) एम कहीने एमना प्रत्येनो पोतानो अनन्य भक्तिभाव दर्शाव्यो छे गाथा १२० स्पष्ट रीते पुरवार करे छे के नेमिचन्द्र जिनवल्लभसूरिने प्रत्यक्ष मळ्या नहोता, पण जिनवल्लभना ग्रन्थोए ज नेमिचन्द्रना हृदय उपर ऊंडी असर करी हती* विक्रमना तेरमा शतकनी उत्तरकालीन अपभ्रंशमां नेमिचन्द्रे रचेलुं 'जिनवल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन' नामे ३५ कडीनुं काव्य पण ए ज वस्तु पुरवार करे छे (जुओ परिशिष्ट १) नेमिचन्द्रनी बीजी एक रचना पण उपलब्ध छे, अने ते नव गाथाओनुं प्राकृत 'पार्श्वनाथ स्तोत्र' आ ग्रन्थना परिशिष्ट २ मां ते पहेली ज वार प्रकाशित थाय छे

एक पूर्वकालीन प्रकरणग्रन्थ, धर्मदास गणिकृत प्राकृत 'उपदेशमाला'नो+ मानभेर उल्लेख नेमिचन्द्रे 'षष्टिशतक'नी ९६मी गाथामां

* 'उपमितिभव प्रपंच कथा' (स ९६२)ना कर्ता सिद्धर्षि पोताथी थोडा ज समय पूर्वे थई गयेला हरिभद्रसूरिना ग्रन्थ वांचीने 'धर्मबोधकर गुरु' तरीके थया छे अने तेमणे ललितविस्तरा वृत्ति अनागतनो विचार करीने पोताने माटे ज निर्मी होवानुं बहुमानपूर्वक नोंध्युं छे एक पूर्वकालीन विद्वान पोतानी आध्यात्मिक दृष्टिने बराबर दोरे एवी कृति रची ए माटे सिद्धर्षिना ए प्रशंसाना उद्गारो छे नेमिचन्द्रनो जिनवल्लभसूरि साथेनो आध्यात्मिक संबंध पण कंईक ए प्रकारनो ज गणी शकाय

+ जैन अनुश्रुति प्रमाणे, धर्मदासगणि महावीरना शिष्य हता परन्तु 'उपदेशमाला'नी भाषा तो उत्तरकालनी जैन महाराष्ट्री छे एटले आ अनुश्रुतिने केटला अंशे प्रमाणभूत गणवी ए प्रश्न छे विक्रमना दसमा सैका करतां तो ए प्राचीनतर छे ज कारण के ए समये थयेला सिद्धर्षिए 'उपदेशमाला' उपर टीका रचेली छे

आक्रान्तेव महोपलेन मुनिना शप्तेव दुर्वाससा
सातत्य बत मुद्रितेव जतुना नीतेव मूर्च्छां विषै ।
बद्धेवातनुरज्जुभि परगुणान् वक्तुं न शक्ता सती
जिह्वा लोहशलाकया खलमुखे विद्धेव सलक्ष्यते ॥ ३ ॥

जिह्वा परगुणान् वक्तु अशक्ता सती खलमुखे एवंविधा सलक्ष्यते। जीभ पर अनेराना गुण बोलिवा अशक्त हूती दुर्जननइ मुखि एहवी दीसइ। उत्प्रेक्ष्यते। महोपलेन महादृषदा आक्रान्ता इव। जाणीइ महान मोटइ पाषाणिइ चापी हुइ जिसी। उत्प्रेक्ष्यते। दुर्वाससा मुनिना शप्ता इव। जाणीइ जिरि दुर्वासा ऋषीश्वरिइ शापी हुइ जिसी। बत इति खेदे। सातत्य निरन्तर जतुना मुद्रिता इव। अनइ वली इसिइ ल्यादि। सदाइ लाखइ मुद्री हुइ जिसी। तथा विषै मूर्च्छां नीता इव। विषि हालाहलि मूर्च्छा पमाडी हुइ जिसी। उत्प्रेक्ष्यते। अतनुरज्जुभिर्बद्धा इव। जाणीइ जिरि मोट दोरे बांधी हुइ जिसी। उत्प्रेक्ष्यते। लोहशलाकया विद्धा इव। जाणीइ जिरि लोहनी शिलाकाइ वींधी हुइ जिसी। ३।

आ बे बालावबोधोमां मूलना श्लोको समजावता संस्कृत अने गुजरातीनुं जे मिश्रण करवामां आव्युं छे ते ए समये शिष्योने आ प्रकारना ग्रन्थो भणाववानी पद्धतिमां सामान्य होवुं जोईए. जैन आगम ग्रन्थो उपरनी चूर्णिओना गद्यमां केटलीक वार प्राकृत साथे संस्कृतनो सकर जोवा मळे छे ते आ साथे सरखावी शकाय जो के उपर्युक्त बालावबोधोमां संस्कृत अने गुजराती वाक्यो साथोसाथ आवता होवा छतां परस्परथी तद्दन अलग छे, कोई पण वाक्य एमां मिश्रभाषामय (Macaronic) मळशे ज जोवा मळशे

'षष्टिशतक'ना अन्य बालावबोधो

उपर्युक्त त्रण लेखको-सोमसुन्दरसूरि, जिनसागरसूरि अने मेरुसुन्दर उपाध्याय-कृत बालावबोधो उपरात 'षष्टिशतक'ना बीजा केटलाक बालावबोध जाणवामां आव्या छे सने १९००मां मारा विद्यागुरु पू

कर्यो छे 'षष्टिशतक'नी सामान्य उपदेशात्मक गाथाओ उपर 'उपदेश माला'नी असर छे, अने 'षष्टिशतक'ना बालावबोधकारो पण एमांथी यथोचित अवतरणो टांके छे (पृ १५, २२, ५१, ६१, ७०, ९६, ९७, ११६, १२५, १३०, १४१, १५४, १५५)

'षष्टिशतक'ना बालावबोधकारो–(१) सोमसुन्दरसूरि

सोमसुन्दरसूरि (सं १४३०-१४९९) ए तपागच्छना सुप्रसिद्ध आचार्य छे प्रकांड पंडित होवा साथे तेओ एक शिष्ट ग्रंथकार छे, अने संस्कृत तेम ज गुजरातीमा पद्यात्मक तेम ज गद्यात्मक एमनी सख्याबंध रचनाओ जाणवामा आवेली छे 'भाष्यत्रयचूर्णि,' 'कल्याणक स्तव,' 'रत्नकोश,' 'नवतत्त्वी' आदि एमनी संस्कृत धार्मिक कृतिओ छे गुजराती पद्यमा 'आराधना रास' अने 'नेमिनाथ नवरसफाग' तथा गद्यमा 'उपदेशमाला' (सं १४८५), 'योगशास्त्र,' 'षडावश्यक,' 'आराधना पताका,' 'नवतत्त्व,' 'भक्तामर स्तोत्र' आदि उपर तेमणे बालावबोधो रच्या छे* एमनो 'षष्टिशतक' बालावबोध, एना अतमा उल्लेख छे ते प्रमाणे, सं १४९६मा रचायेलो छे आ प्रतिष्ठित आचार्ये तत्कालीन धार्मिक प्रवृत्तिओमा हमेशा आगेवानी लीधी हती अने पाटण तथा खभातना सुप्रसिद्ध प्राचीन पुस्तकभंडारोनी सुव्यवस्था करी हती अने ताडपत्र उपर लखायेला प्राचीनतर ग्रन्थोनु कागळ उपर सस्करण देवसुन्दरसूरि अने सोमसुन्दरसूरिना मडळे कर्यु हतु सोमसुन्दरसूरिना बहोळा शिष्यमडळनी साहित्यसेवा पण घणेरे दृष्टिए नोंधपात्र छे एमना केटला ये शिष्यो प्रसिद्ध वादीओ, उपदेशको

---

* 'उपदेशमाला' अने 'योगशास्त्र'ना बालावबोधोमाथी कथाओ आचार्य जिनविजयजी-सपादित 'प्राचीन गुजराती गद्यसंदर्भ'मा छपायेली छे

मुनिनी पुण्यविजयजीना सौजन्यथी मने जेसलमेरनी ज्ञानयात्रा करवानो अवसर मळ्यो त्यारे त्याना किल्लाना भंडारमा 'षष्टिशतक'ना एक बालावबोधनी २४ पत्रनी पोथी जोवामां आवी हती एमा कर्तानु नाम नथी, पण आ ग्रन्थमां समावेला उपर्युक्त त्रणे बालावबोधोथी ते भिन्न छे षष्ठीना मारुगुर्जर अनुग 'रहइ' अने 'हूइ'ने स्थाने अहीं मारवाडी प्रत्यय 'रउ' (अर्वाचीन 'रो'), 'री' मळे छे, अने ए उपरथी बालाव बोध कर्तानी आनी रचना केटलाक दसका पछीथी थई होवानो तर्क थाय छे लिपि उपरथी पोथी विक्रमना सत्तरमा सैकामा नकल करायेली जणाय छे आ पुस्तकमा प्रकाशित थयेला बालावबोधो साथे तुलना माटे एनो आदि-अंत अहीं उतारु छु

आदि—

> प्रणम्य मारुदेवाह्न जिन निर्जितमन्मथम् ।
> करोमि षष्टिशतके वार्ता मौल्यावबोधिनीम् ॥
> **अरिह देवो सुगुरु सुद्ध धम्म च पचनवकारो ।**
> **धन्नाण कयत्थाण निरतर वसइ हिययम्मि ॥ १ ॥**

इयै गाथानइ विषइ च्यार बोल सारभूत छइ ते कहीइ । किहा ते च्यार बोल । **अरिह देवो** कहतां अरिहत देव । **सुगुरु** क० तीर्थंकरनी आज्ञाइ करी सहित जे गुरु २ । **सुद्ध धम्म च** क० शुद्ध वीतरागनउ भाष्यउ धर्म३ **पचनवकारो** क० पांच परमेष्टिनमस्कार । ए च्यारइ बोल **धन्नाण** क० ज धन्य भाग्यवन्त **कयत्थाण** क० कीध्या छइ साच्या [illegible] जीए अर्थ एहवा जे जीव तियारइ हीयानइ विषइ **निरतर** क० [illegible] सदा सर्वदा ए च्यारे बाना **वसइ** क० वसइ ।

हित नि गाहाइ आपणा आत्मानइ सीख कहइ छइ ।

अंत—

इणइ प्रकारइ **भडारी नेमिचद** क० नेमिचद [illegible] तणइ पुत्रइ श्रीजिनेश्वरसूरि तणइ पिताइ रद्यार्द [illegible]

अने अथरानी हता एमना एक शिष्य प्रतिष्ठासोमे रचेल संस्कृत 'सामसौभाग्य' महाकाव्यमा एमनु जीवनचरित गूथेलु छे*

(२) जिनसागरसूरि

बीजा बालावबोधकार जिनसागरसूरि खरतर गच्छनी पिप्पलक शाखाना आचार्य छे तेमणे सं १५०१मां 'षष्टिशतक' उपर बालाव बोध रच्यो हतो+ गुजरात अने राजस्थानमां जुदे जुदे स्थळे एमणे करेली मूर्तिओनी प्रतिष्ठाविधिना सख्याबध लेखो सं १४०१थी ॥ १५१० सुधीना जुना जुदा वर्षना मळे छे§ 'षष्टिशतक'ना बालावबोध उपरात तेमणे संस्कृतमा केटलीक ग्रन्थरचना करेली छे पडित उदयशील गणिना आग्रहथी तेमणे 'हैमलघुवृत्ति'ना चार अध्यायनी दीपिका रची हती वळी एमणे 'कर्पूरप्रकरण' उपर अवचूरि रचेली छे, जेनो प्रथमादर्श एमना विद्वान शिष्य तथा राजशेखरकृत 'कर्पूरमजरी' अने सोमप्रभाचार्यकृत 'सिन्दूरप्रकर'ना टीकाकार धर्मचन्द्रे लख्यो हतो‡ जिनसागरसूरिना हस्ते विद्याविस्तारनी केटलीक प्रवृत्ति थयाना उल्लेख पण मळे छे उदाहरण तरीके, एमना उपदेशथी स १५०२मा मेवाडना देवकुलपाटकपुरमा (अर्थात् देलवाडा गाममा) एक उकेशवशीय श्रावके 'आवश्यक बृहद्वृत्ति' लखावी होवानो निर्देश मळे छे वळी एमना

---

* आ प्रभावशाळी आचार्य अने एमना शिष्यमडळनी प्रवृत्तिओ माटे जुओ श्री मोहनलाल द देसाईकृत जैन साहित्यनो सक्षिप्त इतिहास' पृ ४४१-७१

+ एजन पृ ४८६ उपर श्री देसाईए एनु रचनावर्ष सं १४९१ नोंध्यु छे पण में उपयोगमा लीधेली हाथप्रतमां सं १५०१नो स्पष्ट उल्लेख छे

§ 'जैन गुर्जर कविओ' भाग २ पृ ६६४,

‡ 'जैन साहित्यनो सक्षिप्त इतिहास' पृ ४७१ ५१५

एक गाहाउ क० गाथा १६१ प्रमाण। जि के **विहिमग्गरया** क० वीतराग देवनउ भाष्यउ मार्ग तीयइ मार्गिइ चालिवा सावधानइ हुवा भव्वा क० भव्यजीव ते पढतु क० भणतु। जाणतु क० अर्थ जाणउ जिम सम्यक् प्रकारइ भणता थका गुणता थका वली मनमाहि अर्थ भावता थका अहो जाणो तुम्हे लहु सिव शाश्वता अनतो मोक्षरा सुख पामउ ॥ १६१ ॥

इति श्रीनेमिचन्द्रभडारिकविरचितषष्टिशतकप्रकरणस्य बालावबोध समाप्त ॥ शुभ भवतु ॥

आ उपरांत जेसलमेर अने बीकानेरना प्राचीन ग्रन्थभडारोमा 'षष्टिशतक' उपरना केटलाक स्तबक (टबा) पण जोवामा आवे छे क्षमारत्नना शिष्य धर्मदेवे स १५१५मा रचेला बालावबोधनी तथा जयसोमकृत स्तबकनी नोंध मळे छे,* पण ए कृतिओनी हाथप्रतो मारा जोवामा आवी नथी प्राय विक्रमना १९मा शतकमा थयेला मोहनकृत 'षष्टिशतक'नो दूहामय अनुवाद जैन सत्यविजय ग्रन्थमाळाना 'षष्टि शतक'ना सस्करण साथे बहार पडेलो छे

हाथप्रतो अने सपादन

आ ग्रन्थना सपादनमा कुल चार हस्तलिखित प्रतोनो उपयोग करवामा आव्यो छे एमा सोमसुन्दरसूरिना बालावबोधनी प्रतो बे छे, ज्यारे जिनसागरसूरि तथा मेरुसुन्दरना बालावबोधनी एक-एक प्रत छे प्रत्येक प्रतमा बालावबोध उपरात मूळ प्राकृत 'षष्टिशतक'नो पण ते

---

* 'जिनरत्नकोश' पृ ४४ मन्त्रीकर्मचन्द्रवशावलीप्रबन्ध ना कर्ता खरतरगच्छीय जयसोम विक्रमना १७मा शतकमां थइ गया तथा छ कर्मग्रन्थो उपर बालावबोध (स १७१६) रचनार तपागच्छीय जशसोम शिष्य जयसोम १८मा शतकमां थई गया परन्तु ए बेमांथी कया जयसोमे आ स्तबक रच्यो छे ते 'जिनरत्नकोश'मा जे टूंकी नोंध छे ते उपरथी कही शकाय नहि

उपदेशथी स १४९५मां रचायेली 'धर्मोपदेशमाला वृत्ति'नी प्रति लींबडीना ग्रंथभंडारमां सचवायेली छे*

(३) मेरुसुन्दर उपाध्याय

जूना गुजराती साहित्यमां मेरुसुन्दर उपाध्याय बालावबोधकार तरीके सुप्रसिद्ध छे तेओ विक्रमना सोळमा शतकना पूर्वार्धमां थई गया तेओ खरतर गच्छना आचार्य पाचमा जिनचन्द्रसूरि (स १४८७-१५३०)ना शिष्य हता, अने 'षष्टिशतक'नो बालावबोध एमना पोताना ज कथन प्रमाणे (पृ ३), एमणे गुरुनी आज्ञाथी बनारसमा रच्यो हतो मेरुसुन्दरे 'शत्रुंजय स्तवन'नो बालावबोध स १५१८मां तथा तरुणप्रभसूरिकृत 'षडावश्यक बालावबोध'ने अनुसरीने ए ज ग्रन्थ उपरनो नवो बालावबोध स १५२५मा मांडवगढ (मांडु)मां रच्यो हतो वळी 'शीलोपदेशमाला,' 'पुष्पमाला प्रकरण,' 'भक्तामर स्तोत्र,' 'वृत्तरत्नाकर,' 'भावारिवारण,' 'कल्पप्रकरण,' 'कर्पूरप्रकर', 'योगशास्त्र,' 'पचनिर्ग्रन्थी' आदि ग्रन्थो उपरना एमना बालावबोधनी प्रतो आ पहेला जाणवामा आवेली छे+ 'षष्टिशतक'ना बालावबोधमां रचनावर्ष नथी, पण उपरनी वीगतो जोता विक्रमना सोळमा शतकना पूर्वार्धमां एनी रचना थया विषे शका नथी मूळ ग्रन्थना भावने सरल गुजराती गद्यमा, सक्षेपमा रजु करवानी मेरुसुन्दरनी हथोटी प्रशसापात्र छे, अने एमनी 'उपाध्याय' पदवी उपरथी अनुमान थाय छे के तेओ शिष्योने भणाववानु कार्य करता हशे अने ए कार्य करतां करतां शिष्य हितार्थे आटला बधा मूळ ग्रन्थोने गुजरातीमां उतारवानु एमने सूझ्यु हशे

* जैन गुर्जर कविओ भाग २ पृ ६६४

+ ए ज भाग १, पृ ६०१२ भाग ३, पृ १५८२ ८५ "जैन साहित्यनो सक्षिप्त इतिहास," पृ ५२९

ते बालावबोधकारने संमत एवो पाठ आपेलो छे आ चारे हस्तलिखित प्रतो पाटणना प्रसिद्ध श्रीहेमचन्द्राचार्य ज्ञानमन्दिरमां राखवामां आवेल संघना भंडारनी छे चारे ज प्रतो जैन यतिओनी देवनागरी लिपिमां लखायेल छे

(१) सोमसुन्दरसूरिना बालावबोधनी बे प्रतो पैकी पहेली प्रतनो अनुक्रमांक १३४९ छे एनु कद १०॥×४॥ छे अने पत्र २५ छे प्रत्येक पृष्ठ उपर नियमित रीते १५ पंक्तिओ लखायेली छे आ प्रतिनी नकल सं १५२३मां थयेली छे

(२) सोमसुन्दरसूरिना बालावबोधनी बीजी प्रतनो अनुक्रमांक १३५० छे एनु कद १०॥ ×४॥ छे अने पत्र ४२ छे जो के एनु १२मु पत्र मळतु नथी प्रत्येक पृष्ठ उपर ११ पंक्ति लखेली छे आ प्रतिमां नकल कर्यानु वर्ष नथी, पण लिपि उपरथी ते सोळमा सैकानी लागे छे आ प्रत पहेलीनी तुलनाए अशुद्ध छे मूळ प्रतीक वाचीने लखवामां पण लहियानी घणी भूलो थयेली छे जेम के—चतुर्थी अने षष्ठी विभक्तिनो अर्थ व्यक्त करता ' हूइ 'ने स्थाने तेणे सर्वत्र ' हुइ ' लख्यु छे केटलीक वार तो आखी पंक्तिओ लहियाना प्रमादने कारणे पडी गयेली छे, जेनो यथास्थान निर्देश कर्यो छे

(३) जिनसागरसूरिना बालावबोधनी प्रतनो अनुक्रमांक १०१५ छे एनु कद १२ × ४॥ छे अने पत्र १४ छे मात्र पहेला पृष्ठ उपर २० पंक्ति लखेली छे, बाकीना बधा पृष्ठ उपर १९ पंक्तिओ छे ' षष्टिशतक 'नो बालावबोध आ पोथीमां १२मा पत्रना पहेला पृष्ठ उपर पहेली पंक्तिमां पूरो थाय छे, ए पछी पोथीना अंतभाग सुधी ' गौतमपृच्छा 'नो बालावबोध लखायेलो छे, जेमां कर्तानु नाम नथी आ प्रतिमां लिपिनो मरोड घणो सुन्दर छे

उपर गणावेली रचनाओ उपरांत नेमिचन्द्रकृत एवा बे बालावबोधो जाणवामां आव्या छे, जेनी नोंध आ पहेलां कोई विद्वाने करी नथी. एक छे गुजराती आलंकारिक सोमपुत्र वाग्भटकृत 'वाग्भटालंकार' (विक्रमना १२मा शतकनो उत्तरार्ध)नो बालावबोध तथा बीजो बौद्ध विद्वान धर्मदासगणिकृत अलंकारग्रन्थ 'विदग्धमुखमण्डन'नो बालावबोध. आ बन्ने कृतिओ खास नोंधपात्र एटला माटे छे के संस्कृत अलंकार ग्रन्थोना बालावबोधो जवल्ले ज मळे छे. 'वाग्भटालंकार'नो बालावबोध मेरुसुन्दरे सं. १५३५मां रचेलो छे, ए ज वर्षमां लखेली एनी २७ पत्रनी शुद्ध प्रति में लगभग आठ वर्ष पहेलां जोधपुरना महाराजाना पुस्तकालयमां जोई हती अने एमांथी थोडी जरूरी नोंध करी लीधी हती. 'विदग्धमुखमण्डन'ना बालावबोधनी जोधपुरना जैन भंडारनी एक अपूर्ण हस्तलिखित पोथी उपाध्याय विनयसागरजीए उपयोग माटे मोकली हती; ए प्रति लिपि उपरथी सत्तरमा शतकमां लखायेली जणाय छे. आ बन्ने कृतिओ, उपर कह्युं ते प्रकारे, महत्त्वनी होवाथी एमांथी केटलाक नमूनारूप अवतरण अहीं आपुं छुं. पहेलां **वाग्भटालंकार बालावबोधनो** आदि-अन्त जोईए—

आदि—

॥ द० ॥ ॐ नमः श्रीश्रुतदेवतायै ॥

सिद्धं सिद्धिदमीश्वरं भगवता संस्तूयमानं परं
स्फूर्जत्सन्मतिदुस्तराब्धितरणे चञ्चत्तरीसुन्दरम् ।
आनन्दामन्दलक्ष्मीप्रविलसत्प्रत्ययप्रश्रयाधर
वन्दे नाभिनरेन्द्रनन्दनमहं श्रीमद्युगादीश्वरम् ॥ १ ॥
अनेकसाधुसंघाभिः श्रावकश्राविकादिभिः ।
पूरितोऽस्ति धराख्यातो गच्छः खरतराभिधः ॥ २ ॥

लेखनवर्ष नथी, पण लिपि उपरथी प्रति सोळमा शतकमां लखायेली जणाय छे

(४) मेरुसुन्दर उपाध्यायना बालावबोधनी प्रतनो अनुक्रमांक ३८८२ छे एनु कद १०|×४॥" अने पत्र १६ छे प्रत्येक पृष्ठ उपर १५ पंक्तिओ लखेली छे प्रति शुद्ध छे लेखनवर्ष नथी, परन्तु लिपि उपरथी ते पण सोळमा सैकामा लखायेली जणाय छे

उपर सोमसुन्दरसूरिकृत बालावबोधनी ज बे प्रतो होवाथी ए ज बालावबोधना पाठान्तरो नोंधी शकाया छे एमा सं १५१३ वाळी प्रतने मुख्य प्रत तरीके स्वीकारी छे अने बीजी प्रतना पाठभेदो टिप्पणमां राख्या छे पण 'भरीइ भरीइं,' 'अनइ-अनइ,' 'लीणइ-लीणइ,' 'विषइ विषइ,' ए प्रकारना पाठभेदो के जे जूनी गुजरातीमा बहु विपुल छे ते नोंध्या नथी

'षष्टिशतक'नी मूल प्राकृत गाथानी बालावबोधकारोए करेली प्रस्तावना, पछी मूळ गाथा तथा ते पछी अनुक्रमे त्रण बालावबोधो ए प्रमाणेनो क्रम मुद्रणमा राखेलो छे एमां [सो], [जि] अने [मे] ए संक्षेपो वडे अनुक्रमे सोमसुन्दर, जिनसागर अने मेरुसुन्दर ए त्रण बालावबोधकारो समजवाना छे

'षष्टिशतक'नी मूल गाथाओनो पाठ पण सं १५१३ वाळी प्रत प्रमाणे स्वीकारीने बीजी प्रतमा क्वचित् मळता अन्य पाठो नोंध्या छे एमा पण 'एअ-एय,' 'सअल-सयल,' जेवा पाठो जेमां उद्वृत्त स्वरनो लघुप्रयत्न 'य'कार थई जाय छे ए नोंध्या नथी सोमसुन्दरसूरिना बालावबोधनी आ बीजी प्रतनो निर्देश का सो चीगतथी अथवा 'सो ' एम संक्षेपथी टिप्पणमा कर्यो छे मूळ गाथाओना पाठान्तरो जिनसागर सूरि अने मेरुसुन्दरमां क्वचित् मळे छे त्यां एमनो उल्लेख 'जि '

तस्मिन् बभूवुरमी नानालब्धिसमाश्रिता ।
सौभाग्यभाग्यनिलया श्रीजिनभद्रसूरय ॥ ३ ॥

तेषा गुरूणामुदिते सुपट्टे नानागुणालङ्कृतचारुवर्ष्मण ।
प्रसन्नचित्ता जयिनस्तु सति भट्टारका श्रीजिनचन्द्रसूरय ॥ ४ ॥

आसाद्य तत्प्रसाद करोति सरल स्फुटार्थनररचितम् ।
इह मेरुसुन्दरगणिर्वाग्भटबालावबोधन चारु ॥ ५ ॥

इहादौ सकलकल्याणमालालळितवल्लीसन्नजलधरसनिभ निखिलार्थसिद्धिनिबरणधुराधमलगुणचक्रवाम्कालितकलेवर श्रीयुगादीश्वर स्तुवन्नाह ।

श्रिय दिशतु वो देव श्रीनाभेयजिन सदा ।
मोक्षमार्ग सता ब्रूते यदागमपदावली ॥ १ ॥

श्रीनाभेयजिनो देव श्रीआदिनाथ । वो युष्मभ्य सदा श्रिय दिशतु ददातु । श्रीनाभेयजिनदेव श्रीआदिनाथ तम्ह रहइ सदा श्री लक्ष्मी दिउ । यदागमपदावली सता सत्पुरुषाणां मोक्षमार्ग ब्रूते । जेह जिनना आगम सिद्धातना पद वाक्यनी आवली श्रेणि सत्पुरुष रहइं मोक्षमार्ग कहइ । अन्यस्य कस्यचित् पदाना पङ्क्तिर्दृष्टा सती सता सत्पुरुषाणां मार्गं प्रकाशयति । अनेराइ काहि पुरुषना पद चरणनी श्रेणि दीठी हूंती सत्पुरुषनइ मार्ग प्रकासइ । इसिउ उक्तिलेश जाणिवउ ॥ ७ ॥

साधुशब्दार्थसन्दर्भ गुणालङ्कारभूषितम् ।
स्फुटरीतिरसोपेत काव्य कुर्वीत कीर्तये ॥ २ ॥

कवि काव्य कुर्वीत । कवीश्वर काव्य करउ । किमर्थं । कीर्तये । कीर्त्तिनइ अर्थि । किंविशिष्ट काव्यम् । साधुशब्दार्थसन्दर्भम् । साधु दोष रहित शोभन छइ जे शब्द नइ अर्थ तेह तणु सन्दर्भ रचनाविशेष छइ । पुन किंविशिष्ट काव्यम् । गुणालङ्कारभूषितम् । गुण माधुर्यादिक अलङ्कार उपमादिक तेहिं भूषित अलङ्कृत छइ । पुन किंविशिष्ट काव्यम् । स्फुटरीतिरसोपेतम् । स्फुट प्रकट छइ जे रीति पाञ्चाल्यादिक

तथा 'मे' ए प्रमाणेना सक्षेपना निर्देशपूर्वक कर्यो छे बालावबोध कारोए आपेला अवतरणोना मूळ स्थानो ज्या खोळी शकायां छे त्या तेमनो निर्देश कौसमां कर्यो छे

श्रीहेमचन्द्राचार्य ज्ञानमन्दिरनी आ बधी हाथप्रतो उपयोग माटे मेळवी आपवा माटे पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीनो तथा ज्ञानमन्दिरना व्यवस्थापकोनो हु उपकार मानु छु

परिशिष्टो—अगाउ कह्यु छे ते प्रमाणे, नेमिचन्द्र भडारीनी बे कृतिओ आ ग्रन्थना परिशिष्ट तरीके लेवामा आवी छे—एक छे उत्तर कालीन अपभ्रशमा रचायेलु 'जिनवल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन' अने बीजी छे प्राकृत 'पार्श्वनाथ स्तोत्र'

(१) 'जिनवल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन' जेसल्मेरना वडा भडारमाथी बे पानानी प्रतमाथी मळ्यु छे ए बे पत्र उपर पत्राक ८९, ९० लख्या छे, तेथी अनुमान थाय छे के ते कोई सळग मोटी हाथप्रतना भग छे ९० अकवाळा पत्रना बीजा पृष्ठनो अधा करता वधारे भाग कोरो छे, तेथी लागे छे के मूळ सळग पोथीनु आ छेल्लु पत्र हशे लिपि उपरथी प्रति पदरमा सैकामां लखायेली जणाय छे वळी पुष्पिकामा खरतर गच्छना जे आचार्योना नाम आप्या छे एमा छेल्लु नाम सागरचन्द्रसूरिनु छे, तेथी ए आचार्यना जीवनकाळमा एनी नकल थई हशे एवो स्वाभाविक तर्क थाय छे. सागरचन्द्रसूरिनु अवसान सं १४६१मां थयु हतु ('खरतरगच्छ पट्टावलीसंग्रह,' पृ ३१), एटले एनाथी थोडा वर्ष पहेलां प्रति लखाई हशे

श्री अगरचद नाहटासपादित 'ऐतिहासिक जैन काव्यसग्रह' (पृ ३६९-७२)मां आ काव्य छपायु छ जो के एमा उपयोगमा लेवायेली प्रति करता जेसल्मेरवाळी प्रति निश्चयपणे जूनी छे श्री नाहटानी वाचनाना पाठान्तरो टिप्पणमा नोंध्या छे

रस शृंगारादिक नहिं उपज संयुक्त हुइ। तत्र रीतिनामुद्देश कथ्यते।
उक्तं च।

> द्वित्रिपदा पाञ्चाली लाटीया पञ्च सप्त वा यावत्।
> शब्दाः समासवन्तो भवति यथाशक्ति गौडीया॥
> असमस्तपदा वैदर्भी रीतिः। इति रीतिचतुष्कम्॥

द्वित्राणि वा पदानि यस्यां रीतौ सा पाञ्चाली। बि त्रिणि वा पद हुइ जेणइ रीतिइं ते पांचाली रीति जाणिवी। पञ्चभिः सप्तभिः पदैः लाटीया रीतिर्भवति या। पांचि अथवा सात पदि लाटीया रीति जाणिवी। यथाशक्ति समासवन्तः शब्दाः गौडीया रीतिर्भवति। यथाशक्तिइं समास संयुक्त शब्द हुइ ते गौडीया रीति जाणिवी। असमस्तपदा पृथक्पदा वैदर्भी रीतिर्भवति या। समस्त पदि जूइ जूइ पदि वैदर्भी रीति जाणिवी। ईणइ परिइं रीति च्यारि जाणिवी। एहे रीतिसंयुक्त काव्य कीर्तिनइ अर्थि हुइ। एतद्विपरीतं तु काव्यं विपरीतफलमेव स्यादिति तात्पर्यार्थः। एह तु विपरीतकाव्य विपरीतफल हुइ एह तात्पर्यार्थ जाणिवु॥ छ॥

अत—

अथ बीभत्समाह॥

> बीभत्सः स्याज्जुगुप्सातः सोऽहृद्यश्रवणेक्षणात्।
> निष्ठीवनास्यभङ्गादि स्यादत्र महता न च॥ १०॥

जुगुप्सातः बीभत्सरसः स्यात्। जुगुप्सा कुत्सन थकुं बीभत्स रस हुइ। विभावादिकस्योपदिशति। स बीभत्सः अहृद्यश्रवणेक्षणात्। निष्ठीवनास्यभङ्गादि स्यात्। ते बीभत्स रस अहृद्य सुणामणो साभलिवानु अनइ जाइवानु। निष्ठीवन थुकिवू, आस्यभंग मुख मोडवू इत्येवमादिक हुइ। च अन्यत् अत्र महता निष्ठीवनास्यभंगादयः प्रायो न कर्तव्या इति॥ च अनइ महान गुरूआनइ निष्ठीवन आस्यभंगादिक प्राय सहाजिइ न हुइ॥ छ॥

(२) नेमिचंद्र भंडारीकृत 'पार्श्वनाथ स्तोत्र' अहीं प्रथम वार प्रसिद्ध थाय छे. गुजरात विद्यासभा (अमदावाद)ना हस्तलिखित पुस्तकसंग्रहना एक प्राचीन जैन संग्रहपोथीना ३६१ थी ३९४ सुधीनां पत्र छे, जेमां प्रकीर्ण संस्कृत प्राकृत स्तोत्रादि लखेलां छे. एमां पत्र ३७८-७९ उपर आ 'पार्श्वनाथ स्तोत्र' छे.

आ पोथीना पत्र ३९४ उपर 'महावीर स्तुति'नी नकल पूरी थाय छे तेने अंते नीचे प्रमाणे पुष्पिका छे—

श्रीमहावीरस्तुतिः । इतिरियं श्रीदेवसूरिपादानां संवत् १३८७ वर्षे कार्तिक सुदि १० सोमवारे भसापुरे श्रीजिनप्रबोधसूरिशिष्येण आनंद मूर्तिना लिखित ॥

'पार्श्वनाथ स्तोत्र' तो आनी पहेलां, पत्र ३७८-७९ उपर, लखायेलुं छे, एटले एनी नकल पण सं. १३८७ना कारतक सुद १० पहेलां क्यारेक थयेली होवी जोईए.

बन्ने बालावबोधो तथा 'जिनवल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन'मांना नोंध पात्र शब्दोनो कोश पुस्तकने अंते उमेर्यो छे. वडोदरा विश्वविद्यालयना गुजराती विभागना श्री इन्द्रवदन अंबालाल दवे, एम. ए. एमणे शब्दकोश तैयार करवामां केटलीक सहाय करी हती ए वस्तुनी अहीं साभार नोंध लेवामां आवे छे.

अनुलेख

प्रस्तावनाना पृ. २०-२२नां बीबां गोठवाई गया पछी, ऊंझाना महाजनना हस्तलिखित पुस्तकभंडारमांथी, पू. मुनिश्री पुण्यविजयजीना सौजन्यथी 'विदग्धमुखमंडन'ना मेरुसुन्दर उपाध्यायकृत बालावबोधनी सं. १६७२मां नकल थयेली एक संपूर्ण प्रति मळी छे. जोधपुरवाळी

शातरसमाह ॥

सम्यग्ज्ञानसमुत्थान शान्तो निःस्पृहनायक ।
रागद्वेषपरित्यागात् सम्यग्ज्ञानस्य चोद्भव ॥ ३१ ॥

सम्यग्ज्ञानसमुत्थान शान्तो रस स्यात्। सम्यक् ज्ञाननु ऊपनु शांत रस हुइ। कादृश । निःस्पृहनायक । निःस्पृह निराकांक्षी नायक छइ। च अन्यत् रागद्वेषपरित्यागात् सम्यक् ज्ञानस्य उद्भवो भवेत्। राग द्वेषना परित्याग छाडिवातु सम्यक् ज्ञाननु उद्भव उत्पत्ति हुइ ॥ ३ ॥

उपसहरन्नाह ॥

दोषैरुज्झितमाश्रित गुणगणैश्चेतश्चमत्कारिण
नानालङ्कृतिभि परीतमभितो रीत्या स्फुरन्त्या सताम्।
तैस्तैस्तन्मयता गत नवरसैराकल्पकाल कवि
स्रष्टारो रचयन्तु काव्यपुरुष सारस्वतध्यायिन ॥ ३२ ॥

कविस्रष्टार आकल्पकाल कल्पात यावत् काव्यपुरुष रचयन्तु निष्पादयन्तु। कविस्रष्टा आकल्प कल्पान्त लगइ काव्यपुरुष रचउ नीप जावउ। कीदृश। दोषै श्रुतिकट्वादिभि उज्झितम्। दोष श्रुतिकट् वादिके उज्झित त्यक्त छइ। तथा गुणगणै औदार्यादिभि आश्रितम्। तथा गुणना समूहे औदार्यादिक आश्रित छइ। तथा चेत चमत्कारिण। चित्तनइ चमत्कार करतु छइ। नानालङ्कृतिभि परीतम्। नानाविध अलङ्कारे परीत युक्त छइ। तथा सता सत्पुरुषाणा विदुषा वा अभित स्फुरन्त्या रीत्या तैस्तै नवरसै तन्मयता गतम्। तथा सत विद्वासनी सविहु प्रकारि स्फुरती उल्लसती रीतिइ करी तेह तेह नवरसि करी तन्म यतागत प्राप्त छइ। किंलक्षणा कवय। सारस्वतध्यायिन । सारस्वतमत्रनू ध्यान करता छइ।

श्रीमत् खरतरगच्छे श्रीमज्जिनभद्रसूरींद्रा
तत्पट्टे विनयेन जिनचंद्रजिनीश्वरा राज्ये ॥

प्रति अपूर्ण होवाथी एमाथी आ कृतिनो अतभाग मळतो नहोतो, ते जामाथी मळे छे उज्जैनी प्रति अनुसार, आ बालावबोधनो अनभाग नीचे प्रमाणे छे—

सदागतीत्यादि० । अय दीप अस्त पाम्यति । ए दीप अस्त पामि सिइ । कीदृश । सदागतिहतोऽप्यय सदा नित्यमेव गति गमनि करी हत हणिउ उद्यम इइ । तमस वश्यता । तमहूइ वश्यपणु उ नइ । विधुरक० शिवस्थिन । विधुर विह्वल ता कुण शिवस्थिन कल्याणवत ते । अपि तु नही का । द्वि० । अय दीप अस्त पाम्यति । ए दीप अस्त पामिसिइ । कीदृश । सदागतिहतोऽप्यय । सदागति वायुइ हत हणिउ उद्यम इइ । तमसो वश्यता गत । तम अधारइ वश्यता पामिउ छइ । एको विधु शिवस्थिन । एक विधु चद्रमा शिर श्रीमहादेवनइ विषयि स्थित नइ ॥ छ ॥ ६९ ॥

पूर्णचन्द्रेत्यादि । निर्मलाम्बरा कामिना कस्य स्वान मन एकान्त मदनातुर न करोति । अपि तु सर्वस्यापि करोति । निमउ अंबर वस्त्र वली कामिना स्त्रा काहिनू स्वान मन एकान्ति मदनातुर मदनाधिक्य न करइ । अपि तु सविहुनू करइ । कीदृशी । पूर्णचद्रमुखी । पूर्णमाना चद्रमानत मुख नइ । रम्या मनोहरा द्वि० यामिनी रात्रि कस्य स्वात एकान्त मदनातुर न करोति । अपि तु सर्वस्यापि करोति । कीदृशा । पूर्णचन्द्र मुखी । सपूर्णचद्र जि भणित मुख इइ । रम्या रमणीया निर्मलाम्बरा । निर्मल अंबर आकाश छइ ॥ छ ॥ ७० च्युतदत्ताक्षरजानि ॥ छ ॥

इति श्रीधर्मदासगणिविरचितविदग्धमुखमडनकाव्यस्य वृत्तिरियं समाप्ता । ग्रथाग्र १४५४ सवत् १६७० वर्षे ।

---

* उज्जैनी हायप्रतमां मूलना श्लोको आख्या नथी नहि आपता आ प्रमाणे केवळ मुख्य "तीक" यक्यां छ

तेषामतेवासी वाचकवरमेरुसुदर शुचिवाक् ।
चक्रे वाग्भटविहिताऽलकारस्य प्रवरविवृतिम् ॥
बाणाग्निबाणशशिरसम्ये वर्षे विशुद्धतरदिवसे ।
ग्रन्थ समर्थितोऽय नदतु यावज्जगति मेरु ॥

सवत् १९३१ वर्षे श्रीखरतरगच्छे* श्रीमेरुसुदरोपाध्यायै वाग्भटालकार बालावबोध कृतोऽय चिर नदता[तु] ॥ छ ॥ ठ ॥ कल्याणमस्तु ॥ आ० कालाभुन गाव॰सलगित ॥ छ ॥ ॥ छ ॥ श्री ॥ छ ॥ सवत १९३९ वर्षे द्वितीय श्रावणे सुदि पचमी गुरुवासरे दुद्राग्रामे ऊकेशगच्छे श्रीसिद्धाचार्य सताने भ श्रीसिद्धसूरिविजयराज्ये प० जयरत्नानामुपदेशेन लिखापितोऽय वाग्भटालकारबालावबोध ॥ द० ॥ ओसवालज्ञातीय म० तारा भा० रमाई पु० म जगाकेन पु० पहिराजयुतेन भा० रगूश्रेयसे ॥ शुभ भूयात् दायिकवाचकयो ॥ श्रीरस्तु ॥

¹ 'विदग्धमुखमडन'ना बालावबोधनी जे एक मात्र प्रति जाणवामा आवेली छे एमा १५ पत्र मळे छे, पण प्रति अधूरी छे जो के छेवटना मात्र छ श्लोकनो ज बालावबोध एमा न होई प्रतिने असडितरूप गणी शकाय अर्थात् मूळ प्रतिनु छेल्लु एकाद पत्र गुम थयेलु होवु जोईए आथी **विदग्धमुखमडन बालावबोधना** प्रारभमाथी थोडो नमूनो जोईए—

तस्मिन् वरा श्रीजिनभद्रसूरय सिद्धान्तसारानिधिपूर्णचन्द्रा ।
सरोपमन्दर्पविमुक्तलक्षणशाणावलीगर्भितहृद्ग बमवु ॥ ३ ॥
तेषा महान् दद्गुणा गुरूणा विशिष्टपट्टे जयिनस्तु सन्ति ।
सरस्वतीदत्तवरा अनेकशिष्याश्रिता श्रीजिनचन्द्रसूरय ॥ ४ ॥

* मूळ प्रतमा आ अधी पंक्ति उपर कोइए हरताळ फायेली छे

मूर्ख ! अनेरा देवहइ प्रणमतउ हूतउ मुसिउ छइ । सम्यक्त्वरूपिउ धन तेहना हारवतउ ॥ ३ ॥

[मे] रे जीव ! एकलु अ जि जिनमत जिनभाषित धर्म्म आराधता हूता **भव** संसारना दुखनइ फेडइ । अनइ इतर हरिहरा दिकनइ प्रणमता थोडा सुखनइ काजि **मूढ !** मूर्ख ! मुसाणउ छइ । 5 धर्म्म हूतउ चूकउ छइ ॥ ३ ॥

[जि] जिनधर्मनउ प्रभाव कही सम्यक्त्वयतहूइ मोक्षपद प्राप्ति बोल्इ छइ ।

देवेहिं दाणवेहिं य सुओ न मरणाओ रक्खिओ कोइ ।
दढकयजिणसमत्ता बहुअ वि अयरामर पत्ता ॥ ४ ॥ 10

[सो] देवदानवे जाप शेष क्षेत्रपाल आसपाल गोगा विणायग चामुडादिके को मरणनउ राखिउ किहाइ न सांभलिउ । तेहे को मरण तउ न रखाइ[1] । निकाचित कर्म कुणइ टाली न सकीइ[2] । जउ एहे को मरणतउ[3] राखिउ हुइ तउ को[4] किहाइ जीवतउ देखीइ । पुण नथी । घणाइ देवदेवता आराधी जमारउ सघरउ मिथ्यात्वना सइ[5] 15 करीनइ मूआइ जि । आघाइ घणा संसारना जन्ममरण जि उपार्जिया । **दढकय०** दृढ वीतरागनउ सम्यक्त्व पालीनइ **बहु०** घणाइ अनंता[7] जीव अजरामरपणइ पहुता । मोक्ष पाम्या[8] । जन्मजरामरणरहित[9] हूया ॥ ४ ॥

[जि] देवे दानवे पुण कोई शोक मरण हूतउ राखिउ सामलिउ ?20 जपि ▮ कोई न साभलिउ । कोई अमर हूतउ सामलिउ ? दृष्टीकृत

---

१ बीजी प्रतोमां नथी २ रक्खई ३ सकाइ ४ मरतउ ५ कोहि ६ सई ७ अनंता ज ८ पाम्या ९ मरणा



सोमसुन्दरसूरिकृत बालावबोधनी सं. १४९६मां लखायेली हस्तप्रतनुं अंतिम पत्र

जिनसम्यक्त्व हुइ ते घणाई अजरामरपद पाम्या । एतलइ सम्यक्त्व धारक नयलाइ अमर हुइ ॥ ४ ॥

[मे] देव दानव गोत्रज क्षेत्रपालप्रमुखे निहाई सांभलिउ ज मरणतउ कोइ राखिउ ? अपि तु को राखिउ नहीं । पणि दृढ कीधउ 5 जिन ऊपरि सूधउ मन, सम्यक्त्व रतउ जे जीवे पालिउ ते जीव घणा अजरामरपदि मोक्षपदि पहुता ॥ ८ ॥

[जि] हिव सम्यक्त्वनउ प्रमाण कही मिथ्यात्वनउ प्रमाण कहइ छइ ।

जह कुवि वेसारत्तो मुसिज्जमाणो वि मन्नए हरिसं ।
10तह मिच्छवेसमुसिया गय पि न मुणंति धम्मनिहिं ॥९॥

[सो] जिम कोएक मूर्ख वेश्या अधम निलेह स्त्री तेहनइ व्यसनि वाहिउ तेटहूइ आपणी लक्ष्मी पूरतउ पोतउ हारतउइ मुसितउइ तुच्छ सुखनउ लोभिइ हर्ष मानइ तिम ए अनाणी जीव वूडउ धम मिथ्यात्व तेह[1] वेश्या तुच्छ मोहनइ कीधइ इहलोकना 15चमत्कारमात्रना वाहिया हुता धर्मरूपिउ निधान गिउइ जाणइ नहीं । मूर्ख इसिउ न जाणइ ईणइ मिथ्यात्वे[2] करी अम्हारउ सघलउ धर्म जाइ छइ । परलोकि अम्हे दुखिया थामिउ[3] ॥ ९ ॥

[जि] जिम कोइ वेश्यासक्त पुरुष वेश्याइ मुसीतइ हूतउ हर्ष मानइ तिम मिथ्यात्वरूप वेश्याइ मुस्या हता धर्मरूपिउ निधान 20गमिउई न जाणइ ॥ ९ ॥

[मे] जिम कोई वेश्यानइ विषइ अनुरक्त रातउ थोडास्या

१ पोतउई २ अजाण ३ देहरूपिणी ४ मिथ्यात्वि ५ थासिअ

जिनसागरसूरिकृत बालावबोधनी हस्तप्रतनुं अंतिम पत्र [त्रीजी पंक्तिमां पुष्पिका समाप्त थाय छे]

विषयनइ काजि धनादिक मुसीनउ हर्ष मानइ तिम मिथ्यात्वरूपिणी वेश्याइ मुसीनउ जीव धर्मरूपीउ निधान गयउ न जाणइ ॥ ५ ॥

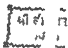
[सो] को इसिउ कहिसइ[1]। आपणइ वडानइ कुलाचारि चालीइ। एतलउ[2] धर्म। बीजउ विचार काई न कीजइ। तेह[3] आश्री कहइ छइ। 5

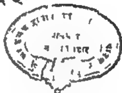
[जि] कुलक्रमागत मात्रइ तिमु धम न करिवउ। ए वात प्रकासइ छइ।

लोअपवाहे सकुलक्कमम्मि जइ होइ मूढ धम्मु त्ति[4]।
ता मिच्छाण वि धम्मो थक्का य अहम्मपरिवाडी ॥ ६ ॥

[सो] रे मूढ ! जउ लोकनइ प्रवाहि आपणइ २ कुलाचारि10 चाल्ना धर्म हुइ तउ कुणएक धर्मवंत नहीं ? सघलाइ खाटकी, माछी, वेश्या, घांची, मोची, ठठार प्रमुख सहू आपणइ २ कुलाचारि चालइ छइ। आगिला वडा पूर्वज जे काम करता ते पाछिला[5] करइ छइ। **ता मिच्छाण वि धम्मो०** तउ जे पापी हिंसाना करणहार कुमार्गना चालणहार म्लेच्छ तेहहूइ धर्म हूउ। तेहइ धर्मवंत हूआ। थक्का०15 अधम पापनी परिपाटी परंपरानी वातइ नाठी। अधर्म किहांइ छइ नही। सहू धमवनइ जि हूउ। एतलइ इसिउ भाव। कुलाचार जूउ। धर्मनउ मार्ग जूउ। कुलाचार किहनउ केहनउ पुण्यमय हुइ। किहनउ पापमय हुइ। पुण्य धर्मनउ आचार जिहां जीवदया सत्यवचन ब्रह्मचर्यादिक गुण तिहां जि छइ। अनेथि नथी। केती वारइ पूर्वज दारिद्री20 हुसिइ[6] तउ सतानीइ किसिउ लक्ष्मी आवती न लेवी ? अथवा को पूर्वज कूअइ पडी मूउ हुसइ तउ सतानीअइ किसिउ कूअइ पडी

[1] कहिसिइ [2] एतलइं [3] ते [4] [illegible] धम्म त्ति [5] पाछिलाइं [6] हुइ





मेरुसुन्दरकृत बालावबोधनी हस्तप्रतनु अंतिम पत्र

सरिवउ[1] एह सणी कुलाचारनउ कांइ नहीं। सूधउ धर्म जि जाण हूतइ लेवउ ॥ ६॥

[जि] लोकनइ प्रवाहि करी आपणइ कुलक्रमि हे मूढ! धर्म इसिउ जइ हुइ तउ पछइ **मिच्छाण** वि म्लेच्छनउ धर्म। **अहम्म-**
५ **परिवाडी** अधर्मनी परिपाटी श्रेणि थाती रही ॥ ६॥

[मे] रे मूर्ख! लोकप्रवाहि आपणा २ कुलनइ आचारि चालता जउ धर्म्मु हुइ तउ म्लेच्छ साग्की वेश्या ते सहू आपणइ २ कुलाचारि चालइ छइ। तउ तेहनइ धर्म्म होसिइ। एतइ अधर्म्मनी परंपरा नाठी। अधर्म्म निहाइ नथी। सहू धम्मनतइ जि हूउ ॥ ६॥

---

१० [जि] दृष्टांतनइ बलि करी धर्म्महूइ मोटाई देखाडइ।

लोयम्मि रायनीईनाय न कुलक्कमम्मि कइया वि।
किं पुण तिलोअपहुणो जिणद[2]धम्माहिगारम्मि[3] ॥७॥

[सो] लोकइ माहि राजनीतिनउ न्याय कुलक्रम माहि नावइ। राजनीतिनउ माग जूउ। कुलाचार जूउ। तउ पाधरी राजनीति माहि
१५कुलाचार न जोइइ। तिहा राजाज्ञाइ जि जोवी। **किं पुण०** त्रैलोक्य[3] त्रिभुवनना प्रभु ठाकुर[4] श्रीजिनेन्द्र वीतरागना धर्मनइ अधिकारि कुलाचार न[5] जोइइ। तिहा सर्वथा जोवा न आवइ। तिहा खरी वीतरागनी आज्ञाइ जि लेईनइ धर्म करिवउ। इसिउ भाव ॥ ७॥

[जि] लोकइ माहि राजनीति मोटी। **नाय** ज्ञात दृष्टान्त।
२०कुलक्रमि **कइया वि** विचारइ नीति न्यायमार्गि प्रमाण नहीं। एतलइ राजनीति जिम प्रमाण तिम जिनधर्म जि प्रमाण। जइ लोकइ माहे इसु छइ तउ त्रैलोक्यनउ स्वामी श्रीजिनेन्द्र तेहनउ धर्मनइ अधिकारि

1 जिणिंद २ मे °धम्माहियारम्मि ३ तउ त्रैलोक्य ४ ठाकुर ५ किम

नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित

षष्टिशतक प्रकरण

त्रण बालावबोध सहित

[मो] गिरिवद्धमाणजिणवरपाए निअगुरुपए य नमिऊण ।
सट्ठिसयपम्म य ण्य यक्ष्माण किंपि जपमि ॥ १ ॥
नाथोऽस्मिन्नेनो न निमित्तिस्तुति क्रियादियोगोऽपि च नो निगोऽस्य ।
मानाथर्मार्गरिधीयनेषा वृत्तिनया मुग्धनिबोधनायम् ॥ २ ॥

नेमिचन्द्र भंडारी पहिलउ तिम्पउ[1] धर्म न जाणतउ । ५
पछइ श्रीजिनवल्लभसूरिना गुण सांभली[2] अनइ तेहना कीधा
पिंडविशुद्धिप्रमुख ग्रंथनइ परिचइ साचउ धर्म जाणिउ । तउ
तीणे[3] श्रीधर्म सघनादना मूल मर्गा श्रीसम्यक्त्वनी शुद्धि अनइ तेहनी
दृढतानइ काजि १६० गाथा कीधी । सारभूत तिहां पहिलउ सर्व धम्म
माहि सारतत्त्वभूत च्यारि बोल पहिली गाहइ[4] कहि[5] छइ ॥ १०

[जि] श्रीगुणविन फलिन सुरद्रुमहद्योऽस्मिनो महामान ।
विजया सूर्यप्रभाया अपि ददता मगल नित्यम् ॥ १ ॥*
श्रीनेमिचन्द्रविरचितवर्चद्वैराग्यरङ्गरम्येषा ।
श्रीजिनसागरप्रमुणा बालावबोधाख्या ॥ २ ॥
षष्टिशताख्यप्रकरणव्याख्या प्रस्तूयतेऽत्र भव्येभ्य । १५
भव्यजनबोधहेतोर्बालारूपा विशुद्धा च ॥ ३ ॥

---

१ तिम्पउ २ सांभळी ३ तीणइ ४ गाहइ ५ कइ

* आ तथा आ पछीनो श्लोक मूळ प्रतमां आम अशुद्ध अने त्रुटक छे.

किसु कहिवउ ? जिम राजा ति आगलि सामान्य लोकनउ [illegible]
प्रमाण नहीं तिम जिनधर्म आगलि कुलक्रमागत [illegible]
नहीं ॥७॥

[मे] लोकमाहि राजनीतिनउ न्याय कुलक्रम [illegible]
काइ बेवइ मार्ग जूआ। तउ पछइ त्रैलोक्यनउ प्रभु [illegible]
तेहना धर्मनइ अधिकारि कहिवउ किसउ ? ॥७॥

[सो] जीवहूइ संसार ऊपरि वैराग्य आवइ [illegible]
ए वात कहइ छइ।

[जि] वली जिनधर्मनी मोटाई प्रकासइ।

जिणवयणवियन्नूण वि जीवाण जं न होइ [illegible]।
ता कह अवियन्नूण मिच्छत्तहयाण पासम्मि ॥८॥

[सो] जे श्रीजिनवचन सिद्धान्त तेहना [illegible]
तेहइ[1] जीवहूइ जउ संसारनी विरति वैराग्य नावइ। [illegible]
अविज्ञ अजाण जे मिथ्यात्विइ[2] करी हणिया [illegible]
क हलि संसारनी विरति निवृत्ति किम आवइ ? [illegible]
पापनी निवृत्ति नथी आवती तउ अजाण [illegible]
विरतिनउ आविवउ गाढउ दुहिलउ छइ। [illegible]

[जि.] जिनवचन तणा जाणहार [illegible]
संसार हतउ विरमण न हुइ। अवियन्नूण [illegible]
अनइ [मिथ्या]त्वहत मिथ्यात्वव्याप्या जीव [illegible]
संसारनउ मेल्हिवउ हुइ ? अपि तु न हुइ। [illegible]

१ तेइ २ मिथ्यात्वि ३ 'काढिया' नहीं

तथा हि। श्रीखरतरगच्छि श्रीजिनेश्वरसूरिराइ पिताइ श्रीनेमिचन्द्र **भंडारी** श्रावकि विधिपक्षस्थापक ए षाठिसउ ग्रंथ कीधउ। तिहां धुरि सर्व विघ्नोपशान्त्यर्थं इष्टदेवतानमस्काररूप नाम महापुरुष सम्यक्त्वस्थापक ग्रंथनउ प्रथम गाथा कहइ छइ॥

5 [**मे**] सयलसुरासुरनमियं पासजिणं पणमिऊण भावेण।
वागाण बोहणत्थ पयडं विरएमि **सट्ठिसयं**॥ १॥

इहा श्रीखरतरगच्छि निरुपमगुणनिधान श्रीजिनवल्लभसूरि-नइ पाटि श्रीजिनदत्तसूरि। तेहनइ पाटि श्रीजिनचन्द्रसूरि। तत्पट्टालंकार श्रीजिनपत्तिसूरि श्रीपत्तननगरमाहि विनयवंत वर्त्तइ।
10 इसइ प्रस्तावि **मरुदेशमंडन मरोटि** नगरि श्रीनेमिचन्द्र **भंडारी** भाया **लषमिणि** पुत्र **आनंद** सहित सुखिइं वसइ। अन्यदा प्रस्तावि गाथा १ **नेमिचन्द्र भंडारीइं** व्याख्यान माहि सांभलि। ति किसी।

अक्खंडियचारित्तो वयगहणाउ जो भवे निच्चं।
तस्स सगासे दंसण वयगहणं सोहिगहणं च॥ १॥

15 ए गाथा सांभलीनइ आलोअणनी इच्छाइ च्यार वरस सा[त] सुगुरुनी परीक्षा जोअतउ २ **पत्तन** नगरि आव्यउ। सगली पोसालइं द्रव्य क्षेत्र काल भावनइ मेलि सुगुरु जाणवहतउ मनमाहि चिन्ता धरतउ हाट एकनइ थडइ बइठउ छइ। इसइ प्रस्तावि श्रावक पांच-सात श्रीजिन-**पत्तिसूरि**ना गुण वर्णवता सांभली पूछ्या। तुम्हे केहना गुण कहउ
20 छउ? तेहे श्रीजिनपत्तिसूरिना गुण कह्या। पछइ तीहि श्रावका सघाति पोसालइ आवी गुरुनी देसना सांभली। गुरुना लक्षण ईर्यासमिति प्रमुख जोअतउ रात्रिइ पोसालइ पूणइ सूतउ २ चींतवइ। एता दिवसमाहि प्रमादनउ कारणु न दीठउ। रात्रिं तउ पउजणा जइणाइ हींडइ छइ। सिध्याइ ध्यान करइ छइ। पणि च्यार २ महात्मा छूटीमाहि

जीवनइ वैराग्य उपजइ। मिथ्यात्व रगी सामुहउ जीव ससार वधारइ ॥ ८॥

[मे] जे जिनवचनउ जाण मनुष्य तेहनइ नि भव ससार तेहनी विरति नथी आवती तउ कहउ न, अजाणनइ किम विरति ५ आवइ ? जे मिथ्यात्वि करी हत हण्या जे जीव छइ तेहनइ पासइ रहइ तेहनइ विरति आवता गाढी दोहिली छइ। इमउ भाव ॥ ८॥

[जि] जिनधम साचउ इसु जाणी सम्यग्दृष्टिहूइ मिथ्यात्वी देखी जकाई मनमाहि उपजइ तकाई कहइ छइ।

विरयाण अविरएण जीवे दट्ठूण होइ मणतावो।
१० हा हा कह भवकूवे वुड्डता पिच्छ नचति ॥९॥

[सो] जे विरत पापनउ निवर्त्या[1] जीव छइ तेहहूइ अविरत[2] पाप करता देखी मनमाहि[3] संताप थाइ। हा हा० अहो ! ए अविरत जीव ससाररूपिआ कूआ माहि बूडता देखि किम नाचइ ? ए नापडा पाप करी नवनवी गतिइ नवनवे प्रकारि रलिस्यइ, किम १५थासिइ इम खेद पामइ ॥ ९ ॥

[जि] विरत सम्यग्दृष्टि जीवहइ अविरत मिथ्यात्वी जीव दट्ठूण देखी करी मणतावो मनि सताप हुइ। किसु संताप ए। हा हा खेदे। रे जीव! पिच्छ। जोइ संसाररूपीउ कूउ तेह माहे बूडता बापडा किसु नाचइ छइ ? एतलइ सम्यक्त्वी इसु जाणइ। जउ २०ससारमाहे कोई जीव बूडइ नहीं तउ भलउ। तिणि कारणि ससारमाहे बूडता जीव देखी मनि संताप करइ। इसु भाव ॥ ९॥

---

१ जि मनरूपे २ निवृत्त्या ३ अविरत जीव ४ मनमाहि चित्तमाहि

जाइ। तिहां काइ कारण समावीइ। पछइ पाछिली रात्रिनी पोरसिइ तेहमाहि पइसी राप वेळ तेल देषी। थोडी थोडी वस्तु गाठि बाधी सूतउ। प्रभाति पोसाल बाहिरि जई जउ जोअइ तउ वेळ राप तेल दीठा। विस्मय उपनइ मोलउ चेल्ड पूछिउ। ए सिइ कानि आनइ [1] चेल्इ सर्व वात कही। वेळ वर्तिवानइ काजि। रक्षा जीवनइणादि काजि। ५ तेल लेपनइ कानि। इम सदेह भागउ। पच्छइ प्रगट हुइ सिद्धान्ततत्त्व सांभली श्रीसम्यक्त्वमूल बार व्रत पडिवजी मरोठि पाछउ आवी जान करी आवइ पुत्रनइ साथि लेई गुरु समीपि आवी महामहोत्सवपूर्वक पुत्रनइ दीक्षादि करावी। ते क्रमिइ २ भणता गुणता चारित्र पालता श्रीजिनेश्वरसूरि हया। पछइ नेमिचन्द्र भट्टारीइ श्रीजिन १० पत्तिसूरिनी रीति देषी। श्रीजिनवल्लभसूरिना कीधा पिंड-विशुद्धिप्रमुख ग्रंथ सांभली ते गुरुना वचन सर्व सिद्धान्तनइ मिलता जाणी आस्था ऊपनी। सम्यक्त्वनी दृढतानइ कानि परोपकार भणी साठिसउ गाथारूप ग्रंथु कीधउ। हिव ते गाथा लोकनइ समझाविवा भणी श्रीजिनचन्द्रसूरिनइ आदेसि वणारीसि मेरुसुन्दरि१५ गणिइ वाचा बालावबोध सक्षेपि कीजइ। तिहां धुरि च्यारि बोल सारभूत कहीइ ॥

अरिहं देवो सुगुरु सुद्धं धम्मं च पचनवकारो।
धन्नाण कयत्थाण निरंतर वसइ हिययम्मि ॥ १ ॥

[सो] एक श्रीअरिहंत वीतरागदेव[2] बीजा सुगुरु सुद्ध२० चारित्रिया, शुद्धमार्गप्ररूपक गुरु[3] त्रीजउ शुद्ध धर्म जीवदयामूल कर्म क्षयहेतु धर्म चउथउ पचपरमेष्ठिनमस्कार सर्व सिद्धांतमाहि सार सर्व पापक्षयकर महामंत्र नउकार। ए च्यारि बोल सर्व जगत् अनइ सर्व धर्ममाहि सार गुणइ एक धन्य उत्तम भव्य अनइ कृतार्थ भाग्यवंत

१ °देवा २ गुरु ३ नग

[मे] जे विरत पाप हूता निवर्त्या छ्य जीव तेही अविरतनउ स्वरूप देषी मनमाहि किम परिताप नाणइ ? काइ होइस्यइ ? सोदि। अविरत जीव संसाररूपीआ कूआमाहि बूडता, देखउ, किम मानइ छइ ॥ ९ ॥

[सो] केती वारइ वीचा आरंभ न मूकइ तउ मिथ्यात्व काई छाडअ नहीं ? जेह भणी मिथ्यात्वनउ मोटउ अवगुण छइ ते कहइ छइ।

[जि] आरंभ लगी जीव दुःखा हुइ सुं जाणइ छइ।

[मे] किवारइ थीया आरंभ न मूकइ तउ मिथ्यात्व हो न छाडइ ?

आरंभजम्मि पावे जीवा पावंति तिक्खदुक्खाइं।
जं पुण मिच्छत्तलवं तेणं न लहंति जिणबोहिं ॥ १० ॥

[सो] वाहण प्रवहण क्षेत्रकरसणादिक आरम्भ न पाप छइ तेइ लगइ जीव आवते भवांतरि तीक्ष्ण घणा दुःख पामइ। पुण धर्मनउ अणलहिवउ न हुइ। जं पुण० पुण ज किंचित् अरि इणइ परतउ मिथ्यात्वनउ लवलेश दइ करइ तीणइ अवगुण करि जिन बोध नि न लहइ। बोधिबीजइ जि दुःप्राप थाइ। तीणइ थइ कुण समारि रुलइ ॥ १० ॥

[जि] **आरम्भ** पट्विधजीवनिकायविराधना करी पापे करी नतउ हतउ जीव अज्ञानी **तिक्खदुक्खाइं** तीव्र तीक्ष्णदुःख दुःख २० पामइ। जे वली जीवहूइ मिथ्यात्वनउ लवलेश हुइ तिणि मिथ्यात्वनउ लेशि करी जीव जिनबोधि वीतरागनउ धर्म न लहइ। एतलइ

१ मूकइ २ छाडउ ३ मे मिथ्यात्व

आसन्नसिद्धि तेहनिनइ हियइ निरंतर सदैव वसइ। अभागीआ अभव्य दूरभव्य जीव ए एकइ बोल न प्रामइ ॥ १ ॥

[जि] सम्यक्त्व धर्ममाहे मूलिगउ सम्यक्त्व धर्म तिणि कारणि सम्यक्त्व जाणावइ। अरिहंत देव ते किसु। राग द्वेष मोह मद मत्सर ५ अहंकार प्रमुख दोष जेह माहे न हुइ। अनरगा वइरी जिणि जीता हण्या ते अरहंत कहीइ। अनइ सुगुरु सुसाधु गुरु जे नीराग निस्पृह क्षमावंत शान्त दान्त जितेन्द्रिय निःकाम तपि करी दुर्बल। सम तृण मणि लोष्टु कांचन। सम शत्रु मित्र। साचउ धर्मोपदेश कहणहार। चातुर्गतिक संसार हूंतउ अहर्निश सत्तम चारित्र अभिग्रह पालइ। ते १०सुगुरु कहीइ। तथा चोक्तं।

अन्नपए अन्नाइ कपि न ईहइ। चउगइ भवसंसारह बीहइ।
सज्म नियमहं खणि नवि चूकइ। ए साधम्मिय सुहगुरु बुचइ ॥ १ ॥

सुद्ध धम्म। जीवदयामूल धर्म। तथा चोक्तं।

दुःखं पापात् सुखं धर्मात् सर्वदर्शनसम्मतम्।
१५ न कर्तव्यमतः पापं कर्तव्यो धर्मसङ्ग्रहः ॥ २ ॥

ए त्रिहु मिली सम्यक्त्व कहीइ। अनइ वली नउकारहइ मोटाइ देखालिवा भणी पंच नवकारो पचपरमेष्ठिनमस्कार चउद पूर्वनउ सार कहीइ। ए च्यारइ अरहंत सुसाधु गुरु जिनप्रणीत धर्मरूप सम्यक्त्व अनइ नउकार। कयत्थाण कृतार्थ कृतकृत्य धन्नाण २०धन्य भाग्यवंत पुरुषने हियइ वसइ। निरन्तर सदैव ॥ १ ॥

[मे] अरिहंत देव सुसाधु गुरु अनइ सूधउ वीतरागनउ भाषिउ धर्म पंचपरमेष्टि नवकार ए च्यारि बोल धन्य भाग्यवंत कृतार्थ कीधा अर्थ संसार सफलीया जेहे तीहनइ हीइ सदाइ वसइ। पणि बहुल संसारी जीवाहं हीइ काई वसइ नहीं ॥ १ ॥

निनधर्म गाढउ करी आरम वर्जिउ छइ । जइ ते आरम करइ तउ दुःख लहइ । जिणि कारणि जीव मिथ्यात्व करइ तिणि कारणि जीव सम्यक्त्व न लहइ । जिहा आरम तिहा सुख नहीं अनइ जिहा मिथ्यात्व तिहा सम्यक्त्व नहीं । वली धर्म कीजइ तउ अरहत देवई ५ नउ । अनेरउ धर्म न करिवउ । यत उक्त

शैवनव्य सौगतो धर्म कर्त्तव्य पुनरार्हत ।
वैदिको व्यवहर्तव्यो ध्यातव्य परम शिव ॥ १० ॥

[मे] आरभ क्षेत्रकरसणादिकइतउ उपनउ जे पाप तेहतउ जीव तीव्र दुक्ख पामइ । पणि तिहा धर्मनउ अणलहिवउ न हुइ । १०पणि वली जे मिथ्यात्वनउ लवलेशमात्र करइ तेह लगी आवतइ भवि जिनबोधि जिनधम्म न लहइ ॥ १० ॥

[सो] हिव जे गाढा तप नियम क्रिया करइ छइ पुण उत्सूत्र प्ररूपइ छइ तेह आश्री कहइ छइ ।

[जि] सघलाई जीवहूइ जिनबोधिनउ अप्राप्तिकारण कहइ १५छइ ।

[मे] हिव जे गाढी क्रिया करइ अनइ उत्सूत्र प्ररूपइ तेह आश्रई कहइ ।

जिणवरआणाभग[1] उम्मग्ग[2]उस्सुत्तलेसदेसणय ।
आणाभगे पाव ता जिणमयदुक्कर धम्म ॥ ११ ॥

२० [सो] उन्मार्ग[3] व्यवहार सामाचारी विरुद्ध उत्सूत्र श्रीसिद्धान्तनी आज्ञा विरुद्ध जे लेशमात्र थोडु[4] उपदेश तेहतउ **जिणवर॰** वीतरागनी आज्ञानु भग हुइ। यत उक्त श्रीआवश्यके—

---

१ आ गाथा सा नी बीजी प्रतमां लखवी रही गयेली छे २ जि अमग्ग ३ 'उमाग सामाचारी विरुद्ध' ने स्थाने जिण ' ४ थोडउ

[सो] हिव जे जीव घणु धम्म करी न सक्इ तेहहइ तत्त्व कहीइ[1] छइ।

[जि] सम्यक्त्वहइ सुखाराध्यपणउ कहइ।

[मे] हिव आत्मानइ सीष कहइ।

जइ न कुणसि तवचरण न पढसि न गुणेसि देसि नो दाणं। ५
ता इत्तिय न सक्कसि ज देवो इक्क[2] अरिहंतो[3] ॥२॥

[सो] रे जीव! जिम आगइ घरसी छमासी मासक्षपण आचाम्लादिक तप करता। केई हवडाइ करइ छइ। ते तउ करी न सकइ तउ म करेसि। जिम एकि अनेक आग पूर्व प्रमुख सिद्धांत पठना गुणता हिवडाइ पढइ छइ। ते जउ पढी न सकइ[4] तउ१० म पढसि। जिम आगइ चउद पूर्व प्रमुख अग्यार आग[5] बिहु घडी माहि पाधरा उपराठा गुणता हवडाइ अनेकि कोडि लाख आग्या गणइ छइ। तिम[6] जउ गुणी न सकइ तउ म गुणेसि। जिम आगइ सांवत्सरिक[7] दान सान्गार कोडि सुवर्णादिकनां दान देता हवडाइ[8] शक्तिमानिइ दिइ छइ तिम जउ दान देई न सक्इ तउ म देसि।१५ **ता इत्तिय०** पुण तउ एतलउ करी न सक्इ[9]। **ज देवो०** ज देव एक अरिहंत वीतराग इति[10] बीनउ नहीं[11] ॥२॥

[जि] अहो पुरुष! जइ **तवचरण** तपश्चरण न करइ। नरउ काई भणइ नही। आगिन्उ भणिउ गुणइ नही। दानई न दिइ। एतला तपश्चरण भणिवउ गुणिवउ दान देवउ दुःसाध्य छइ। ता तउ२०

---

१ कही २ मे इक्कु ३ [illegible] अरहंतो ४ सकइ ५ आंगु ६ तेम ७ सवच्छरिक ८ हेवडा[illegible] ९ सकअं १० वीतरागइ नि ११ बीजी प्रतमां आटलुं वधारे छे—जउ एतलउ देवत्वइनउ मनि निश्चउ आणअं तउ ताहरउ काज सरइ। ए सम्यक्त्वनउं मूल बीज इसिउ भाव।

उस्सुत्तमायरंतो[1] उस्सुत्त चेव पन्नवेमाणो ।
एसो अ अहाछंदो इच्छाछंदु त्ति एगट्ठा ॥ १ ॥
(उपदेशमाला, गा २२१)

उम्मग्गदेसणाए चरण नासंति जिणवरिंदाण ।
वावन्नदंसणा खलु न हु लब्भा तारिसा दट्ठुं ॥ २ ॥ 5
(आवश्यक, गा ११५२) इति वचनात्।

'पयमवि असद्दहंतो सुत्तत्थ मिच्छदिट्ठीओ' इति सिद्धान्तवचनाच्च । **आणाभंगे०** जु[2] आज्ञाभग कीधइ हूतइ महापाप । घणीइं क्रिया अनुष्ठानकष्टादिक करतउइं अनाराधिक[3] जि हुइ । **ता जिण०** तेह भणी श्रीजिनशासननउ धर्म्म आराधता गाढउ दुकर । गाढी क्रियाइ 10 करतां वीतरागनी आज्ञा पाखइ आराधियउ न हुइ काज न सरइ । बीजा पाधरा ठाकुराइनी आज्ञा भागीइ महादोष कहीइ । 'आज्ञाभङ्गो नरेन्द्राणामशस्त्रवधमुच्यते' इति वचनात् । तउ त्रिभुवनस्वामी वीत रागनी आज्ञानइ भाजिवइ दोषनउ सिउ कहीइ ' ॥ ११ ॥

[जि] अमार्ग कुमार्ग तेहना कहिवातउ उत्सूत्र सिद्धान्त 15 विरुद्ध वचन तेहनउ लवमात्र उपदेसतउ श्रीजिनाज्ञानउ भगालाप हुइ । आज्ञानइ भगि हूतइ पाव पाप हुइ । ता तउ पच्छइ पापनइ उदइ हूतइ जीवहूइ निनमत जिनभाषित धम दुकर दुःप्राप हुइ ॥ ११ ॥

[मे] उन्मार्ग सेवता उत्सूत्र सिद्धान्त विरुद्ध तेहनउ लेशमात्र उपदेश देता जिनवर वीतरागनी आज्ञानउ भग हुइ । ते आज्ञाभग 20 लगी महापाप हुइ । तेह पाप लगी जिनधर्म्म गाढउ दुकर हुइ ॥ ११ ॥

---

1 आ गाथा 'आवश्यक'मां जोवामां आवती नथी, पण 'उपदेशमाला'मां छे 2 'जु' नथी 3 अनाराधक

इत्तिय एतलउ न सकइ तउ माहरउ एकु जि अरहंत देव। बीजउ नहीं। इणि कारणि सम्यक्त्व पामना मुहेलउ ॥ २ ॥

[मे] अहो जीव! जउ तउ वरसा छमासा प्रमुख तपु करी न सकइ। शास्त्रनइ अनुसारि सूधउ चारित्र पाली न सकइ। सिद्धांत प्रकरणप्रमुख पाठ जउ पढी न सकइ। जइ तउ आगम गुणी न सकइ। दान सुपात्र विषइ देइ न सकइ। तउ तउ एतूअइ करी न सकइ जि देवु तउ एक अरिहंतइ जि। बीजा हरिहरादिक नहीं ॥ २ ॥

[सो] को कहिसिइ इहलोकना सुखनइ कार्जि बीजा देव आराधीइ छइ। तेह आश्री कहइ छइ।

१० **[जि]** इसु करी जिनधर्मना करणहारहूइ गुण कहइ छइ।

[मे] काइ ते कहइ।

रे जीव! भवदुहाइ इक्क चिअ हरइ जिणमय धम्म।
इयराण पणमतो सुहकज्जे मूढ! मुसिओ सि ॥ ३ ॥

[सो] रे जीव! जिन वीतरागनउ धर्म एकलउ जि एकाग्र १५मनि आराधीतउ हुतउ भवसंसारना दुख फेडइ। सर्व सुख करइ निश्चइ। **इयराण** इहलोकना सुखनइ काजिइ इतर देव रागद्वेषाध्यासिता[1] क्षेत्रपाल वाराही प्रमुखहइ नमतउ अनेक उपायना[2] मानतउ **रे मूढ!** मूर्ख! मुसाइ छइ[3]। तेहे कर्मे अपहरउ काई पराइ नहीं। मुहिया धर्म चूकउ[4] छइ ॥ ३ ॥

२० **[जि]** रे जीव! एकु जि जिनमत जिनभाषित धर्म **भव-दुहाइ** संसारना दुख हरइ स्फेडइ! तिणि कारणि हे **मूढ!**

१ रागद्वेषाध्यासिता २ अनेक नउयाना ३ छउ मुहिआ ४ चूकउ

[सो] रुी अेट जि वात कहइ छइ।

[जि] वली प्रकारान्तरि निाधर्मनी प्राप्ति दुर्गम कहइ छइ।

जिणवरआणारहिअं वद्धारता[1] ति केवि जिणदव्वं।
बुड्डंति भवसमुद्दे मूढा मोहेण अन्नाणी ॥ १७ ॥

५ [सो] जिणवर० वीतरागनी आनारहित देवद्रव्य वधारताइ हुता मूढ मूर्ख केतलाइ मोहिइं धर्मनइ भ्रमि अज्ञानी अजाण ससार मछुद्र माहि बूडइ। एहनउ इसिउ भाव। देवद्रव्य वधारिवानी बुद्धिइ घणइ लाभिइ पाटकी माठी घागुरीप्रमुख अधम[2] रहइ आपइ। अथवा शालि दालि घृत पक्वान्नादिक अथवा देवद्रव्य वस्त्रादिक जइ
१०घणइ मूलिइ आपणइ[3] घरि वावरइ। अनेराइ थावरहूइ दिइ। अर्थ[4] मनामा दर्शनी थिकु देवद्रव्य वधारी प्रासादादिके वेचइ। अथवा रूडीइ घुरहूइ महणा पापइ व्याजिइ देवद्रव्य आपइ। इत्यादिकि अनेकि प्रकारि करी अविधिइ देवद्रव्य वधारताइ ससार समुद्र माहि बूडइ। जे देवद्रव्य निधिइ सुस्थानकि स्थापइ रक्षा करइ
१५वृद्धि[5] लिइ तेहइ[6] महाफल हुइ। यत उक्त **दिनकृत्ये**—

जे पुणो जिणदव्वं तु वुड्ढिं निंति सुसावया।
ताण रिद्धि पवड्ढेइ कित्ती सुक्ख बलं तहा ॥ १ ॥

(गा १३७)

जिणपवयणवुड्ढिकर पभावग नाणदंसणगुणाण।
२० वड्ढंतो जिणदव्वं तित्थयरत्तं लहइ जीवो ॥ २ ॥

एव नाऊण जिणदव्वं वुड्ढिं निंति सुसावया।
जरामरणरोगाण अंत काहिंति ते पुणो ॥ ३ ॥ (गा १४४ ४५)

---

१ जि यद्धावरित्ता वि दद्द जिणदब्वं २ अधर्मी ३ आपइ ४ अर्थ
५ वृद्धिइ ६ तइहइ

[जि] जे जीव जिणवरेन्द्रनी [illegible]
भ्यानि देई वधारताई हता मूढ मूर्ख [illegible]
अजाण हता बूडइ । जिणि कारणि ते [illegible]

[मे] जिनवरनी आज्ञारहित [illegible]
मूर्ख अजाण संसारसमुद्र माहि बूडइ ॥ १२ ॥

[सो] जे 'महारउ देव' [illegible]
वाह्या छइ ।

[जि.] अथ अयोग्यहइ ने [illegible]
उद्देसी कहइ ।

[मे] सूधा धर्मना अभि[illegible]
देवउ । ते आगिली गाहइ कहइ ।

कुग्गहग्गहगहियाण मूढो जो [illegible]
सो चम्मासीकुकुरवयणम्मि [illegible]

[सो] **कुग्गह०** जे [illegible]
छइ तीण करी[1] ग्रहिया गहिल[2] [illegible]
मूढ अजाण जे धर्मनउ उपदेश दि[illegible]
सो चम्मासी० ते चाम[illegible]
मू[illegible]डइ कपूर घातइ । रूडी वस्तु [illegible]
कादवमाहि लाघइ । एतलइ इस्यु [illegible]

[जि] 'ए माहरउ [illegible]
कुगुरु ऊपरि कदाग्रह तिणि [illegible]

---

१ जि मुद्रा २ करी न [illegible]
कदाग्रहीनई उपदेश न देवउ' [illegible]

कुटुंबनउ[1] भरणपोषण[2] करिवउ तुल्यइ[3] जि छइ, सरिखउइ[4] जि छइ। पुण पिच्छसु० आगलि फलनउ केवडउ वहिरउ[5] आतरउ[6] पडइ छइ। देखि। एगाण० एक जे मूढ पापी खाटकी माछी कुशल घाची[7] प्रमुख बीजाइ अधर्मी पेटनइ कारणि अनेक जीवहिंसादिक पापकर्तव्य कुवाणिज्य कुव्यवसाय करी मरी नरकनउ 5 दुःख पामइ छइ। अन्नेसिं० बीजा जे धर्मवंत तेहनइ[8] काई मूर्खा रहित नथी, पुण रूडा जीवदया सत्य वचन सहित शुद्धा व्यवसाय वाणिज्य करी लक्ष्मी उपार्जी उत्तरभरण[9] कुटुंबना भरणपोषण करइ छइ। अनइ धर्मइ आराधइ छइ। ते आगलि शाश्वत सुख पामइ छइ। अनाण नइ जाणहूइ घणउ आतरउ छइ ॥ २१ ॥ 10

[जि] पेटि भरिवइ सरीषइ जि हतइ कर्मविपाक जोउ, मूढ मूर्ख, अमूढ पंडित ज्ञाततत्त्व तेह बिहु तणउ। एगाण० एक मूर्खहूइ नरकदुःख जोइ। अन्नेसिं० अनेरा अमूढहूइ शाश्वत सौख्य जोइ ॥२१॥

[मे] पेटनउं भरिवउ मूर्ख पंडित बिहुनइ सरीषउ। पणि फलनउ विपाक जोउ। किसिउ। एक जे स्त्रीपुत्रादिक कहइ जइ15 वीसामउ लिइं तेहनइं नरकनां दुःख। अनेरा जे वीतरागनइ धर्मि वीसामउ लिइ तेहनइ शाश्वतां सुख ॥ २१ ॥

[सो] सामलिवाउ[10] थिकु[11] घम लागइ। ए वात कहइ छइ। बिहु गाहे करी।

[जि] अथ त्रिणि अनुक्रमि सम्यक्त्व हुइ। 20

---

1 कुटुंबनउ 2 भउ 3 तुलिइ 4 सरिखउइ 5 विहरउ 6 अंतरउ 7 घाची 8 तेहइ 9 उदरभरणपोषण 10 सांभलिवाइ 11 थिकउ

भोग्उ सरल स्वभावि हुतउ शुद्ध धर्मोपदेश दिइ ते पुरुष **चम्मासी** चर्मभारक कुक्कुरनइ वदनि मुखि कपूर क्षिपइ घालइ। जिम कुतिरानइ मुहि कपूर घालिइ हुतउ निफल थाइ तिम अयोग्यहूइ धर्मोपदेम दीधउ हूनउ निफल। एतावता अयोग्यहइ धर्मोपदेम न देवउ ॥ १३ ॥

५ [मे] जे कदाग्रहरुपीउ ग्रह तीणइ करी जे ग्रस्या छल्या छइ तेहनइ जे सूत्र अजाण धर्मनाउ उपदेश दिइ, सूधउ देवगुरुधर्मनउ स्वरूप कहइ ते चमासी चामडानउ खाणहार कूतिरउ तेहनइ मुखि कपूर घातइ। रूडी वस्त कुथानकि घातइ। एतइ कदाग्रहीनइ उपदेशें न देवउ ॥ १३ ॥

---

१० [सो] सुद्ध प्ररूपकनी रीसइ रूडी। उत्सूत्रभाषकनी क्षमाइ विरूई। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ शुद्धउ कोपई भलउ। केहीएकनी क्षमाई भली नही। इसु जणावइ छइ।

[मे] सूत्र कहणहारनी रीसइ रूडी, पणि उत्सूत्रभाषीनी १५क्षमाइ पाडइ। ए वात कहइ।

रोसो वि खमाकोसो सुत्त भासतयस्स धन्नस्स।
उस्सुत्तेण खमा वि य दोसमहामोहआवासो ॥ १४ ॥

[सो] **रोसो वि॰** जे धन्य उत्तम सूत्र श्रीसर्वज्ञभाषित सिद्धांत तेह **भासन** बोल्ता आपणा खरपणइ[1] बलि साचउ विचार २०करता वेती वार[2] रोस ऊपजइ। ते रोसइ[3] क्षमानउ कोश भंडार जाणिवउ। ते रीस रूडी इसिउ भाव। **उस्सुत्तेण॰** अनइ उत्सूत्र सिद्धान्त विरुद्ध जे बोल्इ तेहनी क्षमाइ दोषइ जि कहीइ, विरूईइ जि

१ खरपणवर २ वार ३ रोस

जिणमयकहापबंधो संवेगकरो जिआण सव्वो वि।
संवेगो सम्मत्ते सम्मत्तं सुद्धदेसणया ॥ २२ ॥
ता जिणआणपरेण धम्मो सोअव्व सुगुरुपासम्मि।
अह उचिअ सड्ढाओ तस्सुवएसस्स कहगाओ ॥ २३ ॥

५ [मो] **जिणमय०** जिनमत श्रीसर्वज्ञना शासननी कथाउ प्रबंध विस्तार सघलउइ[1] भव्य जीवहूं[2] संवेगकारी वैराग्यहेतु छइ। अनेरे दर्शन[3] एहवउ नथी। तिहां राग शृंगारयुद्धादि दोषमय जि छइ। तेहे सांभळे संवेगो थाई न ऊपजइ। **संवेगो०** ते संवेग वैराग्य शासनमें साचउ सम्यक्त्व हूंतइ हुइ। मिथ्यात्वी रहइ जे वैराग्य ते १०कलत्रपुत्रादिकना वियोग थकउ ऊपजउ[4] दुःखमोहगर्भ जि[5] हुइ। ते सम्यक्त्व पुण शुद्ध देशना साचा जिनवचननइ[6] सांभलिवइ जि लाभइ। ते जिनवचन सुगुरुइ जि कहइ लाभइ। **ता जिण आण०** तेह भणी धर्म गुरु[8] कन्हइ सांभलिवउं। अथवा उचित योग्य जिम हुं[9] तिम **सड्ढाओ** श्रावक[10] कन्हलि[11] **तस्सुवएसस्स** जिनवउ १५सिद्धांतनउ जे उपदेश तेहनउ कहणहार सम्यग् जिनमार्गप्ररूपक जे **सड्ढा** श्रावक ते कन्हलि सांभलिवउ। मिथ्यात्वी अथवा उत्सूत्र प्ररूपक तेह कन्हलि न सांभलिवउ ॥ २२-२३ ॥

[जि] जिनमतनउ कथाप्रबंध सघलउई जीवहूइ संवेग वैराग्यकारक हुइ। शुद्ध देसनाइ करी सम्यक्त्व हुइ। **ता०** तउ २०जिनाज्ञापरि श्रीवीतरागनी आज्ञाप्रतिपालकि पुरुषिइ **सुगुरुपासम्मि**

१ सघलउइ २ रहूई ३ दर्शन ४ ऊपनुं ५ 'जि' नथी ६ प्रवचनइ ७ सुगुरु ८ आ पछी बीजी प्रतमां आटलुं वधारे छे— इसी जे जिनश्री आज्ञा तेहलइ विषयइ तत्परिपालनइ आणि सुगुरु सुसाधु पासि धर्म सांभलिवउ ' ९ [illegible] १० तेह श्रावक ११ कन्हलि सांभलिवउ ने स्थाने बीजी प्रतमां कन्हलि धर्म सांभलिवउ एटलुं ज छे

कहीइ, जेह भणी महामोह महाअजाणिवउ तेहनउ आवास स्थानक छइ। चडरुद्र आचार्य सरीषा सुद्ध प्ररूपकनी रीसइ रूडी। जमालि सरीषा उत्सूत्रप्ररूपकनी क्षमाइ विरूई इसिउ भाव। यत उक्त गच्छाचारप्रकीर्णके—

जीहाए वि लिहंतो न भद्दओ जत्थ सारणा नत्थि। 		५
दंडेण वि ताडंतो स भद्दओ सारणा जत्थ ॥ १४ ॥ (गा १७)

[जि] सूत्र भाषता उपदेश देता भणावता गुरुनी **रोसो वि** रोषई **धन्नस्स** धन्य पुरुषहूइ क्षमानउ भंडार हुइ। जिम क्षमा भली तिम गुरुनी रीसइ परमार्थवृत्तिइ हितकारिक हुती भली क्षमारूप जाणिवी। जिम **चडरुद्राचार्यनी** रीस नवदीक्षित महात्माहूइ१० केवल ग्यान भणी हुइ। उत्सूत्रि वरी क्षमाई कीधी हुती दोष महाअज्ञान तेहनउ आवास स्थानक हुइ ॥ १४ ॥

[मे] तेहनउ रोसु क्षमानउ कोसु जाणिवउ, जे सूत्र सिद्धान्त खरउ बोल्इ, धन्य भाग्यवंत हुतउ। अनइ उत्सूत्र सिद्धान्त विरुद्ध जे बोल्इ तेह्नी क्षमाइ दोषइ नि हेतु कहीइ, जेह भणी ते उत्सूत्र१५ प्ररूपक महामोह अनाणिवउ तेहनउ आवास स्थानक छइ। **चद्र-रुद्राचार्य** सरीषा सुद्ध प्ररूपकनी रीसइ रूडइ। **जमालि** सरीषा उत्सूत्रप्ररूपकनी क्षमाइ विरूई ॥ १४ ॥

[सो] हिव[1] जिनधर्मनउ दुर्लभपणउ कहइ छइ।

[जि] 'मोक्षि सुख छइ कि नथी'' ए वातनउ निश्चय२० कहइ छइ।

[मे] हिव जिनधर्म्मनउ दुल्र्भपणउ कहइ।

---
१ हेव

सद्गुरु समीपि धर्म **सोअव्व** सांभलिउ। **अह** अथवा **उचिअ** उचित योग्य जिम हुइ तिम **सड्ढाओ** श्रावकसमीपि श्रीजिनधर्म सांभलिउ। किसु छइ श्रावक। **तस्सुवएसस्स कहगाओ** तेह *जिनमउ सिद्धांत तणउ उपदेस तेहनउ कहणहार जिनमार्गप्ररूपक* ॥२२-२३॥ ५

[भे] जिनमतनउ कथाप्रबंध सघलउइ भव्य सघलाइ जीवनइ संवेगकारी वैराग्यहेतु हुइ। अनइ संवेग वैराग्य साचइ सम्यक्त्व थकइ हुइ। तेह भणी सम्यक्त्व सूधी देसनाइ जि लाभइ। अनइ ते सुद्ध देसना सुगुरइ जि करइ। तेह भणी जिननी आणा तत्पर सावधान जीवि धर्म सुगुरु पासि सांभलिउ। अथवा उचित योग्य श्रावक१० कन्हलि सांभलिवउ। पणि ते श्रावक केहवउ। द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव सारी सूधा उपदेशनउ कथक हुइ ॥२२-२३॥

[सो] कहिवउ नइ सांभलिवउ जिम सफल थाइ तिम कहइ छइ।

[जि] अथ सुगुरु समीपि अथवा शुद्ध श्रावक कन्हइ धर्म१५ सांभलिइ हूतइ सांभलणहारहूइ जिसउ गुण हुइ।

स कहा सो उवएसो त नाणं जेण जाणए जीवो।
सम्मत्तमिच्छभावं गुरुअगुरु धम्मलोअठिई ॥ २४ ॥

[सो] ते कथा कही प्रमाण, ते उपदेश सांभलिवउ[१] प्रमाण, ते जाणिउ प्रमाण, जीणइ करी जीव एतला बोल जाणइ। **सम्मत्त**२० आ सम्यक्त्व, आ मिथ्यात्व, आ गुरु, आ कुगुरु, आ धर्मनी स्थिति, आ लोकव्यवहारनी स्थिति कहीइ ए विहरउ जाणइ। जीणइ उपदेशइ

१ सांभलिउ

इक्को वि न सदेहो ज जिणधम्मेण अत्थि मुक्खसुह ।
त पुण दुव्विण्णेय अइउक्कटपुण्णरहियाण ॥ १५ ॥

[सो] इक्को वि० एतइ थोडउ इग्यारह ए वातउ सदेह नथी, न जिनधर्मिह करी मोक्षसुख छइ । जीवदयामूल जिनधर्म ५ आराधता मोक्षसुख लाभइ ति । ए वातनउ वरासउ नथीइ ति । **त पुण०** ते जिनधर्म **दुव्विण्णे०** जाणता दोहिल्उ । वहिइ ? अइउक्क० अतिउत्कट गाढा मोटा पुण्य मान्यरहित कदाग्रही उन्मार्ग चारी बुद्धिना धणी जीवहूइ । अति गाढा भाग्यवत जीवहइ मार्गानु सारिणा बुद्धिना धणीहूइ जाणतां सोहिलउ ति छइ ॥ १५ ॥

१० [जि] जउ जिनधर्मि करी मोक्षाउ सुख छइ । अथ नथी इसु सदेह गर्वइ नही । किंतु निसदेह मोक्षसुख छइ । नैयायिक-वैशेषिकादिकने मते मोक्षि सुख नथी । आयतिकी दुःखनिवृत्तिर्मोक्ष । इस्या मोक्षलक्षणना कहिवातउ दुःखानुपगिपणातउ सुखइ दुःख । तेह दुःखस्वरूपनउ उच्छेद अत्यत अभाव मोक्ष । इस्या सामत्वद १५ सदेह । पुण सदेह न करिवउ । किसु । जउ मोक्षसुख न हुइ तउ कोई जाण वाछइ नही । जिम कण्णक । तिणि कारणि मोक्ष सहु वाछइ । तउ सही मोक्षि सुख छइ । इसिइ अनुमानि करी मोक्षसुख छइ । तथागमे प्रोक्त—

न जरा जन्म नो यत्र न मृत्युर्न च बन्धनम् ।
२० न देहो नैव च स्नेहो नास्ति कर्मलवोऽपि च ॥
केवल केवल यत्र यत्र दर्शनमक्षयम् ।
अक्षय च सुख यत्र वीर्यं सम्यक्त्वमक्षयम् ॥

त पुण० तें पुण मोक्षसुख अतिउत्कृष्ट पुण्यरहित पुरुषे **दुव्विण्णेय** दुर्ज्ञेय जाणता दोहिलउ ॥ १५ ॥

सांभलि सम्यक्त्व-मिथ्यात्व, गुरु-अगुरु, धममार्ग-लोकमार्गनउ विहरउ म जाइ, तीणइ सांभलिइ सिउ छइ ? काइ न हुइ ॥ २४ ॥

[जि] ते निरुथा प्रमाण, ते जिनोपदेस प्रमाण, ते ज्ञान प्रमाण, जेणइ निगि थाइ जिणि उपदेसइ, जिणि जाणिवइ करी जीवे

५ सम्यक्त्व जाइ मिथ्यात्व जाणइ, गुरु अनइ अगुरु कुगुरु जाणइ, धर्म जाणइ अनइ लोकस्थिति जाणइ ॥ २४ ॥

[मे] ते कथा सही प्रमाण, ते उपदेस साभलिउ प्रमाण, ते ज्ञान प्रमाण जीवइ जाणिवइ करी सम्यक्त्व-मिथ्यात्व, गुरु अनइ कुगुरु, धर्ममार्ग-लोकमार्गनी स्थिति जाणइ ॥ २४ ॥

---

१० [सो] केतला[1] अभागिआहइ[2] जिनमत जाण्याइ पूठिइ मिथ्यात्व न जाइ[3]। ए वात दृष्टांति करी कहइ छइ।

[जि] केई एक अधमहइ सुगुरु कन्हइ उपदेस सामलिइ हुतइ मिथ्यात्व न जाइ। ए वात दृष्टांति करी कहइ छइ।

जिणगुणरयणमहानिहि लद्धूण वि कि न जाइ मिच्छत्तं
१५ अह पत्ते वि निहाणे किवणाणं[4] पुणो वि दारिद्दं ॥ २५ ॥

[सो] जिण० वीतरागना जे गुण, परमेश्वरनउ धर्म तेह रूपीउ रत्नमरिउ निधान लहीइनइ[5] निसिउ केतला अभागीआ जीव रहइ मिथ्यात्वनउ मननउ[6] परिणाम जातउ न देखीइ ? ते काई न जाइ ते अभाग्यजिनउ कारण। तेह ऊपरि दृष्टांत कहइ छइ। **अह पत्त०**

२० अथवा अभागीइ कृपणि निधान लाधउ हुइ, पुण वेची वावरी न सकइ तेहं भणी वली दारिद्री नि कहीइ। तिम सम्यक्त्व लहीइनइ ध

---

१ केतलाइ २ हुइ ३ जाइइ ४ जि मे किविणाण ५ लहीन ६ मनतणउ

[मे] एकइ थोडउइ ए वातनउ संदेह नथी जे जिनधर्म आराधता मोक्षना सुख छइ जि। पणि ए वात जाणी न सकीइ जे अति उत्कृष्ट पुण्यरहित जीव मोक्ष पामिस्यइ ॥ १५ ॥

[सो] जिनधर्मना दुर्लभपणा जिनी वात कहइ छइ।

[जि] मोक्षसुख स्थापी जिनमतई नि जाणीता दुहिलउ इसु ५ प्रकटइ छइ।

[मे] जिनधर्मना दुर्लभपणानी वात कहइ।

सव्वं पि विवाणिज्जइ लब्भइ तह चउरिमाइ जणमज्झे।
इक्क पि भाय दुलह जिणमयविहिरयणसुविआण ॥१६॥

[सो] **सव्व पि०** बीजउ मह जाणता मोहिलउ। संसारना १० विनान कला गीत नृत्यादिक। तथा वली लोकमाहि चतुरपणउ बोलइ व्यवसाय वाणिज्यनइ विषइ डाहपण ते सहू सोहिलउं। **इक्क पि०** हे भ्रात! बांधव! एकइ नि जगमाहि दुर्लभ **जिणमय०** श्रीजिनमत श्रीवीतरागना शासननी विधि आचार तेह रूपीआ रत्ननु सम्यक् जाणिवउ। धर्मनी कुशलाई दुर्लभ। यत उक्त— १५

धन्नाण विहिजोगो विहिपक्खाराहगा सया धन्ना।
विहिबहुमाणी धन्ना विहिपक्खअदूसगा धन्ना ॥

वली श्रीजिनवचन उत्सर्गापवादबहुल छइ। तेह भणी लाभ-छेहनउं जाणिवउ दोहिलउ। जिम श्रीधर्मनी वृद्धि हुइ तिमइ जि कीधउ जोईइ। यत उक्त श्री**उपदेशमालाया—** २०

---

१ दुर्लभपणादजिनी २ कहइ छइ ३ आ पाछी गाथा सो नी बीजी प्रतमाथी पडी गइ छे जो के ते उपरनो बालावबोध एमा छे ४ सोहिलउं ५ छेहनउ

माराधइ, मिथ्यात्व जि करइ ते तेह सरीषउ जाणिवउ। इसिउ भाव ॥ २५॥

[जि.] **जिणगुण०** सर्वज्ञगुण तेहरूपिउ रत्नउ महानिधान ते लहीइ कही मिथ्यात्व कांइ न जाइ ? अय जाणिवउ। निधानि पामिइ हूतइ कृपणाहूइ पुणो वली दारिद्रय हुइ। तथैवोक्तं—

> दान भोगो नाशस्तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
> यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति ॥

तिणि कारणि सम्यक्त्वरूपिउ महानिधान लही मिथ्यात्वी जीवरूपिया कृपणहूइ मिथ्यात्वरूप दारिद्य न जाइ ॥ २५॥

[मे] जिन वीतरागना गुणरूप रत्नभरिउ महानिधान लहीनइ मिथ्यात्व काइ न जाइ ? जीव मिथ्यात्व काइ न मूकइ ? अथवा लाधइ निधानि कृपणनइ वली दालिद्र जि हुइ। काइ वेची वावरी न सकइ तेह भणी दालिद्री कहीइ ॥ २५॥

[सो] जिनशासनना पर्वइ उत्तम। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ जिनधर्मपर्वं प्ररूपद।

सो जयउ जेण विहिया सवच्छरचाउमासिअसुपव्वा।
निद्धंधसाण जायइ जेसिं पभावओ धम्ममई ॥ २६॥

[सो.] **सो जयउ०** ते जिन जयवतउ वर्त्तउ, जीणइ सवच्छरी वरसी चाउम्मासी प्रमुख सुपर्व रूडा पर्व, अमारिप्रवर्त्तन तपनियम ब्रह्मचर्य पोसह प्रभावनादिक केवल पुण्यमय जि सुपर्व रूडा पर्व कीधा। **निद्धंधसाण०** जेह पर्वना प्रभावतउ जे गाढा निर्द्धंधस अधर्मी तेहइ

1 जि

तम्हा स जाणुया सम्मनिमेहो ज पयणे नत्थि ।
आय सय तु लिजा राहाकसि ब्व वाणियओ ॥ (गा ३९२)

[**जि**] सघल्उइ जिनान जाणीइ । लोकमाहे तेह तथा च बली **चउरिमा** चतुरिमा पडिताई लम्भउ रहीइ । पुण हे **भाय !** ५ भात अधर संयोगने । एकइ जु जिनमत विधिल्पीउ रत्न तेहनउ मुनिनान सम्यग् प्रकारि साचउ जाणिउ दुहेलउ । माय हुइ तउ जिनधर्म जाणीइ ॥ १६ ॥

[**मे**] 'सघलइ जाणीइ पगीठीइ' तिम लोकमाहि **चउरिमाइ** बोलिउइ सोहिलउ । पणि हे भाई ! एक नि दोहिलउ जे श्रीजिनमत १०वीतरागना शासननी विधि आचाररूप रत्न तेहनउ साचउ जाणिउ ॥ १६ ॥

[**सो**] सूत्र धर्मनउ जाणिवउ परह छउ । कहिणहारहूइ साप्रत कालि कहिवुइ दुहिलउ । ए वात कहिं छइ ।

[**जि**] जय साचउ सम्यक्त्व कहिउ दृष्टांति करी दुआप १५कहइ छइ ।

मिच्छत्तबहुलयाए विसुद्धसम्मत्तकहणमवि दुलहं ।
जह वरनरवइचरिअ पावनरिंदस्स उदयम्मि ॥ १७ ॥

[**सो**] मिथ्यात्वनी बहुलता घणा जीव ग्राहिइ मला भला तेहइ मिथ्यात्वी जि तीजट करी **विसुद्ध०** खरा सम्यक्त्वना स्वरूपनउ २०कहिवउइ दुर्लभ । साचा सम्यक्त्वनी वात कही न सकइ । **जह वर०** जिम चारू न्यायी धर्मवत आगिल्या रायनु चरित्र **पावनरिंद०** पापी अन्यायीं अधर्मी रायनइ उदइं वचनइ कही न सकीइ । बीहता

१ वहइ २ कहणमवि ३ अन्यायी नथी ४ उदय

केतला रहइ धर्मनी मति ऊपजइ। तेहइ केतला तेहे पर्वे उपवास दानादिक करता देखीइ ॥ २६ ॥

[जि] ते जयवत्तु हुइ, जिणि वीतरागि सांवत्सरि चातुर्मासिक सुपर्व मनोहर पर्व **विहिया** कीधा। जिहां जिनोक्त सांवत्सरिकादिक ५ पर्वना प्रभाव हूतउ **निद्धधसाण** सर्वना पापशंकाई जीवहूइ **धम्ममई** धर्म करिवानी बुद्धि **जायइ हुइ** ॥ २६ ॥

[मे] ते श्रीजिन जयवंत वर्त्तउ, जीणइ ए शोभन भला पर्व कीधा, संवत्सरी चउमासी प्रमुख, जिहां तपनियमप्रभावनादिक पुण्य कीजइ। गाढइ **निद्धधस** अधर्मीनइ पणि जेह पर्वना प्रभावहूतउ १०धर्मनी मति ऊपजइ ॥ २६ ॥

[**सो**] मिथ्यात्वीना पर्वे आश्री वात कहइ छइ।

[जि] अथ मिथ्यात्व पर्वना करणहारनउ स्वरूप कहइ छइ।

नाम पि तस्स असुह जेण निदिट्ठाइ मिच्छपव्वाइं।
जेसिं अणुसंगाओ धम्मीण वि होइ पावमई ॥ २७॥

१५ [**सो**] **नाम पि तस्स०** तेहनउ नामइ अशुभ विरूउ, नामइ तेह पापीनउ न लेवउ, लेवा नावइ, जीणइ ए होली बलेव नवरात्र प्रमुख मिथ्यात्वपर्व कीधा। जेहे पर्वे धूलिनउ उडाडिवउ, गालिनउ देवउ, जीवहिंसादिकनउ करिवउ प्रवर्त्तइ। **जेसिं०** जेह पर्वना अनुषग योगतउ धर्मवंतइनइ मनि पापनी मति आवइ। तेहइ २०गहिलाई करइ, मन विरूआ थाइ, वचन[1] यथातथा बोलइ ॥ २७ ॥

[जि] तेहनउ नामई असुभकारिउ अग्राह्य, जिणइ **मिच्छ पव्वाइं** मिथ्यात्वपर्व **निदिट्ठाइं** कह्या। किसा भणी तेहनउ नाम

१ वचनइ

मणी ते राय अगमना मणी कुपिउ अनर्थ करइ। तिम खरा सम्यक्त्वनु[1] कहिवूइ[2] लोकनउइ[3] अगमतु थाइ। तेह भणी कहिवुइ दुर्घट। इसिउ भाव ॥ १७ ॥

[जि] मिथ्यात्वनी बहुलता प्रचुरता तिणि करी विशुद्ध सम्यक्त्वनउ कथनई कहिवउइ दोहिल्उ। जिम पापी नरेन्द्रनइ ५ उदइ वरनरचरचरिय प्रधान राजेन्द्र श्रीरामादिक तेहनु न्यायरूप चरित्र कहिताई दोहिल्उ हुइ ॥ १७ ॥

[मे] मिथ्यात्वनी बहुलता लगी भग्गइ जीवनइ सूधा सम्यक्त्वनउ कहिवउइ दोहिल्उ। साचा सम्यक्त्वनी वातइ कही न सकीइ। केहनी परिइ। जिम न्याई राजानउ चरित्र पापी राजानइ १० उदयि तेहनी ठकुराई कही न सकीइ। काइ। ते अणगमती वातइ कोप धरइ। तिम मिथ्यात्वी आगलि सूधा सम्यक्त्वनउ कहिवउ अरुचि उपजावइ ॥ १७ ॥

[सो] केती वारइ को गुरुइ उत्सूत्रभाषी हुइ। तउ सिउ करिवु, ते कहइ छइ। १५

[जि] अथ विद्यावतई कूडानोल्उ मेल्हिवउ। इसु दृष्टांति करी स्थापइ छइ।

बहुगुणविज्ञानिलओ उस्सुत्तभासी तहा विमुत्तव्वो।
जह वरमणिजुत्तो वि हु विग्घकरो विसहरो लोए ॥१८॥

[सो] बहु० घणा गुण अनइ विज्ञानउ निलय घर स्थानक २० गुरु छइ। गाढउ विद्यावत गाढउ गुणवंतु[4] छइ। पुण उत्सूत्रभाषी

---

१ सा सम्यक्त्वनई २ कहिवउंइ दुर्लभ साचा सम्यक्त्व नीवाहिवुइ ३ लोकनइ ४ गुणवत

असुभ॰ जेसिं अणुसगाओ जेहा मिथ्यात्वना पर्वना सग लगी धम्मीण वि धर्मवंतईन्ह पाप करिवानी बुद्धि हुइ ॥ २७ ॥

[मे] तेहनउ नामइ अशुभ पाहुउ, जीणइ मिथ्यात्वीना पर्व होली बलेव नवरात्रीप्रमुख उपदेस्या। निद्रा धूलि ऊडाडीइ, हिंसा कीजइ। जे पर्वना अनुषग योगइतउ धर्मवतइ मनि पापमति 5 ऊपजइ ॥ २७ ॥

[सो] समर्गिइ करी केतलानइ विहरउ पडइ, केतलानइ न पडइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ पर्वसमर्ग कही उत्कृष्ट धर्मवनहूइ अनइ गाढा पापीहूइ सुसमग कुसंसर्ग काई न करइ। ए वाचा प्रकटइ। 10

मज्झठिई पुण एसा अणुसगेण हवति गुणदोसा।
उक्किट्ठपुण्णपावा अणुसगेण न घिप्पति ॥ २८ ॥

[सो] मज्झ॰ मध्यम पुरपनी स्थिति ज तेह रहइ अणुसगेण सगतिनइ विशेषिइ गुणइ हुइ, दोषइ हुइ। गुणवतनी सगतिइ गुणवतइ[1] थाइ। पापनी संगतिइ दोषवत थाइ। ए मध्यम जीवना विशेष। 15 उक्किट्ठ॰ उत्कृष्ट जे पुण्यना धणी गाढा उत्तम, अनइ उत्कृष्ट पापना धणी गाढा मिथ्यात्वी ते बे सगति[2] न लीजइ। संगतिनउ विहरउ न पडइ। धर्मी[3] ते धर्मीइ[4] नि। पापी ते पापीइ नि। काच नइ रत्न बरिसना सइ एकठा रहइ। साप अनइ सापनउ मणि घणउ काल एकठा रहइ। पुण जे जिसउ ते तिसिइ नि। सगतिनउ विहरउ न पडइ। 20 इसिउ भाव ॥ २८ ॥

---

१ गुणवत २ सगतिइ ३ धम्मी ४ धम्मीइ

श्रीसमन्नाउ वात न मानइ उत्थापइ। तह्या विमुक्ता वो० ते गुरुइ तिम मूकिवउ[1] छांडिवउ, जिम विषधर सार वरमणि० माथइ थाकइ विषापहार मणि छती मस्तिक हुइ तेऊ विष मरणकरणहार भणी दूरि मेल्हीइ तिम ते गुरुइ उत्सूत्रभाषी अनंत संसारना मरण दुःखहार भणी ५ दूरि लगइउ[2] परहउ छांडिवउ ॥ १८॥

[जि] यद्यपि घणा गुण निश्चा छइ इसी विधा तेहनउ नित्य गृह परइउ उत्सूत्रभाषी हूतउ तह्या वि तथापिहिं मूकिवउ। जिम लोकमाहि प्रधान मणिसंयुक्तई हूनउ हु विषइ विषकर मृत्युकारक विषधर मेल्हीइ ॥ १८॥

१० [मे] यद्यपि घणा गुण विद्या तेहनउ निलय स्थानक गुरु छइ, पणि उत्सूत्र वचनाउ भाषणहार बोलणहार तथापि मूकिवउ। परिहिनी परइ। जिम वर प्रधान मणि सहितइ साप विषकारक मरणदायक लोकमाहि हुइ तिम उत्सूत्रभाषी गुरु मणि मीनतइ विघ्नकारक हुइ ॥१८॥

[सो] लोक प्राहइ सापण अनइ लक्ष्मीइनिनइ लोभिइ १५लीजइ। धर्मनउ प्राहइ काई न गणइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ मोहनु प्रभाव कहइ छइ।

सयणाण वा मोहे लोआ निप्पनि अत्थलोहेण।
नो निप्पति सुधम्मे रम्मे हा मोहमाहप्प ॥ १९॥

[सो] सयणाण० लोआ० ए[3] लोक सगानइ मोहिइ २०अथवा लक्ष्मीनइ लोभिइ लीजइ। तेहा देवगुरु मानइ तेह सिउ तात्रा[4] सनध करइ। धम काई न जोअइ। नो निप्पति० सुधम खरउ धर्म जे रूडउ ते न लिइ, तिहा न राचइ। हा कहीइ अहो।

---

१ मूकवउ २ लगिवउ ३ 'ए' नथी ४ नात्रो

[जि] पुण कर्मी ए मध्यम स्थिति मध्यम पुरगनी अवस्थिति प्राणिनी । ए किसी जु[१] **अणुसगेण हवंति गुणदोसा ।** ससर्गना दोषगुणा भवन्ति । सुसर्ग लगी गुण हुइ । कुससर्गतउ दूषण हुइ । मनुष्य त्रिविध । उत्तम मध्यम जघन्यरूप । **उक्किट्ठपुण्णपावा**
5 उत्कृष्ट पुण्यपात उत्कृष्ट पापरा सुससर्गि कुसंसर्गिइ **न घिप्पति** म हीन" ॥२८॥

[से] था मध्यम स्थिति । अनुक्रम कहता ससर्ग तेह लगी गुण नइ दोस ऊपनइ । अनइ उत्कृष्ट पुण्य नइ पापना धणी कुणहइनइ संसर्गि छीपइ नहीं । उत्कृष्ट पापीनइ धर्मवंतनउ संसर्ग न लागइ ।
10 उत्कृष्ट धर्मवंतनइ पापीतउ संसर्ग न लागइ जि ॥२८॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ ।

[जि] किम जाणीइ ए वात ।

अइसयपावियपावा धम्मिअपव्वेसु तो वि पावरया ।
न चलंति सुद्धधम्मा धन्ना किवि पावपव्वेसु ॥ २९ ॥

15 [सो] **अइसय०** अतिशयप्रापितपापा गाढा पापी जीव **धम्मि०** धर्ममय पर्व आवइ तउ पापर्जिनइ[१] विषइ[२] रत हुइ । पाप जि करइ । धर्म उपरि मन नावइ । **न चलंति०** केतलाइ धन्य पापपर्विइ आविइ[३] आपणा **सुद्धधम्म०** चोख्य धर्मतउ चलइ नहीं, क्षुभइ नहीं । तेहना मन लगारइ धर्मतउ डोलइ नहीं । तेह भणी उत्कृष्ट
20 पुण्यवंत अनइ उत्कृष्ट पापवंतहूइ संसर्गिइ काइ विशेष न हुइ ॥ २९ ॥

[जि] अतिशयप्रापितपाप । उत्कृष्ट पापवंत पुरुष **धम्मिय-पव्वेसु तो वि** धार्मिक पर्वे सांवत्सरादिकेइ **पावरया** पापरत पापइ

---

१ पापर्जिनइ २ विषइ' नथी ३ 'आविइ' नथी

मोहमाहप्प॰ ससारनउ मोह अजाणिनउ तेहनउ ए माहात्य महिमा छइ । कुणइ काई थाइ [१] ॥ १० ॥

[जि] स्वजन सगा तेहनइ मोहि **वा** वली अथवा द्रव्यनइ लोभि लोक लीजइ । पण रम्य प्रधान सुधर्म जिनधम तिहा **नो घिप्पति** न लीजइ । इहा खेदे मोहनउ माहात्म्य प्रमाण ॥ १९ ॥ 5

[**मे**] स्वजनादिकनइ अर्थना लोभ लगी लोक ससारनइ व्यापारि घातइ । हाट पाटणि वणिजव्यापार सीपवइ । पणि सुधा स्वामीना भाष्या धर्मनइ मार्गि न घातइ । जे धर्म रम्य प्रधान छइ । हा हसइ खेदे । ते मोहनउ माहात्म्य जाणिवउ ॥ १९ ॥

[**सो**] अधर्मी अनइ धर्मी जीव रहइ बेई ज वीसामाना 10 स्थानक छइ । ए वात कहइ छइ ।

[**जि**] अथ गृहस्थहूइ वीसामानउ स्थानक कहइ ।

गिहवावारपरिस्समखिन्नाण नराण वीसमणठाण ।
एगाण होइ रमणी अन्नेसिं जिणिंदवरवाणी [२] ॥ २० ॥

[**सो**] **गिहवावार॰** दिन सघल्उ जे गृहस्थनउ व्यापार 15 व्यवसाय वाणिज्य काजकाम तेहनइ श्रमिइ करी जे पुरुष खिन्न ऊमना छइ, तेहहूइ [३] **वीसमण॰** वीसामाना स्थानक बेइ नि छइ । **एगाण॰** एक जे अधर्मी संसारामिलाषी [४] जीव तेहहूइ रमणी स्त्री वीसामानउ स्थानक । तेह आगलि आपणउ कानकाम मन्त्र गूझ कही समाधि प्रामई । उक्त च **श्रीउपदेशमालाया**—'गुरु गुरुतरो अइगुरु 20 पियमाइयअवच्चपियजणसिणेहो॰ '। **अन्नेसिं** बीजा विवेकीआ

१ काई न थाइ २ जि जिणिंदवरधम्मो मे जिणदवरधम्मो ३ तेहूइ ४ ससारामिलापी.

जु करइ। घन्ना किवि केई एक धन्य कृतपुण्य पुरुष पाव-पव्वेसु पापोत्सविइ आविइ हूतइ सुद्ध धर्म हूतउ जीवन्यामूल धर्म हूतउ न चलंति न डोलइ। तिणि कारणि उत्तम अनइ जघन्य संसर्गि न लीनइ ॥ २९॥

[मे] उत्कृष्ट पापना धणी धार्मिक पर्युषणाप्रमुख पर्व आव्ये हूते ५ पापनइ विषइ रत हुइ। केई एक धन्य कृतार्थ पापपर्व आव्ये हूते धर्म हता न चालइ न डोलइ ॥ २९॥

[सो] हव लक्ष्मी उपरि वात कहइ[१]।

[जि] लक्ष्मीना बे भेद देखालइ।

लच्छी वि हवइ दुविहा एगा पुरिसाण खवइ[२] गुणरिद्धी। १०
एगा य उल्लसती अपुण्णपुण्णाणुभावाओ ॥ ३०॥

[सो] लच्छी वि० लक्ष्मीइ संसारमाहि बिहु प्रकारि हुइ। एगा० एक लक्ष्मी आवती हुती पुरुषहूइ[३] गुणरूपिणी ऋद्धि क्षेपइ नीगमइ। लक्ष्मी हुइ, पूठिइ[४] हियानउ धर्म जाइ। अनइ विनय विवेक गांभीर्य[५] दाक्षिण्यादिक पुण[६] जाइ। गर्वाधित थिउ हींडइ। एगा य०१५ अनइ एक भाग्यवतनइ लक्ष्मी हुइ, पूठिइ विनय विवेक दाक्षिण्यादिक गुण उलमइ। धर्म उपरि मन आवइ। मारेखम[७] गंभीरपणउ आवइ। बिहु रिद्धिनउ कारण कहइ छइ। अपुण्ण० जे अभागीआनइ लक्ष्मी हुइ छइ ते पाछिलइ भवि काइ पापनउ[८] बंधिउ जीवन्यारहित पचाग्नि माधन्नानादिक अनान कष्टरूप पुण्य[९] तेहनइ प्रभाविइ हुइ। तेह लगी२० पाप करी आघउ मरी दुर्गतिइ जाइ। संसारि रुलइ। अनइ जे धर्म

१ कहइ छइ २ खिवइ ३ रहइं ४ पूठि ५ गांभीर्यादि ६ गुण ७ मारेखमी ८ पापानुबंधिउं ९ पुण्यनइं

धमवताइ स्त्रिनेन्द्र श्रीवीतरागनी वर प्रधान वाणी[1] श्रीसिद्धात[2] धममय वचन तेह ति निधाननउ स्थानक हुइ। सिद्धातना अथ विचारता[3] जोता तेहनउ मन महासमाधि रहइ। इसिउ भाव।

[गि] गृहव्यापार घरनउ व्यापार तेहनउ परिश्रम करिवउ ५ निगि करी खिन्न थाका तेह नर मनुष्यहूइ वीसामानु स्थानक हुइ। एक संसारी जीवहूइ रमणी स्त्री विश्रामस्थानक हुइ। अनेरा कोई भव्य धर्मवाइहूइ श्रीभगवंतोक्त वरधर्म वीसामास्थानक हुइ ॥ २० ॥

[वो] गृहनउ व्यापार व्यवसायादिक तेहनइ थाकि जि नर उमना छइ, सीइ रहइ वीसामाना स्थानक विहि जि। एकनइ रमणी १०स्त्री वीसामानउ स्थानक। काइ ते आगलि आपणा काजकाम वात करी समाधि पामइ। ए ससारी जीवनी स्थिति। अनइ अनेरा विवेकी जीवनइ सामायक पडिकमणा जिनपूजा प्रमुख धमकार्य तेहइ जि वीसामाना स्थानक हुइ ॥ २० ॥

[सो] धर्मवतनइ अनइ अधमवतनइ ससारना काज करताइ १५वडउ विहरउ पडइ छइ। ए वात कहइ[4] छइ।

[जि] अजाण अनइ जाण ते बिहुनइ पेट भरवानउ फल कहइ।

तुल्ले वि उअरभरणे मूढ-अमूढाण पिच्छसु विवाग।
एगाण नरय-दुक्ख अन्नेसि सासय सुक्ख ॥ २१ ॥

२० [सो] जे जगमाहि मूढ[5] मूर्ख अविवेक अधर्म अनइ जे अमूढ धर्मवत विवेकिया ते बिहु रहइ[6] उदरनउ भरिवउ, आपणा

---

[1] प्रधान जे [2] श्रीसिद्धांतोक्त [3] विचार [4] कहै [5] बीजी प्रतमां नथी
[6] रहुर

यननइ घरि लक्ष्मी हुइ तेह त्णइ अनेक तीर्थयात्रा प्रासाद सघ भक्ति दानादिक अनेक पुण्य करी मरी परलोकि सुगतिइ जाइ । आपउ संसार तरइ ॥ ३० ॥

[जि] लक्ष्मी द्विविध स्वइ हुइ । एगा एक लक्ष्मी पुरुषनी ५ गुणरिद्धि दयादाक्षिण्यादिक गुणलक्ष्मी क्षिपावइ नीगमइ । एगा एक लक्ष्मी गुणश्रेणि उल्हसावइ । विन्नातउ [1] अपुण्य अनइ पुण्य तेह बिहु नउ अनुभाव प्रभाव तेहतउ । एतलइ पापानुबधिनी लक्ष्मी पुरुषनी गुणश्रेणि विणासइ । बीजी पुण्यानुबधिनी लक्ष्मी गुणश्रेणि वधारइ ॥ ३० ॥

[मे] लक्ष्मी पुणि बिहु प्रकारि हुइ । एक लक्ष्मी आवती १० हूती पुरुषनइ औदार्यादिक गुण अनइ ऋद्धि बिहुनइ क्षपावइ नीगमइ । एक लक्ष्मी आवती हूती विनयविवेकादिक गुणनइ उल्हसावइ । ते पाप नइ पुण्यनउ अनुभवु जाणिवउ ॥ ३० ॥

[सो] हेव कुगुर कुश्रावकनू स्वरूपु कहइ छइ ।

[जि] अज्ञान गुरु-श्रावकनउ स्वरूप कहइ छइ ।

१५ गुरुणो भट्टा जाया सड्ढे थुणिऊण लिंति दाणाइं ।
दुन्नि वि अमुणियसारा दूसमसमयम्मि बुड्डंति ॥ ३१ ॥

[सो] गुरुणो० ईणइ दुषमाकालि संप्रति गुरु भाट थ्या । जिम भाट ऊद छप्पया करी लोक रीझवी दान लिइ तिम गुरइ वडा पूर्वज गोत्र वणवी श्रावक रजवी आहारवस्त्रादिकना दान २० लिइ । दुन्नि वि वे गुरु अनइ श्रावक अमुणिय० 'दुल्ल' हु

---

१ हुइ ते पाछिल्इ भवि जीवदया सहित जिनधर्म आराधिउ हुइ तेह पुण्यानुबंधिया पुण्यनइ प्रभाविइ हुइ २ अनेकि ३ तु ४ स्वरूप ५ जि दानि ६ दुसमाकालि ७ छपाया ८ 'दुल्ह एहवउं' सुधीनो अंश सा नी पहेली प्रतमाथी पडी गयल होइ बीजी प्रतमाथी लीधो छे

मुहादाई मुहाजीवी वि दुल्लहा । मुहादाई मुहाजीवी दो वि गच्छंति सुगइं[1] । एहवउ जिनवचननउ रहस्य अजाणता बूडइ । संसारसमुद्र माहि घणउ रुलइ ॥ ३१ ॥

[जि] गुरु भाट कीर्त्तिपाठक जाया हूया । सड्ढ श्रावक स्तवीनइ दानादिक लिइ । दोन्नि वि० ते बेई लेणहार ५ देणहार अमुणियसारा अनातजिनवचनरहस्य हूता दूसमयम्मि दु:पमाकालि बूडइ ॥ ३१ ॥

[मे] जे गुरु श्रावकनइ वषाणी दानादिक लिइ ते गुरु भाट सरीषा जाणिवा । ते जिन्हइ वीतरागना वचनरहस्य अजाणता हूता दुक्खमाकालमाहि बूडइ ॥ ३१ ॥ १०

[सो] हिवडा संसारना[1] जाण, धर्मना जाण, सामलणहार नइ कहिणहार[2] थोडा ए वात कही[3] छइ ।

[जि] अथ दुष्पमाकालस्वरूप कहइ ।

मिच्छपवाहे रत्तो लोओ परमत्थजाणओ थोवो ।
गुरुणो गारवरसिया[4] सुद्ध धम्मं[5] निगूहंति ॥ ३२ ॥ १५

[सो] मिच्छपवाहे० घणउ लोक जे मिथ्यात्वप्रवाह बूडउ गुणना विचार पामइ आपणा कुलक्रमागत देव गुरु धर्मनइ प्रवाहि रातउ छइ । परमत्थ० परमार्थ गुण जोई देव गुरुधर्मनउ बोलउ[6] तेहनउ जाण थोडउ । अनइ जे गुरु छइ तेहइ गारव० मान, महत्त्व,[7] प्रतिष्ठा, जिह्वाना रस, सयरना सुख एहे गारवने रसे वाहिया २०

१ ससारना जाण नथी २ कहणहार जाण ३ कहइ ४ गारवरहियं ५ जि मे मग्गं ६ बोल्उं ७ महत्त्व

[जि.] जिम जिम धर्म तूटइ। वली तिम तिम दुष्टाण दुष्टाशय हूइ इह दुषमाकालि उदओ अति प्रौढिमा हुइ तिम तिम सम्यग्दृष्टि जीवहूइ सम्यक्त्व उल्लसइ वाधइ ॥ ४२ ॥

[मे] ईणि दुःखमाकालि जिम जिम धर्म तूटइ ओछउ थाइ तिम तिम पापी जीव दुष्टनइ उदय महत्त्व हुइ। अनइ सम्यग्दृष्टि जीवनइ सम्यक्त्व गाढउ उल्लसइ दृढ थाइ ॥ ४२ ॥

[सो] हवडानइ कालि धर्मना धर्णानइ जे उदय नही। ते कारण कहइ छइ।

[जि] सम्यग्दृष्टि जीवहूइ सम्यक्त्व वाधतइ हुतइ अति उदय न दीसइ।

[मे] हिवडांनइ कालि धर्मवंतइ उदयु नहीं ते कहइ।

जयजंतुजणणितुल्ले अइउदओ ज न जिणमए होइ।
त किट्ठकालसभवजिआण अइपावमाहप्प ॥ ४३ ॥

[सो] जयजंतु० जगना जीव रहइ जननी माता समान छइ ए जिनमत सर्व जीवहूइ सुखदायक हितकारक भणी। एहवा जिनमतमाहि जे जीव रहइ अतिउदय नही, ऋद्धि मान महत्त्व ठाकुराई नही। त किट्ठ० ते क्लिष्टकाल विरूउ दुःसमाकाल हुड अवसर्पिणी भस्मग्रहनइ उदय वगी सहित एवहि कालि ऊपना जे भारेकर्मी जीव तेहना पाछिल्या भवना अतिपापनउ माहात्म महिमा जाणवउ। जे धर्म लहइ छइ ते भव्य जीव आगलि केतरइ कालि मोक्ष जाणहार इसिउ जाणिवउ ॥ ४३ ॥

सूधउ धर्म सरउ मार्ग निगूहति गोपवइ। साचउ प्रकासइ नहीं ॥३२॥

[जि] मिथ्यात्वप्रवाहि रक्त लोक छइ। परमार्थतत्त्वनउ जाण लोक थोडो थोडउ छइ। अनइ गुरु गारवरसिक सुखलंपट हूता ५ सुद्धं मग्गं सुद्धउ मार्ग महाकष्टतप साध्य मार्ग निगूहंति छपावइ। ते दूषमाकालनउ प्रमाण ॥ ३२॥

[मे] लोक प्रवाहइ मिथ्यात्वनइ प्रवाहि रातउ छइ। पणि परमार्थनउ जाण थोडउ। काइ देव गुरुना विचार जोई आस्ता आणइ ते थोरा। तेही गुरु ऋद्धिगारव, रसगारव, सातागारव रसे पूरिया हूता १०सूधउ मार्ग धर्मनउ प्रकासइ नही ॥ ३२॥

[सो] देव-गुरुना स्वरूप जाणतां दोहल्या। ए वात कहइ[1] छइ।

[जि] अथ देवगुरुनउ स्वरूप दुर्ज्ञेय इसु कहइ छइ।

सव्वो वि अरिहं देवो सुगुरु गुरु भणइ नाममित्तेण।
१५**तेसिं सरूव सुहय पुण्णविहूणा न पावंति ॥ ३३॥**

[सो] **सव्वो वि** ए[2] सघलाइ श्रावक लोक नाममात्रि[3] इम कहइ—' अम्हारइ अरिहंत देव सुसाधु गुरु। अरिहंतो मह देवो जावज्जीवं सुसाहुणो गुरुणो इति वचनात्।' **तेसिं सरूव** पुण ते देवगुरुनउ स्वरूप[4] **सुहय** शुभहेतु साचउ। पुण भाग्यरहित जीव न २०पामइ। न ओलखइ[5] ॥ ३३॥

१ कहइ २ सुपुन्नविहूणा ३ मे पाविंति ४ ए नथी ५ नाममात्रइ ६ सुरूप ७ न उलखइ

[जि] उदय० जगज्जतु त्रिभुवनना जीव तेहहइ,जननी मात
तेह समान जिनमत । तेहमाहे अतिउदय ज न होइ जउ न हुइ
क्लिष्टकालसंभव दुषमाकालोत्पन्न जीवहइ पापनउ माहात्म्य जाणि
वउ ॥ ४३ ॥

5 [मे] जगजयना जनुनइ जननी माता समान सुखदाय
एवहा जे जिनमत जिनशासनइ जे उदयु नहीं हुतउ ते क्लिष्टकालि
उपना जे जीव तीया जीवना अतिपापनउ माहात्म्य ॥ ४३ ॥

[सो] केतलु[1] जीव बाह्यवृत्ति डाहउ[2] देखीइ । पु
विपरीतबुद्धि हुइ । तेह पापजिनु उदय । इसिउ जाणिवउ ।, ।

10 [जि] अथ क्लिष्टकालसंभवजीवमाहात्म्य प्रकाशइ ।

धम्मम्मि जस्स माया मिच्छत्तगहो उस्सुत्ति नो सका
कुगुरु वि करइ सुगुरु विउसो वि स पावपुण्ण त्ति ॥४४

[सो] जेह रहइ धर्म करता माया आनइ । मनि अनेरू हु
देखाडइ अनेरउ । **मिच्छत्तगहो** अनइ मिथ्यात्व किमहइ मू
धनही । **उस्सुत्ति नो सका** । उत्सूत्र बोलता करता मनि श
पापनउ भय नही । **कुगुरु०** कुगुरु भ्रष्टाचार तेहइ सुगुरु म
मानइ थापइ । **विउसो वि०** ते लोकमाहि विदुष डाहु म
प्रसिद्ध हुइ तउ ते पापपूर्ण पापिइ भरिउ जाणिवउ । अथवा जे कुगु
भर्णी मानइ ते पाप पुण्य करी मानइं । आगलि तेह रहइ निश्चइ म
20 नथी । 'इवडा' पाडिल्या मानइ अज्ञान कष्टनइ प्रमाणि डाह
चतुराइ आवी छइ ॥ ४४ ॥

---

[1] केतउ [2] डाहाउ

[जि] सघलउइ लोक 'अरिहंत देव, सुसाधु गुरु' इसु नाममात्रि करी भणइ। तेह देवगुरुनउ स्वरूप सुह्य सुखज्ञेय जाणता सुहेतलउ, पुण पुण्यरहित हूता पुण्य विणु न पावंति न लहइ लोक। तेही दुःषमाकालनउ प्रमाण ॥ ३३ ॥

[मे] सघलाइ लोक इम कहइ, 'अम्हारइ अरिहंत देव, सुसाधु गुरु' इम नाममात्र कहइ। पणि ते देवगुरुनउ स्वरूप सुखदायक पुण्यरहित जीव न पामइ ॥ ३३ ॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ।

[जि] अथ मूर्ख जिनाज्ञाप्रतिपालक उपरि द्वेष वहइ। इसु कहइ छइ।

सुद्धा जिणआणरया केसिं पावाण हुंति[1] सिरसूल[2]।
जेसिं ते सिरसूल[3] तेसिं मूढाण ते गुरुणो ॥ ३४ ॥

[सो] सुद्धा जि० जे महात्मा सूधा खरा जिन वीतरागनी आज्ञा पालइ छइ, खरउ चारित्र पालइ छइ। ते महात्मा केतलाइ पापी भ्रष्टाचार रहइ सिरिसूल मस्तकसूल थाइ। जेसिं ते० जे भ्रष्टाचार रहइ सुविहित सिरिशूल थाइ। तेसिं० केतलाइ मूढ मूर्खलोकनइ तेह जि गुरु भणी मानीइ ॥ ३४ ॥

[जि] शुद्धा प्राजल सरलचित्त निर्मल जिणआणरया जिनाज्ञारत पुरुष केही पापियाहूइ सिरसूल मस्तकशूल समान होंति हुइ। एतावता जिनाज्ञापालक पुरुष देखी द्वेष लगी माथइ त्रिसूल चडावइ पापी जीव। जेसिं ते सिरसूल० जेहा पापीयानइ ते मस्तकशूल हुइ तेहा मस्तकशूलधारक मूढ मूर्ख तणा ते जिनाज्ञारत

१ त्रि होंति २ सिरि सूलं ३ सिरि सूलं

[जि] धर्मकार्य ऊपरि जेतलइ माया कपट हुइ अनइ जेहनइ मिथ्यात्वनउ ग्रह कदाग्रह हुइ, जे वली कुगुरु भ्रष्ट गुरु ईसु गुरु करइ ते पुरुष पाप पुण्य जिम पुण्य करी मानइ ॥ ४४ ॥

[सो] धर्मकार्यनइ विषइ जेहनइ माया अनइ मिथ्यात्वनउ जेहनइ कदाग्रह, उत्सूत्र बोलतउ जे शंका नाणइ अनइ कुगुरु रहइ ५ सुगुरु करी मानइ ते विदुष दाहउ हतउ पाप पुण्य करी मानइ ॥ ४४ ॥

[सो] धर्मकर्त्तव्य वीतरागनी आज्ञाइ जि कीधनउ रूडउ। ए वात कहइ।

[जि] अथ जिनेन्द्रनी आज्ञाइ कीधउ धर्मकार्य सफल हुइ। इसु कहइ। १०

किच्च पि धम्मकिच्चं पूआपमुहं जिणिंदआणाए।
भूअमणुग्गहरहिअं आणाभंगाओ दुक्खायं ॥ ४५ ॥

[सो] किच्च पि० करिवा योग्य जे धर्मना कर्त्तव्य देवपूजा प्रासाद दानादिक तेहइ वीतरागनी आज्ञाइ नि करता सफल थाइ। अन्यायनी लक्ष्मीइ करी कहइ रहइ गाढउ ऊचाट संताप करी जिहा१५ पंचेन्द्रिय जीवना वध हुइ एहा मोटा आरंभ करी स्पर्धा कीर्त्तिनइ अभिलाषइ जे धर्मकर्त्तव्य कीजइ ते आज्ञारहित कहीइ। एह जि वात कहइ छइ। भूअमणुग्गह० भूत जीव तेहनउ अनुग्रह अनुकंपा जे धर्मइ करता नही। निर्द्धंधमपणउइ जि हुइ। ते वीतरागनी आज्ञाना भंग भणी दुःखदाई जि थाइ। जिम मिथ्यात्वीना एवडा२० धर्मकर्त्तव्य जीवदयारहित दुःखदायीआइ नि थाइ ॥ ४५ ॥

गुरु हुइ। ते मूढ इसु मानइ जु निराधारक गुरु हुइ। अनेरा नहीं। मिथ्यात्वीइ जैन गुरु माइ। इति भाव. ॥ ३४ ॥

[मे] जे सूधी वीतरागनी आज्ञा पालइ, खरउ चारित्र पालइ ते केवला पापीनइ मस्तकि सूल समान हुइ। जीवांनइ मस्तकि ते
5 सुगुरु सूल समान हुइ, केवलाएक मूर्खनइ तेही गुरु करी मानीइ॥३४॥

[सो] ए वात इइइ छइ।

[जि] अथ मिथ्यात्वप्रबन्धता प्रकाशइ।

हा हा गुरुअ अकज्ज सामी न हु अत्थि कस्स पुक्करिमो।
कह जिणवयण कह* सुगुरु सावया कह इअ अकज्ज ॥३५॥

10 [सो] आहा गुरुअ ए मोटु अकार्य विरूअ। स्वामी ठाकुर को नथी, जे शिक्षा दिइ। कस्स॰ कहइ आगलि पोकारि कीजइ। कह जिणवयण॰ किहा पहुव जिनवचन निष्कलंक अनइ किहा सुविहित सद्गुरु अनइ किहा उत्तम श्रावक। कह इअ॰ किहा ए अकार्य। इहा भ्रष्टाचार अब्रह्मचारी गुरुनउ आराधिवउ। ए मोटउ
15 विरासउ। इसिउ भाव।

[जि] हा हा इति खेदे। गुरुअ अकज्ज मोटउ अकार्य। स्वामी न हु निश्चइ नथी। कस्स पुक्करिमो किह आगलि पूकारां। ते किसु अकार्य? कह जिणवयण॰ किहां जिनवचन, किहा सुगुरु, ते श्रावक किहा, जे सुगुरु श्रावक जिनवचनरहस्य जाणइ। इसिउ
20 अकार्य। जिम किसीइ अपूर्व वस्तु गमी हूतीइ ठाकुर पासइ किह

* सो नी बीजी प्रतनुं १२ सुं पत्र नहीं होवाथी आ स्थानथी मांडीने ४०मी गाथाना बालावबोधनी प्रथम पंक्तिमां मिउं कीजइ शब्दो सुधीनां पाठान्तर नोंधी शकाया नथी

[जि] जग० जगज्जंतु त्रिभुवनना जीव तेहहूइ जननी माता सरीखु समान जिनमत । तेहमाहे अतिजन्य जे न होइ जउ न हुइ तो क्लिष्टकालसमन दुष्षमाकालोत्पन्न जीवहूइ पापनउ माहात्म्य जाणिवउ ॥ ४३ ॥

[से] जगत्रयना जंतुनइ जननी माता समान सुखदायक एहवा जे जिनमत जिनशासननइ जे उदय नहीं हुतउ ते क्लिष्टकालिइ उपना जे जीव तीया जीवना अतिपापनउ माहात्म्य ॥ ४३ ॥

[सो] केतउ[1] जीव मायबुधि डाहउ[2] देखीइ । पुण विपरीतबुद्धि हुइ । तेह पापजिनु जन्य । इसिउ जाणिवउ ।

[जि] अथ क्लिष्टकालसंभवजीवमाहात्म्य प्रकासइ ।

धम्मम्मि जस्स माया मिच्छत्तगहो उस्सुत्ति नो सफा ।
कुगुरु वि करइ सुगुरु विउसो त्ति स पावपुण्ण त्ति ॥४४॥

[सो] जेह रहइ धर्म करता माया आवइ । मनि अनेरु हुइ, देखाडइ अनेरउ । **मिच्छत्तगहो** अनइ मिथ्यात्व किमहइं मूकइ नहीं । **उस्सुत्ति नो सफा** । उत्सूत्र बोल्तां करता मनि शंका पापनउ भय नहीं । **कुगुरु०** कुगुरु भ्रष्टाचार तेहइ सुगुरु भणी मानइ थापइ । **विउसो त्ति०** ते लोकमाहि विदुष डाहु भणी प्रसिद्ध हुइ तउ ते पापपूर्ण पापिइ भरिउ जाणिवउ । अथवा जे कुगुरु भणी मानइ ते पाप पुण्य करी मानइ । आगलि तेह रहइ निश्चइ रूडु नथी । इवडा पाठिल्या मतनइ अज्ञान कष्टनइ प्रमाणि डाहपण चतुराइ आवी छइ ॥ ४४ ॥

---

1 केतलु 2 डाहाव

आगलि पुकार कीजइ । तिम इणि दुषमाकालि निरहस्य सुगुरु श्रावक थोडा ॥ ३५ ॥

[मे] हा दुसिइ रोदि । ए मोटउ अकार्य । स्वामी तीर्थंकर केवली नहीं । कहि आगलि पुकार कीजइ । किहां ते जिनवचन सूधा । किहां ते सुविहित गुरु । किहां ते सूधा श्रावक, जे गुरुनी परीक्षा न ५ करइ । ए मोटउ अकार्य ॥ ३५ ॥

[सो] सुगुरु आश्री वात कहइ छइ ।

[जि] अथ लोकप्रवाह कहइ छइ ।

[मे] हिव कुगुरु भणी वात कहइ ।

सप्पे दिट्ठइ नासइ लोओ न हु किंपि कोइ अक्खेइ । १०
जो चयइ कुगुरुसप्प हा मूढा भणइ[1] त दुट्ठ[2] ॥ ३६ ॥

[सो] **सप्पे॰** साप दीठइ लोक नासइ । अनइ कोइ कांइ न कहइ 'विरूउ कीधउ ।' **जो चयइ॰** जो आणीनइ कुगुरुरूपिउ साप छाडइ । **हा मूढा॰** अहो मूढ केतलाइ मूर्ख इम कहइ, 'ए दुष्ट विरूउ कीधउ । आपणा गुरु मूकी अनेरउ गुरु आश्रियउ' ॥ ३६ ॥१५

[जि] सापि दीठइ लोक नासइ । पुण अनेरउ कोइ लोक नासणहार रहइ **किंपि** काई **न हु अक्खेइ** न कहइ । **जो चयइ कुगुरुसप्प॰** जे पुरुष त्यजइ कुगुरुरूपिउ साप तेहहूइ मूढ मूर्ख **त दुट्ठ** अयुक्त भणइ जु 'इणिइ आपणउ गुरु मेल्ही अनेरउ गुरु कीधउ, तिणि कारणि ए दुट्ठ' इसिउ कहइ । इसिउ न जाणइ जु२० इणिइ कुगुरु मेल्ही सुगुरु आश्रउ ॥ ३६ ॥

---

१ जि मे भणहि २ जि दुट्ठ

[जि] कष्ट करइ । आपणपउ दमइ । धमार्थी लोक द्रव्य गृह सर्वस्वसार चयति त्यजइ । एतलउ पूर्वोक्त करइ । पुण एक उत्सूत्रविषलव न त्यजइ, जिणि उत्सूत्रविषलवि करी जीव संसारसमुद्रि बूडइ । तिणि कारणि उत्सूत्र बोलिवउ नहीं ॥ ४६ ॥

[मे] कष्ट करइ । आपणपउ दमइ । इंद्रिय वशि करइ । ५ धर्मनइ कारणि शत सहस्र धन वेचइ । पणि एक उत्सूत्रनउ लवलेश न मूकइ, जेह लगी संसारसमुद्रमाहि बूडइ ॥ ४६ ॥

[सो] धर्मवंति सुगुरुनी संगति करिवी । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ सुसमार्गि धर्मोपराग बाधइ इसु कहइ ।

[मे] पुण्यवंते सुगुरुनी संगति करिवी । १०

सुद्धविहिधम्मराओ वड्ढइ सुद्धाण संगमे सुअणा[1] ।
सो विअ असुद्धसंगे निउणाण वि गलइ अणुदिअह[2] ॥४७॥

[सो] सुद्धविहि॰ सूधी विधि खरउ आचारु खरउ धर्म तेह ऊपरि अनुराग बाधइ । सुद्धाण स॰ जु सूधा खरा[3] चारित्रिया गुरु अथवा खरा श्रावकनी संगति करइ । हे सुजन ! सो विअ॰ तेः१५ खरी विधि खरा धर्मनउ अनुराग असुद्ध[4] भ्रष्टाचारु गुरु भ्रष्ट श्रावकनी संगति करइ ते निउणाण नि डाहाइ रहइ गलइ जाइ । निरंतर[4] ऊछउ थाइ । यत उक्तं श्रीउपदेशमालायां—

> आलावो संवासो वीसंभो संथवो पसंगो अ ।
> हीणायारेहिं समं सव्वजिणिंदेहिं पडिकुट्ठो ॥ २०

---

[1] जि मे सुयणु [2] 'खरा चारित्रिया गुरु अथवा' एटलुं नथी [3] असुद्ध ज [4] निरंतर

[मे] सापि दीठइ लोक नासइ। तेहनइ लोक पणि कांई न कहइ जि 'विरूअउ कीधउ।' जे कुगुरुरूपीउ साप छाडई त्यजइ। ता हसिइ लोकि। मूढ मूर्ख केतला इम कहइ, 'ए दुष्ट ईणइ विरूअउ कीधउ'॥ ३६॥

5 [सो] साप पाहइ कुगुर अधिकउ। ए वात कहइ छइ।

[जि] सापई थ पाहिइ कुगुरु दुष्ट। इसिउ देखाल्इ छइ।

सप्पो इक्क मरणं कुगुरु अणंताइं देइ मरणाइं।
तो वर[1] सप्प गहिअं मा कुगुरुसेवणं भद्द॥ ३७॥

[सो] **सप्पो॰** साप डसइतउ एक जि वार मरण दिइ। 10 **कुगुरु॰** गच्छाचारी गुरु अनेक कुमार्ग प्ररूपतउ सेवक रहइ अनंता मरण दिइ। घणउ ससार वधारइ। **तो वर॰** तेह भणी अहो भद्र! उत्तम साप लीधउ रूडउ। **मा कुगुरु॰** पुण कुगुरनउ सेविवउ रूडु नही॥ ३७॥

[जि] सर्प इक्क एक मरण दिइ सेविउ हूतउ। कुगुरु 15 सेविउ हूतउ अणंता घणा मरण दिइ। तो तेणि कारणि सापनउ लेवउ रूडउ। पुण कुगुरुनउ सेविवउ रूडउ नही, हे भद्र! हे सुज्ञ!॥ ३७॥

[मे] सापु कुपिउ हूतउ एक वार मरण दिइ अनइ कुगुरु सेविउ अननां मरण दिइ। तेह भणी साप झालिउ, ग्रहिउ भलउ। हे भद्र! कुगुरुनउ सेविवउ रूडउ नहीं॥ ३७॥

20 [मो] एहा कुगुर जीव छाडइ नहीं। किसिउ कीजइ। ए वात कहइ छइ।

1 जि वरि.

[जि] जिनेंद्रनी आज्ञाईं जि करी **पूआपमुह** पूजाप्रमुख धर्मकार्य नीच करियउ। जनेरउ किसुउ कहिवउ। जइ जिनपूजादिक धर्मकार्य वीतरागनी आज्ञाइं करइ तउ सफल। अन्यथा निष्फल इति भाव। **भूयमणुकम्परहिअ आणाभगाउ दुहदाय**। जिनाज्ञा
5 भांजनउ जीवानुकंपारहित हूतउ धर्मकार्य कीधउईं सामुहु दुःखदायक हुइ ॥ ४५॥

[श्रे] कर्त्तव्य धर्मना करणीय वांदणां पडिक्कमणां पूजाप्रमुख वीतरागनी आज्ञाइं जि करतां सफल थाइ। भूत प्राणी तेहनउ अनुग्रह अनुकंपा तिणि करी रहित ईणिहिं जि कारणि आज्ञानउ भंग। अनइ
10 तेह आज्ञाभंग लगी धर्मना कर्त्तव्य दुःखदायक हुइ ॥ ४५॥

[सो] एक जीव घणाइं धर्मकर्त्तव्य करइ। पुण काईं मिथ्यात्व न छांडइ। एह ऊपरि कहइ छइ।

[जि] अथ मिथ्यात्वी लोकहूइं हितवचन बोलइ।

कट्ठ करंति अप्पं दमंति दव्वं चयंति धम्मत्थं[1]।
15 **इक्कं न चयंति मिच्छत्तविसलवं जेण बुड्डंति ॥ ४६ ॥**

[सो] **कट्ठ करंति०** एक जीव छट्ठट्ठम मासक्षपणादिक अनेक तपना कष्ट करइ। **अप्पं दमंति** आपणपउ दमइ। शील पालइ। अनेक खावापीवांना नियम पालइ। **दव्वं चयंति०** धर्मनइ कारण[1] लक्ष्मी सइ सहस लाष कोडिप्रमाण वेचइ। **इक्कं न चयइ०** पुण
20 एक मिथ्यात्वरूपिआ विसनउ[4] लव न मूकइ। काईं काईं मिथ्यात्व करइ जि। **जेण बुड्डंति** जीणइं मिथ्यात्विं[5] करी संसारसमुद्रमाहि बूडइ[6] ॥ ४६ ॥

---

१ जि धम्मत्थी २ से चयहिं ३ कारणि ४ विसनु ५ मिथ्यात्व ६ बूडइं

[जि] अथ लोक गड्डरिकापवाहि पडिउ हूतउ काई न मानइ। इसु कहइ रइ।

जिणआणा वि चयता गुरुणो भणिऊण ज नमिज्जति।
ता कि कीरइ लोओ छलिओ गड्डरिपवाहेण ॥ ३८॥

[सो] **जिण०** जे जिन वीतरागनी आज्ञा छाडइ छइ 5 विराधिइ छइ, तेहइ गुरु भणी लोके ज नमस्करीइ वादीइ वादणां दीजइ। **ता किं०** तउ सिउ थाइ। लोक गड्डरिकाप्रवाहि छलिउ व्यापिउ छइ। जेहि एक गाडरी जाइ तीहि बीजी गाडरी जाइ। तिम एक लोक करता देखी बीजाइ ति करइ ॥ ३८॥

[जि] **जिणआणा वि०** जिननी आना त्यजता मूकना10 जे छइ तेही **गुरुणो भणिऊण** गुरु करी जत् जे **नमिज्जति** नमस्करीइ वान्णा दीजइ। **ता** तउ पछइ गड्डरिकाप्रवाहि करी छलिउ हूतउ लोक **कि कीरइ**। अपि तु लोक काइ न जाणइ। जिम गाडर पशु गाडर केडइ जाइ, तत्त्वातत्त्वविचार काई न जाणइ, तिम लोकई ॥ ३८॥ 15

[मे] जिननी आना छाडता जे छइ तेहनइ जे गुरु करी नमइ, तउ लोक बापडउ किम्उ करइ। सघलुयइ गड्डरीप्रवाहि छलिउ। जिहा एक गाडरु काई देषीनइ जाइ तिहां सघली गाडरी प्रवाहि पडी जाइ तिम लोक तत्त्वार्थ अणजाणता एकि माहरा करीनइ जाइ। अनइ बीजा प्रवाहि देषावेषि जाइ मानइ ॥ ३८॥ 20

[सो] कुगुरु छाडता लोक दाक्षिण्य करइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] लोक कुगुरु मेल्हतउ दाक्षिण्य करइ। अनेरइ स्थानकि दाक्षिण्य न करइ। इसु कहइ।

[जि] कष्ट करइ। आपणपउ दमइ। यथार्थी लेई त्रव्य गृह सर्वस्वसार चयति त्यजइ। एतलउ पूर्वोक्त करइ। पुण एक उत्सूत्रविषलव न त्यजइ, जिणि उत्सूत्रविषलवि करी जउ संसारसमुद्रि बूडइ। तिणि कारणि उत्सूत्र बोलिवउ नहीं ॥ ४८ ॥

[मे] कष्ट करइ। आपणपउ दमइ। [illegible] धर्मनइ कारणि शत सहस्र धन वेचइ। पणि एक उत्सूत्र [illegible] न मूकइ, जेह लगी संसारसमुद्रमाहि बूडइ ॥ ४९ ॥

[सो] धर्मरति सुगुरुनी संगति [illegible]। [illegible]।

[जि] अथ सुसंसर्गि धर्मोपराग [illegible]।

[मे] पुण्यवंते सुगुरुनी संगति [illegible]।

सुद्धविहिधम्मरागो वड्ढइ सुद्धाण संगि सुगुणाणं।
सो पिअ असुद्धसंगे निउणाण वि [illegible] ॥५०॥ १०

[सो] सुद्धविहि० सूधी विधि [illegible] धर्म तेह ऊपरि अनुराग वाधइ। सुद्धाण स० [illegible] चारित्रिया गुरु अथवा खरा श्रावकनी संगति करइ। [illegible] सो पिअ० तेउ खरी विधि खरा धर्मनउ अनुराग [illegible] श्रावकनी संगति करइ ते निउणाण वि [illegible]। [illegible] उछउ थाइ। यत उक्तं श्रीउपदेशमालायां—

आलाओ संवासो वीसंभो [illegible] य।
हीणायारेहिं समं सव्वजिणिंदेहिं पडिकुट्ठो ॥

१ जि मे सुगुण. २ [illegible]

निद्दक्खिण्णो लोओ जइ कुवि मग्गेइ रुट्टिआखंडं।
कुगुरूण सगन्थयणे दक्खिण्णं ही महामोहो ॥ ३९॥

[सो] निद्दक्खिण्णो० लोक एहनउ निर्दाक्षिण्य, जइ कोई रोटीनउ खड कटकउ मागइ तउ न दिइ। थोडउ पाणि दाक्षिण्य न ५करइ। कुगुरूण० अनइ कुगुरनउ संग एवडा अनथनउ हेतु ते छउ तहीं दाक्षिण्य करइ। पाणि आणइ। ही महामोहो आहा ए महामोह, मोटउ अजाणिपउ, गाढउ मूर्खपणउ कहीइ ॥ ३९ ॥

[जि] लोक निदाक्षिण्य गुणरहित छइ। जइ कुवि जउ कोई रोटीनउ कटकउ मागइ, तउ दाक्षिण्य मेल्ही रोटीकुटकई न दिइ १०कुगुरु भ्रष्ट गुरुनउ ससगे तेहनइ मेल्हिवइ दाक्षिण्य करइ। ही खेदे महामोहो मोटउ अनाणिवउ ॥ ३९ ॥

[मे] लोक एहनउ निर्दाक्षिण्य। जइ को रोटीनउ खड मागइ तउ हि नापइ। अनइ कुगुरुना संगनउ त्यजिवउ तिहा दाक्षिण्य करइ। कहइ, 'हउ आपणा प्रियागत गुरु किम मूकउ'। पणि इ १५ईसउ खेदि ए सह महामोहनउ विलसित ॥ ३९ ॥

[सो] वली कुगुरु आश्री कहइ छइ।

[जि] अथ मिथ्यात्वीनउ विलसित देखाडइ।

किं भणिमो किं करिमो ताण हयासाण धिट्ठदुट्ठाण।
जे दसिऊण लिंग खिवंति नरयम्मि मुद्धजणं ॥ ४० ॥

२० [सो] किं भणिमो० सिउ बोलीइ। सिउ कीजइ। ते हूंइ हताश अभागिया रहइ, धीठ रहइ, दुष्टचित्तहूंइ दसिऊण० जे लिंग महात्मानउ वेष आपणपामाहि देखाडी

---

१ रहई रहई

अनुन्नजपिर्गहि हसिउद्धुसिर्गहिं गिप्पमाणो अ ।
पासत्थमज्झयारे बला वि जई वाउली होइ ॥ (गा २२३-२४

[जि] हे मयण स्वजन ! **सुद्धाण संगमे** शुद्ध गुरु
सनोगि सुद्ध विधि निर्भगचार धमानुराग वाधइ । **सो विअ** ही
५ शुद्धविधिधमानुराग अशुद्ध भ्रष्टचारित्रियानइ प्रसंगि **निउणाण**
निपुण डाहाइनउ अनुदिन प्रतिदिन गलइ विणसइ । मूपनउ धर्मानुरा
कुसर्गि विणसइ । तेहनउ सिउ ॥ ४७ ॥

[मे] सूधी वीतरागनी भाषी विधि तेहनइ विषइ अनुर
वाधइ । सुद्ध खरा चारित्रिया तेहनइ सगमि । हे स्वजन ! ते
१० अमूधा उत्सूत्रना बोलणहार तेहनइ सगिइ निपुण डाहाइनइ वि
धम्मनी मति गलइ । अनुदिवस निरतर ॥ ४७ ॥

[सो] जिहा भ्रष्टाचारनु बल हुइ तिहां धमवतिइ न वसिव
ए वात तिहु गाहे कहइ छइ ।

[जि] मिथ्यात्वीमाहे श्रावकि न वसिवउ । इसु कहइ ।

१५ [मे] जिहा कुचारित्रिया बसइ रहइ तिहा धर्मवते वसि
नहीं । ए सबध तिहु गाहे कहइ ।

जो सेवइ सुद्धगुरू असुद्धलोआण सो महासत्तू ।
तम्हा ताण सयासे पलरहिओ मा वसिज्जासु ॥ ४८ ॥

[सो] जे सुद्ध गुरु सुविहितचारित्रिया तेहनी सेवा कर
२० **असुद्धलोआण०** असुद्ध मिथ्यात्वी भ्रष्टाचार रहइ जे आश्रित
१ छइ तेह रहइ ते महावइरी जेह भणी ते तेहरहइ[1] उच्छेदिवा जि[2] वा
तम्हा ताण० तेह भणी मिथ्यात्वी भ्रष्टाचाराश्रित लोक

१ रहइ २ ॰ नथी

खिंयति० मुग्धजन लोक लोकनइ कुमार्गे सीषवीनइ नरगि घालीइ छइ। दुर्गति पडइ छइ ॥ ४० ॥

[जि] तेहा हताश मन्नाश घेठा महादुष्ट मिथ्यात्वी तणउं गिमु भणा। तेहहुइ किमु करा। जे मिथ्यात्वी लिंग दर्शनीनउ वेषमात्र देखालीनइ मुद्धजण मुग्ध लोक लोकहुइ नरकमाहे घातइ ॥ ४० ॥

[मे] किमउ भणा। केहा किसउ करां। हत हणी आश जेहनी ते हताश तीया हताशनइ दुष्टानइ घेठानइ। ते कउण। जे ओघउ मुहपत्ती रूप वेष देषाडीनइ मुग्ध भोला लोकनइ नरकमाहि षेपइ ॥ ४० ॥

[सो] कुगुरु आश्री निंदास्तुतिं प्रथकार कहइ छइ।

[जि] भव्यलोकहुइ कुगुरु देखी सुगुरु उपरि गाढी भक्ति उलसइ। इसु जणावइ।

कुगुरु वि ससिमो ? जेसिं मोहाइ चिडिमा दट्ठु।
सुगुरूण उवरि भत्ती अइनिविडा होइ भव्वाण ॥ ४१ ॥

[सो] कुगुरु वि० ते कुगुरुइ वषाणउ भलइ दीठा जेसिं० जेहनी मोहादिक चेष्टा अब्रह्मचारीपणुं अनइ क्रोधादिके करी क्रूरपणउ देखीनइ सुगुरूण० सुगुरु सुविहित चारित्रीया उपरि अति गाढी भक्ति भव्य रहइ उपजइ। कुमति दीठी पापइ माति ऊपरि मन न वइसइ ॥ ४१ ॥

[जि] ईहां ग्रथकार श्रीनेमिचंद्र भटारी कहइ छइ जउ हउ कुगुरु भ्रष्टचारित्रीया गुरुई ससिमो प्रसंसउ वर्णवउ

१ भोला २ घातइं ३ छइ' नथी ४ अइनिवडा ५ पणउ ६ भव्य जी

थानकि बलरहित हुतइ न वसिवउ । जु कांई ठाकुर महता प्रधाननउ बल हुइ तउ वसिवउ ॥ ४८ ॥

[जि] जे पुरुष शुद्ध गुरु सेवइ ते शुद्ध गुरु सेवणहार श्रावक **असुद्धलोआण** मिथ्यात्वाश्रितहइ **महासत्तू** महावइरी । **तम्हा** तिणि कारणि **ताण समासे** तेहा अशुद्ध लोकनइ समीपि **बलरहिओ** । नीबल हुतइ श्रावकि न विसवउ । किन्तु साहम्मीमाहे वसिवउ ॥ ४८ ॥

[से] जे सूधा गुरुनइ सेवइ ते अशुद्ध लोक मिथ्यात्वी भ्रष्टाचारीनइ ते महावयरी जेह भणी तेहनइ उच्छेदिवा वाछइ । **तम्हा** तेह भणी भ्रष्टाचारी मिथ्यादृष्टि आश्रित लोक पन्हइ श्रावकि बलरहित हुतइ वसिवउ नहीं ॥ ४८ ॥ १०

[जि] एह जि अर्थु प्रकारान्तरि कहइ ।

समयविऊ असमत्था सुसमत्था जत्थ जिणमए अविऊ ।
तत्थ न वहइ धम्मो पराहवं लहइ गुणरागी ॥ ४९ ॥

[सो] **समयविऊ** सिद्धान्तना जाण धर्मवंत जिहा असमर्थ हुइ । **सुसमत्था०** अनइ जिहां जिनमतना अजाण १५ मिथ्यात्वी भ्रष्टाचारी अतिसमर्थ हुइ । **तत्थ न वहइ०** तिहा धर्म न वर्त्तइ । चालइ नहीं । तिहा **पराहव०** गुणनउ अनुरागी धर्मी[१] जीव पगि पगि पराभवइ[२] जि लहइ । अपमान जि पामइ ॥ ४९ ॥

[जि] जिणि स्थानकि **समयविऊ** सिद्धान्तना जाण जैन असमर्थ हुइ अनइ वली **जिणमए अविऊ** सिद्धान्तना अजाण २० मिथ्यात्वी लोक तिहा **सुसमत्था** अतिसमर्थ सबल वसइ तिहा

१ म परामव २ धर्माथि ३ परामव

जेसिं जेहा कुगुरुनी मोदादिक **चडिमा** क्रूरता **दट्ठु** देखी करी सुगुरु सुविहित ऊपरि भक्ति अतिनिविड अनिगाढी भविक जीवहूइ हुइ। जिम ऊमति दीठीइ मातिइ मन रहइ ॥ ४१ ॥

[**से**] ते कुगुरु वखाणउ इ भल्इ दीठउ। जेहनी अजाण
५ सेनादिक कुचेष्टा देखी अनइ सुगुरु ऊपरि भक्ति अतिनिविड हुई। गनिक जानइ कारणि ॥ ४१ ॥

[**सो**] विरूउ काल देखी जाणइहूइ विशेष सम्यक्त्व उल्लसइ। ए वात कहइ छइ।

[**जि**] अथ मिथ्यात्वोदयिई हूतइ भव्य जीवहूइ सम्यक्त्व
१०उल्लसइ। ए वात कहइ।

जह जह तुट्टइ धम्मो जह जह दुट्ठाण होइ अइउदओ[१]।
सम्मद्दिट्ठिजियाण तह तह उल्लसइ सम्मत्तं ॥ ४२ ॥

[**सो**] ईणइ पाचमइ आरइ दुखमाकालि जिम जिम धर्म त्रूटइ ओछउ[२] थाइ। **जह जह दुट्ठाण०** अनइ जिम जिम दुष्ट
१५पापी जीव रहइ अतिउदय ठाकुराई ऋद्धि मान महत्त्व हुइ। **सम्मद्दिट्ठि०** तिम तिम सम्यग्दृष्टि जाण जीव रहइ सम्यक्त्व गाढउ गाढउ उलसइ दृढ थाइ। जिसिउ परमेश्वरि दुखमाकालनउ स्वरूप कहिउ हूतउ तिसिउइ जि देखीइ छइ। इम परमेश्वरना वचन ऊपरि आस्था आवइ। जिम ए साचउ तिम बीजाइ परमेश्वरना वचन साचा।
२०इसी परि सम्यक्त्व दृढ थाइ ॥ ४२ ॥

---

१ जि इह उदओ २ उछउ

वसना श्रावकाउ धर्म न वाधइ। किंतु सामुहउ धर्मानुरागी श्रावक पराभव लहइ ॥ ४९ ॥

[मे] समय सिद्धांत तेहना जाण तिणि असमर्थ हुइ अनइ जिनमतना अजाण जिहां गाढा समथ हुइ तिहा धर्म वाधइ नहीं। ५ तिहा गुणानुरागी धर्मवंत पगि पगि पराभव लहइ। हलूपण पामइ ॥ ४९ ॥

[सो] कुमार्गी पापी समर्थ हुतउ ज धर्मना काम माहि न मिलइ तउ रूडउ। ए[1] वात कहइ छइ।

[जि] मिथ्यात्वी लोक धर्मवंत न हुइ तउ भलउ। तेहनउ १०कारण कहइ।

ज न करइ अइभाय कुमग्गसेवी[2] समत्थओ धम्मे।
ता लट्ठ अह कुज्जा ता पीडइ सुद्धधम्मत्थी ॥ ५० ॥

[सो] ज न करइ० ज अमार्गसेवी कुमार्गी मिथ्यात्वी खुट खरड[3] राजादिकि मानिउ समर्थ हतउ धर्मनइ विषइ अतिभाव न १५करइ, धर्मना कामंमाहि न मिलइ **ता लट्ठ** तु रूडउ। **जु** धर्मनां काजमाहि मिलइ, माहिल्यां[4] मम जाणइ तउ **ता पीडइ०** शुद्ध धर्मार्थी रहइ वाडी[5] भाडीइ करी पीडइ। अथवा ज ते मिथ्यात्वी समर्थ हुतउ आपणा धर्म मिथ्यात्व[6] म्लेच्छादिकना मत उपरि अतिभाव न करइ, खरड वटीगइ जि जउ हुइ तउ भलउ। जउ ते आपणा मत २०उपरि घणउ भाव करइ तउ आपणा मतनइ कदाग्रहइ वीनाइहूइ

१ 'ए छइ' नथी २ जि उमग्गसेवी, मे अमग्गसेवी ३ खरड चाड ४ माहिला ५ वाडीवाडीई ६ मिथ्यात्वी

आपणा मत मनाविवा भणी शुद्ध धर्मार्थी रहइ पीडइ । आपणउ धर्म करावइ बलात्कारिइ ॥५०॥

[जि] उन्मार्गसेवी मिथ्यात्वी समर्थ सबल हूतउ धर्म ऊपरि अतिभार गाढी वासना ज न करइ **ता लट्ठ** ते भलउ । अह अथवा मिथ्यात्वी धर्म ऊपरि आदर करइ **ता** तउ पठइ **सुद्धधम्मत्थी** ५ निर्मल धर्मकरणहारहूइ पीडइ दूहवइ ॥५०॥

[मे] जे कुमार्गनिउ सेवणहार समर्थइ हूतउ धर्मनइ विषइ अतिभार न करइ धर्मना काममाहि मिलइ नही **ता लट्ठ** तउ रूडउ । अथ जउ किमइ करइ तउ आपणा मत मनाविवा भणी शुद्ध धर्मार्थीनइ धाडीहनी करी पीडइ । आपणउ धर्म बलात्कारि करावइ१० ॥५०॥

[सो] जइ सर्व श्रावकहूइं एकपणु हुइ तउ धर्मनइं पराभव करी न सकइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] श्रावकहूइ वसिवानउ प्रकार कही साहम्मीमाहे समेला होइवउ । इसु भइइ छइ । १५

जइ सव्वसावयाणं एगत्तं हुज्ज मिच्छवायम्मि ।
धम्मट्ठियाण सुंदर ता कह णु पराहवं कुज्जा ॥५१॥

[सो] जइ **सव्व०** जइ सर्व पक्षना श्रावक रहइ मिथ्यात्वना वादनइ विषइ एकमत हुइ । सविहूनउ मनु एक सरिखउ मिथ्यात्व निर्लोठवा अथवा जिनमत स्थापवा ऊपरि हुइ तउ२० **धम्मट्ठियाण०** धर्मार्थी लोक रहइ हे सुन्दर । **ता कह०** तउ मिथ्यात्वी पराभव अपमान किम करत २ न करत । पुण कालनइ

१ रहइं २ धम रहइ ३ जि कहण,

निद्रा निद्रानी चेतना नाठी । अथवा ... वेइ ... जिन वीतराग लाधउइ अणलाधउ । ...
वीतराग ... हुउ ॥ ६० ॥

[सो] केतलाइ मूर्ख पडिक्रमण्यं हुइ ...
रहइ हसइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनधर्म हास्यस्थानक ...

[मे] केतला मूधा धर्मना करणहार ...

इअराण वि उवहास तमजुत्त ...
एस पुण कोवि अग्गी ज हास ...

[सो] इअराण० इतर अर्थ ...
कीजइ, हे भ्रात बांधव ! कुलीन जे पुरुष ...
रहइ तेहइ करिवा न लाइ । एस पुण० ...
विरुड । ज हास० ज शुद्ध निर्मल ...
हसीइ ॥ ६१ ॥

[जि] हे भाय हे भ्रात ! ...
जे हुइ ते उपहास्य कुलप्रसूतहइ ...
हासउ मूर्खई न करइ । एप पुन कोइ ... आगि
जउ शुद्धइ निर्मलइ धर्मि हासउं ॥ ६१ ॥

[मे] इतर पामर लोक ... प्रमुख तेहनइ
हे बांधव ! युक्तउ नहीं । ए कोइ ... मूधा ...
हासउ कीजइ ॥ ६१ ॥

---

१ मन्यइ २ तीहनु ३ हर्ष ...

विनेपिइ मालेभाडि जि चूजूना मा। तीगइ परी मिथ्यात्वी पराभव
करइ ॥५८॥

[जि] जइ किवइ सर्वे श्रावकहूइ एकमत एकधर्मीपणउ हुत
होयते ता तउ हे सुन्दर¹ मिथ्यात्वमाहे धमार्थी धनव
५ श्रावकहूइ कारणि कउण एक पराभव अपमान कुडा करत² अपि
तु श्रावकहूइ कोइ पराभव न करत। किं तु मा कोइ गणत ॥५८॥

[से] नउ जिमइ सर्वे पहिला श्रावक मिथ्यात्वी साथि मिलि
उपराइ हनइ एकइ मति हुइ तउ हे सुन्दर¹ धर्मार्थी धर्मस्थित तेहनइ
कहउ म, कउण पराभव करत² अपि तु कोई न करत ॥५१॥

---

१० [सो] जे पुरुष महाढक धर्मनु आधार हुइ तेहनी प्रशंस
करइ छइ।

[जि] अथ श्रावकाहे मोग श्रावकहूइ गल्हपडि देखाल्इ।

त जयइ पुरिसरयण सुगुणड्ढ हेमगिरिवरमहग्घ।
जस्सासयम्मि सेवइ सुविहिरओ सुद्धजिणधम्म ॥५२

१५ [सो] ते पुरुषरूपिउ रत्न जयवन्त वत्तउ। **सुगुण**
उत्तमगुणे करि आढ्य पूरिउ। **हेमगिरि॰** सोनानउ¹ पर्वत मेर तेहन
परि महार्घ² ते पुरुष सर्वोत्तम कहिवाइ। **जस्सासयम्मि** जेहन
आश्रइ जेहनइ बलि³ सान्निध्यइ करी **सुविहिरओ** सुविहित साच
धर्मनउ आराधक सूधउ निष्कलंक जिनधर्म सेवइ आराधइ। जेहन
२० बलि धर्म चालइ, जे पुरुष धर्मतनइ आधार दिइ ते पुरुष गाढ
उत्तम कहीइ ॥५२॥

१ जि से जयउ २ सोनानु ३ महर्घ्य ४ बाळ ५ गाढ

[सो] गाथा मिथ्यात्वी पापीई रहइ उत्तम हित करिवउ वांछइ[1]। ए वात कहइ छइ। बिहु गाहे करी।

[जि] अथ सत्पुरुष दुष्टईहूइ हित करइ। इमु जाणवइ।

दोसो जिणिंदवयणे सतोसो जाण मिच्छपावम्मि[1]।
५ **ताण पि सुद्धहियया परमहिअ दाउमिच्छंति ॥ ६२ ॥**

[सो] **दोसो०** जेह रहइ जिनेन्द्रना वचन ऊपरि वीतरागना धर्म ऊपरि द्वेष[4] अनइ मिथ्यात्वि पाप ऊपरि संतोष छइ, मन तिहां गरूउ छइ। **ताण पि०** जेहनां हियां सूधां निष्कपाय निर्मल छइ ते तेहइ रहई धर्महित देवा वांछइ। धर्मनु लाभ करिवु[6] चीतवइ। जाणइ १० किम्हइ ए[7] बापडा धर्म मिलइ तु रूडउ ॥ ६२ ॥

[जि] जाण जेहहूइ जिनेन्द्रनां वचन ऊपरि द्वेष हुइ, वली जेहहूइ मिथ्यात्त्ववाद ऊपरि संतोष हुइ, एतावता जिनवचन जे न मानइ, कि हु मिथ्यात्त्व मानइ तेहईहूइ शुद्धहृदय निर्मलचित्त सत्पुरुष परम हित देवा वांछइ ॥ ६२ ॥

१५ [मे] जेहनइ जिनेन्द्रना वचन ऊपरि द्वेष हुइ, जेहनइ मिथ्यात्त्व ऊपरि संतोष हुइ, तीयाहनइ शुद्धहृदय निर्मल चित्तना धणी परम हित देवा वांछइ ॥ ६२ ॥

[जि] अथ पूर्वोक्त अर्थ युक्तउ करी स्थापइ।

अहवा सरलसहावा[8] सुअणा सव्वाथ हुति अविअप्पा।
२० **डहुतविसभराण[9] नि कुणति करुण दुजीहाण ॥ ६३ ॥**

१ पापी २ चीतइ ३ मिच्छपायम्मि ४ द्वेष ५ तेहरई ६ करिवउ ७ एहइ ८ मे सहावा ९ कि मे हाति

[जि] ते पुरुषरत्न जयवंतु हुउ। किसउ छइ पुरुषरत्न [1] **सुगुणड्ढ** सु भला परोपकारादिक गुण तेह करी आढ्य समृद्ध भरिउ पूरिउ। वली किसु छइ [2] हेमगिरिवर मेरु पर्वत तिहं सरीषउ महर्घ्य पूज्य मानीतउ। मोटाई करी मेरुपर्वत सरीषउ। ते पुरुषरत्न कउण [2] **जस्सासयम्मि** जेह पुरुषरत्ननइ आश्रयि आधारि सुविहित ५ सन्मार्गसेवणहार सुश्रावक **सुद्धजिणधम्म** निर्मलउ जिनधर्म सेवइ ॥ ५२ ॥

[मे] ते पुरुषरत्न जयवंतउ हुउ, जे सोभन भला गुण तिणि करी आढ्य सहित। वली ते पुरुष केहवउ [2] मेरुपर्वत तेहनी परि महर्घ्य। जेहनइ आश्रइ मानिज्य रुगी सुविधि भली विधि तेहनइ विषइ १० तत्पर हूतउ सूधउ जिनधर्म सेवइ आराधइ ॥ ५२ ॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ।

[जि] वली संधि पुरुषिहूइ मोटाई प्रकासइ।

सुरतरुचिंतामणिणो अग्घ न लहंति तस्स पुरिसस्स।
जो सुविहियजणाण धम्माधार सया देइ ॥ ५३ ॥ १५

[सो] कल्पद्रुम चिंतामणि लोकमाहिं मनोवांछित देनहार [1] मणी अति उत्तम कहीइ। पुण तेह पुरुषनउ ते अघ मूल न लहइ। ते पुरुष तेहइ पइ [2] गाढउ [3] उत्तम। **जो सुविहि०** जे पुरुष सुविहित खरी विधि खरी सामाचारीना आराधणहार [4] लोक रहइ धर्माधार सदैव दिइ। कल्पद्रुम चिंतामणि एकइ [5] जि भवि इह२० लोकनु उपकार मात्र करइ। आ पुरुष धर्मनु उपकार करतउ

१ दिहार २ पाहइ ३ गाढ ४ आराधहार ५ एक

[सो] अरवा० अथवा जे सुजन हुइ ते सविहु ऊपरि सरलस्वभाव हुता क्रिहाइ विस्त्तर नाणइ। रूडा नइ विरूआइ सविहु ऊपरि हित चीनवइ। छड्डुत० जे द्विजिह्व साप विपना भर समूह छांडइ गरलइ जि मूकइ ते ऊपरि उत्तम दयाइ जि करइ। जे चाड दुर्जन कुवचन बोलइ ते ऊपरि उत्तम 'ए बापडउ रिमइ पुण्य पामिसिइ?' इसी दया नि करइ ॥ ६३ ॥

[जि] अथवा सरलस्वभाव स्वजन सगा सर्वत्र अविकल्प विकल्परहित हुइ। जिम लोक आपणा लोचन ऊपरि विकल्प भेद आनरउ काई न करइ। तथा ते वली सर्परूप द्विजिह्वहइ करुणा दया करइ। जिम श्रीपार्श्वनाथि सर्प ऊपरि दया कीधी ॥ ६३ ॥ १०

[मे] अथवा सरलस्वभाव जे स्वजन ते सघलें निहाई विस्तर नाणइ। समभाव आणइ। विपनो भर गरल छाडइ छई जे द्विजिह्व सर्प तीहइ ऊपरि करुणा आणइ। जे चाड दुर्जन कुबोल बोलइ तेहइ ऊपरि उत्तम चीतवइ जि 'ए बापुडउ किमही पुण्य पामिस्यइ?' इसी जे दया करइ ॥ ६३ ॥ १५

[सो] सम्यक्त्व गाढ़ दुर्लभ छइ। ए वात कहइ छइ।

[सो] अथ विरला केई एकहूइ सम्यक्त्व छइ। नै सघलाई॰ हूइ। इसुं कहइ।

[मे] सम्यक्त्व गाढउ दुर्लभ छइ। ए वात कहइ।

गिहवावारविमुक्के बहुमुणिलोए वि नत्थि सम्मत्तं। २०
आलंबणनिरयाणं सड्ढाण भाय किं भणिमो ॥ ६४ ॥

---

१ रूडाई २ 'जि' नथी ३ तहइ ४ दया ५ जि से गिहि॰

स्वर्गमोक्षादिकाई सुख दिइ। तेह भणी कल्पद्रुम चिंतामणि सरीषु किम करिइ[?] ॥५३॥

[जि] तेह पुरुषरत्न सुरतरु कल्पवृक्ष चिंतामणि रत्न अर्घ पूजा न लहई। तेह पुरुष सरीषा न हुइ। कि तु कल्पवृक्ष चिंतामणि पाहइ ५ अधिक दातारपणातउ तें पुरुष मोटउ ते सिंउ[?] जे पुरुषरत्न सुविधिरत जानु सन्मार्गतत्पर लोकहइ धर्मनु अरहम दिइ ॥५३॥

[मे] कल्पवृक्ष चिंतामणि प्रमुख पदार्थ धर्माधार पुरुष आगलि मूल काई न लहइ। समवडि न पामइ। जे सुविधि भली विधि तेहनइ रत जग लोक तेहमई सदा धर्मनउ आधार दिइ ॥५३॥

---

१० [सो] को पहिसिइ 'तें पुरुषनइ वर्णविनइ[1] सिउ काज छइ[2]' ए वात ऊपरि कहई[3]।

[जि] जिणि कारणि तेहा सत्पुरुषना नामग्रहण करिवउ। पवित्र होइवा भणी। इसुं कहइ।

लज्जति जाणिमो ? सप्पुरिसा निअयनामगहणेण।
१५पुण तेसिं किरणाओ अम्हाण गलति कम्माइ ॥ ५४॥

[मो] लज्जति० ए वात 'जाणउ[4]'। जे[5] सत्पुरुष आपणा नामनइ लेवइ, कोई तेहनउं नाम लेई वखाणइ तु' लाजई जि। नीचु साम्हुं जोइ। पुण तेसिं० पुण तऊ तेहनु कीर्त्तन गुण बोलउं[6] छउं[7]। तें कारण ए तीणई करी अम्हारां कर्म गलइ पाप फीटई। कर्मनिर्जरा २०हुइ। आपणाइ जि लाभ भणि कीजइ छइ। इस्युं भाव ॥५४॥

१ तेह २ वर्णवइ ३ कहइ छइ ४ जाणउ छ्उं ५ जे ६ बोलई ७ छई

[सो] गिह० पर कुटुम्बना व्यापार जेहे छांड्या छइ ते घणा मुनिलोक महामाहे माहि सम्यक्त्व नथी। जेहनइ फाजराम काई नथी तेहना मन रोगि कष्टि १आवि मिथ्यात्व करिवा रहवइ। आलंबण० जे श्रावक गृहस्थ जेहनइ अनेक छोरू बेटा बेटी विवाह ५वृद्धि व्यवसाय काजकामना आलंबन छइ तेहनइ मिथ्यात्वनइ विषइ रहवहिवानू अहोभ्रात । निसिउ कहीइ ? ॥ ६४ ॥

[जि] गृहस्थव्यापार गृहआरंभादिक तिणि करी विमुक्त रहित एवहा बहु प्रचुर मुनिलोक तेहइमाहे सम्यक्त्व नथी। हे भाय हे भ्रात! आलंबननिरत श्रावकहूइ किसु भणा ? जिहां १०सर्वसंगविनिर्मुक्त महात्माईहूइ सम्यक्त्व न हुइ तिहां श्रावकहूइ किहां हुतू ? इति भाव ॥ ६४ ॥

[मे] जेहे घरना व्यापार मूक्या छइ एवहा घणा जे मुनिलोक तेहनइ सम्यक्त्व नथी। ए भ्रात! रोगि कष्टि पीड्या हुता आलंबनना निलय जे श्रावक ते जउ सम्यक्त्व थका रहवहइ तिहां सिउ कहिवउ ? १५॥ ६४ ॥

[सो] उत्सूत्र बोल्तउ जीव संसारमाहि पडइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ जीव उद्दिसी कि उपदेस बोल्इ।

न सय न पर कोवा जइ जिअ उस्सुत्तभासण विहिअ।
२०ता वुड्डसि निभंत निरत्थय तवफडाडोव ॥ ६५ ॥

[सो] न सय० आपणपइ अथवा अनेरइ कुणहिं काई न थाइ। कोवा० कोप लगइ अहंकारि चडिउ जउ रे जीव! उत्सूत्र

१ कष्टि दुखि २ भ्रात बाधवइ ३ कुणहइं

[जि] हउ इसु जाणउ । सत्पुरुष धर्माधारनउ दातार पुरुष निजक नामग्रहण करी लाजइ । जइ लाजइ तउ लाजउ । पुण तेसिं कित्तणाओ पुण तेह सत्पुरुषना नामकीर्त्तनइतउ बोलिवातउ अम्हारां कुकर्म गलइ फीटइ । सत्कर्म उदय पामइ ॥ ५४ ॥

[मे] हउ इमउ जाणउ जे सत्पुरुष आपणा नामग्रहणिऽ लीजतइ लाजइ । पणि तेहनउ कीर्त्तन वपाण करता अम्हारां कर्म गलइ । एह भणी सत्पुरुषनउ नामु लीजइ ॥ ५४ ॥

[सो] धर्मइ करतां जिं धर्म न हुइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि,] जिनाना पापइ धर्म कीधउ निःफल । इसुं कहइ ।

आणारहिअ कोहाइसजुअ अप्पससणत्थ च । १०
धम्म सेवनाण न य कित्ती नेव धम्म च ॥ ५५ ॥

[मो] जे धर्म आराधइ पुण वीतरागनी आज्ञारहित निह्न वादिकनी परि । अनइ क्रोधादिकिइ करी सयुत धर्म करइ । यावज्जीव वरिस चउमास ऊपहिरा क्रोध मान माया लोभ धरइ । परइ धर्मक्रिया करइ । तथा अप्पससणत्थ च । को आपणी प्रशसा भणी धर्म२५ करइ । जिम 'लोक मू रहइ वपाणइ । हु लोकमाहि रूडउ आवउ' इसी बुद्धिइ धर्म करइ । धम्म० ईणइ प्रकारइ धर्म करताइ [illegible] न य कित्ती०, इह लोकि कीर्त्तिइ नही । परलोकि धर्मऊ नही । कर्मक्षय न हुइ । काज काई सरइ नहीं ॥ ५५ ॥

[जि] जिनाज्ञारहित, क्रोध मान माया लोभ[illegible] आत्मप्रशसानइ अर्थि धर्म सेवता धर्म करता पुरुषनइ न य कित्ती० लोकमाहे वर्णनाइ नही । अतरगमाहे धर्म नही ॥ ५५ ॥

१ जिम २ जि मे नेव ३ एहई

श्रीजिनवचन विरुद्ध बोल्सिसि तउ [illegible] संसार समुद्रमाहि बूडिसि । बुधहिं [illegible] । [illegible] लगइ पाई उत्सूत्र बोल्इ अनइ [illegible] दुक्कड दिइ, आलोइ तु छूटइ । [illegible] उत्सूत्र बोल्ता तप क्रिया नियम सामाचारीनु [illegible] जाणिवउ । तीणइ करी संसारमाहि [illegible] ॥ ६० ॥

[जि] कोई आपणडई [illegible] रे जीव ! जइ तइ उत्सूत्रभाषण कीधउं [illegible] निसंदेह बूडिसि । तपनउ [illegible] 'तपनइ आडबरि नही बूडउ' ए [illegible] म बोले ॥ ६५ ॥

[मे] न आपणपइ न परसउनि [illegible] रे जीव ! जउ उत्सूत्रनउ भाषण कीधउं [illegible] समुद्रमाहि बूडिसि । उत्सूत्र बोल्ता तउ [illegible] आडबर निरर्थक फोक जाणिवउ ॥ ६० ॥

[सो] साचा धर्मना [illegible] ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनेन्द्रनउ [illegible] । इसु कहइ ।

जह जह जिणदवयणं सम्म [illegible] मुद्दहिअआणं ।
तह तह लोअपवाहे धम्मो [illegible] ॥ ६६ ॥

१ श्रीसिद्धांत जिनवचन २ [illegible] ६ पृठिइ न रहीई' एवो पाठ [illegible] ते बीजीमांथी लीधो छे ७ गाथा [illegible] पण सो नी पहेली प्रतमांथी [illegible] बीजी प्रतमांथी लीधो छे ८ जि [illegible]

[मे] आशाइ करी रहित, क्रोधादिसयुक्त, आपणी प्रसंसानइ अर्थि धम सेवता हुता कीत्ति पणि न हुइ। धर्म पणि न हुइ ॥ ५५ ॥

[सो] वली उत्सूत्रभाषी ऊपरि बि गाह कहइ छइ।

[जि] अथ उत्सूत्रभाषी पुरुषनउ स्वरूप कहइ।

5 [मे] वली उत्सूत्रभाषी ऊपरि बि गाह कहइ।

इअरजणससणाए थिद्वा[1] उस्सुत्तभासिए न भय।
ही ही ताण नराण दुहाइ जइ मुणइ जिणनाहो ॥ ५६ ॥

[सो] इअरजण० इतरजन सामान्य अजाण लोक तेहनी प्रशसा करइ। 'ए भला' इम बपाणइ। तीणइ करी धीरष्ट हुता 10अभिमानि थका उत्सूत्र बोल्ता मनमाहि भय न आणइ। भावइ तिम्यां उत्सूत्र प्रल्पइ। ही ही० अहाहा। तेह पुरुष रहइ परलोकि दुर्गति म्या हुता जे दुख हुसिइ ते दुखनु[2] स्वरूप जिननाथ श्रीसर्वज्ञ जि जाणइ। अनेरउ[2] को न जाणइ। ति दुख जिह्वाए केतलीए न बोलाइ ॥ ५६ ॥

15 [जि] इतर जन सामान्य लोक तेहनी प्रसंसाइ करी हिट्ठा साहकार आपणपउ मोटा मानइ जे अनइ जेहहूइ उस्सुत्तभासिए उत्सूत्रसिद्धाते न कूडउ तेहनउ भाषण बोलिउ तेह हूतउ भय नही। कूडउ बोल्ता जेहहइ पापनउ भय नहीं। ही ही खेदे। तेहे सगर्व तणा उत्सूत्रभाषक नर तणा दुहाइ हउणहार दुःख जइ किमइ मुणइ जाणइ 20तउ जिणनाहो श्रीसर्वज्ञदेव जाणइ। दुःखहूइ प्रचुरपणातउ अनेरउ छद्मस्थ जाणी न सकइ। जे सगर्व हुतु उत्सूत्र बोल्इ तेहहूइ अनता दुःख हुइ। जिम मरीचिहूइ उत्सूत्र भाषणतउ घणा हूया ॥ ५६ ॥

---

1 जि मे दिट्ठा 2 दु[illegible] अनेर

[सोमे] जा° जिम जिम जिनेंद्रवचन श्रीसर्वज्ञनु धर्म साचउ थोडा ही जन घणा मनि परिणमइ तइ° तिम तिम लोकना प्रवाहिनु धर्म शुद्ध विचार रूपइ 'आपणा देव, आपणा गुरु' इत्यादि कदाग्रह रूप नाटकीया चरित्र सरीखु प्रतिभासइ। बाह्य मंडाण जि छइ। ५ लोकरंजना मात्र जि छइ। अभ्यंतर धर्म काई नथी। यत उक्त श्रीउपदेशमालायां—

पढइ नडो वेरग्ग निव्विज्जिज्जा य बहुजणो जेणं।
पढिऊण त तह सढो जालेण जल समोअरइ ॥ (गा ४७४)

[जि] जिम जिम शुद्धहृदयने हृदयि जिनेन्द्रनउ वचन सम्यक् १०प्रकारि परिणमइ वसइ तिम तिम निर्मलहृदय तणउ लोकप्रवाहि धर्म मिथ्यात्वधर्म नटचरित्र सरीषउ पडिहाइ प्रतिभइ शोभइ। जिम नटवानु चरित्र फोकट तिम लोकप्रवाहि धर्म फोकट इसु मानइ ॥६६॥

[मे.] जिम जिम जिनेन्द्रना वचन सम्यग् प्रकारि परिणमइ कहिनइ सुद्ध हृदयना धणीनइ तिम तिम लोकनउ प्रवाह नटावाना १५चरित्र सरीषउ प्रतिभासइ। काइ ? 'ए सहू बाह्य मडाण। लोकरंजना मात्र, पणि आभ्यतरि नहीं' ॥ ६६ ॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ।

[जि.] अथ जिनधर्मप्रमाण बोलइ।

[मे] वली एह जि वात कहइ।

२०जाण जिणिंदो निवसइ सम्म हियर्याम्म सुद्धनाणेण।
ताणं तिण व विरायइ समिच्छधम्मो जणो सयलो ॥६७॥

[सो] जाण° जेहनइ हीअइ साचइ जाणवइ करी सम्यग् दृढ श्रीजिनेन्द्र वसइ, वीतरागनु धर्म जेहनइ मति साचउ बइठउ तु

[मे] इतर जन सामान्य लोक तेहनी प्रसंसा सामली हृष्ट हर्षित हूता अहकारि चड्या उत्सूत्र बोलना भय नाणइ । भावइ तिम उन्मूत्र बोलइ । ही ही इसइ लेदि । ते पुरुषनइ परलोकि जे दुक्ख होइस्यइ ते वीतरागइ जि जाणइ ॥५६॥

[जि] अथ उत्सूत्रभाषणन फल कहइ । 5

उस्सुत्तभासगाण बोहीनासो अणतससारो ।
पाणच्चए वि धीरा उस्सुत्त ता न भासति ॥५७॥

[सो] **उस्सुत्त०** उत्सूत्रना बोल्नहार[1] रहइ बोधिबीजनउ नाश हुइ । आवते भवे सम्यक्त्व लहइ[2] नहीं । अणतउ समार वाधइ । अनना भवनां दुःख भोगवइ । **पाणच्चए वि०** तेह भणी प्राणत्यागिइ10 जीवतव्यनइ संकटि पडइ[4] जे धीर धर्मवत ते उत्सूत्र न बोल्इ ॥५७॥

[जि] उत्सूत्रभाषक पुरुषहइ बोधि सम्यक्त्व तेहनउ नाम हुइ । तिणि कारणि बोधि पामइ अणतउ संसार । **ता** तिणि कारणि प्राणत्यागिई प्राणई जातइ हुतइ धीर धर्मवर साहमिक उत्सूत्र न भापइ न बोल्इ । वरि प्राणई नीगमइ । पुण कूडउ न बोलइ । तथा चोक्त15 श्रीउपदेशमालाया—

> जीअ काऊण पण **तुरुमिणि** दत्तस्स कालियज्जेण ।
> अवि य सरीर चत्त न य भणियमहम्मसंजुत्त ॥ (गा १०५)

[मे] उत्सूत्रना बोल्णहारनइ बोधिबीजनउ नाश हुइ । अनतउ ससार हुइ । ते भणी प्राणनइ त्यागिइ धर्मवते उत्सूत्र न बोलिवउ20 ॥५७॥

---

1 त 2 बोल्नहार 3 लहई 4 पडिइ

ताण० तेह रहइ मिथ्यात्वधर्म सहित लोक सघलउ तृणा सरिषउ असार प्रतिभासइ। जाणइ ए काई नही ॥ ६७॥

[जि] जाण जेहना हियामाहे निर्मलइ ज्ञानि करी सम्यक् प्रकारि श्रीजिनेन्द्र वसइ ताण तेहाहूइ समिथ्यात्वि धर्मि करी सहित मिथ्याली लोक सघलई तिण व तृणवत् तृण सरीषउ निसार ५ विराजति शोमइ ॥ ६७॥

[मे] जेहनइ हीयइ साचइ जाणिइ करी सूधउ वीतरागनउ धर्म वसइ तेह मनुष्यनइ मिथ्यात्वधर्मसंयुक्त लोक सघलउ तृणा सरीषउ असार प्रतिभासइ। जाणइ जि ए काई नहीं ॥ ६७॥

[सो] लोकनइ प्रवाहिइ[1] केनलाइ जाणइ[2] क्षुभइ। ए वात१० कहइ छइ।

[जि] अथ सम्यक्त्व पायइ श्रावकपणउ निरर्थक।' इसु बोलइ।

लोअपवाहसमीरणउद्दडपयंडचडलहरीए।
दढसम्मत्तमहाबलरहिआ गुरुआ वि हल्लंति ॥ ६८॥ १५

[सो] लोअपवाह० लोकनउ जे प्रवाह तेहरूपीमा समीरण जे वायु[3] तेहनी प्रचड गाढी लहरि करी दढ० दृढ निश्चल सम्यक्त्व रूपाआ आराधनउ[4] जे छइ महाबल तीणइ करी रहित गुरुआइ हल्लंति होल्इ। घणा लोक काई मिथ्यात्व बोल्ला[5] करता[6] देषी मोटाइनां मन ल्हहहइ ॥ ६८॥ २०

[जि] दृढ सम्यक्त्वरूप महाबल तिणि करी रहित पुरुष गुरुया वडाइ हूता हल्लंति डोलइ। किमइ करी? लोकप्रवाहरूपिउ

१ प्रवाहइं २ जाण, ३ वायुनी ४ आधारलई ५ बोलइ ६ कहता

[मो.] अविधि[1] वखाणउ नही । ए वात कहइ छइ ।

[जि] उत्सूत्रभाषणनिषेध[2] करी असन्मार्गनी वर्णनाइ न करिवी । इम कहइ छइ ।

मुद्धाण रंजणत्थं अविहिपसंसं कयाइ[2] न करिज्जा ।
किं कुलवहुणो कत्थ वि थुणंति[3] वेसाण चरिआइं ॥५८॥

[सो] **मुद्धाण॰** मुग्ध लोग[4] तेहना रंजवा[5] आवर्जवा भणी **अविहि॰** उन्मार्गमेलु कोई करतु हुइ तेहनी प्रशंसा जाणि कहीइ[6] न करिवी[7] । दृष्टांत कहइ छइ । **किं कुल॰** उत्तम कुलनी वधू स्त्री महासती ते किहाइ वेश्या अधम स्त्री असती तेहना चरित्र वखाणइ[8] न वखाणइ नि । तिम[8] उत्तम उन्मार्गनी प्रशंसा न करइ नि ॥ ५८ ॥

[जि] मुग्ध मूर्ख तेह रंजिवानइ अर्थि कारणि अविधिप्रसंसा कुमार्गाचारनी वर्णना कयावि किवारई सत्पुरुष न करिज्जा न करइ । **किं कुलवहुणो** कुलवधू कुलस्त्री **वेसाण चरियाइं** वेश्यानां चरित्र कर्तव्य **कत्थ वि** किहाई स्तवइ वर्णवइ[?] अपि तु न स्तवइ । कुमार्गनी प्रसंसाई कीधी हुती दोष भणी हुइ इति भाव ॥ ५८ ॥

[मे] मुग्ध भोला लोक तेहनइ रंजिवा भणी अविधिनी प्रसंसा कहीइ न करिवी । किमउ कुलवधू किवारइ वेश्या असतीना चरित्र वखाणइ[?] अपि तु न वखाणइ । तिम उत्तम उन्मार्गनी प्रशंसा न करइ नि ॥ ५८ ॥

---

१ अवधि २ जि मे कयावि ३ नि थुवंति ४ लोक ५ रंजवा ६ कहीइ ७ करवी ८ ते

[सो] जिम जिम जिन निर्दूषण श्रीसर्वज्ञनु धर्म साचउ ... धर्म ... परिणमइ तइ॰ तिम तिम लोका प्रवाहिउ धर्म गुण विचार ... 'आपणा देव, आपणा गुरु' इत्यादि ... प्रतिमानइ। ... जि छइ। ५ ... अन्यतर धर्म काई नथी। ...
...उपदेशमाल्यायां—

... वेरा तित्थियविज्जा य बहुत्तणो नेगे।
... सग्गे चालेश जल मज्झ ... ॥ (—

[जि] जिम जिम सुदृष्ट्यने हृदयि जिनेन्द्रनउ ...
१०... परिणमइ वनइ तिम तिम निर्मलहृदय लगउ ...
मिथ्यात्वधर्म नटचरित्र सरीपउ पडिहाइ प्रतिमइ
नटनु चरित्र फोकट जिम लोकप्रवाहि धर्म फोकट ...

[मे.] जिम जिम जिनेन्द्रनां वचन सम्य...
कहिइ शुद्ध हृदयना धणीइ तिम तिम लोक...
१५चरित्र सरीपउ प्रतिमासइ। कांइ ' ' ए सहू मा...
मात्र, पनि आभ्यंतरि नहीं ' ॥ ६६ ॥

[सो] वली एह जि वात क...
[जि] अथ जिनधर्मप्रमाण ...
[मे] वली एह जि वात क...
२०जाण जिणिंदो निवसइ स...
ताण तिण व विरायइ म...
[सो] जाण॰ जेहे...
हृद श्रीजिनेन्द्र वसइ, वीतरा...

[सो] वीतरागनी आज्ञा नि ऊपरि वात कहइ छइ ।

[जि] किमा जीव जिनाज्ञा न माजइ । किमा भांजइ । इसी व्यक्ति धरइ ।

जिणआणाभगभयं भवसयभीआण[1] होइ जीवाणं ।
भवभयअभीरुआण जिणआणाभजण कीडा ॥ ५९ ॥ 5

[सो] **जिण॰** जिन वीतरागनी आज्ञानु भग तेहनु[2] भय तेह रहइ हुइ । **भवभय॰** जे ससार बाधिवानद भइ करी बीहता हुइ जीव तेह रहइ[3] हुइ । ते इसिउ जाणइ । 'वीतरागनी आज्ञा भांजीनइ राचे घणा ससारमाहि रुलइ[4] ।' जे **भवभय॰** जे ससारना भय थिकु नथी बीहता, धीरठपणु करइ तेहरइ[5] जिन वीतरागनी 10 आज्ञानु, जे भाजिवउ ते क्रीडामात्र । लीलाइ भाजइ । भाजता वार कांई न लागइ ॥ ५९ ॥

[जि] **भवसयभीयाण** जन्मना शत तेह हुता भीत बीहता जे जीव तेह जीवहूइ जिनाज्ञानउ भग भय छइ । जन्ममरण दुख हुता जे बीहइ ते जीव जिनाज्ञा न भाजइ । अनइ वली जे 15 जन्ममरण हुता अभीरुक अभीहता तेहनी **क्रीडा** रामति **जिणआणा-भजण** जिनाज्ञालोपमय जि । जे दुख हुता न बीहइ ते जिनाज्ञा भाजइ ॥ ५९ ॥

[मे] जिन वीतराग तेहनी आज्ञानउ भग तेहनउ भयु केहनइ हुइ ? जे भव ससारना भय तेहनउ विषइ बीहइ । अनइ जे ससार हुता 20 बीहता नथी तेहनइ जिनआज्ञानउ भाजिवउ क्रीडामात्र । हेलाइ भाजइ ॥ ५९ ॥

[सो] वली श्रीसम्यक्त्व रहतां गाढउ दुर्लभ हुइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ आपणा जीव देषहूइ उपदेस दिइ छइ ।

रे जीव अनाणीण[1] मिच्छदिट्ठीण नियसि किं दोसा[2] ।
अप्पा वि किं न याणसि नज्जइ[3] कट्ठेण सम्मत्त ॥ ७० ॥ 5

[सो] रे जीव ! अनानी मूर्ख मिथ्यात्वी तेहना दोष स्या भणी देखइ ? आपणपू जि निसिउ न जाणइ ? नज्जइ० सम्यक्त्व गाढइ कष्टिइ जाणइ लहइ । **नेमिचंद्र भंडारी** कहइ छइ । रे जीव ! तइं एवडइ कष्टिइ सम्यक्त्व लाधउ । मिथ्यात्वी बापुडा किम लहइ ? सम्यक्त्व रहता गाढउ दोहिलउ छइ । इस्यउ भाव । 10

[जि] **रे जीव** ! हे आत्मन् ! **अनाणीण** मूर्ख मिथ्यादृष्टिना **दोसा** दोष **किं नियसि** किसु जोयइ ? **अप्पा वि** आपहणी **किं न याणसि** न जाणइ ? जउ कष्टिइ सम्यक्त्व **नज्जइ** जाणीइ । एतावता रे जीव ! मिथ्यात्वीना किसु दूषण जोइ ? आपहणी तू जाणइ छि ? जउ सम्यक्त्व जाणता गाढउ दुहेलउ ॥ ७० ॥ 15

[मे] **नेमिचंद्र भंडारी** कहइ । रे आत्मन् ! अज्ञानी मिथ्यादृष्टि तेहना दूषण सिइ काजि जोइ छइ ? **अप्पा०** आपणपइ तू किसु न जाणइ ? जे तइ महाकष्टि करी समिकित्व जाणिउ छइ । तउ मिथ्यात्वी बापुडा किम लहिस्यइ ? ॥ ७० ॥

[सो] केतलाइ[4] मिथ्यात्व करतांइ जिनधर्म वांछइ । तेह[5] 20 आश्चर्य[6] कहि छइ ।

1 लहाणा 2 अन्नाणीणं 3 मे दोसे 4 निज्जइ 5 केतला 6 आश्री

[सो] हिव फरइ छइ। मूर्खनउ[1] सिउ दोष ?, जे आण छइ तेह अहकारि चढ्या वीतरागनी आण विराधना देखइ नही। ए वात फरइ छइ।

[जि] निणिइ निनाना मनाइ ते कर्मपरवशना जीवनी कहइ।

5 **को अमुआण दोसो ज सुअसहिआण चेअणा नट्ठा।**
धिद्धी कम्माण जओ जिणो वि लद्धो अलद्धं त्ति ॥६०॥

[सो] **को अमुआण॰** अश्रुत अपढ मूर्ख तेहनउ कउण दोस ? **ज सुअ॰** जेह भणी श्रुतसहित पाठना[1] धणी तेहं[2] रहइ चेतना नाठी। जाणताइ करता ते वीतरागनी आनारहित उत्सूत्र 10 प्ररूपइ। **धिद्धी॰** पापिया कर्म जि रहइ धिग पडु जेहे कर्मे इम जाणइ रोल्वीइ। **जिणो वि॰** जीणइ करी वीनराग देव लाधु[1] अण लाधु थाइ। उत्सूत्र बोलतां परमेश्वर ओलपिउइ[*] अणओलपिउ[*] थाइ ॥६०॥

[जि] **अमुआण॰** अश्रुत सिद्धातना अजाण तेहनउ किसु 15 दोष ? अपि तु न कोई। काइ ? **ज** जउ श्रुतसहितनी नानवतनी चेतना नाठी, जिम वाइ हाथीयाई उडइ जइ तउ पूणी उडियानउ किसु दूषण ? जिहां पडिनई विरासीइ तिहा मूर्खनउ किसु दोष ? जेइ कर्मे लगी श्रुतना जाणई भोल्वीइ तेह कर्मइइ धिकार पडउ। किम ? जउ **जिणो वि** श्रीवीतराग देव लाधुई अणलाधउ करइ। इति इसा 20 कारणतउ कर्म नद ॥६०॥

[मे] अश्रुत अपढ तेहनउ कउण दोस ? जउ किमइ श्रुत

१ मूखनउ कहइ छइ एटलो पाठ बीजी प्रतमांथी पडी गयेलो छे
२ मे अल्द्धो ३ पाग्ना ४ तेहइ ५ अथवा पापियां ६ लाधुइ ७ उल्पिउइ
८ अणउल्पिउ

[जि] जे मिथ्यात्वउ करइ सम्यक्त्व वाछइं। तेह उद्दिसा
कहइ।

मिच्छत्तमायरंत वि जे इह वंछंति सुद्धजिणधम्मं ।
ते घत्था वि जरेण भुत्तुं इच्छंति खीराई ॥ ७१ ॥

[सो] **मिच्छत्त०** मिथ्यात्व कर्त्तव्य करताइ हुता जे जीव
सुद्ध धर्म वाछइ। जाणइ 'अम्हे सूधउ धर्म करू।' **ते घत्था वि०**
ते जाणे ज्वरि ग्रस्याइ हुंता खीर खांड खावा वाछइ। ज्वर सरिख
मिथ्यात्व खीर खंडे सरिखउ जिनधर्म। जिम ज्वरि छतइ खीर खंडादिक
खाधइ हुता गुण न करइ, साम्हु अवगुण करइ तिम मिथ्यात्विक
छतइ जिनधर्म गुणकारिउ न हुइ। साम्हा विराधक थाइ ॥ ७१ ॥

[जि] ये श्रावक मिथ्यात्व आचरतई हूतउ शुद्ध जिनध
इह संसारमाहे वाछइ ते **घत्था वि जरेणं** ते श्रावक ज्वरिइं ग्रस्
हुता **खीराइं** क्षीर खांड घृत **भुत्तुं** जीमिवा भणी वांछइ। जि
ज्वरिया पुरुषहूइ घृतादिकनउ जीमनउ विपर्याय हुइ तिम मिथ्यात
ग्रस्या हूता सम्यक्त्व धरइ तउ साम्हुउ अतिचार दोष पामइ। ति
कारणि सर्वथा मिथ्यात्व मेल्ही सम्यक्त्व पालिवउ ॥ ७१ ॥

[मे] मिथ्यात्व आचरता हूता केईएक जीव सूधउ जिनध
वाछइ। ते जाणे ज्वरि ग्रस्या हूता खीर खांड घी प्रमुख भोज
निमित्तउ वाछइ ॥ ७१ ॥

[सो] केतलाइ मिथ्यात्व करताइ कहइ 'अम्हे असु
गुरुना श्रावक।' तेह आश्री कहइ छइ।

[जि] अथ कुगुरु आश्री कहइ।

---

१ मे क २ नि मे भुत्तं ३ मे खीराई ४ सुद्धउ

जइ केई सुकुलवहुणो सीलमयलिंति लिंति कुलनाम।
मिच्छत्तमायरन वि वदति नर सुगुरुकेरत्त ॥ ७२ ॥

[सो] जिम कोइक उत्तम कुलवधू हुइ। सील आपणउ मइलु करइ विगधइ अनइ नाम कुलनउ लिइ। आपणइ कुलपिइ करी कुलइ कलंक आपइ, 'अम्हे अमुका कुलनी।' मिच्छत्त० तिम ३ केवलाइ मिथ्यात्व करता हुता कहइ, 'अम्हे अमुका सद्गुरुना श्रावक शिष्य।' ते आपणइ लोपिइ गुरु रहइ दोष आणइ। इसिउ भाव ॥ ७२ ॥

[जि] जइ केवि जिम केई सुकुलवहुणो सुकुलि ऊपनी वधू स्त्री आपणउ सील मइलउ करइ सील मानइ अनइ१० अनेरइ मानसि पूछीना हूती आपणा कुलनउ नाम लिइ। 'अम्हे मोटा कुलनी' इसु कहइ। तम जिणि दृष्टांति करी केटलाइक मिथ्यात्व समाचारताई हूता सुगुरुकेरत्त सुगुरुना केरातपणउ वदइ। 'अम्हे अमुका सुगुरु अनइ केरुई' इसु कहता आपणा सुगुरु दूषेन लावइ ॥ ७२ ॥ १५

[मे] जिम केईएक भला कुलनी वधू सील आपणउ मइलउ करइ अनइ नाम कुलनउ लिइ, 'अम्हे अमुकानी कुलवधू' तिम जीव मिथ्यात्व आचरतउ हूतउ कहइ, 'अम्हे अमुका सुगुरुना श्रावक।' आपणा दोषि गुरुनइ दोष आणइ ॥ ७२ ॥

[सो] वली तह जि वात कहइ छइ। २०

[जि] अथ कुत्सित श्रावक उद्दिसी बोलइ।

---

१ म तइ २ जि मे केवे ३ जि म न गत ४ जि हलि ५ सो मिच्छत्त ६ सीगी ७ मइलउ ८ आपइ ९ करनाइ

तें सूधा मार्ग खरा धर्मनइ विषइ सुखिइ चालइ । तेहनइ धर्मनु मार्ग कुलक्रमिइ जि आगइ चालिउ आवइ छइ । एह भणी तेहहुइ धर्म करतां काई दोहिलु नहीं । जें पुण० पणि जे अमार्गि जाया विरुद्ध[1] अधर्म कुलि उपना तेहइ केतला जे मार्गि चालइ धर्म करइ तेहनइ[2] कुलक्रमागत धर्म न हुइ । ते ज धर्म्म करइ तं चुज्ज ते आश्चर्य ॥ ८३ ॥ 5

[जि] सुद्धइ निर्मलइ मार्गि जात उपना द्विजात जे हुइ ते सुखिइ समाधिइ भली परिइ सुद्धइ नि:पाप मार्गि गच्छंति चालइ ते आश्चर्य नहीं । भला अनइ भलइ मार्गि हींडइ । जिम रोहणाचलि रत्ननउ आश्चर्य नहीं । जिम रुपाइ सोना होवानउ आश्चर्य नहीं । पुण जें अमार्गजात जिनातइ हुइ ते मार्गि मार्गि जइ चालइ तउ ते आश्चर्य । 10 जिम उकरडी माहे रत्न ऊपनउ हुतउ आश्चर्य भणी हुइ ॥ ८३ ॥

[मे] जे सूधइ मार्गि श्रावकनइ कुलि उपना सुखिइ समाधि सूधा मार्ग खरा धर्मनइ विषइ चालइ । पणि जे अमार्गि अधम कुलि जाया अनइ जे धर्ममार्गि चालइ ते आश्चर्य कउतिग ॥ ८३ ॥

[सो] धर्म करता काई रुगारइ विघ्न ऊपजइ । अनाण लोक 15 ते लेई धर्म रहइ लगाडइ । ए वात कहइ छइ ।

- [जि.] अथ पापिष्ठ मिथ्यात्वीनउ स्वरूप कहइ छइ ।

मिच्छत्तसेवगाणं विग्घसयाइं पि[3] विंति नो पावा ।
विग्घलवम्मि वि पडिए दढधम्माणं पणच्चंति ॥ ८४ ॥

[सो] मिथ्यात्वना करन्हारनइ[4] अनेराइ संसारना काज- 20 व्यवसाय विवाहादिक करता विघ्न अंतराय दुःख उपसर्गना सइ पडइ ।

---

1 विरूअइ 2 अधर्मि 3 पिवंति, मे पि वंति 4 करण्हारनई

उस्सुत्तमायरत वि ठवंति अप्प सुसावगत्तम्मि ।
ते रुद्दरोरघत्थ वि तुलंति सरिस धणड्ढेहिं[1] ॥ ७३ ॥

[सो] **उस्सुत्त०** उत्सूत्र श्रीसर्वज्ञवचन विरुद्ध कर्त्तव्य आचरताइ हुता आपणपउ सुश्रावकमाहि थापइ । 'अम्हेऊ श्रावक' ५ इम कहइ । ते किसिउ करइ ? **ते रुद्द०** ते रौद्र रोर[2] दालिद्रि ग्रस्याइ हुता गाढा दालिद्रीइ हुता आपणपउ धनाढ्य महालक्ष्मीवंत[3] सरीषउ मानइ ॥ ७३ ॥

[जि] कईएक उत्सूत्र सिद्धांत विरुद्ध वचन आचरता करताई हुता धनाढ्य **अप्प** आपणपउ **सुसावगत्तम्मि** सुश्रावकआपणा १०माहे **ठवंति** स्थापइ । ते लोक **रुद्दरोरघत्थ वि** रौद्र दारिद्रइ ग्रस्याई हुता धनाढ्य लक्ष्मीवन्त तेह सरीषउ आपणपउ गणइ ॥ ७३ ॥

[मे] उत्सूत्र आचरताइ हुता जीव आपणपउ श्रावकमाहि थापइ । कहइ 'अम्हे पणि श्रावक।' ते राद्र **रोर** दालिद्रिइ ग्रस्या हुता आपणपउ धनाढ्य श्रीमन्त सार्थि तोलइ ॥ ७३ ॥

---

१५ [सो] लोकमार्ग अनइ धर्ममार्ग रहइ एवडउ विहरउ छइ । तेउ ते मूर्ख न जाणइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ आण अनइ अजाणनउ आतरउ प्रकटइ ।

किवि कुलकमम्मि रत्ता किवि रत्ता सुद्धजिणवरमयम्मि ।
इअ अंतरम्मि पिच्छह मूढा नाय न जाणंति[4] ॥ ७४ ॥

२० [सो] **किवि०** केतलाइ आपणइ कुलक्रमि जि राता कुलाचारनइ प्रवाहि पड्या छइ । केतलाइ सूधउ खरउ जिनधर्म तिहा राता

[1] मे धणिड्ढेहिं [2] रोर [3] लक्ष्मीवंत [4] जाणंति जि मे याणंत

तेउ पापी लोक ते बोल्इ नही। **विग्घलवन्मि०** अनइ जे दृढ धर्म खरा धर्मना कर्तव्य करइ छइ तेह्नइ वेती वारइ विघ्नलवलेश मात्र थोडूअड अंतराय दुःख पडइ तउ मूर्ख लोक नाचइ, 'एहहूइ धर्म करता आम हुउ।' इसिउ न जाणइ, 'निश्चिइ धर्म करता रूइ जि ५ हुइ।' धर्मइं[1] विघ्न विल्इ जाइ जिम आगि पाणी करी[2] उल्हाइ जि। पुण मापु जाणिवउ। जु थोडउ अंगारमात्र आगि हुइ तु चलूइ मात्रि पाणीइ ओल्हाइ। पणि दवानल ज्वल्तउ हुइ तउ थोडइं पाणी काइं नही। जु मेघ वरिसइ घणउ पाणी पडइ तउ[3] ओल्हाइ। तिम थोडउ पाछिला भवनु पापकर्म थोडिइ धर्मिइ विल्इ जाइ। पुण कर्म घणउ हुइ १०अनइ धर्म थोडउ हुइ तु निम तीणइ धर्मिइं घणउ कर्म विल्इ जाइ? पुण एक निश्चय जि जाणिवु। ज धर्मि करी पाप विलइ जाइ जि। जिम सूर्य थिकउ[4] अंधारा नासइ जि। ज धर्म करताइ विघ्न नथी टलता ते थोडा धर्मनु कारण। एक मूढ अजाणपणइ 'धर्मनइ दोषिइ' इसिउ कहइ, 'अम्हारइ कुलि ए धर्म सहइ नही।' अनइ पापीहूइ घणाइ १५दुःख पडइ पणि बोल्इ नहीं ॥ ८४ ॥

[जि] **पावा** पापिष्ट पुरुष मिथ्यात्वसेवकहाहूइ विघ्न उपद्रव तेह्ना शतइं पड्या **नो निंति** न बोल्इ। पुण दृढ धर्म निश्चल धर्मवंतहूइ विघ्नइ लवलेशिइ पडिइं हूतइ **पयडंति** प्रकटयंति ॥ ८४ ॥

[मे] मिथ्यात्वना सेवणहारनइ विघ्नना सइ ऊपजइ पणि ते २०पापीइ मन माणइ जि 'अम्हनेइ मिथ्यात्व सेवता विघ्न ऊपना।' अनइ जे दृढधर्म खरउ धर्म करइ तेह्नइ विघ्नवउ लवु मात्र उपनइ पापी लोक पचारइ ॥ ८४ ॥

---

१ धर्मिइं २ करि ३ उल्हाइ ४ तउ जि ५ उल्हाइ ६ थकउ

छइ। कुल्क्रम[1] काई नथी करता। इअ० ए विहुनइ आतरु ए एवडउ छइ। एकि कुल्क्रम करताइ नरक तिर्यंचमाहि जाइ छइ। बीजा जिनधर्म आराधता देवलोकि अथवा मोक्ष[2] जि जाइ। एवडइ आतरइ छतइ ते मूढा मूर्ख युक्ति न्याय न जाणइ। कुल्क्रमजिनु कदाग्रह लेई रहइ। सूधउ धर्म न करइ ॥ ७४ ॥ 5

[जि] किवि केईएक अजाण कुल्क्रमि राता छइ। केईएक जाण जिणवरनइ मति राता। इअ ए आतरउ पिच्छह जोयउ। जाण अजाणनउ ए विहरउ देषउ। मूर्ख नाय न याणति न्याय न जाणइ। जे जिनमति राचइ ते युक्तायुक्तविचार जाणी जाण कहावइ अनइ मूढ न्यायरीति न जाणइ। कुल्क्रमि रजीइ। साचउ-कूडउ न10 जाणइ ॥ ७४ ॥

[मे] केतलाइ जीव कुल्क्रमि कुल्आचारि राता छइ। केतलाइ जीव सूधा जिनवरना मतनइ विषइ राता छइ। जाणइ छइ 'सूधा धर्म लगइ मुक्ति पामीस्यइ। पाछइ कुल्क्रमि संसारमाहि भमीसिइ।' एवडइ अनरि छतइ, जोउ, मूर्ख नाणिउ जे न जाणइ। कुल्क्रमनउ15 कदाग्रह न मूकइ ॥ ७४ ॥

[जि] अथ अजाणनी वात विहु गाथाइ करी कहइ।

सगो वि जाण अहिओ तेसिं धम्माइ जे पकुव्वति।
मुत्तूण[3] चोरसंग करति[4] ते चोरिअ पावा ॥ ७५ ॥

[मो] जीह मिथ्यात्वी दर्शनीनी संगतिइ अहितकारिणी20 करिवा[5] लावइ। पुण तेहनउ[6] उपदेसिउ जे धर्म ते करइ। मुत्तूण०

---

1 'कुल्क्रम काई छइं' एटलो पाठ सो मी बीजी प्रतमांथी पडी गयेल छे
2 मोक्षि 3 जि मोत्तूण 4 जि करति मे करिंति 5 कारिवा 6 तेहनु

[सो] धर्म सहित दुखऊ रूडउ। मिथ्यात्त्वसहित सुख्इ विरूउ। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ सम्यक्त्वधारकनी दृष्टाई त्रिहु गाथा करी बोलइ।

सम्मत्तसजुआण विग्घ पि हु होइ उच्छवसरिच्छं।
परमुच्छव' पि मिच्छत्तसजुअ अइमहाविग्घ ॥ ८५ ॥ 5

[सो] **सम्मत्त०** जे सम्यक्त्विइ' करी सहित छइ, खरउ धर्म आराधइ छइ तेहहइ केती वारइ विघ्न दुख पडइ ते दुख उत्सव सरीखु हुइ। ते तीणइ दुखिइ करी पाछिला भवना पापकर्म क्षपीनइ खरा धर्मनइ प्रमादिइ आगलि मनुष्यना देवलोकना सुख पामइ। तेह भणी उत्सव समान। **परमुच्छव पि०** मिथ्यात्त्वि10 करी जे सहित छइ तेहहइ' केतीवारइ परम उत्सव हुइ। राज्य ऋद्धि लक्ष्मी भोगसुख पामइ। तेहइ अतिमहाविघ्न जाणिवु'। तेह' ऋद्धिनइ प्रमाणि ते मिथ्यात्त्व आरभ पाप करी आगलि नरकतिर्यंचादिक दुर्गतिइ जाइ। ससारमाहि रुलइ। तेह भणी तेहनु उत्सव महाविघ्न समान कहीइ ॥ ८५ ॥

[जि] सम्यक्त्वसंयुक्त पुरुषनइ विघ्नई हु निश्चइ उत्सव सदृश महोत्सव सरीखउ हुइ। **परमुच्छवम्मि** प्रकृष्ट महोत्सवमाहे मिथ्यात्त्वसयुक्त हूतउ **अइमहाविग्घ** अतिमहाविघ्न हुइ। एतलइ सम्यक्त्वधारकहइ सम्यक्त्वइ जु तत्त्व। माया काई नही ॥ ८५ ॥

[मे] सम्यक्त्विइ करी जे सहित तेहनइ किवारइ विघ्न20 ऊपजइ तउ उत्सव करी मानइ। काइ कहइ ² 'भवातरि कर्म क्षय गया वली नही आवइ।' तेह भणी उत्सव समान मानइ। वली जे

१ म उत्सव २ नि परमुच्छवम्मि मे परमुत्सव ३ सम्यक्त्त्वइ ४ तेह हइ ५ जाणिवइ ६ 'तेह...नही

ते चोर अन्यायी पापानउ ससर्ग मेल्हीनइ आपणाइ जि चोरी करइ। पापीया जे मिथ्यात्वीनू समग न करइ, पुण मिथ्यात्व करइ ते जाणे चोरनी संगति न करइ, पुण आपणपइ जि चोरी करइ छइ ॥७५॥

[जि] अजाण जेहानउ सर्गइ अहित विरूयाकारण हुइ तेसि तेहना अहितकारकना उपदिस्या जे पुरुष धर्म करइ ते पुरुष पावा पापिष्ट हूता चोरउ ससर्ग मेल्ही आपहणी चोरी करइ ॥७५॥

[मे] जेहनउ समर्गइ अहितकारीउ हुइ अनइ तेहना भाख्या धर्म जे करइ ते केहवा जाणिवा? चोरनउ समर्ग मूकीनइ आपणइ डीलि पापि चोरी करइ। ते एहवा जाणिवा ॥७५॥

---

१० जत्थ पसुमहिसलक्खा पव्वे होमंति पावनवमीए।
पूअंति तंपि सड्ढा हा हीला वीयरायस्स ॥७६॥

[जो] जीणइ पर्वि आसो चैत्रनी पापमय महानउमिइ पशु बोकडा भइसाना लक्ष होमइ मिथ्यात्वी राजादिक। पूअंति० केतलाइ श्रावकइ हुई ते पर्व पूजइ मानइ। गोत्रजपूजनादिक करइ। ते पर्वना १५करावणहार ब्राह्मणादिक रहइ पुण पूजइ। दानादिक दिइ। हा हीला० अहो! केवडी ए हीला अवना आशातना वीतरागदेव। एन जीवदयामूल वीतरागनू धम आराधीइ अनइ परइ महाहिंसामय पर्व मानीइ। ए आनालोच मणी अवनाइ कही ॥७६॥

[जि] जत्थ जिणि पर्वि पापनवमीइ दिवसि सामान्य २०देहाडीनइ दिनि पशु छाला महिसु भइसा तेहना लक्ष होम्मनि होमी विणासीइ। तिणि दिहाडइ श्रावक जइ पूजइ तउ श्रीवीतरागनी ही

१ पुण मिथ्यात्व न करइ एतलो पाठ सो नी बीजी प्रतमाथी पडी गयेल छे २ जि ॥ हम्मति ३ वीतरागनउ ४ ए नथी ५ अवरा

मिथ्यात्वि करी मुक्ति छइ तेहाइ धर्म उन्मत्तइ अतिविष करी मानिउ। स्वादुं' तीख उजे मिथ्यात्वना कारण कर्यां हुइ। अनइ ते मिथ्यात्वनइ प्रमाणि नवि करइ। तेह भणी उन्मत्त विष समान गिणाइ ॥८७॥

---

5 [सो] जेम्हइ धर्मना इन्द्रादि हुइ तेहहूइ देवइ प्रणाम करइ। ए वात कहइ छइ।

इंदो वि ताण पणमइ हीलन्तो नियपरिद्धिवित्थार।
मरणंते वि हु पत्ते सम्मत्तं जे न छड्डुंति ॥८८॥

[सो] इन्द्र तेहूनइ प्रणाम करइ। **हीलन्तो०** आपणी देवनी १०साम्यऋद्धिना[1] विस्तार निन्दतउ हूंतउ[2]। जाणइ ए ऋद्धि[3] कई नहीं। ईणी[4] ऋद्धि भोगवण काइ नहीं। **मरणंते वि०** मरणांतिइ पहुतइ जे आपद संकटि पडिइ आव्याउ सम्यक्त्व न छांडइ, मिथ्यात्व न करइ तेहूइ इन्द्रादिक देवइ नमस्करइ ॥८८॥

[जि] **नियपरिद्धिवित्थार** आपणी लक्ष्मीनउ विस्तार १५हीलतउ निंदतउ हूंतउ इन्द्र तेहां सम्यक्त्वधारक पुरुषहइ प्रणमइ। तेह केहाइ? मरणांतइ पामिइ हूंतइ जे सम्यक्त्व हुं निश्चइ न छांडइ। **ताणेत्यत्र द्वितीयार्थे प्राकृतत्वात्** ॥८८॥

[मे] इन्द्र तीणे पुरुषानइ प्रणाम करइ, आपणी रिद्धिनउ विस्तार अवहेलतउ हूंतउ। पणि ते जीव केहवा छइ? [5] जे मरणांति २०सम्यक्त्व छांडइ नहीं ॥८८॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ।

---

१ रिद्धिना २ हूंतउ नथी ३ रिद्धि ४ ईणइ ५ कहइ

खेदे हीन्ला । जे श्रावक श्रीवीतरागदेवनइ मानइ अनइ मिथ्यात्व पुण साचवइ ते श्रावक श्रीवीतरागनी अवहेला करइ । तिणि कारणि ते श्रावक केई अनाण जाणिवा ॥ ७८ ॥

[मे] जिहा आसोजी चैत्री पावनरमीइ पशु छाला महिस भइसा तेह्ना रूप लाप हणीइ अनइ तीणइ दिहाडइ श्रावक हुअनइ ५ गोत्रमनी पूजा करइ तउ इस इसइ खेदि तीए वीतरागनी हीला कीधी । परमेश्वर अवहेल्या ॥ ७६ ॥

जो गिहकुडुंबसामी सन्तो मिच्छत्तरोवणं कुणइ ।
तेण सयलो वि वंसो पक्खित्तो भवसमुद्दम्मि ॥ ७७ ॥

[सो.] जे कुटुम्बनायक[1] मूलगउ हुई काइ मिथ्यात्वनउ बीज१० घरि रोपइ थापइ । पाछिलइ सनानीआ सघला तेह्ना थाप्या भणी मूकी न सकइ । तेण तीणइ आपणउ सघलुइ केडिलु वस ससार समुद्रमाहि घातिउ पाड्या[4] भणी ॥ ७७ ॥

[जि] जे गृहकुटुम्बनउ स्वामी धणी सन्तो हतउ मिथ्यात्व रोपण करइ । तेण तिणि गृहकुटुम्बस्वामीइ सयलो वि सघलउइ वस१५ भव समार तेहरूपिउ समुद्र तेहमाहे पक्खित्तो प्रक्षिपउ घालिउ ॥७८॥

[मे] जे पुरुष गृहस्थ कुटुम्बनउ स्वामी होईनइ आपणा सनानीयानइ मिथ्यात्वनउ आरोपण करइ तीणइ सघलुइ वसु समार समुद्रमाहि प्रक्षेपिउ घातिउ ॥ ७७ ॥

कुडचउत्थी नवमी बारसी पिंडदाणपमुहाइ ।
मिच्छत्तभावगाइं कुणति तेसिं न सम्मत्तं ॥ ७८ ॥ २०

१ जि इहई २ मे मिथ्या ३ कुडव ४ पड्या ५ मिच्छत्त

[सो] कुडचउत्थी० विणायगचउथि महानउमि वत्सवारसि सीनाइ दन सीअग्मतमि द्रोगट्ठमि शिवरत्ति नागपचमि काजलीत्रीज आमलीइग्यारसि अविग्लोअपाचमि अमास षष्टीजागरण नरमती पितर पिंडदान नवोदकि पींपलअल्गान अमावस जमाई भोजनप्रमुख ५ मिच्छत्त० अनेक एहवा मिथ्यात्वपोषक पर्व करइ करावइ। तेहमि तेहइइ इसिउ जाणिवउ। सम्यक्त्व नथी ॥ ७८ ॥

[जि] जे श्रावक कुडचतुर्थी महानवमी अनइ वारसि तेहना पिंडदानप्रमुख मिथ्यात्वधर्मना भावक पोषक मिथ्यात्व करइ तेहसि तेहां श्रावकइइ सम्यक्त्व नहीं। लगारइ मिथ्यात्वनउ लवलेश करइ ते १० अजाण इति भाव ॥ ७८ ॥

[मे.] कुडचउथि कहता विणाइगचतुर्थी महणिमनीं नवमी वत्सवारसि सीयलसत्तमी द्रोणष्टमी शिवरात्रि नागपचमी काजलीत्रीज आमलीइग्यारमि अविग्लोआपचमी अमास षष्टीजागरण प्रमुखे पिंडदान-प्रमुख जे मिथ्यात्वाइ भावक उपनावणहार जे करइ तेहनइ सम्यक्त्व १५ नहीं ॥ ७८ ॥

[सो] केतलाइ उत्तम आपणउ कुटुब मिथ्यात्वतउ काढइ। ए वात कहइ छइ।

[मे] अथ गाणनी वात कहइ।

जह अइकुलम्मि खुत्त सगड कड्डंति केवि धुरधवला[१]।
२० तह मिच्छाओ कुडब अह विरला केवि कड्ढंति ॥ ७९ ॥

[सो] जिम कादमना गाढा कलमाहि गाडउ खूतउ हुइ ते

१ अविल्हेवा पंचमि २ एहा.. ३ अम्काल्मि से अइकर्दमि ४ धुरि

गयविहवा[1] वि सविहवा[2] सहिआ सम्मत्तरयणराएण ।
सम्मत्तरयणरहिआ सते वि घणे दरिद्द त्ति[3] ॥ ८८ ॥

[सो.] गयविहवा० गतविभव लक्ष्मीरहित दालिद्रीइ[4] छता तेह सविहवा सद्रव्य सलक्ष्मीवंत[5] जाणिवा, जे श्रीसम्यक्त्व
5 रूपिइ रत्नराजि महारत्नि अमूल्यक रत्नि करी सहित हुइ, खरउ सम्यक्त्व पालइ । सम्मत्त० जे सम्यक्त्वरूपिइ रत्नि करी रहित छइ, जेहनाइ हीयइ सम्यक्त्व नथी, मिथ्यात्वीउ नि छइ सते वि० ते लक्ष्मी[6] घणीइ छती दालिद्री[7] जि[8] जाणिवा[9] । दालिद्रीउ जु सम्यक्त्व पालइ तउ आवतइ भवि इन्द्रादिक[10] महर्द्धिक देवादिकपदवी पामइ ।
10 अनइ चक्रवर्त्यादिक महर्द्धिक जु मिथ्यात्वी हुइ तु आवतइ भवि नरकतिर्यंचादिक हीनगतिइ गयउ हूतउ दुःखीउ थाइ, महादालिद्री[11] थाइ । इसिउ भाव । एह ज भणी इम कहिउ श्रीहेमाचार्ये—

जिनधर्मविनिर्मुक्तो मा भूवं चक्रवर्त्यपि ।
स्यां चेटोऽपि दरिद्रोऽपि जिनधर्माधिवासित ॥

15 [जि] गतविभवइ निर्द्रव्यई हूता सविभव सद्रव्य हुइ, जे सम्यक्त्वरत्नराज तिणि करी सहित हुइ । एतावता जे पुरुष सम्यक्त्व रूपिउ रत्नराज चिन्तामणि धरइ ते पुरुष निर्द्रव्यई सद्रव्य हुइ अनइ जे सम्यक्त्व रत्न तिणि करी रहित हुइ ते पुरुष सते वि घणे छतई धनि दरिद्री कहीइ । तिणि कारणि सम्यक्त्व मोटउ रत्न ॥ ८८ ॥

20 [मे] ते पुरुष निर्धनइ थका धनवंत जाणिवा जे सम्यक्त्व रूपीइ रत्नराजिइ सहित हुइ । अनइ जे सम्यक्त्वरत्न तिणि करी

१ गइविहवा २ वि सुविहवा ३ दरिद्द त्ति ४ दालिद्रीइ ५ सद्रव्य लक्ष्मीवंत ६ लीक्ष्मी ७ दालिद्री ८ जि' नथी ९ जाणिवी १० 'इन्द्रादिक महर्द्धिक ... आवतइ भवि' एटलो पाठ बीजी प्रतमांथी पडी गयेलो छे ११ महा दालिद्री

केतलाइ धोरी धवल मूलगा वृषभ तेह जि काढइ। बीजे वृषभे न काढई। तह० तिम मिथ्यात्वरूपिआ कादममाहि कलिउ आपण[1] कुटुंब विरला० के एक समथ उत्तम उपाइ करी काढइ। मिथ्यात्व छडावी साचइ धर्मि लगाडइ[2] ॥ ७९ ॥

[जि] जिम केईएक धवल धोरी मूलगा मवल्लल अनिरुत्मना कल्लणमाहे खुत्त खूतउ हतउ सगड गाडउ काढइ तह तिम इह संसारमाहि विरला केईएक पुरुष मिच्छाओ मिथ्यात्व हूतउ कुटुंब परिवार काढइ। साचइ जिनधर्म लगाडइ ॥ ७९ ॥

[मे] जिम अनिरत्ण कादममाहि खूतउ गाडउ केईएक धोरी वृषभ हुइ तेही जि काढी सकइ, सामान्य वृषभ काढी न सकइ तिम १० मिथ्यात्वरूपीया कल्लणमाहे कुटुंब खूतउ थकउ इहा विरला कोईएक काढइ ॥ ७९ ॥

– [सो] जेनलाएक वीतराग सवन सर्वज्ञदेवने लक्षणे[3] सहितइ न ओलखइ[4]। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ श्रीसर्वज्ञदेवनी अप्राप्तिकारण कहइ। १५

जह वद्दलेण सूर महियलपयड पि नेय पिच्छंति।
मिच्छत्तस्स[5] य उदए तहेव न निअंति जिणदेवं ॥ ८० ॥

[सो] जिम वादलि आडइ छतइ पृथ्वीमडलमाहि प्रकट[6] सूर्य न देखीइ तिम मिथ्यात्वरूपिइ[7] वादलि आडइ छतइ जिनदेव श्रीसर्वज्ञदेव विश्वमाहि प्रकट प्रमाणइ छतु न निअंति न देखइ ॥ ८० ॥ २०

[जि] जह जिम वादलिइ करी महियलपयड पि जगत्रयहूइ प्रत्यक्षइ हतउ सूर सूर्य नेय पिच्छंति न देखइ तहेव

१ आपणु २ लागई ३ लक्षण ए ४ उलखइ ५ मिच्छित्तस्स ६ प्रकटइ ७ मिथ्यात्वतइ उदइ मिथ्यात्वरूपिइ

रहित धनि वर्गी सहितइ हता ति दालिद्रीइ जिं आणिवा। कोइ[1] मिथ्यात्वनइ प्रमाणि संसारमाहि रुलिस्यई ॥ ८८ ॥

[सो] जिनधर्मना जाण लक्ष्मीइ पाहि धर्म अधिकउ देखइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ श्रीवीतरागनी पूजा साची वणवइ। 5

जिणपूअणपत्थावे जइ कोॅ मरूढाण देइ धणकोडि।
मुत्तूण त असार सार विरयंति जिणपूअं ॥ ८९ ॥

[सो] जिणपूअण० गाहा धर्मना जाण श्रावकहूइ चेउमासि पजूसणादिक पर्वि आविइ जिन वीतरागनी पूजा स्तोत्र पडिकमण पोसहादिकनइ प्रस्तावि अवसरि जइ को धन द्रव्यनी कोडि दिइ, इम[2] कहइ 'ए मूकीनइ अमकइ थानकि आवि, अमुकउ व्यवसायादिक काज करी तुहइ लक्ष्मीनी कोडिनउ लाभ हुस्यइ।' मुत्तूण० तउ ते जाण श्रावक ते द्रव्य असार जाणता मूकीनइ सार जिनपूजाइ जिं करइ। जिनधर्मइ जि आराधइ। इसिउ जाणइ 'ईण द्रव्यइ एकइ भव सुखिया थइसिइ। अथवा नहीं थईइ। पुण वीतरागनी पूजाइ[15] जिनधर्म आराधतां निश्चइ आगलि अनंत सुख लाभिसिइ जि' ॥ ८९ ॥

[जि] जइ कोईएक जिनपूजननइ प्रस्तावि श्रीवीतरागदेव-पूजानी वेलाइ श्रावकहूइ धननी कोटि दिइ, त असार निःसार ते धननी कोडि मेल्ही सार प्रधान अनंती धननी कोटि देणहारि जिनपूजा विरचइ करइ ॥ ८९ ॥ 10

[मे] जिन वीतरागनी पूजानइ अधिकारि जे कोइ श्रावकहूइ धननी कोडि दिइ अनेक लाभ दिखाडइ, पणि ते श्रावक असार धन

---

१ जि ॥ कुणि २ थईए

तिम जि मिथ्यात्वनइ उदइ जिनदेव श्रीसर्वज्ञदेव न नियति न पश्यन्ति न देखइ। सकललोकप्रत्यक्ष सूर्य सरीपउ सर्वज्ञदेव। आइ बादलसरीपउ मिथ्यात्व छइ। तिणि कारणि मिथ्यात्वव्यापिउ जीव श्रीसर्वज्ञदेव सकल आराध्यपणइ न देखइ ॥ ८० ॥

५ [मे] जिम बादल करी सूर्य पृथ्वीमंडलमाहि प्रगट जाणीतउ हूतउ पणि दीसइ नहीं तिम मिथ्यात्वरूपीइ बादलि आडइ हूतइ जिन वीतरागदेव न देखइ ॥ ८० ॥

[सो] मिथ्यात्वीनउ जन्म वृथा। ए बात कहइ छइ।

[जि] अथ मिथ्यात्वीना जन्मनी निरर्थकता कहइ।

१०किं सो वि जणणिजाओ जाओ जणणीइ किं गओ वुड्डिं।
जइ मिच्छरओ जाओ गुणेसु तह मच्छरं वहइ ॥ ८१ ॥

[सो] किं सो॰ ते पुरुष माइ का जाइउ ? अथवा जु जाइउ तउ वृद्धिइ का गिउ ? जइ॰ जउ मिथ्यात्वरत कूडा देवगुरु धर्मनइ विषइ आस्थावंत हुउ। अनइ गुणवंत साचा धर्मना आराधक १५तेह ऊपरि वली मच्छर वहइ। एतलइ तेहनउ जन्म निरर्थक। 'मुहिआ' पृथ्वी रहइ भारइ जि करणहार। तेहनी वृद्धिविस्तार सहइ अर्थ जि इसिउ भाव ॥ ८१ ॥

[जि] ते पुरुष काइ जणणिजाओ माताइ जणिउ ? जउ माताइ जनिउ किं गओ विड्ढिं तउ वृद्धिइ का गउ ? मोटउ २०कां हूउ ? पहिलउ जन्मीतउइ नही। जइ विचारइ जणिउ तउ वधारिउ काइं ? इति भाव। काइ ? जइ मिथ्यात्वरत जाओ हुउ

१ जि जणणीय २ जि मे विड्ढिं ३ तेहजिनउ ४ महिआ

मूकीइ मार्ग पान एकइ जि जिननी पूजा करइ। कोइ १ धन लगी एकइ जि मरता सुख हुइ। आ॰ जिनपूजा लगी अनंता सुख पामीइ। ए भाव जाणिवउ ॥ ८९ ॥

[सो] वीतरागनी पूजा१ साचइ भाविइ२ नि कीजती गुणहेतु ५हुइ। ईम्हइ न हुइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ जिनपूजानउ गुण कहइ।

तित्थयराण पूआ सम्मत्तगुणाण कारणं भणिआ।
सा वि य मिच्छत्तयरी जिणसमए देसिअ अपूआ ॥९०॥

[सो] तित्थयराण॰ तीर्थंकरदेवनी पूजा साचा परमेश्वरना १०गुण जाणी परमतत्त्व भणी देषतउ, इहलोकपरलोकना फल अण वाछतउ,३ कर्मक्षयजिनी बुद्धिइ प्रशमचित्तिइ करइ तउ सम्यक्त्वनउ करण४ थाइ। सम्यक्त्व निर्मल करइ अनइ अनंत सुखहेतु हुइ। **सा वि य॰** अनइ तेह नि वीतरागनी पूजा, 'परमेश्वर! तु तुष्ठहूइ साजउ करिजे। अथवा ऋद्धि पुत्रादिक५ संतानादिक देजे। एतलाएक १५द्रव्यनी पूजा तुष्ठहूइ करिसु।' जं६ जिणवर इम मानी ईछी करइ। जे७ पूजा जिनशासनि मिथ्यात्त्वनी करणहार कहीइ ते देवगत मिथ्यात्त्व कहीइ ॥ ९० ॥

[जि] तीर्थंकरनी पूजा सम्यक्त्वना गुणनउ कारणरूप भणी जिम जिम जिनपूजा कीजइ तिम तिम सम्यक्त्वना गुण उपजावइ। **सा** २०**वि य** ते जिनपूजाइ **जिणसमए** श्रीजिनशासनि मिथ्यात्त्वसहित हूती अपूजा **देसिअ** कही। जइ जिनपूजा मिथ्यात्त्वसहित करइ तउ

१ पूजाइ २ भावि ३ जि॰ नथी ४ गुणहेत ५ अणवाछितउ ६ कारण ७ पुत्रसंतानादिक ८ जं जिणवर॰ नथी ९ ते

तह तिम जि गुणवत ऊपरि मात्सर्य सद्वेषभाव वहइ। जइ जन्मिउ न हुउ, जइ मोटउ न थाउ तउ आगलि जातउ मिथ्यात्त्वी न हुत। अनइ वली गुणवत ऊपरि मात्सय न वहत। तिणि कारणि विद्वेषी भणी मिथ्यात्त्वीना जन्मनउ काई नही ॥ ८१ ॥

[मे] ति पुरुप जननी माताइ काइ जायउ ? अनइ जउ ५ जायउ तउ वृद्धिइ काइ गयउ ? जइ मिथ्यात्त्वाइ विपइ रत आम्थावत हुउ तिम गुणवत धर्मवत ऊपरि मत्सर वहइ। एतलइ तेहनउ जन्म फोक ॥ ८१ ॥

[सो] जिम जिम मिथ्यात्त्वि बाहिउ आपल सेपलनी पूजा करइ तिम तिम ते घणउ[१] घणेरउ व्यापीइ। अनइ दृढ धर्म जे हुइ१० तेह रहइ काई करी न सकइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ नीचानउ स्वरूप कहइ छइ।

वेसाण वंदियाण य माहणडुंबाण जक्खसिक्खाण।
भत्ता भक्खट्ठाणं विरयाणं जंति दूरेण ॥ ८२ ॥

[सो] वेसा० वेस्या नगरनायिका[२] बदी भट्ट ब्राह्मण१५ डुम्गुरप्रमुख डुंब गायन आपल्सेपल गोत्रज पितरप्रमुख देहरडा एतला ऊपरि जे भक्ता हुइ तेहहइ द्रव्य पूरइ। पूजा जिमण तापसी[३] वली वाकुलादिक करइ। ते लोक वेस्या[४] भट्टादिक रहइ भक्ष्यस्थानक सदैव थाइ। वलि वलि वरसि वरसि पर्वि पर्वि सदैव वाळइ। बलात्कारिइ, लिइ, दापउ थापइ, लक्ष्मी नीगमइ। विरयाण० अनइ जे विरत हुइ,२०

१ घणउ' नथी २ नाइका ३ पालसी ४ तीह वेरया ५ पर्वि पर्वि नथी

कीधीइ अणकीधी, जेह भणी सम्यक्त्वगुण न ऊपजावइ। मिथ्यात्व-सहितपणातउ जिहा जिहा मिथ्यात्व तिहा, तिहा सम्यक्त्व नही, जिम संगमादेवमाहे। अनइ जिहा जिहा सम्यक्त्व तिहा तिहा मिथ्यात्व नही, जिम श्रेणिकमहाराजमाहे। तिणि कारणि मिथ्यात्व मेल्ही जिनपूजा करिवी, जिम सम्यक्त्वगुण ऊपजावइ ॥ ९० ॥ ५

[मे] तीर्थंकरनी पूजा सम्यक्त्वना गुणनइ कारणि भणी। वली तेहइनि पूजा जिनसमय-अनुपदिष्ट अदेशित अविधि कीधी मिथ्यात्वनइ कारणि हुइ ॥ ९० ॥

[सो] परमेश्वरनी आज्ञाइ जि तत्त्व। ए वात कहइ छइ।

[१] [जि] अथ जिनतत्त्वनउ जाणणहारनी वात कहइ। १०

जं जं जिणआणाए न चिय मन्नइ[२] न मन्नए सेसं।
जाणइ[२] लोअपवाहे न हु तत्तं सो [illegible] तत्तविऊ ॥ ९१ ॥

[मो] **जं जं जिण०** जे उत्तम, जे जे बोल वीतरागनी आनाइ करी सहित हुइ तेह नि मानइ। **न मन्नए०** थाक्तउ बीजउ काइ न मानइ। **जाणइ लोअ०** इसिउ जाणइ, 'लोकप्रवाहमाहि १५ काई नथी।' यतो लोकेऽप्युक्तं—

गतानुगतिको लोको न लोकः पारमार्थिकः।
पश्य ब्राह्मणमूर्खेण हारितं ताम्रभाजनम् ॥

एहनुं[३] अर्थ। एक मूर्ख ब्राह्मण नदीइ पुण्यहेतु स्नान करिवा लागउ।

---

१ जि मन्नेइ २ गाथानो आ उत्तरार्ध जि मां नथी रुढियानी भूलथी पडी गयेली छ ३ 'एहनु अर्थ' थी मांडी [illegible] कीवा' सुधीनो पाठ बीजी प्रतमा नीचे प्रमाणे प्रकारान्तरे छे—एक मूर्ख ब्राह्मण नदीइइ पुण्यहेतु स्नान करिवा [illegible]उ। त्रिभाणउं धूलिनउ ढग अहिनाण करी नदीनइ तटि सातिउं। नदीमाहि

जे ब्रह्मचारी विषयनिवृत्त[1] हुइ, जे आपणा कीर्त्ति न वांछइ, जे दृढ सम्यक्त्वना धणी हुइ, जे सुविद्द आचर[2] कातर न हुइ, एहा दृढ धर्मना धणीन्हइ ए वेश्यादिक मयगइ दूरि जाइ। आपणु लाग कांई देखइ नहीं। एह भणी तेहहूइ उच्चाटइ पुण कांई न करइ। माम्हा प्रसन्न थाइ ॥ ८२ ॥

[जि] वेश्या तणा, बदी भाट तणा, माहण ब्राह्मण तणा, डुंब तणा, यक्षभूतादिक तणा, भत्ता भक्तिकरणहारइ नि पुरुष भक्तरहाण भक्त्यस्थानक। एतलइ जे वेश्यादिकन्हइ भक्ति करइ तेह नि भक्तिकरणहारहूइ देणहारहूइ वेश्यादिक थाइ। विरयाण विरत हूता अणमानता पुरुष हता दूर वेगला जाइ नासइ। विरयाणमित्यत्र पचम्यर्थे षष्ठी प्राकृतत्वात् ॥ ८२ ॥

[मे] वेश्या बदी भाट ब्राह्मण डुंब यक्ष सेष भारना गोत्रन पितर प्रमुख ऊपरि जे भक्त हुइ, वलि बाकुलि लापसीइ करी भक्ति करइ एतला भक्तिना करणहारजिहाइ खाइ। वरसि वरसि ते उसराळा करइ। आइ इंया हता जे विरता छइ ते हूता वेश्यादिक दूरि जाइ। तेहनइ कांई पाडुउ करी न सकइ ॥ ८२ ॥

[सो] अकुलीन धर्म करइ ते आश्चर्य। ए वातं कहइ छइ।

[जि] अथ कई एकसुधर्मी जीवनउ स्वरूप प्ररूपइ।

सुद्धे मग्गे जाया सुहेण गच्छंति सुद्धमग्गम्मि।
१० जे पुण अमग्गजाया मग्गे गच्छंति तं चुज्जं ॥ ८३ ॥

[सो] सुद्धे० जे शुद्धि मार्गि उत्तम सुश्रावकनइ कुलि जाया

१ निवृति २ जे आपणी ... धणी हुइ' एटलो पाठ सो नी बीजी प्रतमांथी पडी गयो छे ३ आविद्द

पृठिइ बीजा लोकना सहस लाख आवता हूता तीणइ धूलि ढिग करतउ दीठउ । तीण लोके चांतविउ 'धूल्निउ ढग करी नाहीइ तउ घणउ पुन्य हुइ ।' सविहु लोके धूल्निा ढिग कीधा । ते मूर्ख ब्राह्मण नदीमाहि नाही आपणइ अहिनाणि त्रिमाणु जोवा लागउ । देखइ तउ ढिगला
5 सहस लाख हूआ । त्रिमाणू लाभइ नहीं । इसिउ भाव । जे इम जाणइ
सो य तत्तविऊ तत्त्वनु॑ जाण कहीइ ॥ ९१ ॥

[जि] शेष थाकतउ जिनाज्ञारहित धर्म न मानइ । वली लोकप्रवाहि तत्त्व नथी इसु जे जाणइ **सो य तत्तविऊ** ते श्रावक तत्त्ववित् तत्त्वनउ जाण ॥ ९१ ॥

10 [मे] जे जे वचन वीतरागनी आज्ञाइ सहित हुइ तेहइ जि मानइ, सेष थाकतउ कोई न मानइ । इसउ जाण जि लोकप्रवाहमाहि तत्त्व काई नथी इम जाणइ ते तत्त्वनउ जाण ॥ ९१ ॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनाज्ञास्वरूप कहइ ।

15 **जिणआणाए धम्मो आणारहिआण फुड अहम्मु त्ति ।**
इअ मुणिऊण॑ तत्त जिणआणाए कुणह धम्मं ॥ ९२ ॥

[सो] **जिणआणाए॰** वीतरागनी आज्ञाइ नि॑ चालता

लागउ । पूठिई बीजा लोकना सहस लाख आवता हूता तीणइ धूल्निउ ढिग करतउ दीठउ । तीणइ लाकिई चींतविउं । धूल्निउ ढिग करी नाहीइ तउ घणउ पुन्य हु[illegible] । सवे लाके धूल्निा ढिग कीधा ।

१ ते तत्त्वनु २ जि नी प्रतमां नेम गाथानो उत्तरार्ध नथी तेम ते उपरना बालावबोधनी पण एक पंक्ति पडी गयेली छे एटले गाथाना पूर्वार्धनो पूरो अनुवाद मळतो नथी ३ मणिऊण जि मे मुणिऊण य ४ 'जि' नथी

धर्म हुइ। आज्ञारहितपणइ स्फुट[1] प्रकटपणइ[2] अधर्म हुइ। [illegible] मुणिऊण० इसिउ तत्त्व जाणीनइ वीतरागनी आनाइ जि [illegible] जीव[3] धर्म करउ ॥ ९२ ॥

[जि] श्रीजिनाज्ञाइ जिनधर्म छइ। आज्ञाबाहिर [illegible] अधर्म पापइ जि हुइ। इअ एसु तत्त्व रहस्य मुणीनइ [illegible] भविक लोको ! जिननी आज्ञाइ धर्म करउ ॥ ९२ ॥

[मे] जिननी आज्ञा पालतां धर्म हुइ। [illegible] करतां स्फुट प्रकट अधर्मइ जि हुइ। इसउ जाणीनइ [illegible] हे जिननी आज्ञाइ धर्म करउ ॥ ९२ ॥

[सो] जे गुरनइ जोगि[4] छतइ धर्म न [illegible] कहीइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] तत्त्वना जाणनी वात कही [illegible] छइ।

साहीणे गुरुजोगे जे न हु निसुणंति [illegible]।
ते दुट्ठधिट्ठचित्ता अडसुहडा भव[illegible] ॥ [illegible]

[सो] साहीणे० सद्गुरुनोग [illegible] आपणइ भाग्यइ करी लाधउ छइ। तीणइ [illegible] न सुणइ न सांभलइ खरा धर्मनउ विचार [illegible] भूंडी परीठी लिइ नहीं ते दुट्ठ० ते [illegible] सुभट समारनइ भइ करी रहित [illegible]—

न मे दिट्ठे परे लोए [illegible]।
दुरक्खागया इमे कामा [illegible] अनागया ॥

1 स्फुट 2 प्रगटपणइ 3 [illegible] 4 [illegible] 5 धीठ 6 [illegible]

एहइ' तोल' तेहहइ सरीषइ' नि थिया । एहइ माहि रूडउ विरूउ कहता मध्यस्थपणउ जासिइ । तेह भणी इसिउ जाणिवउ ए अजाणिउ जि,कहीइ, पुण मध्यस्थपणउ न कहीइ' । इसिउ भाव ॥ १०२ ॥

[जि] जे पुरुष अमुनित अनात गुण अनइ दोष छइ ते अमुनितगुणदोष पुरुष मूर्ष मध्यस्थ हुइ, पडितमाहे गणाइ ता तउ ५ पठइ विस अनइ अमृतहूंइ तुल्यत्व सरीषा हुई । एतलइ विस सरीषउ मिथ्यात्वी मूर्ष अनइ अमृत सरीषउ तत्त्वन पडित जाणिवउ । इणि कारणि ए बिहुहूइ घणउ आतरउ ॥ १०२ ॥

[मे] जीण गुण नइ दोष नहीं जाण्या ते किम बुध पडितमाहि मुख्यपणउ लहइ ? अथवा तेहइ गुणदोषना अजाण जु मध्यस्थ१० विद्वासमाहि मुख्यपणउ लहइ तउ विष नइ अमृत बिहुनइ तुल्यपणउ हुउ ॥ १०२ ॥

[सो] धर्मइ जि आपणउ, बीजउ काई नही । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ सम्यक्त्व विवरइ । १५

मूल जिणिंददेवो' तव्वयण गुरुजण महासयण ।
सेस पावट्ठाण परमप्पाण' च वज्जेमि ॥ १०३ ॥

[सो] मूल० पहिलउ जिनेंद्र वीतरागदेव जीण धर्म देषाडिउ । अनइ परमेश्वरनउ वचन सिद्धात । त्रीजउ' ते सिद्धातना प्रकासणहार श्रीगुरुजन पूज्य आचार्य साधु श्रावक । ए त्रिणिइ महा२० स्वजन गाढा सगा । सेस० बीजउ सह धर्मरहित । आपणउ पुत्र

१ एह जि २ बोल ३ सरीषा ४ कहइ ५ जिणद मे जिणंद ६ जि परमप्पयणं ७ अनइ बीजउ ते ८ त्रीजु ९ आचार्य उपाध्याय

फो जाणइ परे लोए अत्थि वा नत्थि वा पुणो ।
जणेण सद्धिं होक्खामि इय बाले पगब्भई ॥
(उत्तराध्ययन सूत्र, अध्य ५)

सत्तमियाओ अला अट्ठमिया नत्थि नरयपुढवि त्ति इत्यादि
5 बोलता मरी दुर्गतिइ जाइ । यत उक्तं श्रीउपदेशमालायां—

जस्स गुरुम्मि परिभवो साहुसु अणायरो खमा तुच्छा ।
धम्मे य अणहिलासो अहिलासो दुग्गईए उ ॥ (गा २६३)

[जि] सुगुरुनइ जोगि स्वाधीन सतइ हूतइ जे पुरुष शुद्धउ निर्मल धर्मनउ अर्थ हुँ निश्चइ न निसुणंति साभलइ नही ते पुरुष
10 ऐठा जाणिवा । किसा छइ [1] दुष्ट सदोष निर्दय धृष्ट निर्लज्ज चित्त मन जेहना हुइ ते दुष्टधृष्टचित्त कहीइ । वली किसा छइ [2]– संसारनउ भय तिणि करी रहित हता अतिसुभट–छइ । ते परमार्थवृत्तिइ जाणिवा ॥ ९३ ॥

[मे] गुरुनइ योगि स्वाधीन मिलिइ हूतइ जे इहा संसारमाहि
15 शुद्धउ धर्मनउ अर्थ न साभलइ ते जीव दुष्टचित्त हूता अति गाढा सुभट जे समार हूता न बीहइ ॥ ९३ ॥

[सो] केतलाइ उत्तम गुरुनउ जोग पामी मोक्ष लहइ, सघलाइ मान साधइ । ए बात कहइ छइ ।

[जि] अथ गुणवतनउ स्वरूप बोलइ ।

20 सुद्धकुलधम्मजा अवि गुणिणो न रमंति लिंति जिणदिक्खं ।
तत्तो वि य परमतत्त तओ वि उवयारओ मुक्खं ॥ ९४ ॥

[सो] सुद्ध० केतलाइ सुद्ध खरउ धर्म जिहा वापरइ एहइ कुलि उपनाइ हूता गुरुनइ योगि विनय विवेक वैराग्यादिक गुणवत

---

[1] भाग [2] रूपाइ

चल्लगिरादिक पर अनेराइ लोक मिथ्यात्वी भणी पापस्थानक¹ भणी वजू त्यजु। तेह ऊपरि मोह न करउ ॥ १०३॥

[जि] मूल पहिलउ जिनेन्द्रदेव। बीजउ **तत्त्वयण** तेह जिनेन्द्रनउ वचन, जिनप्रणीत धर्म। त्रीजउ गुरुजन सुसाधु गुरु। ५ ए निश्चइ महासज्जन मोटा सगा। **सेस पावट्ठाण** शेष थाकतउ स्थान पापस्थानक पापनउ कारण हूतउ पारकउ अनइ आपणउ बजउ ॥ १०३॥

[मे] मूलि ता पहिलउ जिनेन्द्रदेव। पछइ तेहनउ वचन। वली गुरुजन सुसाधु गुरु। ए निश्चइ महामोटा सगा। सेष थाकता १०अर अनेरा मिथ्यात्वी अनइ ज्ञानदर्शनचारित्ररहित आपणपउ त्यजउ ॥ १०३॥

[सो] वली गुरुनउ स्वरूप² कहइ छइ।

[जि] अथ प्रकारान्तरि गुरुपरीक्षा बोलइ, विहु गाथाइ करी

अम्हाण रायरोसो³ कस्सुवरिं नत्थि⁴ इत्थ गुरुविसए।
¹⁵जिणआणरया गुरुणो धम्मत्थ सेस वोसिरिमो ॥ १०४॥

[सो] **अम्हाण०** कवि कहइ छइ। ईहां गुरुनइ विषइ अम्हहूइ रागरोस⁵ कहिं⁶ ऊपरि नथी⁷। आ गुरु रूडउ, आ गुरु विरूउ⁷ इम काई रागद्वेष नथी। **जिण०** जे गुरु जिन वीतरागनी खरी आंना पालइ छइ, खरउं⁸ चारित्र आराधइ छइ ते गुरु धर्मनइ २०काजिइ कर्मक्षय निमित्त सेवु। तेहइ इहलोकनइ कारणि न सेवउ **सेस०** सेष बीजा गुरु सघलाइ वोसिरावउ छांडु⁹ ॥ १०४॥

---

१ पापस्थान २ स्वरूप ३ जि म रायरोसं ४ नत्थि अत्थ जि इह नत्थि ५ रागरोस ६ कइइ ७ नथी ८ खरं ९ छाडु

थाइ । **न रमन्ति०** संसारना विषयसुखनइ विषइ न राचइ । **लिंति०** जिन वीतरागनी दीक्षा लिइ । ते दीक्षामाहि परम तत्त्व पाच महाव्रत पाच समिति त्रिणि गुप्तिरूप आराधइ । ते आराधी स्व-परलोक भासई हुइ । धर्मनउ उपकार करइ । उपकारकै केवलज्ञान प्रामी मोक्ष लहइ । यत उक्त **श्रीउपदेशमालासिद्धान्ते**— 5

> आसन्नकालभवसिद्धियस्स जीवस्स लक्खण इणमो ।
> विसयसुहेसु न रज्जइ सव्वथामेसु उज्जमइ ॥ (गा २९०)

[जि] सुद्ध निमल मोटा ने कुल धमलक्ष्मीवत कुल तिहां जात उप्पनाई हूता गुणवत न रमइ । संसारना भोग न भोगवइ । किंतु जिनोक्त दीक्षाव्रत लिइ । तेह जिनदीक्षानउ सिमु प्रमाण १ **तत्तो वि**१० **य परमतत्त** । तेह जिनदीक्षा हूतउ परम तत्त्वज्ञान ऊपजइ । **तओ वि** तेह परमतत्त्व हूनउ **उवयार** लोकहूइ उपगार हुइ । अथवा आपणपाहूइ उपगार हुइ । भला धर्मानुष्ठान करइ । अनेरा पाहइ करावइ । **मुक्ख** तेह उपगार हूतउ मोक्ष हुइ । मोक्षि अनिर्वचनीय अप्रतिपातिया शाश्वता सुख छइ । तेह भणी गुणवत दीक्षा लिइ ॥ ९४ ॥१३

[मे] जीणइ कुलि वीतरागनउ धर्म वापरइ तीणइ कुलि ऊपना हूता विनयविवेकादिक गुणसहितइ हूता ससारना सुखनइ विषइ न राचइ । अनइ जिनदीक्षा लिइ । तिवार पछइ परम तत्त्व ओलखइ । ते आराधता हूता क्रमिहि मोक्ष पामइ ॥ ९४ ॥

[जि] अथ नारकी कहइ । २०

वंदेमि नारयाओ जेसिं दुक्खाइ संभरंताण ।
भव्वाण जणइ हरिहररिद्धिसमिद्धी वि उद्धोसं ॥ ९५ ॥

१ उपकारी २ °रिद्ध

[जि] इत्थ संसारमाहे गुरुनइ विषइ कस्सुवरिं षही ऊपरि अम्हाण अम्हहूइ राग अनइ रोषई नथी। एक गुरु ऊपरि राग द्वेष इसु नही। किं तु अम्हे धर्मनइ अर्थि जिनानारत जिनानाप्रति पालई ज गुरु सेवा। सेप थाक्ता अनेरा जिनाज्ञा थोडी पालइ ते गुरु वोसिरां मेल्हा ॥ १०४॥ 5

[मे] कवि कहइ। अम्हनइ गुणही गुरु ऊपरि रागरोस नथी इहा गुरुनइ विषइ। जे जिननी आज्ञानइ विषइ तत्पर तेहइ जि धर्मनइ काजि गुरु। सेप थाक्ता वोसिरउ छाडउ ॥ १०४॥

[सो] वली एह जि वात कहइ छइ।

[जि] मेरिहवानउ कारण कहइ। 10

नो अप्पणा पराया गुरुणो कइया वि हुंति सड्ढाणं।
जिणवयणरयणमंडणमंडिय सव्वे वि ते सुगुरु॥ १०५॥

[सो] **नो अप्पणा०** श्रावकनइ 'आ आपणा गुरु, आ पिराया[1] गुरु' ए वात कहीइ नथी[2]। ए वात अजाण मिथ्यात्वीनी 'आ माहरउ गुरु।' जेह भणी मातग म्लेच्छ ठठार चमार वेश्यादिक 15 इनइ एकेकउ गुरु[3] छइ। ते अजाणपणइ[4] 'माहरउ ए गुरु' इम कहइ, पणि मोक्षार्थी श्रावक इम न कहइ। तेहनइ **जिणवयण०** जिनवचन सिद्धात तेहरूपिउ रत्नमडन रत्नमय आभरण तीणं करी जे मंडित छइ[5], जे[6] वीतरागनी आज्ञा सिद्धात साचउ आपइ मानइ प्रकासइ, आपणी शक्ति अणगोपवता करइ आराधइ ते [illegible] 20 सुगुरु कहीइ। ते गुरु भणी आराधिवा ॥ १०५॥

१ जि जिणवयणमडण २ पराया ३ नथी ४ [illegible] ५ [illegible]

[सो] चयेमि० ते नारकीइ वर्णवउ, जे नारकीनां दुःख सिद्धान्तइ कहिइं आणीनइ स्मरता हुंता भव्याण भव्य जीवहूइ हरिहर विष्णु ईश्वरादिकना मरीचीइ ऋद्धिनउ विस्तार उद्धोस ऊकाटउ करइ। जाणइ एह रिद्धि लगइ जीव पाप ऊपार्जी नरगिं जाइ। एह्वा दुःख पामइ। इस चींतवता भय लगइ ससर धूजइ। संसारना सुख उपरि वैराग्य ऊपजइ ॥९५॥

[जि] नारकीइ वर्णवउ हउ, जेहां नारकीना दुःख संभारता स्मरता हूंता भव्वाण भव्य जीवहूइ हरि विष्णु हर ईश्वर तेहनी ऋद्धि समृद्धि लक्ष्मीनउ विस्तार उद्धोस उद्धर्षण रोमाच जणइ ५करइ। एतलइ एनउ काई नारकीहूइ दुःख छइ, जे दुःख संभारताई ज हूंता अति भय लगी कप उपजावइ। कप लगी रोमाच ऊपजइ। अनइ ति को समारना दुःख हूतउ बीहइ ति ए न करइ। तिणि कारणि अम्हे नारकीना दुःख सभारता हूतां पाप न करां। तिह भणी नारकी वर्णवां। जिम चोरनां वधमरणादिक दुःख देखी साधु माणस लगारइं १०चोरी अन्याय न करइ ॥९५॥

[मे] ते नारकीइ वर्णवीइ, जे नारकीनां दुःख संभारतां हूंतां भव्य जीवहूइ हरिहरादिक देवतानी ऋद्धिनउ विस्तार उद्धोस करतां रोमांच ऊकाटउ करइ। जाणइ एह रिद्धि लगी नरगि दुःख पांमीस्यइ ॥९५॥

---

२० [सो] केतलाइ उपदेशमालानुं[1] अर्थ मानइ, पुण करइ नहीं। तेह आश्री कहइ छइ।

[जि] अथ बिहुं गाथाइ श्रीउपदेशमाला[2] वर्णवइ।

---

१ नरकि २ श्रीउपदेशमालनउ

[जि] शुद्ध श्रावकहूइ कदापिहिं आपणा अनइ पारका गुरु न हुइ। किं तु श्रावकनूइ ते सघलाई सुगुरु हुइ। ते कुण [1] जिनवचन रूपिया रत्न तेहनउ मडन अलकार तेहे करी मडित अलकर्या। एतलइ जे महात्मा जिनवचन मानइ ते सुगुरु ॥ १०५॥

5 [मे] धमार्थी श्रावकनइ 'गुरु आपणा पारका' ए वात कहिवा नावइ। शाइ [2] जे जिनवचनरूप रत्न तेहे करी मडित सूधउ प्ररूपइ, सूधउ चारित्र पालइ ते सघलाइ सुगुरु करी मानिवा ॥ १०५॥

[सो] जेहनी संगतिइ धर्म लाभइ तेह सुगुरुइ जि जाणिवु। ए वात कहइ छइ।

10 [जि] अथ सज्जन वर्णवइ।

बलि किज्जामो सज्जणजणस्स सुविसुद्धपुण्णजुत्तस्स।
जस्स लहु सगमेण वि सुधम्मबुद्धि समुल्लसइ ॥ १०६॥

[सो] बलि० अम्हे ते सज्जन जन उत्तम लोकहूइ बलि कीजउ, ऊवारणउ कीजउ। **सुविसुद्ध०** जे सुविशुद्ध निर्मल पुण्यिइ 15 करी युक्त सहित छइ। **जस्स०** जेहनइ संगमि सयोगिइ करी लहु तत्काल **सुधम्म०** खरा धर्मनी बुद्धि उल्लसइ ऊपजइ। जेह थिकउ साचा धर्मनी बुद्धि आवइ तेहनइ ज गुरु कहीइ। इसिउ भाव। यत उक्त श्रीसिद्धान्ते—

जे जेण सुद्धधम्मम्मि ठाविओ सजएण गिहिणा वा।
20 सो चेव तस्स जायइ धम्मगुरु धम्मदाणाओ ॥

[जि] सुविसुद्ध अतिनिर्मल पुण्य तेहे करी युक्त सज्जन लोकहूइ अम्हे **बलि किज्जामो** बलिहारइ कीजा, ऊवारणइ कीजा।

१ तइ २ शुद्ध ३ मे तस्स ४ तेह

सिरिधम्मदासगणिणा रइय उपदेसमालसिद्धंतं ।
सव्वे वि समणसड्ढा मन्नति पढति पाढति ॥ ९६ ॥
त चेव केवि अहमा छलिया अहिमाणमोहभूएणं ।
किरियाए हीलंता ही ही दुक्खाइ न गणति ॥ ९७ ॥

[सो] **सिरिधम्मदास०** श्रीधर्मदासगणिआचार्य ५ **श्रीमहावीर** निन्हईया छता श्रीउपदेशमालासिद्धांत रचिउ कीधउ, अनेक महात्मा श्रावक आश्री उपदेश विचाररूप । **सव्वे वि०** ते अर्थ सविहु गच्छना महात्मा श्रावक मानइ पढइ पढावइ ॥ ९६ ॥

त चेव० पुण तेह जि माहि केतलाइ अधम अभिमान अहंकार अनइ मोह अज्ञान तेहरूपिइ भूति छल्या, अहकार अनाणिवाना वाद्या१० तेह नि श्रीउपदेशमालाहूइ क्रिया करी हीलइ । अवज्ञाइं करइ । **ही ही०** आहा ! ते बापडा आगलि आपणपाहूइ दुःख आवतां गणता नथी । ते मूर्ख इसिउ नथी जाणता जे ईण सिद्धांतनी अवज्ञाइ करी अनंत संसारमाहि रुलिस्युं । अनंता दुःख पामिस्यउं ॥ ९७ ॥ –

[जि] **श्रीधर्मदासगणि** नामाचार्यइ रचउ कीधउ१५ श्रीउपदेशमालासिद्धांत **सव्वे वि** सघलाई श्रमण महात्मा **सड्ढ** श्रावक मानइ पढइ पढावइ ॥ ९६ ॥

केईएक अधम पुरुष अतिमान मोह रूपिया भूत प्रेत तेहे छल्या हुता ही ही खेदे आपणपाहूइ दुखइं न गणइ न चींतवइ । किसा छइ अधम ? **त चेव** श्रीउपदेशमालासिद्धांत अवगणइ ते अधम२० भूते छल्या पुरुष सरीषा जाणिवा । जिम भूतव्यापिउ लोक मायउ पेट

१ जि उवएसमालं° मे उवएससमालसम्मत्तं २ जि विवि ३ जि °भूएहिं ४ °माल° ५ अहींथी मांडी ९७मी गाथाना बालावबोधमां "अहंकार अनइ मोह सुधीनो पाठ सो नी बीजी प्रतमांथी पडी गयेलो छे ६ अवज्ञा

जस्स जेह सज्जन जन तणइ संगमि संयोगमात्रइ जि रघु उतावली सुधर्मबुद्धि **समुल्लसइ** प्रकट हुइ ॥ १०६ ॥

[मे] ते सज्जन उत्तम जननइं बलिहारी कीजइ । पणि ते केवड़ा छइ[1] निर्मल पुण्य करी युक्त छइ । जेहनइ समागि रघु शीघ्र भली धर्मनी बुद्धि ऊपजइ उल्लसइ ॥ १०६ ॥ 5

[सो] तीणइ[1] कालि ए कविनइ मनि श्रीजिनवल्लभसूरिइ जि खरा भणी वइठा हुंता । तेह[2] आश्री वि गाह कहइ छइ ।

[जि] अथ बिहु गाथाइ श्रीजिनवल्लभसूरि वर्णवइ ।

अज्ज वि गुरुणो गुणिणो सुद्धा दीसंति तडफडा केवि[3] ।
पहु[4] जिणवल्लहसरिसो पुणो वि जिणवल्लहो चेव ॥१०७॥ 10
वयणे वि सुगुरुजिणवल्लहस्स केसिं न उल्लसइ सम्म ।
अह कह दिणमणितेयं उलुयाणं हरइ अधत्तं ॥ १०८ ॥

[सो] अज्ज वि० अजी केतलाइ सुगुरु गुणवंत तपि नियमि करी कडकडता[5] देसीइ । पुण **पहु** प्रभु **श्रीजिनवल्लभसूरि** सरीषउ गुरु श्रीजिनवल्लभइ जि हुइ । बीजउ एव्हउ[6] शुद्धप्ररूपक 15 चारित्रीउ न हुइ ॥ १०७ ॥

वयणे० श्रीजिनवल्लभसूरि गुरुहूइ[7] वचनि[8] केतलाइ अभागिआनइ सम्यक्त्व न ऊपजइ[9] **अह०** अथवा सूर्यनउं तेज उलूक घूअटहूइ अधण[1] किम फेडइ[2] जिम सूर्यइ ऊगिइ घूअड न देखइ तिम एहइ[1] गुरनइ वचनि धर्म न ओलखइ[12] । इसिउ भाव ॥ १०८ ॥ 20

---

१ तीण २ तेह भणी तह आश्री ३ मे केई ४ जि पर, मे पुण
५ कल्याणं ६ कडकडाता ७ एहवउ ८ गुरुनइ ९ वचनइ १० धीवपणउं
११ एहइ १२ उल्पइ

आह्णतउ मरणपीडादिक दुख न चींतवइ तिम सिद्धांतनिंदक पुरुष अहंकारि हूतउ दुखीउ थाइ ॥ ९७ ॥

[मे.] श्रीधर्मदासगणिइ श्रीमहावीर जीवताइं जि श्रीउपदेशमालाप्रकरण सिद्धांत जाइउ रचिउ सव्वे वि सघलाइ ५ महात्मा श्रावक सावद पढइ पनाग्रइ ॥ ९६ ॥

तेह नि उपदेशमाला केईएक अधम अभिमान अनइ मोह रूपीइ भूति छरया हता किंयाइ करी अवहेलना हूता ही ही इसिइ सेनि आगामिया नरकना दुख गणइ नहीं । ते मूर्ख जाणता नथी नि संसारमाहि रुलीस्यइ ॥ ९७ ॥

---

१० [सो.] वीतरागनी आज्ञाभगि मोटउ पाप । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनेन्द्रनउ आज्ञाप्रताप वर्णयइ ।

इयराण[1] ठकुराण[2] आणाभंगेण होइ मरणदुहं ।
किं पुण तिलोयपहुणो जिणिंददेवाहिदेवस्स[3] ॥ ९८ ॥

[सो.] इयराण० इतर, सामान्य ठाकुराईनी[4] आज्ञाभंगि १५तेहना आदेशनइ लोपि मरणदुख प्रामीइ । ते रीसाविउ ठाकुर[5] मारइ । किं पुण० त्रैलोक्यनउ प्रभु ठाकुर जे जिनेन्द्रदेवाधिदेव सर्वदेवनउ नायक तेहनी आज्ञानइ लोपि एक मरणदुखनउ सिउ कहीइ ? अनना मरणदुख प्रामइ ॥ ९८ ॥

[जि] इतर पाघरा ठाकुरनी आज्ञा भांजिइ मरणादिक दुख २०हुइ, तउ वली त्रिलोकप्रभु त्रिलोकनायक श्रीजिनेंद्रदेव तेहनी आज्ञा भाजिवइ करी महादुख हुइ तेहनउ सिउ कहिवउ ? ॥ ९८ ॥

---

१ जि मे इयराण २ नि मे ठकुराण ३ जिणिंद मे जिणिं ४ ठाकुरनी ५ ठाकुर -

[जि.] अद्यापि आज लगइ तडपडा घडग्धा शुद्ध निर्दोप गुणवन्त केईएक गुरु दीसइ । पर केवल प्रभु श्रीजिनवल्लभसूरि सरीषउ वली जिनवल्लभसूरि जि । अनेगना अभावहतउ अन्योन्योपमा छाजइ ॥ १०७ ॥

गुरु श्रीजिनवल्लभसूरिनइ वचनइ कहीएकहूइ सम्म सम्यक्त्व नउ उल्लास न प्रकट हुइ । अथ पउइ दिनमणितेन सूर्यना किरण उल्का घूयड तेहनउ अघव अघपणउ किमउ हरइ ? अपि न न हुइ । सूर्यना तेज सरीषउ विश्वप्रकासक श्रीजिनवल्लभसूरिनउ वचन अभागिया पुरुषरूपिया घूयड तेहनउ अनानत्वपिउ अधपणउ न फेडइ तउ ते अभागिया घूयडना कर्मइजिनउ दूषण ॥ १०८ ॥

[मे] अनी एवहइ तीर्थकालि द्रव्य क्षेत्र काल भावनइ मेलि गुरु गुणवंत रूडा क्रियावंत आकरा दीसइ । पणि श्रीजिनवल्लभसूरि सरीषा वली श्रीजिनवल्लभसूरि जि ईणइ कालि दीसइ ॥ १०७ ॥

श्रीजिनवल्लभसुगुरुने वचने कहिनइ सम्यक्त्व उल्लसइ नहीं ? अपि तु भव्य जीव सेवाकारक सघलाइनइ सम्यक्त्व उल्लसइ । अथवा वली सूर्यनउ तेज घूअडनइ अधपणउ किम्इ फेडइ ? अपि तु न फेडइ । तिम जे अभव्य दुरभव्य छइ ते गुरुने वचने सम्यक्त्व न ओलखइ । इसउ भाव ॥ १०८ ॥

[सो] संसारनउ मरणादिक स्वरूप देखीनइ केतलाइहूइ[1] वैराग्य न ऊपजइ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ तेह ज अभागियानउ स्वरूप कहइ ।

तिहुअणजण मरत दट्ठूण निअंति जे न अप्पाणं ।
विरमंति न पावाओ धिद्धी धिट्ठत्तणं ताणं ॥ १०९ ॥

[1] 'केतलाई हूई' नथी

[मे] इतर पाथरा ही ठाकुरनी आज्ञानइ भंगि मरणादिक दुःख ऊपजइ। पणइ त्रैलोक्यनउ प्रभु जिनेन्द्र देवाधिदेव तेहनी आज्ञानइ भंगि जे दुक्ख उपजइ ते किम कही सकीइ ? ॥९८॥

[सो] वली एक जि वात कहइ छइ।

[जि] अथ जिनवचननउ गुण कहइ। 5

जगगुरुजिणस्स[1] वयणं सयलाण जियाण होइ हियकरणं[2]।
ता तस्स विराहणया कह धम्मो कह[3] णु जीवदया ॥९९॥

[सो] **जगगुरु०** जगत्‌त्रयनउ गुरु श्रीजिनेन्द्र वीतराग तेहनउ वचन सर्व जगना जीवहइ हितकारिउ छइ। **ता तस्स०** तउ तेहनी विराधना जउ करइ, तेहनउ वचन न मानइ, अप्रमाण करइ 10 तउ **कह धम्मो** तेहहइ धर्म किहां छइ ? **कह णु जीवदया** अनइ तेहहूइ जीवदया किहां छइ ? तेह भणी वीतरागनइ वचनइ जीव ओलखाइ[4], जीवदयानु प्रकार पुण जाणाइ। वीतरागना वचनइ जि उपरि आस्था नही तउ किम जीव अनइ जीवदया जाणीइ ? ॥९९॥

[जि] जगत्‌त्रयनउ गुरु जे जिन श्रीवीतरागदेव तेहनउ **वयणं** 15 वचन **सयलाण जियाण** सघलाई जीवहूइ हितकारक हुइ। **ता** तिणि कारणि **तस्स** तेह जिनवचन तणी विराधनाइ आशातनाइ करी **कह** किसु धर्म हुइ ? अपि तु न हुइ। **णु** प्रश्ने। **कह** किसु जीवदयाइ हुइ ? जीवदया पुण न हुइ। तिणि जि कारणि जिनवचननी विराधना न करिवी। किं तु पालना करिवी, जिम आत्महइ रूडउ हित 20 हुइ ॥९९॥

---

१ जगुगुरु २ हियकरण ३ म कहण ४ उलखाइ ५ तु आस्था

[सो] तिहुअण० त्रिभुवननउ लोक [illegible] छइ। को रहिउ नहीं, रहिसिइ नही। एहउ [illegible] न जोइ, 'अम्हइ मरण आवइ छइ, धर्म [illegible]।' [illegible] थिकउ निरमइ नहीं, उहटइ नहीं। **धिद्वी०** [illegible] धिग् पडउ, जेह भणी रमारइ मरणभय [illegible]

[जि] जे पुरुष त्रिभुवननउ लोक [illegible] **न निअत्ति** न चींतनइ, वैराग्य न पामइ [illegible] तेहा पुरुषा तणउ धेठपणउ तेहइइ धिग् [illegible]

[मे] त्रिभुवनना लोक मरता देखि [illegible] 'अम्हेई मरिस्यउ।' एवहउ देखी जे [illegible] धेठपणानइ धिग् धिकार पडउ ॥ १०९॥

[सो] वली एह नि वात [illegible]।

[जि] अथ कुत्सित स्नेह [illegible]।

सोग्ग कंदिऊण कुट्टेऊण सिर [illegible]।
अप्प खियंति नरग्ग त पि हु धिद्धी [illegible] ॥ ११० ॥
एग पिअमरणदुहं अन्न अप्पा वि [illegible] नरए।
एग च मालपडण अन्न [illegible] गाओ ॥ १११॥

[सो] को सगउ मर [illegible] करी आक्रंद करइ अनइ माथउ पेट कूटइ। [illegible] मोहनीय कर्म ऊपार्जीनइ आपणपउ नरगि[1] पा[illegible]। [illegible] कुस्नेह [illegible] स्नेह प्रतिइ धिग पडउ ॥ ११०॥

---

1 जि मे निरयाओ 2 [illegible]

[मे] जगगुरु जिनेश्वर तेहनउ वचन सघगइ जीवनइ सुख कारक हुइ । तउ ते परमेश्वरना वचननी विराधनाइ कीधीइ निहां धर्म, किहां जीवन्या[1] ॥ ९९ ॥

[सो] केतलाइ शुद्धा[1] चारित्रियानी अवज्ञानइ काजिइ जमलउ बाह्य क्रियाडंबर भाडइ । ते वात कहइ छइ ।

[जि] अथ सिद्धांत हूतु विरुद्ध अधिक क्रियाडंबर जे धरइ ते उद्दिसी कहइ ।

किरियाइफुडाडोव[2] अहिय साहंति[3] आगमविहूणा ।
मुद्धाण रंजणत्थं सुद्धाण हीलणट्ठाए ॥ १०० ॥

[सो] **किरियाइ०** केतलाइ[4] बाह्य तप क्रियादिकनउ फटाटोप आडंबर[5] चारित्रियाइ पाहइ अधिकउ कहइ दिपाडइ, आगम सिद्धांतनी आज्ञारहित आपणी बुद्धिइ कल्पीनइ **मुद्धाण०** मुग्ध भोला लोकनै[6] रंजविवानइ काजिइ । **सुद्धाण०** शुद्धचारित्रिया तेहहूइ अपमाननइ काजिइ, तेहे ठउहवा[7] इम करइ । पुण जाण हुइं ते तेहे न वाहीइ ॥ १०० ॥

[जि] **आगमविहूण** सिद्धात जे नथी कहिउ तेह क्रिया दिकनउ स्फुगटोप प्रकट आडंबर अधिक साधइ करइ । किसा भणी ? मुग्ध लोक सिद्धांतरहस्यना अजाण तिहहूइ रंजिवा भणी अनइ वली शुद्ध सदाचारी पुरुष तेहूइ हीलनार्थिं अवहेलनानिमित्ति । एतावता सिद्धांत पाखइ क्रिया तपनउ आडंबर घणउ करइ । तेहहूइ मुग्धरंजन मात्र फल छइ । साधुहउ सदाचारीनी अवहेलाइ करी पाप हुइ । ए

---

1 शुद्ध 2 जि मे फुग्गडोव 3 सायंति 4 केतला 5 'आडंबर' नथी 6 लोक ते 7 ठचआवा

दृष्टां० एक तां प्रिय अभीष्ट मूउ ते दुःख । बीजउ वली शोक करी पाप उपार्वी नरगि जाइ । बीजउ ते दुःख । दृष्टांत कहइ छइ । एक तां ऊंचा माला थकउ पडिउ । बीजउ लउडइ करीइ माथइ आहणिउ । ए लौकिक दृष्टांत ॥ १११ ॥

5 [जि] अज्ञानी लोक शोकि करी भंदी रोई सिर माथउ ऊजर येठइ पुण कूटीनइ आपणपउ नरगि क्षिपइ घालइ । त पि० ते कुत्सित स्नेहपणाहूइ धिकार पडउ ॥ ११० ॥

एक तउ प्रिय थाल्हउ तिहनउ मरणदुःख आगइ छइ अनइ बीजउ आपणपउ नरगि क्षिपइ घालीइ । एक तउ माल हूंतउ पडण १०पडिउ । अनेरउ वली ऊपरि माथइ लउडानउ घाउ । इणि कारणि शोक न करिवउ, जिम नरगि न पीडाइ ॥ १११ ॥

[मे] स्वजनादिकनइ मरणि शोक आक्रन्द करीनइ, शिर कूटीनइ, हीउ ताडीनइ आपणपउ नरगनइ विषइ क्षिपई । तउ तेहइ कुस्नेहनइ धिग् धिकार हुउ ॥ ११० ॥

१५ एक ता प्रियतम वाल्हा तेहना मरणनउ दुःख । बीजउ आपणपउ नरगनइ विषइ क्षेपइ । तउ ए वात साची हुई । एक माला हूतउ पडिउ । वली लकुटनउ घाउ माथइ वाजइ ॥ १११ ॥

[सो] साचा धर्मना धणी गुरु मइ श्रावकइ दुर्लभ । ए वात कहइ छइ ।

२० [जि] 'स्नेहमूलानि दुःखानि' इसु स्थापी साम्प्रत दुःखमा कालनउ स्वरूप कहइ ।

१ नरगि २ लउडई ३ गुरु

फ्टई करइ अनइ आगलि पापइ जु उपार्जइ । एहां एह जु उपाणउ साचउ हुइ--एग च मारपदण अन्न ल्उडेण सिरि घाओ ॥ १०० ॥

[मे] क्रियानउ फटाटोप बाह्य तपनउ करिवउ चारित्रिया पांहति अधिकउ देखाडइ । आगमविहीन सिद्धांतनी आम्नाइ रहित आपणी बुद्धिइ मुग्ध भोळा लोकनइ रंजिवानइ काजि अनइ शुद्ध ५ चारित्रिया तेहना अपमाननइ काजि, हीलनइ हेति ॥ १०० ॥

[सो] जे धर्मनउ उपदेश दिइ ते गाढउ हितूउ । ए वात कहइ छइ ।

[जि] अथ जिनधर्मनउ देणहार पुरुषनउ स्वरूप कहइ ।

जो देइ सुद्धधम्म सो परमप्पा जयम्मि न हु अन्नो । १०
किं कप्पद्दुमसरिसो इयरतरू होइ कइया वि ॥ १०१ ॥

[सो] जो देइ० संसारना काजकाम व्यवसाय वाणिज्यनइ विषइ प्रेरणा सहइको मा बाप सगा सणीजा करइ । पुण जे सूधउ खरउ धर्म उपदेशिइ[1] देखाडइ ते परमात्मा जगमाहि परमहितूउ[2] कहीइ । अनेरउ न कहीइ । किं कप्पद्दुम० जिम बीजा धव खइर पलासादिक १५ घणाइ वृक्ष हुइ, पुण मनोवाञ्छित पूरणहार कल्पद्रुम सरीसउ एक[3] वृक्ष न हुइ । तिम कल्पद्रुम सरीसउ धर्म दिण्हार[4] । इइ[5] लोकना काजना प्रेरणहार बीजा वृक्ष सरीषा जाणिवा ॥ १०१ ॥

[जि] जे शुद्धउ साचउ धर्म दिइ सीखवइ ते पुरुष परमात्मा गाढउ मोटउ **जयम्मि** जगत्माहे । तेह सरीखउ **न हु अन्नो** २० अनेरउ मोटउ कोई नही । जिसु [2] कल्पद्रुम सरीषउ अपर वृक्ष

१ उपदिसइं २ हितूउ ३ एकइ ४ देण्हार ५ इ

सपइ दूसमकाले धम्मत्थी सुगुरु [illegible] दुल्लहा [illegible]
नामगुरु नामसड्ढा सरागदोसा बहू [illegible] ॥११२॥

[सो] सपइ० हवडा दुःषमा [illegible] निष्केवल धर्मार्थी सुगुरु अनइ सुश्रावक [illegible] पिराग्रु काई न जोअइ[1]। एकलउ धर्म [illegible] **नामगुरु०** नामिइ करी गुरु। नामिइ [illegible]। **सराग०** जेहहूइ[2] आपणा विरूआ[3] ऊपरि राग, [illegible] **बहू अत्थि** एह्वा घणा[4] छइ ॥११२॥

[जि] संप्रति हिवडां दुःषमाकालि [illegible] सुगुरु श्रावक दुर्लभ छइ। तिणि कारणि **सरागदोसा** रागद्वेषी [illegible] हूता **नामगुरु** नामधारक घणाइ छइ। ते दुःषमा [illegible] ॥११२॥

[मे] सांप्रत दुःषमा कालि धर्मार्थी सुगुरु [illegible] पामीइ। पणि नामि गुरु, नामि श्रावक[5] रागद्वेषवंत[6] [illegible] दीसइ ॥११२॥

[सो] धम छइ [illegible] [illegible]

[जि] अथ धन्य अनइ [illegible]

कहिअ पि सुद्धधम्म काहिं[7] नि धन्नाण [illegible]
मिच्छत्तमोहिआण[8] होइ रई मिच्छधम्मेसु ॥११३॥

[सो] कहिअ पि० [illegible] धर्म कहिउ सांभली [illegible]

1 जि मे [illegible] 2 [illegible] 3 [illegible]
6 घणाइ 7 मे [illegible]

फडया नि कदापि किमारइं हुइ [1] अपि तु न हुइ। कल्पद्रुम सरीषउ शुद्ध धर्मदायक जाणिवउ ॥ १०१ ॥

[मे] सम्यक्त्वमूल बार व्रतनउ सूधउ धर्मनउ उपदेश जेहे दिउ तेहूइ नि परमात्मा। जगत्त्रयमाहि परमपुरुष अनेरउ कोई नहीं। 5 किसउ [?] कल्पवृक्ष सरीपउ इतर वीनउ को वृक्ष हुइ कहीइ [?] अपि तु नहीं ॥ १०२ ॥

[मो] जे गुणवंतना गुण अनइ दोषवंतना दोष न ओलखइ [1] ते आश्री कहइ छइ।

[जि] अथ पंडित अनइ मूर्खहूइ गाल्ड आतरउ कहइ।

10 **जे अमुणिअगुणदोसा ते कह विबुहाण हुंति मज्झत्था। अह ते वि हु मज्झत्था ता विसअमिआण तुल्लत्तं ॥१०३॥**

[सो] जे **अमुणिअ०** जे गुणवंतहूइ गुणवंत भणी ओलखइ [2] अनइ दोषवंतहूइ दोषवंत भणी न जाणइ। गुणवंत अनइ दोषवंतइ निहइ सरीपाइ जि देखइ। इम कहइ - 'अम्हारइ सघलाइ [4] 15 देव, सघलाइ गुरु सरीखाइ नि। अम्हारइ रागद्वेष नही। अम्हे मध्यस्थ।' ते जाणइ नहीं [5] मध्यस्थ भणी किम कहइसइ [?], ते गाढा अजाणइ नि कहीइ। जेह भणी तेहहूइ वि दोष लागइ, जेह भणी गुणवंतना गुण छताइ [6] अछता करइ। दोषवंतमाहि [7] अछता गुण आरोपइ छइ [8]। ए नि दोष तेहहूइ लागइ। **अह ते०** जउ तेह 20 मध्यस्थ कहवराइ **ता वि०** तउ विख अनइ अमृत तथा रत्न अनइ काचि, ओंबउ अनइ लींब, साप अनइ फूलमाल, अंधारउ अनइ अजूआलउं

1 उलखइ 2 तह विबुहाण 3 उलखइ 4 सघला 5 नहीइ 6 छता 7 दोषवंतना 8 'छइ' नथी।

मिच्छत्त० ये निबिड मिथ्यात्वि करी मोह्या वाह्या छइ तेहहूइ साचउ धर्म साभलिउ दीठउं हर्ष न करइ। तेहहूइ मननी रति मिथ्यात्वधर्मइ जि ऊपरि हुइ। ते आपणा आपणा कर्मनउ विशेष। ते अभव्य दूरभव्य तीहनु कारणं ॥ ११३ ॥

५ [जि] केईएक धन्यहूइ सुद्ध निमल धर्म कथितमात्र हूतउ आणद जणाइ ऊपजावइ। अनइ अधन्यहूइ मिथ्यात्वइ मोहित-हूता मिथ्यात्वधर्मनइ विषइ रति सतोष हुइ ॥ ११३ ॥

[मे] कहिउइ हूतउ सूधउ धर्म केतलाइ भाग्यवतनइ आणद ऊपजावइ अनइ मिथ्यात्वमोहित जीवनइ मिथ्यात्वधर्मनइ विषइ १०रति हुइ ॥ ११३ ॥

[सो] केतलाइ जीव धर्मनी बुद्धिइ पाप करइ छइ। ते आश्री कहइ छइ।

[जि] अथ जिनधर्मीनउ स्वरूप बिहु गाथाइ करी कहइ।

इक पि महादुक्खं जिणसमयविऊण सुद्धहिययाण।
१५**जं मूढा पावाइं धम्मं भणिऊण सेवंति ॥ ११४ ॥**

[सो] **इक्कं पि०** जिनवचनना जाण निर्मल मनना धणी तेहनइ मनि एह जि एक महादुःख, **जं मूढा०** ज मूंढ मूर्ख बापडा मिथ्यात्वी धर्म भणीं धमनी बुद्धिइ पाप सेवइ। यागादिक करइ। पापइ पुण्य भणी मानइ। एव्हउ असमजस देखी जिनधर्मना जाणनइं २०मनि असमाधि ऊपनइ ॥ ११४ ॥

[जि] निर्मलहृदय अनइ जिनसिद्धांतना जाण तेहाहूइ एकू ज मोटउ दुक्ख जे मूढा मिथ्यात्वी धर्म भणी धर्मबुद्धिइ पापहिंसादिक

१ दीठउइ २ करण ३ धम भणी ' नथी ४ आणइनइ

सेवइ। एतलउ जि एकु दयालपणइ दुःख। बीजउ रुगारई दुःख नहीं। जितेंद्रपणातउ ॥ ११४ ॥

[मे] जिनसमयना वेत्ता सूधा हीयाना धणीनइ ए मोटउ दुःख। ए किसिउ ' जे मूर्ख लोक पापनइ धर्म करीनइ सेवइ। मुखि कहइ ' अम्हे धर्म करउ छउ ' अनइ करइ पाप ॥ ११४ ॥ 5

[सो] सम्यक्त्वना पालणहार थोडाइ जि हुइ। ए वात कहइ छइ।

थोवा महाणुभावा जे जिणवयणे रमंति संविग्गा।
तत्तो भवभयभीया सम्मं सत्तीइ पालंति ॥ ११५ ॥

[सो] **थोवा०** ते महानुभाव गुरुया भाग्यवंत थोडा, जे० जिनवचननइ[1] विषइ संवेग वैराग्यवंता हुता रमइ। रात्रिदिवस[1] श्रीसिद्धांतनी आस्था मनि आणइ। **तत्तो०** तेहइ पालइ जे संसार माहि पडिवानइ भय[1] बीहतां हुता सम्यग् साचउ जिनवचन आपणी शक्तिइ मानिइ सम्यक् क्रिया करी पालइ। घणा ते अति थोडा ॥ ११५ ॥

[जि] जे जिनधर्मी थोडा महानुभाव गरिष्ट हुता श्रीजिनवचन 15 नइ विषइ संविग्न सावधान थिका रमइ, स्नेह करइ। तिणि कारणि जिनवचनकारक पुरुष संसारना भय हुता बीहता सक्तिइ करी सम्यक्त्व पालइ ॥ ११५ ॥

[मे] ते महानुभाव थोडिला, जे जिनना वचन तेहनइ विषइ संवेगी थका रमइ। तिवार पछी ते भव संसारना भय थका बीहता 20 सम्यक्त्व यथार्थ करी पालइ ॥ ११५ ॥

ताण फरं जिणधम्मो कर नाण करं दुराण वेरग्ग।
कूडाभिमाणपडियनडिया वुड्डति नरयम्मि ॥ १२४॥

[सो] ता० तु जइ एव्हं मरीचिनउ उत्सूत्र वचननउ स्वरूप वली वली सांभली दोसेण० द्वेष लगइ ते अवगणीइं जे उत्सूत्रपद सेवइ, श्रीसर्वज्ञनी आज्ञा विरुद्ध बोल करइ थापइ, जे ५ अभिमानना वाह्या एव्हं उत्सूत्र बोल्इ तेहहूइ जिनधर्म किहां छइ? अनइं दु:खनउ वैराग्य किहां छइ? जेह मर्णा संसारनउ दु:ख आगमी नइ उत्सूत्र प्ररूपइ छइ। कूडाभिमाण० कूडा आपणा पंडितपणाना अभिमान तीण करी नव्या वाह्या नरगइ जि माहि बूडइ छइ ॥ १२३-२४॥ १०

[जि] ता नउ पच्छइ जइ निमइ समयम्मि सिद्धांतमाहे इम पि वयणं उत्सूत्रवचन पूर्वोक्त वचन वार वार सुणी सांभलीनइ पठइ बूडइ दोषि करी सिद्धांतनउ वचन अवगणीनइ ते अधम उत्सूत्रपद सेवइ। तेहा उत्सूत्रपदसेवणहारहइं कर किमु जिनधर्म हुइ? अपि तु न हुइ। अनइ तेहाहूइ नाण तत्त्वज्ञान किमु हुइ? वली दु:खनउ१५ वैराग्य किमु हुइ? आइ ते अधम कूडउ अभिमान अहंकार तिणि करी पडिन तेहे नटिन नचाव्या हूता नरकमाहे बूडइ। रुडी पडिलाइ करी नरगि पडइ ॥ १२३-२४॥

[मे] तउ जइ किमइ मरीचिनउ उत्सूत्रवचननउ स्वरूप वार वार सांभलीनइ सिद्धांतमाहे कहिउ हूंतउ ते वचन द्वेष करी२० अवहेलीनइ उत्सूत्रनां पद स्थानक सेवइ, सिद्धांत विरुद्ध बोल्इ, तीयांनइ जिनधर्म किहां, ज्ञान किहां? तेहनइ दुखसनउ वैराग्य किहां?

१ मे किणधर्म २ एहुं ३ अवगुर्णनइ ४ किहांइ ५ बीजी प्रतमां आ रीते वधारे छे— अनइ ज्ञाननइ आणवानै किहां हुई

[सो] सम्यक्त्व पापइ श्रीधर्म सरउ न हुइ । ए वात कहइ छइ ।

सव्वंग' पि हु सगडं जह न चलइ इक्कबइयलारहियं' ।
तह धम्मफडाडोव न चलइ' सम्मत्तपरिहीणं ॥ ११६ ॥

5 [सो] सव्वं० जिम सगड गाडउ धुरी धूसर समइल प्रमुख सर्व आगें' करी सहित हुइ, पुण एक वडइल न हुइ तु न चालइ । तह धम्म० तिम धर्मनउ फटाटोप महाण घणूं करइ, तप नियम क्रिया दान सील कष्टानुष्ठानादिक करइ । पुण सम्यक्त्व नथी तउ काई चालइ नही । अल्प फल थाइ । अनान कष्टइ नि' थाइ । जिम तामलि 10रिपिनइ घणउ तप कष्ट कीधउ, अल्प फल हुउ ।

सट्ठिं वाससहस्सा तिसत्तखुत्तो दएण धोएण ।
अणुचिन्न तामलिणा अन्नाणतवुत्ति अप्पफलो ॥ (उपदेशमाला, गा ८२)

[मे] सघले अगे संयुक्त हतउ शकट एक-बहिल-रहित न चालइ । तिम धर्मनउ स्फटाटोप एक सम्यक्त्व रहित फलदायक न 15हुइ ॥ ११६ ॥

[सो] जे जीव सिद्धात न सामलइ, हित-अहित-न जाणइ ते आश्री कहइ छइ ।

[जि] अथ तत्त्वज्ञ पुरुष मूर्ख उपरि रीस न धरइ । ति वात कहइ ।

20**न मुणंति धम्मतत्तं सत्थ परमत्थगुणहिअं अहिअं ।**
बालाण ताण उवरिं कह रोसो मुणिअतत्ताणं' ॥ ११७ ॥

१ आ गाथा तथा तेनो बालावबोध जि मां नथी २ मे वन्हिला ३ मे फलइ ४ अगे ५ स्फटाटोप ६ जि थाई नथी ७ मे परसप्प ८ जि मुणिधम्माणं मे मुणिअधम्माणं

जेट मणी ससारना दुक्ख आगमी कूडइ अभिमानि, बूडी पडिताईई नद्या इता नरग माहि बूडइ ॥ १२३ २४ ॥

[सो] कर्मबहुल जीवहइ हितोपदेश दीधउ काई कान नावइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] एवहा निकाचितकर्मी जीवहइ, उपदेशनी अयोग्यता कहइ।

मा मा जपह बहुअ जे बद्धा चिक्कणेहिं[1] कम्मेहिं ।
सव्वेसिं तेसिं जायइ हिओवएसो महादोसो ॥ १२५ ॥

[सो] **मा मा०** घणउ काई म बोलिस्यउ। घीना काई कारण म कहिस्यउ। ज केतलाइ जीवहूइ हितोपदेश काई न लागइ। जे जीव चीकणे कर्मे करी बाधा छइ गाढा कर्मबहुल छइ, तेह सविहु जीवहिइ[2] हितोपदेश दीधउइ महाद्वेषहेतुइ जि थाइ। काई गुणि न आवइ। यत उक्त—

अप्रशान्तमतो शास्त्रसद्भावप्रतिपादनम् ।
दोषायाभिनवोदीर्ण शमनीयमिव ज्वरे ॥ १२५ ॥

[जि] रहो उपदेशना देणहारो पुरुषो। **बहुअ** घणउ मति बोल्उ। जे जीव **चिक्कण** चीकणां अवश्यभोक्तव्य कर्म तेहे बाधा व्याप्या हुइ ते सघलाई जीवहूइ हितोपदेस धर्मनउ कहिवउ महादोष रूप, मुखहूइ थूक सोस जि भणी हुइ। काई लागइ नही। ति निकाचित कर्मनउ प्रमाण। जीवना चतुर्विध कर्म छइ। एक स्पृष्ट कर्म। बीजउ बद्ध कर्म। त्रीजउ निधत्त कर्म। चउथउ निकाचित। जिम छोहि दीधी भीतिइ साम्हुही चूनानी डली मूकी लागीइ। अनइ त्या चूनानी सूकी

---

१ चिक्कणिहिं २ जीवहूई

[सो] न मुणंति० जेहमांहि धर्मनउ तत्त्व कहिउ छइ तेहूउ सिद्धांतशास्त्र न जाणइ अनइ जे परमार्थगुणिइ हित[1] अनइ अहित वस्तु, रूडउ विरूउ, पुण्यपाप न जाणइ, बालाण० ते बापडा मूर्ख अजाणपणइ पाप करता उपरि मुणिअ० जाततत्त्वहूइ रोष किम हुइ? 'ए बापडा अजाण धर्म न जाणइ, हुं सिउ आणइ'' इम तेह ५ उपरि करुणाइ जि आवइ। इम कहइ, 'सुखा ते जिअलोए जिणवयण जे नरा न याणंति' इत्यादि ॥ ११७॥

[जि] जे मूर्ख धर्मतत्त्व न जाणइ अनइ वली परमार्थगुणि करी हितकारीउ सत्य शास्त्र, अहित अहितकारिउ न जाणइ। ताण बालाण तेहा बालकां उपरि मूर्ख उपरि मुणिअतत्ताण ज्ञाततत्त्व१० तत्त्वना जाणहार पुरुषहूइ किमउ रोस? अपि तु कोई रोस नही। बाल शब्दइ मूर्खइ कहाइ अनइ आचार्लि धावणउ बालकई कहीइ। तेह भणी जिम बालक तत्त्वातत्त्वविचार न जाणइ, हित-अहित न जाणइ। तेह बालकां उपरि डाहीयार लोक रीस न करइ ॥ ११७॥

[मे] जे न जाणइ धर्मनउ रहस्य अनइ शास्त्र, जे पर-आपनइ१५ हित नइ अहित, पुण्य नइ पाप तेहनइ अधिक गुणकारक न जाणइ ते बाल मूर्ख उपरि धर्मना जाणनइ रोस किम करिवउ आवइ' ॥ ११७॥

[सो] जे आपणउ हित न करइ ते पर रहइं किम हितूआ हुसिइ? ए वात कहइ छइ।

[जि] मूर्ख दयावंत न [illegible]। ए वात स्थापइ। २०

---

1 'हित न जाणइ' ए पाठने स्थाने बीजी प्रतमां नीचे प्रमाणे छे— 'हित अनइ अहित न जाणई। अथवा परमार्थ दृष्टिइ पाठि आपणपा अनइ परइहूइ गुणकारिउं हितु वस्तु अनइ अहित वस्तु रूडउं-विरूउं पुण्यपाप न जाणई'

इसी भींतिइ लागी पाडी पडइ। भीतिमाहि पाईं न रहइ। तिम स्पृष्ट कर्मनउ स्वरूप जाणिवउ। स्पर्शएक लागइ ते तत्काल विलइ जाइ ते स्पृष्ट कर्म। वली जिम सूकी छोइपकिनि भींति। तेह उपरि नीली चूनानी इली लांखीइ। पछइ केईंक सूकी पूठइ भींति हुंती उखेली नाखइ। भींतिइ सूकी भणी ऊगाई न रहइ। तिम बद्धकर्म जीवनइ कर्म ३ लागइ, तेतलीज्य वल रहइ। पछइ उपक्रमि करी जीटइ। त बद्धकर्म। वली जिम नीली भींतिनी छोह मांहे सूकउ चूनानउ मड घालीयइ। पछइ कालांतरि दोहिलउ नीकलइ। तिम निधत्त कर्म। जीवहइ कर्म लागइ। जीव भोगवइ। कालांतरि गाढइ उपक्रमि जे कर्म जीटइ ते कर्म निधत्त नाम जाणिवउ। अनइ जिम नीली छोहि मड भींति चिणी१० हुइ अनइ भींतिनी छोहि सूकी पूठिइ धज एकपणउ हुइ तिम निकाचित कर्म। जीव नइ कर्म एक हुया। जूजूया न थाइ। जा जीवइ जीव ता ते कर्म भोगवइ। गाढ अनने उपक्रमे जीरे न जाइ। संपूर्ण कर्म भोगवीइ ते निकाचित कर्म। तथा चोक्तं—

कृतकर्मक्षयो नास्ति कल्पकोटिशतैरपि। १५
अवश्यमेव हि भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्॥

इत्यादि कर्मस्वरूप कर्मग्रंथशास्त्रनउ जाणिवउ। अनइ जे जीवने कर्मे लीप्या तेहा जीवनइ उपदेश न लागइ। यदुक्तं श्रीउपदेश-मालायां—

उपसममहस्सेहि वि बोहिज्जंतो न बुज्झइ कोई। २०
जह चभदत्तराया उदायिनिवमारओ चेव ॥ १२५ ॥ (गा ३१)

[मे] मा मा० घणउ घणउ घणउ म बोल्उ। जे जीव चीकणे कर्मे बाध्या छइ तीयां सघरानइ निपइ हितोपदेश महादोष समान हुइ ॥ १२५ ॥

[सो] सम्यक्त्व पामइ श्रीधर्म खरउ न हुइ । ए वात कहइ छइ ।

सव्वंग[1] पि हु सगडं जह न चलइ इक्कवडहलारहियं[2] ।
तह धम्मफडाडोव न चलइ[3] सम्मत्तपरिहीणं ॥ ११६ ॥

5 [सो] सव्व० जिम सगड गाडउ धुरी धूसर समहल प्रमुख सर्व आगें[4] करी सहित हुइ, पुण एक वडहल न हुइ तु न चालइ । तह धम्म० तिम धर्मनउ फटाटोप[5] महाण घणुइ करइ, तप नियम क्रिया दान सील षष्टानुष्टानादिक करइ । पुण सम्यक्त्व नथी तउ काई चालइ नही । अल्प फल थाइ । अज्ञान कष्टइ जि[6] थाइ । जिम तामलि 10रिषिनइ घणउ तप कष्ट कीधउ, अल्प फल हुउ ।

सट्ठिं वाससहस्सा तिसत्तखुत्तो दएण धोएण ।
अणुचिन्न तामलिणा अन्नाणतवुत्ति अप्पफलो ॥ (उपदेशमाला, गा ८१)

[मे] सघले अगे संयुक्त हूतउ शकट एक बडहिल रहित न चालइ । तिम धर्मनउ स्फटाटोप एक सम्यक्त्व रहित फलदायक न 15हुइ ॥ ११६ ॥

[सो] जे जीव सिद्धान न मांभलइ, हित अहित न जाणइ ते आश्री कहइ छइ ।

[जि] अथ तत्त्वज्ञ पुरुष मूर्ख उपरि रीस न धरइ । ति वात कहइ ।

20**न मुणंति धम्मतत्तं सत्थं परमत्थगुणहिअं अहिअं ।**
बालाण ताण उवरिं कह रोसो मुणिअतत्ताणं[8] ॥ ११७ ॥

१ आ गाथा तथा तेनो बालावबोध जि मां नथी २ मे वडहिला ३ मे चलइ ४ अंगी ५ स्फटाटोप ६ जि थाई नथी ७ मे परमप्प ८ जि मुणिधम्माणं मे मुणिअधम्माणं

[मो] वली एह जि वात कहइ छइ ।

[जि] एह नि वात प्रकारान्तरि करी वली कहइ ।

हिअयम्मि जे कुसुद्धा ते किं घुज्झंति धम्मवयणेहिं ।
ता ताण कए गुणिणो निरत्थयं दमहिं अप्पाणं ॥ १२६ ॥

[सो] हिअयम्मि० जे जीव हिअइ कुसुधा अधर्म्म मायाविया हुइ ते धमने वचने किम बूझइ ? घणाइ धर्मोपदेश दिउ, पणि ते न[1] बूझइ । ता० तेह भणी तेतहूइ बूझववानइ कारणि जे स्तप करइ ते आपणपउ निरथक दामइ[2], क्लेश करइ । तेह[3] अयोग्यहूइ स्तप कीधी निरर्थक थाइ । कांई गुण न करइ । यत उक्त—

ये वैनेया विनयनिपुणास्ते क्रियन्ते विनीता
नावैनेया विनयनिपुणै शक्यते संविनेतुम् ।
दाहादिभ्य समलममलं स्यात्सुवर्णं सुवर्णं
नायस्पिण्डो भवति कनक छेददाहक्रमेण ॥ १२६ ॥

[जि] जे पुरुष हियामाहे कुसुद्ध दुष्ट हुइ ते किम धर्मने धचने करी प्रतिबूझइ ? सरलचित्तई ज धर्माक्षरे करी प्रतिबूझइ । ता तउ पछइ गुणवन्त परोपकारी पुरुष ताण कए तेहां दुष्टांने कीधइ निरर्थक आपणपउ दमइ खेदावइ ॥ १२६ ॥

[मे] जे मनुज हीयामाहि कुसुधा छइ ते धमने वचने किम प्रतिबूझइ ? ते ते जीव प्रतिबूझवानइ कारणि गुणवत निरर्थक आपणपउ दमइ, क्लेश करइ । तिहा क्षप कीधी वृथा थाइ ॥ १२६ ॥

---

१ जि घुज्झंति २ दमइ ३ न बूझई सद्दहई ' एवो पाठ बीजी प्रतमांथी पण गया छे ४ जि ५ दमइ ६ तेह

¹ [मो] न मुणति० जेहमांहि धर्मनउ तत्त्व कहिउ छइ तेह्उ सिद्धांतशास्त्र न जाणइ अनइ जे परमार्थगुणि हितं अनइ अहित वस्तु, रूडउ विरूउ, पुण्यपाप न जाणइ, बालाण० ते बापडा मूर्ख अजाणपणइ पाप करता उपरि मुणिअ० ज्ञाततत्त्वहूइ रोप किम हुइ ? 'ए बापडा अज्ञाण धर्म न जाणइ, ए सिउ जाणइ ?' इम तेह ५ उपरि करुणाइ जि आवइ। इम कहइ, 'मुद्या ते जिअलोए जिणवयण जे नरा न याणति' इत्यादि ॥ ११७॥

[जि] जे मूर्ख धर्मतत्त्व न जाणइ अनइ वली परमार्थगुणि करी हितकारीउ सत्य शास्त्र, अहिअ अहितकारिउ न जाणइ। ताण बालाण तेहां बालना उपरि मूर्ख ऊपरि मुणिअनत्ताण ज्ञाततत्त्व१० तत्त्वना जाणहार पुरुषहइ किमउ रोस ? अपि तु कोई रोस नही। बाल शब्दइ मूर्खइ कहाइ अनइ आचलि धावणउ बालकई कहीइ। तेह भणी जिम बालक तत्त्वातत्त्वविचार न जाणइ, हित-अहित न जाणइ। तेह बालकां ऊपरि डाहीयार लोक रीस न करइ ॥ ११७॥

[मे] जे न जाणइ धर्मनउ रहस्य अनइ शास्त्र, जे परआपनइ१५ हित नइ अहित, पुण्य नइ पाप तेहनइ अधिक गुणकारक न जाणइ ते बाल मूर्ख ऊपरि धर्मना जाणनइ रोस किम करिवउ आवइ ? ॥ ११७॥

[सो] जे आपणउ हित न करइ ते पर रहइ किम हितूआ हुसिइ ? ए वात कहइ छइ।

[जि] मूर्ख दयावंत न हुइ। ए वात स्थापइ। २०

१ 'हित न जाणइ' ए पाठने स्थाने बीजा प्रतमां नीचे प्रमाणे छे— हित अनइ अहित न जाणई। अथवा परमार्थ इनिइ पाठि आपणपा अनइ परहइइ गुणकारिउं हितु वस्तु अनइ अहित वस्तु रूडउंविरूउ पुण्यपाप न जाणई

[सो] धमनी आस्था[1] जीवहूइ पाप फेडइ[2]। ए वात कहइ छइ।

[जि] जइ दुष्ट भारेकमा जीवने हिययइ जिनधर्मोपदेश न लागइ तउ पछइ किसु जिनधर्म प्रमाण ? इसी शंका फेडिवा भणी जिनधर्मनउ प्रमाण बोलइ। 5

दूरे करणं दूरम्मि साहणं तह पभावणा दूरे।
जिणधम्मसद्दहणं पि तिक्खदुक्खाइं निट्ठवइ ॥ १२७॥

[सो] दूरे० श्रीजिनधर्मनउ करिवउ आराधिवउ ते दूरि परहउ छइ अनइ जिनधर्मनु **साहणं** कहिवउ, थापिवउ, अनेरानइ हिअइ आणिवउ तेहइ परहउ छउ। तथा श्रीजिनशासननी प्रभावना 10 लोकमाहि रूडउ मनाविवउ, माया लोकइ पाहि वखणाविवु तेहइ परहउ छउ। तेह एके जीव तीर्थंकरपदवी गणधरपदवी केवलज्ञान मोक्ष लगइ उपार्जइ। **जिणधम्म०** बीजउ काई म करिस्यउ। जिनधर्मनउ सद्दहण मात्र करइ, आस्थाइ नि मनि आणइ तेउ **तिक्खदुक्खाइं** तीक्ष्ण गाढा पोनना पाप नीठवइ क्षपइ, हलुअकर्मउ थाइ ॥ १२७॥ 15

[जि] जिनधर्मनउ **करण** करिवउ दूरि वेगलउ हुउ अनइ जिनधर्मनउ साधन तपश्चरणादि प्रमाणि चडाववु पुण दूरि हउ। **तह** तथा जिनधर्मनी प्रभावना द्रव्य वेची जिनशासनि प्रोत्सर्पणा तेहीइ वेगली छइ। श्रीजिनधर्म साचउ रूडउ खरउ। इसु जिनधर्मनउ श्रद्धानई तीक्ष्ण तीव्र दुक्खहूइ निराकरइ **निट्ठवइ** फेडइ ॥ १२७॥ 20

१ आस्थाइ २ आ 'फेडइ' शब्दथी मांडी बाकीनो बालावबोध ने १२७ मी गाथा सो नी बीजी प्रतमां नथी मात्र आ गाथा उपरना बालावबोधना छेल्ला बे शब्दो 'हलुअकमउ थाइ' तेमां छे अर्थात् १२७ मी गाथा अने ते उपरना बालावबोधने स्थाने सो नी बीजी प्रतमां मात्र आटलुं छे— धमनी आस्थाइ जीवहूइ पाप [वच्चेनो बधो पाठ पडी गयो छे] हलुअकर्मउ थाइ.

अप्पा वि जाण वइरी तेसिं कह होइ परजिए करुणा।
चोराण बंदियाण य दिट्ठतेण मुणेअव्व ॥ ११८ ॥

[सो] अप्पा० जेहनइ आपणउ आत्माइ वइरी। आपणा जीवहनू हित नथी करता तेहां पाप करइं छइ। जेहां आपणउं आत्माइ गाढउ संसारमाहिं रुलइ। तेहहूइ अनीरां जीवनइ विषइ करुणा किम हुइ? चोराण० जिम चोर अथवा जे माणस बंदि धरइ तेहनइ दृष्टांतिइ जाणिवु। जिम ते चोरी करता, बंदि धरता, परहूइ अनथ करता आपणउ न चींतवइ। 'अम्हे धरीसिउ, मारीसिउ, अनर्थ प्रामिस्यउ' ए वात काइं विमासइ नहीं। तिम तेहइ पाप करता चीतवइ नहीं ॥ ११८ ॥

[जि] जाण० जेहां पुरुषहूइ आपणपउ आत्मा वइरी, आपणा जीवहूइ हित न करइ तेसिं तेहा पुरुषहूइ परजिए पारका जीव ऊपरि किसु करुणा दया हुइ? अपि तु न हुइ। ए वात चोराण चोरनइ दृष्टांति, बंदियाण य बंदी बंदोर बादि झाल्या लोक ते विहुने दृष्टांति जाणिवी। जिम चोर आपणा जीवइ ऊपरि दया अणकरतउ हूतउ पारका जीव ऊपरि दया न करइ। जइ चोर आपणाइं जीवहूइ विरूउ चींतनी लोकहहूइ परद्रव्य लेता मारइ। अनइ जे जे आपणा जीवहूइ हित न करइ ते ते पारका जीव ऊपरि दयाई न करइ। जिम चोर। अनइ जे जे पारका जीव ऊपरि दया करइ ते ते आपणाइ जीवहूइ हित करइ। जिम सुसाधु लोक। इसु प्रमाणिकनउ वचनइं जाणिवउ ॥ ११८ ॥

[मे] जेहनइ आपणउ आत्मा वयरी, आपणा आत्मा ऊपरि दया न ऊपजइ तेहनइ अनेरा जीव ऊपरि करुणा दया किम हुइ?

१ बंदियाणइ २ करथ ३ अम्हे ४ अनेरा

[मे] वीतरागना धर्मनउ करिवउ दूरि रहउ। क्रियानउ साधिवउ दूरि रहउ। तिम शासननी प्रभावना पणि दूरि रहउ। एक जे जिनधर्मनउ सदहिवउ ते तीक्ष्ण गाढा पोतना पाप थकी जे दुक्ख तेहनइ नीठवइ ॥ १२७॥

---

5 [सो] धर्म सांभलिवाना मनोरथ कहइ छइ।

[जि] अथ सुश्रावकनी धर्मचिन्ता कहइ।

कइया होहि दिवसो जइया सुगुरूण पायमूलम्मि।
उस्सुत्तलेसविसलवरहिओ निसुणेमि जिणधम्मं ॥१२८॥

[सो] कइया० ते दिहाडउ मझनइ कहिइ हुसिइ, जहीइ 10हुं उत्तम चारित्रिया सुगुरुनइ पदमूलि उत्सूत्रलेश लगारइ उत्सूत्ररूपिउ विषरूप जिसनउ लेस तीणि करी रहित सरउ श्रीजिनधर्म सांभलिसु ? जेह भणी जिनवचननइ सांभलिवइ जीवहूइ मोटउ गुण ऊपजइ। यत उक्तं—

नवि त करेइ देहो न य सयणा नेव वित्तसयाओ।
15 जिणवयणसवणजणिया ज संवेगाइया लोए ॥ १२८॥

[जि.] **कइया** कदा निश्चाई **दिवसो** दिहाडउ **होहि** हौसिइ, **जइया** यदा निश्चइ सद्गुरुनइ पादमूलि चरणकमलि जिनधर्म निसुणिसु सांभलिसु ? किसुउ हूतउ ? उत्सूत्रनउ लेस तेह रूपिउ विषलव तिणि करी रहित हूतउ। एतलइ ते दिहाडउ किहीइ 20हौसिइ ? जिणि दिहाडइ गुरुनइ पदकमलसमीपि जिनधर्म सांभलिसु ते दिन कृतार्थ ॥ १२८॥

१ दिहिइं २ निसुणेमु जि निसुणेमु मे निसुणेसु

इहा चोर नइ बंदीना दृष्टांत,जाणिवा। जिम चोरु चोरीइ मरेसइ अनइ मरिवाइतउ बीहइ नहीं। बंदियाण बंदि झालिवा पइसइ तिम जाणिवउ ॥ ११८॥

[सो] जीव उत्तम, मध्यम, अधम त्रिहु प्रकारे हुइ। ए वात त्रिहु गाहे कहइ छइ। 5

[जि] अथ सुश्रावकि दयावंति मोटा पापव्यापार न करिवा। इसु कहइ।

जे रज्जधणाईण कारणभूआ हवंति वावारा।
ते वि हु अइपावजुआ धन्ना छड्डुंति भवभीया॥ ११९॥

[सो] जे धन्य उत्तम छइ ते जेहे व्यापारे राज्य लाभइ, धन10 धान्य समृद्धि मान महत्त्व लाभइ **ते वि हु०** तेहइ व्यापार अति पापमय[1] जाणी छाडइ। ससारना दुःखभए बीहते दीक्षा लेई आपणा काज साधइ॥ ११९॥

[जि] जे व्यापार राज्यधनादिकहूइ कारणभूत हुइ, जेह व्यापार हूता राज्य धन धान्य सुवर्ण रूप्य रत्नादिक ऊपार्जीइ **ते वि**15 तेहई व्यापार हु निश्चइ अतिपापसंयुक्त हुइ। तउ धन्य कृतपुण्य संसार हूता बीहता ते व्यापार छाडइ॥ ११९॥

[मे] जे राज्यधनादिक ऊपार्जिवानइ कारणभूत व्यापार हुइ तेहइ अतिपापयुक्त व्यापार भव ससार हूता बीहता छाडइ। तेही धन्य जाणिवा॥ ११९॥ 20

---

1 पापमय

[मे] कहीइ ते दिहाडउ मुझनइ हुँसिइ, जहीइ सुगुरु सुद्ध प्ररूपकनइ पादमूलि उत्सूत्रलेमरूप विषलव निणि करी रहित हूतउ जिनधर्म सामन्यिमु [1] ॥ १२८ ॥

[सो] वली गुरु आश्री [2] कहइ छइ ।

[जि] अथ गुरचिन्ता आश्री कहइ छइ । 5

दिट्ठा वि केवि गुरुणो हिअए न रमंति सुणिअतत्ताण ।
केवि पुण अदिट्ठ च्चिय रमंति जिणवल्लहो जेम ॥ १२९ ॥

[सो] **दिट्ठा०** केतलाइ गुरु साक्षात् दीठाइ हुता तत्त्वना जाणनइ मनि रमइ नही । हीयइ हष न करइ । **केवि०** अनइ केतलाइ पुण गुरु अणदीठाइ हुता हीइ रमइ वसइ [3] । तेहना [3] गुण [4] १० सांभलीनइ हीइ हष ऊपनइ । जिम श्री**जिनवल्लभसूरि** । ते **जिनवल्लभसूरि नेमिचन्द्र** भण्डारीथा पहिला हूआ मणी अदष्ट हूता **नेमिचन्द्र** भण्डारीनइ मनि तेहना कीधा **पिण्डविशुद्धि** आदिक प्रकरण देषतां वस्या । इसिउ भाव ॥ १२८ ॥

[जि] **सुणिअतत्ताण** ज्ञाततत्त्वाने हियइ केईएक गुरु१५ दीठाई हूता न रमइ, न वसइ, न गमइ । अनइ वली कईएक अदीठाई गुरु हीयइ रमइ । किहनी परि [4] श्री**जिनवल्लभसूरि**नी परि । जिम श्री**जिनवल्लभसूरि** अणदीठाई हूता श्री**नेमिचन्द्र** भण्डारी प्रमुख ज्ञाततत्त्व श्रावकने हीए सुगुरुपणइ करी वस्या तिम केईएक सुगुरु हीइ अणदीठाई वसइ । एतावता श्री**जिनवल्लभसूरि** पहिलु हुउ २० तिणि कारणि श्री**नेमिचन्द्र** भण्डारीइ न दीठा । पुण सउ हीइ जाणे फिरि दीठाई ज छइ । जइ हियामाहे वसइ छइ ।

१ आश्रिय २ 'वसइ नथी ३ तेहना ४ गुणइ

[जि] उत्कृष्ट पुरुषनी वात कही मध्यमनी वात कहइ ।

बीया[1] य सत्तरहिआ धणसयणाईहि मोहिआ लुद्धा[2] ।
सेवंति पावकम्मं[3] वावारे उयरभरणट्ठे[4] ॥ १२० ॥

[मो] **बीया०** बीजा जे मध्यम पुरुष घरबार छाडी दीक्षा
5 लेवाइ साहसि करी रहित धन लक्ष्मी आइ पुत्रकलत्रादिक स्वजन
घरादिकनइ मोहिइ मोह्या लोभि वाह्या पेट भरवानइ कारणि पापव्यापार[5]
व्यवसाय वाणिज्य क्षेत्रादिकनउ व्यापार करइ, काई काई गृहस्थधर्म
आराधता हुता । ए बीजा मध्यम पुरुष कहीइ ॥ १२० ॥

[जि] बीजा मध्यम पुरुष सत्त्वरहित घणा द्रव्य अनइ स्वजन
10 पुत्र तेहे मोह्या **लुद्धा** लोभिया हुता व्यापारमाहे उदरभरणार्थि पेट
भरिवा भणी **पावकम्म** पापकर्म सेवइ समाचरइ । ते मध्यम पुरुष
जाणिवा ॥ १२० ॥

[मे] बीजाइ वली सत्त्वि करी रहित धनस्वजनादिके मोहित
हुता लोभियां हुता पापकर्म सेवइ । स्या भणी ? उदर भरिवानउ
15 व्यापार तेहनइ अर्थि ॥ १२० ॥

[जि] अथ अधम पुरुष कहइ ।

तईया[6] अहमाण अहमा कारणरहिआ अनाणगव्वेण ।
जे जपंति उस्सुत्तं तेसिं धिद्धी त्थु पंडित्ते[7] ॥ १२१ ॥

[सो] **तईया०** त्रीजा ए[8] अधम माहिं अधम काजनाम
20 पाखइ आपणइ अजाणपणइ गर्वि पूरिया जे **जपंति०** उत्सूत्र बोलइ,

---

1 जि बिइआ मे बीयाइ 2 मे लुद्धा 3 मे पावकम्मे 4 °भरणट्ठा
5 पापव्यापार नइ 6 जि तईयाहमाण अहमा, मे तइया अहमाणहमा 7 मे
पंडित्ते 8 एक

[मे] वीतरागना धर्मनउ करिवउ दूरि रहउ। क्रियानउ साधिवउ दूरि रहउ। जिन शासननी प्रभावना पणि दूरि रहउ। पक्ष जे निधर्मनउ सद्दहिवउ ते तीक्ष्ण गाढा पीनरा पाप थकी जे दुक्ख तेहनइ नींठवइ ॥ १२७॥

5 [मो] धर्म सामलिवाना मनोरथ कहइ छइ।

[जि] अथ सुश्रावकनी धर्मचिन्ता कहइ।

कइया होहि दिवसो जइया सुगुरूण पायमूलम्मि।
उस्सुत्तलेसविसलवरहिओ निसुणेमि जिणधम्मं ॥१२८॥

[सो] कइया० ते दिहाडउ महूइ कहिइ हुसिइ, जहीइ 10 उत्तम चारित्रिया सुगुरुनइ पदमूलि उत्सूत्रलेश लगारइ उत्सूत्ररूपिउ विषलव विसनउ लेस तीण करी रहित थकउ श्रीजिनधर्म सामलिसु[1] जेह भणी जिनवचननइ सामलिवइ जीवहूइ मोटउ गुण ऊपजइ। यत उक्तं—

नवि त करेइ देहो न य सयणा नेव वित्तसंघाओ।
15 जिणवयणसवणजणिया ज संवेगाइया होइ ॥ १२८॥

[जि] कइया कदा किवारइं दिवसो दिहाडउ होहि होसिइ, जइया यदा जिवारइ सद्गुरुनइ पादमूलि चरणकमलि जिनधर्म निसुणिसु सामलिसु[2] किसुउ हूतउ[2] उत्सूत्रनउ लेस तेह रूपिउ विषलव तिणि करी रहित हूतउ। एतलइ ते दिहाडउ किहीइ 20 होसिइ[2] जिणि दिहाडइ गुरुनइ पदकमलसमीपि जिनधर्म सांभलिसु ते दिन कृतार्थ ॥ १२८॥

१ दिहिउं २ निसुणेसु नि निसुणेसु मे निसुणेसु

सिद्धात विरुद्ध भापइ । तेसिं० तेह्ना पडितपणाइं[1] धिग् धिग् हुउ। ते आपणइ मनि डाहा थई बोल्इ छइ, पुण उत्सूत्र भापइ आगलि आपणइं[2] घणउ समारमाहि रुलिसिइ ॥ १२१ ॥

[जि] तईया त्रीजा अधमाधम कारणरहिआ कारण विणु काज पाखइ अनाणगव्वेण अनानगर्व करी, कुडइ अहकारि ५ करी जे पुरुष उत्सूत्र सिद्धात विरुद्ध वचन जपनि बोल्इ तेसिं तेहा अधमाधम पुरुष तणा पाडियहूइं धिगस्तु धिकार हु। ते पारकइ पीटणइ आपणा गाल तोडइ ॥ १२१ ॥

[मे] हिव त्रीजा अधमइइ पाहति अधम कारण पाखइ अज्ञान गर्वि गर्वित हूता जे उत्सूत्र बोल्इ तेह्ना पडितपणानइ धिग् धिकार१० पडउ ॥ १२१ ॥

-[सो] वली[3] एह नि वात ऊपरि मरीचिनउ दृष्टात कहइ छइ ।

[जि.] अथ ते अधमाधम उत्सूत्र भापकहूइं सरीपउ दृष्टात देखाड्इ । १५

ज वीरजिणस्स जीओ मरिई[4] उस्सुत्तलेसदेसणओ ।
सागरकोटाकोडिं हिंडइ अइभीमभवगहणे ॥ १२२ ॥

[सो] ज वीर० श्रीमहावीरनु जीव मरीचिनइ भवि लगारएक उत्सूत्र कपिल क्षत्रियहूइं, 'ए त्रिदडियापणाइं[6] माहि कांई धर्म छइ कि नहीं ?' इम पूछता 'कविला ! इत्थपि इहय पि ' इसिउ२० उत्सूत्रमात्र उपदिसीनइ कोडाकोडि सागरोपम ज समाररूपीआ अति

[1] १ पडितपणाइं २ आपणपइं ३ वली' नथी ४ मिरिइ जि मिरिईभवे मे मिरिइ ५ भवरने ६ त्रिदडीयाइपणा

[मे] कहीइ ते दिहाडउ मुझनइ होइसिइ, जहींइ सुगुरु मुद्ध प्रत्यक्षनइ पादमूलि उन्मूलितमत्त निरन्तर निणि करी गहिन हूतउ जिनधर्म सांभलिसु [1] ॥ १२८ ॥

[मो] वली गुरु आर्या कहइ छइ।

[जि] अथ गुरुचिन्ता आर्या कहइ छइ। 5

दिट्ठा वि केवि गुरुणो हिअए न रमंति मुणिअतत्ताण।
केवि पुण अदिट्ठ चिय रमंति जिणवल्लहो जेम ॥ १८० ॥

[मो] दिट्ठा० कतलाइ गुरु साम्हा दीठाइ हुंता तत्त्वना जाननइ मनि रमइ नही। हीयइ हर्ष न करइ। केवि० अनइ केतलाइ पुण गुरु अणदीठाइ हुंता हीइ रमइ वसइ [2]। तेहना [3] गुण 10 सांभलीनइ हीइ हर्ष ऊपजइ। जिम श्रीजिनवल्लभसूरि। ते जिनवल्लभसूरि नेमिचन्द्र भण्डारीथा पछिला हूआ भणी अदृष्ट हूंता नेमिचन्द्र भण्डारीनइ मनि तेहनां कीधां पिण्डविशुद्धि आदिक प्रकरण देखनां वस्या। इसिउ भाव ॥ १२८ ॥

[जि] मुणिअतत्ताण जानतत्त्वांने हियइ केईएक गुरु 15 दीठाई हूंता न रमइ, न वसइ, न गमइ। अनइ वली केइएक अदीठाई गुरु हीयइ रमइ। किहनी परि [4] श्रीजिनवल्लभसूरिनी परि। जिम श्रीजिनवल्लभसूरि अणदीठाई हूंता श्रीनेमिचन्द्र भण्डारी प्रमुख ज्ञाततत्त्व श्रावकने हीए सुगुरुपणइ करी वस्या तिम केईएक सुगुरु हीइ अणदीठाइ वसइ। एतावता श्रीजिनवल्लभसूरि पछिइ हुउ। 20 तिणि कारणि श्रीनेमिचन्द्र भण्डारीइ न दीठा। पुण तइ हीइ जाणे फिरि दीठाई ज छइ। जइ हियामाहे वसइ छइ।

---

१ भाजिय २ वसइ भणी ३ तेहना ४ गुणइ

दीर्घमणा अरण्यमाहि भमइ। असंख्यातउ काल मरननइ मरातरे रुल्इ।
तेह भणी उत्सूत्रप्ररूपणा विरुद्ध। यत उक्त श्रीवीरस्तुतौ—

> अन्ह सयल पावेहिं निवहपवयणभणुमनि दुरत।
> ज मरिइमवअज्जिअदुक्कयअवसेसलेसमवमा॥
> सुरयुयगुणो वि तित्थयरो वि तिहुअणअतुलमल्लो वि।
> गोवाईहिं वि बहुसो कयत्थिओ तिनयपहु ! त सि॥
> श्रीगोयमगणमुणतगा वि वेवि इह दढपहाराई।
> बहुपावा वि पसिद्धा सिद्धा किर तम्मि चेव भवे॥ १२२॥

[जि] ज जिणि कारणि श्रीमहावीरदेवनउ जीव मरीचि
१०नइ भवि, श्रीआदिनाथनउ पोतउ, श्रीभरतचक्रवत्तिनउ बेटउ
मरीचि उस्सुत्तलेसदेसणओ ' अम्हई षन्हइ काई थोडउ धर्म
छइ ' इसु उत्सूत्रनउ लवलेसना कहिवातउ अइभीमभवगहणे
अतिरौद्र संसाररूपिउ गहन वन तेह माहि सागरोपमनी कोडाकोडि
हिंडइ भमइ। ते उत्सूत्रनउ प्रमाण॥ १२२॥

१५ [मे] जे श्रीमहावीरदेव तणउ जीव मिरीचि नामिइ
उत्सूत्रनउ लेस एक तेहनी देसनाइ करी एक कोडाकोडि सागरोपम
भीम रौद्र समारूप वन गहनमाहि हीडिउ भमिउ॥ १२२॥

[जि] तेह जि उत्सूत्रभाषक भारेकमउ। इसु विहु गाथाइ
प्रकासइ।

२० ता जे इम पि वयण वारवार सुणित्तु समयम्मि।
दोसेण अवगणित्ता उस्सुत्तपयाइ सेवंति॥ १२३॥

१ माहाइ २ जइ जि मे जइ ३ सुणितु जि सुणिय

दूरस्थोऽपि समीपस्थो यो यस्य हृदि वर्त्तते ।
चन्द्रः कुमुदखण्डानां दूरस्थोऽपि प्रबोधकः ॥ १२९ ॥

[मे] दीठाइ हूता केतला गुरु धर्मतत्त्वना जाण छइ तेहनइ हीयइ रमइ नहीं, गमइ नहीं । अनइ केतलाइ गुरु अणदीठाइ हूता ५ जाणना हीयानइ रुचइ । श्रीजिनवल्लभसूरिनी परिइं । किम ? श्रीजिनवल्लभसूरिना कीधा पिंडविशुद्धिप्रमुख प्रकरण देषीनइ जिम नेमिचंद्र भंडारीनइ मनि अहर्निशि रुच ऊपनउ ॥ १२९ ॥

[सो] हव कुगुरु ऊपरि वात कहइ छइ ।
[जि] अथ धर्मनाशक पुरुषनी वात कहइ छइ ।

१० अजया अइपाविट्ठा सुद्धगुरू जिणवरिंदतुल्ल त्ति ।
जो इह एव मन्नइ सो विमुहो सुद्धधम्मस्स ॥ १३० ॥

[सो] अजया० जे गुरु अजयणावन्त छइ, जीवनी विराधना करइ छइ ।

दगपाण पुप्फफलं अणेसणिज्जं गिहत्थकिच्चाइं ।
१५ अजया पडिसेवंति जइवेसविडंबगा नवर ॥
(उपदेशमाल, गा ३४९)

ईण श्रीउपदेशमालानी गाहा जे कहिया छइ, अइपाविट्ठ अतिपापिष्ट पाप बोल्ता करताइ जेहनइ शका नथी एव्हाइ गुरु शुद्ध चारित्रिया गुरु भणी मानइ, 'ए अम्हारइ जिनवरेंद्र तीर्थंकर समान ।' २० जो इह० जे अजाणइ इम मानइ ते सूधा धर्मइ विमुख ऊफराठा जाणिवउ । तेहनइ धर्म केहाइ ढूकडउ[1] नथी ॥ १३० ॥

[जि] अजया इंद्रियजयरहित अनइ पापिष्ट आरम्भ करणहार हुइ एवहा अनइ एवहा जाणइ जु 'ए गुरु शुद्धचारि

---

१ ढूकडइ

हता जिननरेन्द्र तुल्य श्रीजिननरेन्द्र सरीपा' इति। जे श्रावक अथवा जे महात्मा अथवा अनेरउई कोई इह संसारमाहे ग्च इसु पूर्वोक्त मानइ ते पुरुष सुद्ध धर्महूइ विमुख ऊपराठउ बाह्य ॥ १३० ॥

[मे] जयणारहित, अति पापिष्ट, पापमइ वचन बोलतां संकाइ नहीं एयहाइ गुरु सुद्धचारित्रिया पही मानइ। कहइ 'अम्हारइ ए ५ तीर्थंकर समान।' जे अजाण इम मानइ ते सूधा धर्मनइ सर्वज्ञना वचननइ निपइ विमुख ऊपराठउ जाणिवउ ॥ १३० ॥

[सो] एह जि वात ऊपरि कहइ छइ।

[जि] तेही ज धर्मनाह्य अजाण श्रावकनइ उपदेश दिइ छइ।

जइ॑ त वदसि पुज्जसि वयण हीलेसि तस्स रागेण। १०
ता कह वदसि पुज्जसि जणवायठिइ॑ पि न मुणेसि ॥१३१॥

[सो] जइ त० रे बापडा जीव! जइ॑ तू तीर्थंकर देव वांदइ छइ, पूजइ छइ, स्तवइ छइ, [illegible] तू ते परमेश्वरनउ वचन 'सुमाहुणो गुरुणो पाँचेंदिअसंवरणो० पंचमहव्वयजुत्तो'० इत्यादिक काइ अवगणइ॑ [२] दृष्टिरागि॑ बाहिउ तेहतेहवा आपणा गुरुनइ अनुरागि १५ बाहिउ हूतउ। परमेश्वरि कहिउ छइ। 'एहवा भ्रष्टाचारनु आलावो सवासो वीसंभो संथवो पसंगो य० एतलां वानां न करिवा' इसिउ परमेश्वरनु वचन॑ जइ हीलइ छइ, अवगणइ छइ, मानतु नथी **ता** **कह०** तू परमेश्वरहूइ वांदइ काइ, पूजइ काइ [?] **जणवाय** लोक व्यवहारइनी स्थिति न जाणइ छइ ॥ १३१ ॥ २०

---

१ जि जा, मे जो २ जि मे जिणवायठियं पि ३ जउ ४ पंचमहुव्वय ५ अवगुणइ ६ दृष्टिहरागि ७ 'वचन नथी

सिद्धांतनी रीतिइ करी, वली चउथउ कालनइ अनुमानि करी, यथाकाल टाली अनेइ सीयालइ उन्हालइ कालि विहार करिवाइ अनुमानि करी, वली पाचमइ क्षेत्रनइ अनुमानि करी, जिणइ क्षेत्रिइ बइतालीस दोषविवर्जित शुद्ध आहार लभइ तिणइ क्षेत्रि विहार करिवानइ देषिवइ करी एह पाच परीक्षाइ करी परीक्षिउ हूतउ सुगुरु जाणिउ ५ मानिउ ॥ १३४ ॥

[मे] निज आपणी मतिनइ अनुमानि, व्यवहारनइ न्याइ करी, सिद्धांतना वचननइ अनुमानि, द्रव्य क्षेत्र काल भावनइ अनुमानि परीक्षीनइ सुगुरु जाणिवउ ॥ १३४ ॥

[जि] तउही गुरु मोटइ पुण्यइ लभइ । इसी वात कहइ ।१०

तह वि हु नियजडयाए कम्मगुरुत्तस्स नेव वीससिमो।
धन्नाण कयत्थाणं सुद्धगुरू मिलइ पुण्णेहिं ॥ १३५ ॥

[सो] तह० तऊ आपणउ जडता मूर्खपणउ । कम्मगुरु० अनइ आपणा भारेकर्मीपणानु वीसास न कराइ । जुण जाणइ केतीवारइ गुरुइ परीपनउ थासिउ हउं[1] । जेह भणी सुद्ध० शुद्ध सरउ१५ गुरु धन्य धन्य कृतार्थ भाग्यवंतइ जि रहइ, मोटा पुन्यनइ उदइ[1] मिलइ ॥ १३५ ॥

[जि०] तथापि हिं नियजडयाए निज आपणी जडता मूर्ख पणउ तिणि करी कर्मगुरुत्वहूइ भारेकर्मी जीवहूइ सुगुरु जाणिवानउ विश्वास नही । पुण धन्य भाग्यवंत अनइ कृतार्थ कृतपुण्य पुरुषहूइ पुण्य२० करी शुद्ध गुरु चारित्री आचार्य मिलइ ॥ १३५ ॥

१ मे ह २ हउ हुउं ३ उदय

दूरस्थोऽपि समीपस्थो यो यस्य हृदि वर्त्तते ।
चन्द्र कुमुदखण्डाना दूरस्थोऽपि प्रबोधकृ ॥ १२९ ॥

[मे] दीठाइ हूता केतलाइ गुरु धर्मतत्त्व जाण छइ तेहनइ हीयइ रमइ नहीं, गमइ नहीं । अनइ केतलाइ गुरु अणदीठाइ हूता ५ जाणना हीयानइ रुचइ । श्रीजिनवल्लभसूरिनी परिइ । किम ? श्रीजिनवल्लभसूरिना कीधा **पिंडविशुद्धिप्रमुख** प्रकरण देषीनइ जिम नेमिचन्द्र भण्डारीनइ मनि अदर्शे हूए ऊपनउ ॥ १२९ ॥

[सो] हव कुगुरु उपरि वात कहइ छइ ।

[जि] अथ धर्मनाथ पुरुषनी वात कहइ छइ ।

१० **अजया अइपाविट्ठा सुद्धगुरू जिणवरिंदतुल्ल त्ति ।**
जो इह एव मन्नइ सो विमुहो सुद्धधम्मस्स ॥ १३० ॥

[मो] **अजया०** जे गुरु अजयणावन्त छइ, जीवनी विराधना करइ छइ ।

दगपाण पुप्फफल अणेसणिज्ज गिहत्थकिच्चाइ ।
१५ अजया पडिसेवंति जइवेसविडंबगा नवर ॥
(उपदेशमाला, गा ३४९)

ईंण **श्रीउपदेशमालानी** गाहा जे कहिया छइ, **अइपाविट्ठ** अतिपापिष्ट पाप बोलता करताइ जेहहूइ शंका नथी एव्हाइ गुरु शुद्ध चारित्रिया गुरु भणी मानइ, 'ए अम्हारइ जिनवरेंद्र तीर्थंकर समान ।' २० **जो इह०** जे अजाणइ इम मानइ ते सुधा धर्महूइ विमुख ऊपराठ जाणिवउ । तेहहूइ धर्म केहइ ढूकडउ[1] नथी ॥ १३० ॥

[जि] **अजया** इन्द्रियजयरहित अनइ पापिष्ट आरंभ करणहार हुइ एव्हा अनइ एवहा जाणइ जु 'ए गुरु शुद्धचारि

1 ढूकडइ

[जि] दूसमि दुःसमाकालिइं दद्धे दहिइं लोकि हूतइं। वली स्वदुःखसिद्ध आपणा दुःखइं नीपनउ दुःखनउ उदय तिणि हूतइं। एतलइं गदतउ दुषमाकालि लोक दहिउ। वली दुःखइं ऊपरि दुःख एहे विद्यु हूते जेहा पुरुषानउ धर्म हूतउ सम्यक्त्व न चालइ तेहां ५ भाग्यवना पुरुषानउ हउ नेमिचद्र भडारी सम्यक्त्व प्रणमउ नम स्करउ ॥ १२३ ॥

[मे] ईणइं दुकमाकालि लोक दहिइं हूतइं शिष्ट उत्तम लोके गाढे दुःखीए हूते अनइ दुष्टनइ उन्नइ हुइ हूतइ। एवहइ छतइ धन्य ते जेहना चित्त हूतउ सम्यक्त्व न चालइ तेहनइ हउ प्रणाम १०करउ ॥ १२३ ॥

[सो] वली गुरु आश्री वात कहइ छइ।

[जि] अथ गुरुपरीक्षारूप कहइ।

निअमइअणुसारेण ववहारनएण समयसुद्धीए[1]।
कालखित्ताणुमाणेण परिक्खिओ जाणिओ सुगुरू ॥१२४॥

१५ [सो] कवि कहइ छइ। आपणी बुद्धिइं अनुसारि, व्यवहार नयइं करी, सिद्धांतना वचननइं अनुसारि, कालक्षेत्रनइं अनुमानि, कालक्षेत्र संघयणादि जिस्या छइ तेहनइं मानिइं चारित्र क्रियानी सर्व शक्ति[2] रूप करइ छइ। तेहनइं अनुमानिइं परीषी गुरु लीधउ अनइं मानिउ छइ ॥ १२४ ॥

२० [जि] निजमतिनइं अनुसारि करी आपणाइं बुद्धिप्रागल्भ्यनइं प्रमाणि करी, वली व्यवहार लोकाचार तेहनउ नय न्यायरीति तिणि करी अनइं वली बीजउ **समयसुद्धीए** सिद्धांतनी बुद्धिइं करी

१ जि बुद्धीए २ शक्तिइं

हूता निनरेन्द्र तुल्य श्रीजिननरेन्द्र सरीषा' इति। जे श्रावक अथवा जे महात्मा अथवा अनेरउई कोई इह संसारमाहे एव इसु पूर्वोक्त मानइ ते पुरुष सुद्ध धर्महूइ निमुख ऊपराठउ बाह्य ॥ १२० ॥

[मे] जयणारहित, अति पापिष्ट, पापमइ वचन बोलता सकाइ नहीं एवहाइ गुरु सुद्धचारित्रिया कही मानइ। कहइ 'अम्हारइ ए 5 तीर्थंकर समान।' जे अजाण इम मानइ ते सूधा धर्मनइ सर्वज्ञना वचननइ विपइ निमुख ऊपराठउ जाणिवउ ॥ १२० ॥

[सो] एह जि वात ऊपरि कहइ छइ।

[जि] तेही ज धर्मबाह्य अजाण श्रावकनइ उपदेश दिइ छइ।

जइ[1] त वदसि पुज्जसि वयण हीलेसि तस्स रागेण। 10
ता कह वदसि पुज्जसि जणवायठिइ[2] पि न मुणेसि ॥१२१॥

[सो] जइ त० रे बापडा जीव! जइ[3] तू तीर्थंकर देव वांदइ छइ, पूजइ छइ, स्तवइ छइ, तु तू ते परमेश्वरनउ वचन 'सुमाहुणो गुरुणो पाचिंदिअसंवरणो० पंचमहव्वयजुत्तो[4]०' इत्यादिक काइ अवगणइ[5] दृष्टिरागि[6] वाहिउ तेहतेहवा आपणा गुरुनइ अनुरागि 15 वाहिउ हूतउ। परमेश्वरि कहिउ छइ। 'एहवा भ्रष्टाचारनु आलावो संवासो वीसंभो संथवो पसंगो य० एतला वाना न करिवा' इसिउ परमेश्वरनु वचन[7] जइ हीलइ छइ, अवगणइ छइ, मानतु नथी **ता** **कह०** तू परमेश्वरहूइ वांदइ काइ, पूजइ काइ? **जणवाय** लोक व्यवहारहनी स्थिति न जाणइ छइ ॥ १२१ ॥ 20

---

1 जि जा, मे जो 2 जि मे जिणवायठिय पि 3 जउ 4 पंचमहुव्वय°
5 अवगुणइ 6 दृष्टिइरागि 7 'वचन' नथी

[जि] अथ जिनधर्म तणउ जाणिवानउ प्रकार कहइ ।

जिणधम्म दुन्नेअं अइसयनाणीहिं नज्जए[1] सम्मं ।
तह वि हु[2] समयट्ठिइए[3] ववहारनएण नायव्वं ॥ १३७ ॥

[सो] **जिण०** जिनधर्म जाणता गाढइउं[4] दोहिल्उ छइ । **अइसय०** अतिशयज्ञानी जे मनोगत भाव जाणइ, सम्यग् एहें जि 5 जाणइ ज 'एहमाहिं धर्म छइ ।' **तह वि हु०** तऊ बीजे छद्मस्थे सिद्धातमाहिं जिसी परीक्षा कही छइ तिसी स्थितिइं करी व्यवहारनयइं[5] धर्म जाणी लेवउ । सर्वथा अनास्था न करिवी ॥ १३७ ॥

[जि] जिनधर्म दुर्ज्ञेय जाणता दुहेलउ, पुण अतिशय ज्ञानवंत पुरुषे **सम्मं** सम्यक् प्रकारि साचउ जाणीइ । **तह वि** तउहीइ१० निश्चइ **समयट्ठिइए** सिद्धातनी स्थितिइं अनइ **ववहारनएण** लोकव्यवहारनइ न्यायि करी लोके जिनधर्म जाणिवउ । 'अहो सिद्धाननी रीतिइं धर्म जाणीइ ते प्रमाण, पुण लोकव्यवहारइ धर्म जाणीइ ते किम प्रमाण ?' इसु म कहे । 'लोगविरुद्धच्चाओ' इस्या सिद्धातना वचन इतउ । जिम सिद्धातस्थिति प्रमाण तिम लोकव्यवहारइं प्रमाण । तथा१५ चोक्तं—

लोक म रूसउ, लोक जि तूसउ, लोक लेई परमारथि पइसउ ।
जइ तू जोगी त्रिभुवनसार, तइ तू न मेल्हे लोकाचार ॥ १३७ ॥

[मे.] जिनधर्म जाणता गाढउ दोहिल्उ । जे अतिशयवंत ज्ञानी हुइ तेह जि सम्यक्त्व जाणीइ जु 'एह माहिं धर्म छइ ।'२० तथापि व्यवहारनइ ज्ञाइ सिद्धातनी परीक्षाइ सम्यग् करी जाणी लेवउ । अनास्था न करिवी ॥ १३७ ॥

---

१ मे निज्जए २ मे इ ३ समयठिइए, जि मे. समयठिइए. ४ गाढे. ५ एइ ६ °नयइं करी

दूरस्थोऽपि समीपस्थो यो यस्य हृदि वर्तते ।
चन्द्र कुमुदखण्डानां दूरस्थोऽपि प्रबोधकः ॥ १२९ ॥

[मे] दीठाइ हता केतलाइ गुरु धर्मतत्त्वना जाण छइ तेनइ हीयइ रमइ नहीं, गमइ नहीं । अनइ केतलाइ गुरु अणदीठाइ हता 5 जाणना हीयाइ रुचइ । श्रीजिनवल्लभसूरिनी परिइ । जिम श्रीजिनवल्लभसूरिनां कीधा पिंडविशुद्धिप्रमुख प्रकरण देषीनइ जिम नेमिचन्द्र भंडारीनइ मनि अदृष्टि हर्ष ऊपाउ ॥ १२९ ॥

[सो] हव कुगुरु ऊपरि वात कहइ छइ ।

[जि] अथ धर्मनाशक पुरुषनी वात कहइ छइ ।

10 **अजया अइपाविट्ठा सुद्धगुरू जिणवरिंदतुल्ल त्ति ।**
जो इह एवं मन्नइ सो विमुहो सुद्धधम्मस्स ॥ १३० ॥

[सो] **अजया०** जे गुरु अजयणावन्त छइ, जीवनी विराधना करइ छइ ।

दगपाण पुप्फफलं अणेसणिज्जं गिहत्थकिच्चाइं ।
15 अजया पडिसेवंति जइवेसविडंबगा नवरं ॥
(उपदेशमाला, गा ३४९)

ईणि श्रीउपदेशमालानी गाहा जे कहिया छइ, **अइपाविट्ठा** अतिपापिष्ट पाप बोलता करताइ जेहहूइ शंका नथी एव्हाइ गुरु शुद्ध चारित्रिया गुरु भणी मानइ, 'ए अम्हारइ जिनवरेंद्र तीर्थंकर समान ।' 20 **जो इह०** जे अजाणइ इम मानइ ते सूधा धर्महूइ विमुख ऊपराठउ जाणिवउ । तेहहूइ धर्म केहाइ ढूकडउ[1] नथी ॥ १३० ॥

[जि] **अजया** इन्द्रियजयरहित अनइ पापिष्ट आरंभना करणहार हुइ एवहा अनइ एवहा जाणइ जु 'ए गुरु शुद्धचारित्री

[1] ढूकडइ

[मे०] तथापि हि आपणी जटना मूल्याइँ तिणि करी अनइ पगरउ गुरु मारीपणउ तिणि करी वेमास न करिउ । पणि ते धन्य कृतार्थ जेह रहइ पुण्यनइ योगि सूधउ गुरु मिल्इ ॥ १३५ ॥

[जि०] इणी नि कारणि सुगुरुप्राप्ति दुर्लभ कहइ ।

५ अह्य पुणो अह्नो ता जइ, पत्तो अह न पत्तो य ।
तह वि हु सो मह सरण सपइ सो जुगप्पहाण[1] गुरू ॥१३६॥

[सो०] अह्य० हु पुण अपुण्य अभागीउ छउ । ता जइ० तु जइ मइ गुरु प्रामिउ छइ अथवा नथी प्रामिउ, तउ निश्चइ[2] मू रहइ तेह जि प्रमाण ॥ १३६ ॥

१० [जि०] श्रीनेमिचद्र भंडारी गामि गामि नगरि नगरि गुरुपरीक्षा करतउ हूतउ फिरइ, पुण सुगुरु न लहइ । तिवारइ इ कहइ ' अह्यं पुणो अह्नो० । अह्य हउ पुण अधन्यपुण्य छउ । ता तउ पछइ जइ निम्हइ सुगुरु पामिउ तउ पामिउ । अह न पत्तो य अथवा न पामिउ । तह वि-तथापि तउहीइ हु निश्चइ मह १५मह्रइ सो तेह जि सुगुरु शरण आराध्यपणइ आधार । जे गुरु संप्रति हिवडानइ कालि युगप्रधान श्रीजिनदत्तसूरि युगप्रधान गुरुना पग शरण । इति भाव ॥ १३६ ॥

[मे०] हउ तउ अकृतपुण्यीयउ । जेउ मइँ ते सूधउ गुरु पामिउ छइ अथवा नहि पामिउ । तथापि जे युगप्रधान गुरु छइ ते २०मुझनइ शरणि ॥ १३६ ॥

---

[1] जि जुगपहाण, मे जुगुपहाण [2] निश्चई

हूता जिनवरेन्द्र तुल्य श्रीजिनवरेन्द्र सरीपा' इति । जे श्रावक अथवा जे महात्मा अथवा अनेरउई कोई इह संसारमाहे एव इसु पूर्वोक्त मानइ ते पुरुष सुद्ध धर्महूइ विमुख ऊपराठउ वाद्य ॥ १३० ॥

[मे] जयणारहित, अति पापिष्ट, पापमइ वचन बोलतां संकाइ नहीं एवहाइ गुरु सुद्धचारित्रिया कही मानइ । कहइ 'अम्हारइ ए ५ तीर्थंकर समान ।' जे अजाण इम मानइ ते सूधा धर्मनइ सर्वज्ञना वचननइ निपइ विमुख ऊपराठउ जाणिवउ ॥ १३० ॥

[सो] एह जि वात ऊपरि कहइ छइ ।

[जि] तेही ज धर्मबाह्य अजाण श्रावकनइ उपदेश दिइ छइ ।

जइ' त वदसि पुज्जसि वयण हीलेसि तस्स रागेण । १०
ता कह वदसि पुज्जसि जणवायठिइ' पि न मुणेसि ॥१३१॥

[सो] जइ त० रे बापडा जीव ! जइ' तू तीर्थंकर देव वांदइ छइ, पूजइ छइ, स्तवइ छइ, तु तू ते परमेश्वरनउ वचन 'सुमाहुणो गुरुणो पांचिंदिअसंवरणो० पंचमहव्वयजुत्तो'० ' इत्यादिक काइ अवगणइ' ? दृष्टिरागिं' बाहिउ तेहतेहना आपणा गुरुनइ अनुरागि१५ बाहिउ हूतउ । परमेश्वरि कहिउ छइ । 'एहवा भ्रष्टाचारनु आलावो संलावो वीसमो संथवो पमगो य० एतला वाना न करिवा' इसिउ परमेश्वरनु वचन' जइ हीलइ छइ, अवगणइ छइ, मानतु नथी **ता कह०** तू परमेश्वरहूइ वादइ कांइ, पूजइ काइ ? **जणवाय** लोक व्यवहारइनी स्थिति न जाणइ छइ ॥ १३१ ॥ २०

१ जि जा मे जो २ जि मे जिणवायठिय पि ३ जउ ४ पंचमहव्वय ५ अवगुणइ ६ दष्टिरागि ७ 'वचन' नथी

[जि] अथ जिनधर्म तणउ जाणिवानउ प्रकार कहइ ।

जिणधम्म दुन्नेअ अइसयनाणीहिं नज्जए सम्म ।
तह वि हु समयट्ठिइए ववहारनएण नायव्वं ॥ १३७ ॥

[सो] **जिण०** जिनधर्म जाणता गाढउ दोहिलउ छइ । **अइसय०** अतिशयज्ञानी जे मनोगत भाव जाणइ, सम्यग् एहे[1] जि जाणइ ज 'एहमाहि धर्म छइ ।' **तह वि हु०** तऊ बीजे छद्मस्थे सिद्धातमाहि जिसी परीक्षा कही छइ तिसी स्थितिइ करी व्यवहारनयइ[2] धर्म जाणी लेवउ । सर्वथा अनास्था न करिवी ॥ १३७ ॥

[जि] जिनधर्म दुर्ज्ञेय जाणता दुहेलउ, पुण अतिशय ज्ञानवत पुरुषे **सम्म** सम्यक् प्रकारि साचउ जाणीइ । **तह वि** तऊहीइ[3] निश्चइ **समयट्ठिइए** सिद्धातनी स्थितिइ अनइ **ववहारनएण** लोकव्यवहारनइ न्यायि करी लोके जिनधर्म जाणिवउ । 'अहो सिद्धातनी रीतिइ धर्म जाणीइ ते प्रमाण, पुण लोकव्यवहारइ धर्म जाणीइ ते किम प्रमाण ?' इसु म कहे । 'लोगविरुद्धचाओ' इसा सिद्धातना वचन हतउ । जिम सिद्धातस्थिति प्रमाण तिम लोकव्यवहारई प्रमाण । तथा[4] चोक्त—

लोक म रूसउ, लोक जि तूसउ, लोक लेई परमारथि पइसउ ।
जइ तू जोगी त्रिभुवनसार, तइ तू न मेल्हे लोकाचार ॥ १३७ ॥

[मे.] जिनधर्म जाणता गाढउ दोहिलउ । जे अतिशयवत ज्ञानी हुइ तेह जि सम्यक्त्व जाणीइ जु 'एह माहि धर्म छइ ।'[5] तथापि व्यवहारनइ न्याइ सिद्धातनी परीक्षाइ सम्यग् करी जाणी लेवउ । अनास्था न करिवी ॥ १३७ ॥

---

१ मे निजए २ मे ■ ३ समयठिइए, जि मे. समयठिइए. ४ पाठउ ५ एह ६ नयई करी

[जि.] अथ जिनेन्द्रनइ वचनि जिनधर्म जाणिवानउ फल कहइ ।

जम्हा जिणेहिं भणिअ सुअववहार विसोहयतस्स[1] ।
जायइ विसुद्धबोही जिणआणाराहगत्ताओ[2] ॥ १३८ ॥

५ [सो] जम्हा० जेह भणी जिन श्रीसर्वज्ञइ इम कहिउ छइ । श्रुतव्यवहार सिद्धांतनउ मार्ग जोईनइ देवगुरुधर्म लिइ, **जायइ०** तु विशुद्ध बोधि निरउ सम्यक्त्वनी प्राप्ति हुइ । **जिण०** जिननी आज्ञानो आराधक भणी । यदुक्तं श्री**आवश्यके सामाचार्याम्**—

निच्छयओ दुन्नेअं को भावे कम्मि वट्टए समणो ।
१० ववहारओ उ कीरइ जो पुव्वट्ठिउ चरित्तम्मि ॥
ववहारो वि हु बलवं जं छउमत्थं पि वंदई अरहा ।
जा होइ अणाभिन्नो जाणंतो धम्मयं एयं ॥ (गा ७१६-७१७)

सिद्धांतउ व्यवहार प्रमाण करतउ केवलइ जे छद्मस्थि सिद्धान्तइ व्यवहारि जोई चाही खरउ निर्दोष भणी आणिउ हुइ, पुण ते आहार १५छइ आधाकर्मी । तउ ते जिमइ । केवली इम न कहइ, ' ए आधाकर्मी छइ ' । इम कहिता सिद्धांतना व्यवहार ऊपरि अनास्था थाइ । तेह भणी न कहइ ॥ १३८ ॥

[जि] **जम्हा** यस्मात् जिणि कारणि जिने इसु कहिउ । **सुअववहार** श्रुतव्यवहार सिद्धांतनी स्थिति विशोधता समाचरता २०पुरुषहूइ विशुद्ध निर्मली बोधि जिनसम्यक्त्वप्राप्ति **जायइ** हुइ । किसा हेतुहतउ ? जिनाज्ञाराधकत्वात् । जिननी आज्ञानउ आराधकपणातउ । कोई जिनाज्ञाप्रतिपालक पुरुष देखी बोधिफल प्रतिइ संदेह करइ । तेह पुरुष प्रतिइ **जिणआणाराहगत्ताओ** इसु पद हेतुरूप थाइ ।

[1] मे विसोहियंतस्स २ मे राहगुत्ताओ

[जि] अहो मोग्ग थानक ! लोकमाहे इसु न सोभलिउ— **जो आराहिज्ज सो न कोविज्जा**[1] जे आराधीइ ते न कोपवीइ । लोइ इसु कहइ । तिणि कारणि **मन्निज्ज तस्स वयण** तेह आराध्यनउ वचन मानीइ मानिवउ, जइ किमइ वांछित करिवा लहिया वांछइ ॥ १२३ ॥

[मे] लोकमाहि इसउ सामलीइ । जे आराधीयइ ते निराधीयइ नहीं, कोपवियइ नही । केवलउ तेहनउ वचन मानिवउ । जउ किमइ आत्मानइ ईप्सित वांछित करिवा वांछइ ॥ १२२ ॥

[सो] वली सम्यक्त्वनी दृढाई ऊपरि कहइ छइ ।

[जि] अथ सम्यक्त्वीनी सम्यक्त्वनिश्चलता बोलइ । १०

दूसमदंडे[2] लोए सुदुक्खसिद्धम्मि[3] दुट्ठउदयम्मि ।
धम्माण[4] जाण न चलइ सम्मत्त ताण पणमामि ॥१२३॥

[सो] **दूसम०** ईणइ दुःखमाकालि पांचमा आरारूपिइ दंडि पडीइ हुतइ **सुदुक्खउ०** शिष्ट उत्तम धर्मवन्त माणस दुःखिया थिया[5] । **दुट्ठ०** दुष्ट पापी अधमी चाडाचिक तेह रहइ[6] उदय मान महत्त्व१५ लक्ष्मी हुई । एहवइ निश्चइ ऊपराठइ कालि । अथवा **सुदुक्खसिद्धम्मि दुक्खउदयम्मि** इसिइ पाठि सु अतिशयइ दुःखिइ पूर्वभव उपार्जीइ सीधउ नीपनउ जे दुःखनउ उदय तीणइ छतइ जे धन्य भाग्यवन्तनु सम्यक्त्व चलइ नही, धर्म ऊपरि ल्यारइ अभावडि न थाइ, धर्मतु मन डोलइ नहीं, ए[7] तेहना उत्तम रहइ पणमउ२० नमस्करउ ॥ १२२ ॥

---

[1] सम्यक्त्वस्थाइ [2] जि दूसमदंडे मे दूसमन्मि [3] जि मे सदुक्ख [4] नि धम्माउ [5] थाय [6] रई [7] ते

किमु ? श्रुतव्यवहार समाचरता पुरुषहूइ विशुद्ध बोधि हुइ। इसी प्रतिज्ञा विसातउ ? जिननी आज्ञानउ आराधकपणातउ। एहे तु जे जे जिननी आज्ञाना आराधक हुइ तेहा तेहा पुरुषहूइ विशुद्ध बोधि हुइ। इसी अन्वयव्याप्ति। जिम श्रीश्रेणिक महाराजहूइ। इसु दृष्टांत। तिम एही जिनाज्ञाराधक। ए उपनय। तिणि कारणि विशुद्ध बोधि हुई ज। वली 5 अप्रत्यक्ष बोधिफल प्रतिइ संदेहकारक पुरुष वादी इसु कहइ, 'अहो प्रतिवादिन्! हेतु हुउ, साध्य म हुउ। विपक्षि किमु बोध ?' इसिइ कहिइ हूतइ प्रतिवादी उत्तर दिइ, 'अहो वादिन्! जेहाहूइ विशुद्ध बोधि न हुइ तेहाहूइ जिनाज्ञाराधकपणउई न हुइ, जिम मिथ्यात्वीहूइ। तेहनी परि ए नही। तिणि कारणि श्रुतव्यवहार समाचरता पुरुषहूइ 10 विशुद्ध बोधिफल हुइ जि।' इसिइ पंचावयवरूप अन्वय-व्यतिरेकी अनुमानप्रमाणि करी जिनमार्गप्रवर्तक जीवहूइ बोधिफल स्थापइ ॥ १३८॥

[मे] जेह भणी वीतरागदेवे कहिउ श्रुतसिद्धांत तेहनउ व्यवहारमार्ग साधता हूता विशुद्ध सूधी जिनधर्मनी प्राप्ति हुइ। तउ जइ जिननी आज्ञाना आराधकपणातउ ॥ १३८॥ 15

[सो] श्रीगुरु आश्री वीतरागनी आज्ञा कहइ छइ।

[जि] अथ सुगुरु-दुर्लभता कहइ।

जे जे दीसंति गुरू समयपरिक्खाइ ते न पुज्जंति।
पुणमेग सद्दहणं दुप्पसहो जाव जं चरणं ॥ १३९॥

[सो] जे जे० कवि कहइ छइ। हिवडानइ कालि जे जे 20 गुरु देखीइ ते ते सिद्धांतनी परीक्षाइ न पहुचइ। कहिमाहि सघलाइ गुरुना गुण देखीइ नही। पुणमेग० पुण एक वातनु निश्चिइ सद्दहिवु जाणिवु ज परमेश्वरि इम कहिउ छइ। पांचमा आरानइ

[जि] अहो श्रावक अजाण ! जइ निमइ तू जिनहूइ वादइ नमस्करि घरि पूजइ अनइ वली मिथ्यात्वीनि रागिइ करी **तस्स** तेह जिननउ वचन अवहेलिसि अवगणिसि न मानइ **ता** तउ अहो श्रावक मुग्ध ! तउ तू जिनहूइ काइ वादइ ? काइ पूजइ ? जिनवाद
5 जिनवचन तेहनी स्थिति आचारई किसु न जाणइ ? सिद्धातमाहे इसु कहिउ, 'श्रावकि जिनवचन मानिवउ, अवहेलिवउ नही।' इसु जिन वचनई न जाणइ तू ॥ १२१ ॥

[मे] जइ तउ देवनइ वादइ पूजइ अनइ वली तेहइ जि तीर्थंकरना वचननइ हीलइ राग लगी तउ तउ तेह परमेश्वरनइ काइ
10 वान्दइ, काइ पूजइ ? किमउ लोकव्यवहारनी स्थिति न जाणइ ? ॥१२१॥

[जि] सिद्धातरीतिइ अजाण श्रावकहूइ उपदेश देई वली लोकरीतिइ उपदिसइ।

लोए वि इम भणिअ जो आराहिज्ज[2] सो न[कोविज्ज[3]।
मन्निज्ज तस्स वयण जइ इच्छसि इच्छिअ[4] काउ ॥१२२॥

15 [मो] **लोग०** लोकइमाहि इसिउ कहीइ। जे आराधीइ ते कोपविवु नही, अवगणिवउ नही। तेह भणी **मन्निज्ज०** तेहनु वचन मानिवउ,[5] जउ तेहना मननउ गमतु करिवा वाछइ। जउ तेहनू वचन आराधिवउ, तु ते मानिउ पूजिउ। जउ तेहनु वचन न मानीइ तउ वाह्य पूजिउ काई न तूसइ। सामहु[6] कूपइ। लोकइ ए वात
20 कहइ ॥ १२२ ॥

---

१ जि मुणिउ मे मुणिय २ आराहिज्जइ ३ कुपिज्जा ४ इच्छिउं
५ 'मानिवउं तेहनुं वचन न' एटले पाठ सो नी चीजी प्रतमाथी पडी गया छे
६ सामुहु

[जि] अथ जिनेन्द्रनइ वचनि जिनधर्म जाणिवानउ फल
करइ ।

जम्हा जिणेहिं भणिअ सुअववहार विसोहयतस्स[1] ।
जायइ विसुद्धबोही जिणआणाराहगत्ताओ[2] ॥ १३८॥

5 [सो] **जम्हा०** जेइ भणी जिन श्रीसर्वज्ञइ इम कहिउ छइ।
श्रुतव्यवहार सिद्धांतनउ मार्ग जोईनइ देवगुरुधर्म लिइ, **जायइ०** शु
विशुद्ध बोधि निर्मल सम्यक्त्वनी प्राप्ति हुइ। **जिण०** जिननी आज्ञाना
आराधक भणी । यदुक्तं श्रीआवश्यके **सामाचार्याम्—**

निच्छयओ दुन्नेयं को भावे कम्मि वट्टए समणो ।
10 ववहारओ उ कीरइ जो पुव्वट्ठिउ चरित्तम्मि ॥
ववहारो वि हु बलवं जं छउमत्थं पि वंदई अरहा ।
जा होइ अणाभिन्नो जाणंतो धम्मयं एयं ॥ (गा ७१६-७१७

सिद्धांतउ व्यवहार प्रमाण करतउ केवलइ जे छद्मस्थि सिद्धांतन
व्यवहारि जोई चाही रसउ निर्दोष भणी आणिउ हुइ पुण ते आहा
15 छइ आधाकर्मी । तउ ते जिमइ । केवली इम न कहइ, 'ए आधाकर्म
छइ'। इम कहिता सिद्धांतना व्यवहार ऊपरि अनास्था थाइ । ते
भणी न कहइ ॥ १३८॥

[जि] **जम्हा** यस्मात् जिणि कारणि जिने इसु कहिउ
सुअववहार श्रुतव्यवहार सिद्धांतनी स्थिति विशोधता समाचर
20 पुरुषहइ विशुद्ध निर्मली बोधि जिनसम्यक्त्वप्राप्ति **जायइ** हुइ । कि
हेतुइतउ ? जिनाज्ञाराधकत्वात् । जिननी आज्ञानउ आराधकपणातउ
कोई जिनाज्ञाप्रतिपारक पुरुष देषी बोधिफल प्रतिइ संदेह करइ । ते
पुरुष प्रतिइ **जिणआणाराहगत्ताओ** इसु पद हेतुरूप थाइ

1 मे विसोहिर्यंतस्स 2 मे राहगत्ताओ

[जि.] अहो भोग श्रावक ! लोकइमाहे इसु न सांभलिउ-- **जो आराहिज्ज सो न कोविज्जा** ? जे आराधीइ ते न कोपवीइ। लोरई इसु कहइ। तिणि कारणि **मन्निज्ज तस्स वयण** तेह आराध्यनउ वचन मानीइ मानिवउ, जइ किमइ वांछित करिवा रहिवा वांछइ ॥ १३२ ॥ ५

[मे] लोकमाहि इसउ सामलीइ। जे आराधीयइ ते विराधीयइ नहीं, कोपवियइ नही। केवल्ड तेहनउ वचन मानिवउं। जइ किमइ आत्मानउ ईप्सित वांछित करिवा वांछइ ॥ १३२ ॥

[मो] वली सम्यक्त्वनी दृढाई ऊपरि कहइ छइ।

[जि] अथ सम्यक्त्वीनी सम्यक्त्वनिश्चलता बोलइ। १०

दूसमदंडे लोए सुदुक्खसिद्धम्मि दुक्खउदयम्मि।
धन्नाणं जाण न चलइ सम्मत्त ताण पणमामि ॥१३३॥

[सो] **दूसम॰** ईणइ दुःखमाकालि पांचमा आरारूपिइ दंडि पडीइ हुतइ **सुदुक्कर॰** शिष्ट उत्तम धर्मरत गाढा दुःखिया थिया[1]। **दुट्ठ॰** दुष्ट पापी अधर्मी चाडादिक तेह रहइ[2] उन्य मान महत्त्व१५ लक्ष्मी हुई। एहवइ विरुअइ ऊपराठइ कालि। अथवा **सुदुक्कर-सिद्धम्मि दुक्खउदयम्मि** इसिइ पाठि सु अतिशयइ दुःखिइ पूर्वभव उपार्जीइ सीधउ नीपाउ जे दुःखनउ उन्य तीणइ छतइ जे धन्य भाग्यवननु सम्यक्त्व चालइ नही, धर्म ऊपरि लगारइ अभावडि न थाइ, धमनु मा छोलइ नहीं, ए तेहना उत्तम रहइ पणमउ२० नमस्करउ ॥ १३३ ॥

---

१ सम्यक्त्व-डाइ २ जि दूसमदंडे मे दूसमदंडिय ३ जि मे सदुक्ख ४ जि धम्माउ ५ थाय ६ दई ७ ते

किमु ? श्रुतव्यवहार समाचरता पुरुषहूइ विसुद्ध बोधि हुइ । इसी प्रतिज्ञा किस्यातउ ? जिननी आज्ञानउ आराधकपणातउ । यहे ॥ जे जे जिननी आज्ञाना आराधक हुइ तेहा तेहा पुरुषहूइ विसुद्ध बोधि हुइ । इसी अन्वयव्याप्ति । जिम श्रीश्रेणिक महाराजहूइ । इसु दृष्टांत । तिम एही जिनाज्ञाराधक । ए उपनय । तिणि कारणि विसुद्ध बोधि हुई ज । वली ५ अनन्यक्ष बोधिफल प्रतिइ संदेहकारक पुरुष वादी इसु कहइ, 'अहो प्रतिवादिन् ! हेतु हुउ, साध्य न हुउ । विपक्षि किमु बोध ?' इसिइ कहिइ हूतइ प्रतिवादी उत्तर दिइ, 'अहो वादिन् ! जेहाहूइ विसुद्ध बोधि न हुइ तेहाहूइ जिनाज्ञाराधकपणउई न हुइ, जिम मिथ्यात्वीहूइ । तेहनी परि ए नही । तिणि कारणि श्रुतव्यवहार समाचरता पुरुषहूइ१० विसुद्ध बोधिफल हुइ जि ।' इसिउ पंचावयवरूप अन्वय-व्यतिरेकी अनुमानप्रमाणि करी जिनमार्गप्रवर्त्तक जीवहूइ बोधिफल स्थापइ ॥ १३८ ॥

१ [मे] जेह भणी वीतरागदेवे कहिउ श्रुतसिद्धांत तेहनउ व्यवहारमार्ग साधता हूता विसुद्ध सूधी जिनधर्मनी प्राप्ति हुइ । तउ जइ जिननी आज्ञाना आराधकपणातउ ॥ १३८ ॥ १५

[सो] श्रीगुरु आश्री वीतरागनी आज्ञा कहइ छइ ।

[जि] अथ सुगुरु-दुर्लभता कहइ ।

१ जे जे दीसति गुरू समयपरिक्खाइ ते न पुज्जंति ।
पुणमेग सद्दहणं दुप्पसहो जाव ज चरणं ॥ १३९ ॥

२ [सो] जे जे० वलि कहइ छइ । हिवडानइ कालि जे जे२० गुरु देखीइ ते ते सिद्धांतनी परीक्षाइ न पहुचइ । कहिनाहि सघलाइ गुरुना गुण देखीइ नही । पुणमेगं० पुण एक वातनु निश्चिइ सद्दहिवु जाणिवु न परमेश्वरि इम कहिउ छइ । पांचमा आरानइ

[जि] दूसमि दुष्समाकालिइ **दक्षे** दण्डिइ लोकि हूतइ। वली स्वदु यसिद्ध आपणा दुष्मइ नीपनउ दुष्वनउ उदय तिणि हूतइ। एनल्इ एकनउ दुषमाकालि लोक दण्डिउ। वली दुष्मइ ऊपरि दुष्व एहे विदु हूते जेहा पुरुषानउ धर्म हूतउ सम्यक्त्व न चालइ तेहा ५ भाग्यवना पुरुषानउ हउ **नेमिचद्र भडारी** सम्यक्त्व प्रणमउ नम स्करउ ॥ १३३ ॥

[मे] ईणइ दुक्खमाकालि लोक दण्डिइ हूतइ शिष्ट उत्तम लोके गादे दुक्सीए हूते अनइ दुष्टाइ उदइ हूइ हूतइ। एवहइ छतइ धन्य ते जेहना चित्त हूतउ सम्यक्त्व न चालइ तेहनइ हउ प्रणाम १० करउ ॥ १३३ ॥

[**सो**] वली गुरु आश्री वात कहइ छइ।

[**जि**] अथ गुरुपरीक्षारूप कहइ।

निअमइअणुसारेण ववहारनएण समयसुद्धीए[1]।
कालखित्ताणुमाणेण परिक्खिओ जाणिओ सुगुरू ॥१३४॥

१५ [**सो**] कवि कहइ छइ। आपणी बुद्धिाइ अनुसारि, व्यवहार नयइ करी, सिद्धानना वचननइ अनुसारि, कालक्षेत्रनइ अनुमानि, कालक्षेत्र संघयणादि जिम्या छइ तेहनइ मानिइ चारित्र क्रियानी सर्व शक्ति[2] रूप करइ छइ। तेहनउ अनुमानिइ परीषी गुरु लीधउ अनइ मानिउ छइ ॥ १३४ ॥

२० [जि] निजमतिनइ अनुसारि करी आपणाइ बुद्धिप्रागल्भ्यनइ प्रमाणि करी, वली व्यवहार लोकाचार तेहनउ नय न्यायरीति तिणि करी अनइ वली त्रीनउ **समयवुद्धीए** सिद्धातनी बुद्धिइ करी

१ नि बुद्धीए. २ शक्तिई

[जि] अथ जिनेन्द्रनइ वचनि जिनधर्म नाणिवानउ फ
कहइ ।

जम्हा जिणेहिं भणिअ सुअववहार विसोहयतस्स[1] ।
जायइ विसुद्धबोही जिणआणाराहगत्ताओ[2] ॥ १३८॥

[मो] जम्हा० जेइ भणी जिन श्रीसर्वज्ञइ इम कहिउ छइ।
श्रुतव्यवहार सिद्धांतनउ मार्ग जोईनइ देवगुरुधर्म लिइ, **जायइ०** त
विशुद्ध बोधि निर्मल सम्यक्त्वनी प्राप्ति हुइ । **जिण०** जिननी आज्ञान
आराधक भणी । यदुक्त श्रीआवश्यके सामाचार्यां—

निच्छयओ दुन्नेअं को भावे कम्मि वट्टए समणो ।
ववहारओ उ कीरइ जो पुव्वट्ठिउ चरित्तम्मि ॥
ववहारो वि हु बलवं ज छउमत्थ पि वंदई अरहा ।
जा होइ अणाभिन्नो जाणंतो धम्मयं एयं ॥ (गा ७१६-७१७)

सिद्धांतनउ व्यवहार प्रमाण करतउ केवलइ जे छद्मस्थ सिद्धांतन
व्यवहारि जोई चाही गरउ निर्दोष भणी आणिउ हुइ पुण ते आहार
छइ आधाकर्मी । तउ ते जिमइ । केवली इम न कहइ, ' ए आधाकर्मी
छइ ' । इम कहिता सिद्धांतना व्यवहार उपरि अनास्था थाइ । तेह
भणी न कहइ ॥ १३८॥

[जि] **जम्हा** यस्मात् जिणि कारणि जिने इसु कहिउ ।
सुअववहार श्रुतव्यवहार सिद्धांतनी स्थिति विशोधता समाचरता
पुरुषनइ विशुद्ध निर्मली बोधि जिनसम्यक्त्वप्राप्ति **जायइ** हुइ । किस
हेतुहतउ ? जिनाज्ञाराधकत्वात् । जिननी आज्ञानउ आराधकपणातउ ।
कोई जिनाज्ञाप्रतिपालक पुरुष देखी बोधिफल प्रतिइ संदेह करइ । तेह
पुरुष प्रतिइ **जिणआणाराहगत्ताओ** इसु पद हेतुरूप थाइ ।

1 मे विसोहियंतस्स 2 मे राहगुत्ताओ

किमु ' श्रुतव्यवहार [illegible] विशुद्ध बोधि हुइ । [illegible]
[illegible] ' जिननी [illegible] । एहे तु [illegible]
आज्ञाना आराधक हुइ तेह [illegible] विशुद्ध बोधि [illegible] । [illegible]
अन्वयव्याप्ति । जिन [illegible] । [illegible]
जिनाज्ञाराधक । ए [illegible] । [illegible] विशुद्ध बोधि [illegible]
अमव्यस्य बोधिरत्न [illegible] पुरुष वादी हवु [illegible]
प्रतिवादिन् । हेतु [illegible] न हुइ । विपक्षि [illegible]
कहिइ हुतउ [illegible] 'अहो वादिन् । [illegible]
न हुइ तेहहूइ [illegible] न हुइ, जिन [illegible]
तेहनी परि ए [illegible] । [illegible] श्रुतव्यवहार [illegible]
विशुद्ध बोधि [illegible] हुइ ति ।' इसिइ पचावयवरूप [illegible]
अनु[illegible] जीवहूइ बोधिरत्न [illegible]

[मे] [illegible] वीतरागदेवे कहिउ [illegible]
व्यवहा[illegible] विशुद्ध सुखी निश्चयनी प्राप्ति हुइ । [illegible]
जिननी [illegible] ॥ १२८ ॥

[सो.] [illegible] वीतरागनी आज्ञा कहइ छइ ।
[वि] [illegible] दुर्लभता कहइ ।
जे जे [illegible] समयपरिक्खाइ ते न पुमंति । [illegible]
पुन्ने[illegible] दुलमहो आव उ चरणं ॥ १२९ ॥
[सो.] [illegible] छइ । [illegible] न [illegible]
[illegible] न हुवइ । [illegible]
[illegible] पुण्येण० [illegible]
[illegible]

[सो] जइ० अहो भव्य जीव ! तू जउ इसिउ जाण छ– 'जिननाथ श्रीसर्वज्ञ लोकिक आचार थिकउ विपक्षभूत अलगउ छइ। लोकाचार जूउ अनइ श्रीसर्वज्ञनउ आचार जूउ छइ।' ता त त० तेह भणी तु ते श्रीवीतरागनइ मानउ हूतउ लोकनउ आचार धम भणी काई मानअ छअ ? जे 'लोगविरुद्धचाओ' इसिउ कहिउ छइ ५ ते प्रसिद्ध लोकनउ आचार धम मिउ अनिष्ट अणकरता लोक पाप ऊपार्जइ। ते छारा आमोपादिक करिवु। पणि तेहइ धर्म भणी काई न मानिवउ ॥ १४८ ॥

[जि] लोकाचारनइ पक्षइ हुउ हूतउ मानतउ जइ जिननाथ जाणइ, मनमाहि धरइ, तउ पछइ तू ते जिन माननउ हूतउ लोकाचार१० काइ मानइ ? ॥ १४८ ॥

[मे] अरे जीव ! जउ तउ इम जाणइ छइ जि 'जगन्नाथ वीतराग लोकना आचारनइ विपक्षभूत अलगउ छइ। लोकाचार जूउ, वीतरागनउ आचार जूउ।' तउ तउ वीतरागनउ मानतुइ हूतउ लोकनउ आचार धम भणी काइ मानइ ? ॥ १४८ ॥ १५

[सो] वली सम्यक्त्वइ जि ऊपरि ४ गाह कहइ छइ।

[जि] अथ जिन मानीनइ पछइ अन्य देव मानइ तेह उद्दिसी कहइ।

जे मन्नेवि जिणद पुणो वि पणमति इअरदेवाण।
मिच्छत्तसन्निवायगहत्थाण ताण को विज्जो ॥ १४९ ॥२०

[सो] जे मन्नेवि० जे जिनेन्द्र श्रीमगज साचउ देव

---

१ श्रासवरआचार २ मानइ छइ ३ छार ४ आधी ५ नि सन्निवाइग, मे सन्निवाय

छइहइं[1] श्रीदुप्पसह आचार्य युगप्रधान हुसिइ । तेह लगइ भरतक्षेत्रि चारित्र वर्त्तसिइ । तीणइ सिउं[2] जाणीइ[3] निश्चिइ को को चारित्रीउ गुरु भरतक्षेत्रमाहि छइ, जि हुं उन्मत्तउ नथी ॥ १२९ ॥

[जि] जे जे गुरु दीसइ ते ते सम्यग् सिद्धान्त तेहनी परीक्षाइं पूरइ न पुहुचइ । पुण एक श्रद्धान आम्ना छइ । जिसु श्रद्धान ते[1] दुप्पसहन्तो जाव ज चरण । ज जउ दुःप्रसहाचार्य लगइ चरण चारित्र थोडउ थोडेरउ होसिइ जि । इसी आम्ना छइ । पुण जुगप्रधान गुरु टाली बीजउ कोई गाढउ सुगुरु दीसइ नही । इति भाव ॥ १३० ॥

[मे] कवि कहइ । हिवडानइ कालि जे जे गुरु दीसइ ते ते सिद्धान्तनी परीक्षाइ न पहुचइ । काइं[2] आपणपानइ सूधा ज्ञानतउ अवबोध नही । अनइ असूधा घणा, सूधा थोडा ते भणी जाणी न सकीइ । पणि एक बातनी सद्दहणा करिवी । जां दुप्पसहसूरि तां सीम चारित्र छइ ॥ १३० ॥

[जि०] तिणि कारणि ते जुगप्रधान गुरु जाणिवानउ उपाय कहइ ।

ता एगो जुगपवरो मज्झत्थमणेहिं समयदिट्ठीए ।
सम्मं परिक्खियव्वो मुत्तूण पवाहहल्लबोलं ॥ १४० ॥

[सो] ता एगो० तेह भणी एह भरतक्षेत्रमाहि एक को युगप्रवर युगमाहि उत्कृष्टउ चारित्रीउ मध्यस्थ मन थईनइ परीक्षिवउ । **समय०** सिद्धांतनी रीतिइ सम्यग् जोई लेवु । **मुत्तूण०** लोकनउ प्रवाह कल्कल 'आ माहरउ, आ ताहरउ गुरु' इस्यउ लोकनउ प्रवाह

1 छिहइ 2 इसिउ 3 यदोइ

वीतराग मानी तेहनी आज्ञा पडिवजीनइ **पुणो वि०** वली इतर देव बीजा संसारिक देव नमइ मिथ्यात्वरूपिइ सन्निपात[1] रोगिइ करी ग्रसिया अचेतन जाणिवा। तेहहूइ कुण वैद्य हुइ? तेहहूइ कुण साजा करइ? जे अमृत पीईनइ विष पीइ तेहहूइ किउ प्रतिकार हुइ? ॥ १४० ॥

[जि] जे पुरुष जिनेन्द्र मानी पछइ इतर देव हरिहरादिक प्रणमइ तउ मिथ्यात्वरूपिउ संनिपातक रोग तिणिइ **घत्थ** ग्रस्या व्याप्या हूता **ताण** तेहा पुरुषहूइ कुउण वैद्य हु? अपि तु न कोई ॥ १४९ ॥

१० [मे] जे सर्वज्ञ साचउ देव मानी तेहनी आज्ञा पडिवजीनइ इतर बीजा संसारिक देवनइ मानइ ते मिथ्यात्वरूपीइ सन्निपाति रोगि ग्रस्या हूता अचेत हुइ। तेहनइ कउण वैद्य साजा करइ? ॥ १४९ ॥

[**सो**] वली सम्यकत्वइ नि ऊपरि कहइ छइ।

[**जि**] एक श्रावक गुरु नानाविध चैत्यद्रव्य माहोमाहि न १५नेचावइ।

एगो सुगुरू एगा वि सावगा चेईयाणि विविहाणि।
तत्थ य ज जिणदव्व परुप्पर न न विचंति ॥ १५० ॥

[**सो**] **एगो०** गुरु एकइ नि अनइ श्रावक एकइ जि छइ। पुण चैत्य देहरा जूआ जूआ अनेरा अनेराना[2] कराव्या छइ। तिहा जे २०द्रव्य छइ ते परस्परिइ न वेचइं। पेला[3] देहरानु उलिइ देहरइ, ओल्या देहरानु पेल्इ देहरइ न वेचइ। मनि भेद आणइ ॥ १५० ॥

---

१ सन्निपाति २ आ गाथानी प्रथम पंक्ति जि मा नथी ३ अनेरा ४ पेला देहरानु न वेचइ एटलो पाठ सो नी बीजी प्रतमाथी पडी गयो छ

तेहरूपिआ द्रहवोरु उरचोउ मेल्ही करी। जिम द्रहबोल्माहि वस्तु पडी न लाभइ तिम लोकप्रवाहि तत्त्वातत्त्वविचार न लाभइ। तेह भणी ते छांडीनइ तत्त्वदृष्टिइ गुरु जोईनइ लेवु ॥ १४० ॥

[जि] ता तउ पछइ एक अद्वितीय युगप्रवर युगप्रधान गुरु मध्यस्थमनोभि मध्यस्थ उदासन पुरुषे समय सिद्धांत तेहनी दृष्टि जोइवउ ; तिणि करी। अथवा सिद्धांतरूपिणी दृष्टि लोचन तिणि करी **सम्म** सम्यक् साचउ **परिक्खियव्वो** परीक्षियउ। किसु करी ? प्रवाह लोकप्रवाह तेहरूपिउ द्रहबोल मेल्ही करीनइ। जिम द्रहबोल्माहि वस्तु पडी न लाभइ तिम लोकप्रवाहि तत्त्वातत्त्वविचार न लाभइ। तिणि कारणि लोकप्रवाह मेल्ही मध्यस्थेई जि पुरुषे सुगुरु परीक्षियउ, न तु आग्रहवते पुरुषे। यदुक्तं—

> आग्रही बत निनीषति युक्तिं तत्र यत्र मतिरस्य निविष्टा।
> × × × युक्तिर्यत्र यत्र मतिरेति निवेश ॥

सिद्धांतनी दृष्टि किसी ?

> पडिरूवो तेयस्सी जुगप्पहाणागमो महुरवक्को।
> गंभीरो धीमंतो उवएसपरो य आयरिओ ॥
> अपरिस्सावी सोमो संगहसीलो अभिग्गहमई य।
> अविकत्थणो अचवलो पसंतहियओ गुरू होइ ॥
> (उपदेशमाला, गा १०११)

इत्यादि सिद्धांतदृष्टिइ जुगप्रधान उरषी आदरियउ ॥ १४० ॥

[मे] तेह भणी एह भरतक्षेत्रमाहि एकेकउ युगप्रधान अनुक्रमिइ दुप्पसहसूरिसीम विसहस्स चडोत्तर होसिइं। एह भणी

1 आ श्लोकनुं त्रीजुं चरण मूळमां आम त्रुटित छे

[जि] एक जि सुगुरु। एकइ नि सघला श्रावक। चैत्य जिनदेवगृह विविध नानाप्रकार छइ। तत्थ तेहे विविध चैत्ये जं जे जिनद्रव्य ऊपजइ ते जिनद्रव्य देवद्रव्य परम्परइ एक चैत्यनउ द्रव्य बीजइ चैत्यि जे सुगुरु श्रावक न वेचावइ ॥ १५० ॥

[मे] एक सुगुरु, एक श्रावक छइ अनइ देहरा जूजूआ छइ। अनइ तिहां जे द्रव्य छइ ते परम्परइ न वेचइ। मनि भेद आणइ ॥ १५० ॥

ते न गुरू नवि सड्ढा न पूइओ तेहिँ होइ जिणनाहो।
मूढाण मोहठिई सा नज्जइ समयनिउणेहिँ ॥ १५१ ॥

[सो] ते न० ते गुरु नहीं, ते श्रावक नहा, जे इम देहरानी जूजूआई करइ। एक ना[१] गणइ तेहे वीतराग देवउ[४] पूजिउ नहीं। साचउ वीतराग पूजिउ तु कहीइ, जउ वीतरागना प्रासादनिइ एकइ नि देषइ। जे जूजूउ देखितु ते मूढनी मोहस्थिति अजाणितु जि जाणीइ ॥ १५१ ॥

[जि] ते गुरु नही। ते श्रावक नही। तेहे गुरुश्रावके जिननाथ वीतराग देव किवारइ न पूजिउ। काइ[२] तेहे गुरुश्रावक **समयनिउणेहिँ** समय सिद्धांत तेहना निपुण जाण एवहई **सा** ते चैत्यद्रव्यनी परम्परइ अणवेचिवानी रीति ते मूढ मूर्खनी मोहस्थिति **नज्जइ** जाणींइ। नाना चैत्यपदनउ द्रव्य आवइ तिमइ जिनचैत्यि वेचिवउ। दूषण नही, मामुह महाधम। इसी सिद्धांतरीति न जाणइ, किंतु पूर्वोक्त मूढस्थिति जाणइ तेह भणी ते अनाण ॥ १५१ ॥

[मे] ते गुरु नहीं, ते श्रावक नहीं, जे देहरा एक न गिणइ।

---

१ जि कहवि २ मे निज्जइ ३ न ४ देवउ

रागद्वेष मूकी मध्यस्थपणइ समय सिद्धाननी दृष्टिं सम्यग् प्रकारि गुरु परीषी लेयउ, पणि लोकनउ प्रवाह कलकल 'ए माहरउ, ए ताहरउ' एवहउ हल्बोल मूकीनइ ॥ १४० ॥

[सो] ईणइ लोकप्रवाहिइ हिवडा जाणइ क्षुमइ छइ । ए वात ५ कहइ छइ ।

[जि] अथ पूर्वोक्त लोकप्रवाहनउ स्वरूप कहइ ।

संपइ[1] दसमच्छेरयनामायरिएहिं जणिअजणमोहा ।
सुयधम्माओ[2] निउण[3] वि चलंति बहुजणपवाहाओ ॥१४१॥

[सो] **संपइ०** हिवडा असंजयाण पूजा इसिउ दसमु अछेरु १०प्रवर्तइ[4] छइ । ईण करी गुणरहित नामिइ आचार्य घणा थिया । तीणइ करी **जणिअजण०** लोक रहइ मोह कहीइ भ्रम वरासउ पडिउ[5] । न जाणीइ केहउ गुरु । इसिइ छतइ जे निपुण डाहा चतुर तेहइ घणा लोकना प्रवाहमाहि पडिआ हुता साचा धर्मतउ चूकइ चलइ छइ, साचा गुरुनइ अणलहिवइ ॥ १४१ ॥

१५ [जि] संप्रति हिवडा दसमइ आश्चर्यि उपना **नामायरिएहिं** नामधारक आचार्य तेहे जनित ऊपजाविउ जन अज्ञाततत्त्व लोक तेहना सरीषउ मोह अज्ञानपणउ जेहा निपुणाहूइ छइ ते जनितजनमोह । एवहा हूता **निउण वि** निपुणई ज्ञाततत्त्वई सुमधर्म हूता चालइ । किसा प्रमाणइतउ ? **बहुजणपवाहाओ** बहु घणा जण लोक तेहना २०प्रवाहइतउ । एक नामधार आचार्य मोह उपजावइ । लोकप्रवाह पुण शुभधर्म हतउ डाहाई मोरवइ । तिणि कारणि लोकप्रवाह मेल्हिवउ ॥ १४१ ॥

---

१ जि मे संपय २ तह धम्माओ ३ जि नियण ४ वर्तइ ५ परिउ

तेहे वीतराग पणिउ नहीं। जे प्रासाद बिंब आपणा पासा करी देषइ ते
मूरखनी मोहस्थिति अजाणिवउ समय सिद्धांतने निपुणे ॥ १५१ ॥

[सो] वली एह नि वात कहइ छइ।

[जि] एह ज वात प्रकारांतरि वली कहइ।

⁵ सो न गुरू जुगपवरो जस्स य वयणम्मि वट्टए भेओ
चिअभवणसड्ढगाणं साहारणदव्वमाईण ॥ १५२ ॥

[सो] सो न० ते गुरु युगप्रधान न कहीइ, जेहनइ वचनि
उपदेशि एतलानु भेद थाइ। चैत्यभवन देहरा अनइ श्रावक तथा
साधारण द्रव्य देवद्रव्यादिकनी जूजूआई थाइ, माहिमाहि विरोध
¹⁰पडइ ॥ १५२ ॥

[जि] जे गुरु जुगप्रवर नही, जस्स य जेह गुरुनइ वचनि
चैत्यभवन देवगृह तेहना द्रव्यह अनइ श्रावकना द्रव्यहइ वली
साधारण द्रव्यहइ भेद भिनता वर्तइ ॥ १५२ ॥

[मे] ते गुरु युगप्रधान न कहीइ, जेहनइ वचनि एतलानउ
¹⁵भेद थाइ। चैत्य देहरा, श्रावक तिम साधारण द्रव्य देवद्रव्यादिकनी
जूजूआइ थाइ, माहोमाहि विरोध पडइ ॥ १५२ ॥

[सो] वली कवि गुरुनी भक्तिइ कहइ छइ।

[जि] अथ मिथ्यात्वनउ माहात्म्य बोलइ।

सपइ पहुवयणेण वि जाव न उल्लसइ विहिविवेअस्स[1]।
²⁰ता निविडमोहमिच्छत्तगंठिआदुट्ठमाहप्प ॥ १५३ ॥

१ भुवण २ जि वियणेण ३ जि विहिविवेगत्त

[मे] साम्प्रत दसमा अच्छेरा जे वश्या तहनइं इमन्न भव्यज-
नइ प्रस्तावि नामाचार्ये लोकनइ जे व्यामोह ऊपजाविउ तइ इसी परि
लोकना प्रवाहमाहि पड्या हूता निपुण गहाइ लोक नूक धर्म हू-
चाल्इ भ्रष्ट हुइ, साचा गुरु अणरहता थका ॥१११॥

[मो] जे लोकनइ प्रवाहि पडिया तेहनु [illegible]
कुधर्म सेवइ । तेइ आथी पडइ छइ ।

[जि] अथ मिथ्यात्वी सम्यक्त्वी विभाग [illegible] ।

जाणिज्ज मिच्छदिट्ठी जे पडणालंवणाइ गिण्हंति ।
जे पुण सम्मदिट्ठी तेसिं मणो चडणपयडीं ॥११४॥

[सो] जाणिज्ज० निश्चयनयनी [illegible] मिथ्यात्वी जि॰
कहीइ, जे पडवाना आलंबन लिइ । '[illegible]
छइ, हुइ करु' इम तेहना आलंबन [illegible]
साचा सम्यक्त्वना धणी तेहनु मन [illegible] हुइ । ध
धर्म करता हुइ तेहनु आलंबन [illegible] करइ ।
यदुक्तं श्रीआवश्यके वदननिर्युक्तौ—

> आलंबणाण लोओ भरिओ जीवस्स [illegible] ।
> ज ज पिच्छइ लोए त त आलंबणं कुणइ ॥
> जे जत्थ जयाजईया बहुमुया [illegible] ।
> ज ते समायरति आलंबण [illegible] ॥
> जे जत्थ जयाजईया बहुसुया [illegible] ।
> ज ते समायरति आलंबण [illegible] ॥ १४२ ॥
> (गा. ११८८ [illegible])

१ पिप्पति २ जि चेइ प [illegible] 'आलंबन' एटले पाठ सो नी बीजी [illegible]

[सो] सपइ० हिवडा प्रभु श्रीजिनवल्लभसूरिना वचनिइं जा धर्मनी थी विधि अनइ साचा विवेकनउ जाणिवउ न उल्लसइं न ऊपनइ ता निबिड० त निबिड मोह अजाणिवउ अनइ मिथ्यात्वनी ग्रथि तेहनउ गाढउ माहात्म्य गाढउ महिमा। ते गाढा अजाण अनइ गाढा मिथ्यात्वी कहीइ ॥ १५३ ॥ 5

[जि] सप्रति हिवडा प्रभु श्रीजिनवल्लभसूरि तेहना वचनिइं जउ विधिविवेचपणउ न उल्लसइ, विधि जिनसिद्धान्त कथित तेहनउ विवेकपणउ, पापपुण्यनउ जाणिवापणउ जउ न ऊपजइ ता तउ पछइ निबिड मोह अनान तद्रूप मिथ्यात्वग्रथिना मिथ्यात्व गाढी तेहनउ माहात्म्य प्रभाव जाणिवउ ॥ १५३ ॥ 10

[मे] साम्प्रत प्रभु श्रीजिनवल्लभसूरिना वचनिइं तेहनउ चित्त खरी विधि उपरि अनइ साचउ विवेक तेहनउ ऊपरि तेह ऊपरि चित्त उल्लसइ नहीं, तेहनइ निबिड मोह अनइ वली मिथ्यात्वनी ग्रथि तेहनउ गाढउ महादुष्ट मोहनउ [illegible] जाणिवउ ॥ १५३ ॥

[सो] परमेश्वरना वचननी आशातनानु [illegible] विरूउ ॥

[जि] अथ जिननी आशातना करिवानु फल कहइ छइ।

वधणमरणभयाइं दुहाइं तिक्खाइं नेव दुक्खाइं।
दुक्खाण दुहनिहाण पहुवयणासायणाकरण ॥ १५४ ॥ 20

[सो] वधण० बाधिवउं, मारिवउं [illegible] जिं तीव्र दुःख ते दुःख न कहीइ। ते बीहीं [illegible]

१ विरूउ २ जाणिवउं ३ भयाइं ४ स [illegible] ५ सि म [illegible] सायर्ण करण ६ बाधिवु ७ मारिवइं [illegible]

[जि] ते मिच्छदिट्ठी मिथ्यात्वीदृष्टि जाणिज्ज जाणिवउ, जे पतित धर्म हूंता भ्रष्ट हूया तेहनां आलंबन ओठम लिइ, मुखी विलमणि करइ। 'एहइ तप नथी करतउ, हउइ नही करउ' इत्यादि आलंबन लिइ। अथ सम्यक्त्वी लक्षण। जे पुण 5 सम्मदिट्ठी जे वली सम्यग्दृष्टि हुइ तेसि मणो तेहना मन चढते पावडीया लेहु। मोय तपस्वी प्रमुख पुरुष, तेहना अवष्टम आदरइ ॥ १४२ ॥

[मे] ते जाणिवा मिथ्यादृष्टि जे पडियालंबण पतितनउ आलंबन लिइ। जे वली जीव सम्यग्दृष्टि छइ ते चडियालंबननी पावडी 10 चढइ। जे रूडी क्रिया करइ तेहनी पयडीइ चढइ ॥ १४२ ॥

[सो] उत्तम सयोग दुर्लभ ए वात कहइ छइ।

सव्वं पि जए सुलहं सुवन्नरयणाइवत्थुवित्थारं।
निच्चं चिय मेलावं सुमग्गनिरयाणं अइदुलहं ॥ १४३ ॥

[सो] सव्व पि० बीजउ सहू सुवर्ण रत्न आभरणादिक 15 वस्तु ऋद्धिनउ विस्तार सुलभ। यत उक्त—

> सर्वे भावा सर्वजीवै प्राप्तपूर्वा अनंतशः ।
> बोधिर्न जातुचित्प्राप्तो भवभ्रमणदर्शनात् ॥

राज्यऋद्धि धनकनकादिक घणीइ वार अनंते भवे लाभइ, पुण सन्मार्ग निरत खरा उत्तम धर्मना आराधक उत्तम पुरुष तेहनउ सदैव मेलाव 20 ते अतिदुर्लभ। तेहइ नि भणी सदैव जयवीअरायमाहि प्रार्थी छइ, 'सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा आभवमखंडा' ॥ १४३ ॥

१ आ गाथा तथा तेनो बालावबोध जि ■ नथी २ °निरयाणं

फीर्गी जाइ। दुक्खाण० पुण प्रभु तीर्थंकरदेवना वचननी आशातनानु करिवु ते सर्व दुःखनउ निधान। अनता संसारमाहि अनते भवे अनता दुःख दिइ। वीतरागना वचन जे ऊथापइ ते घणु आगलि दुःखिया थाइ ॥ १५४ ॥

5 [जि] बधनमरणभयप्रमुख दुःख तीनई हूता पुण दुःख न कहीइ। स्वल्प ताहृपणातउ। जइ बधनमरणादिक दुःख नही, जिन वचन आशातना करिवउ निसउ दुःख। पहुवयणा० प्रभु स्वामी जिन तेहनी आशातनानउ दुःखनिधान दुःखस्थानक। अतिउत्कृष्ट पणातउ। जिनवचन आशातना करिवइ तउ अणता मोटा गाढा दुःख १०ऊपजइ। तेह भणी जिनवचन आशातना न करिवी। किन्तु मानिवउ करिवउ पुण जिनवचन, जिम नानाविध मनोज्ञ सुख हुइ ॥ १५४ ॥

[मे] बधणमरणभयादिक जे दुक्ख ते तीन दुक्ख कहीइ ते थोडीसी वेला सह्या पछी विल्इ जाइ। पणि प्रभु तीर्थंकरदेवना वचननी आशातनानउ करिवउ ते सर्व दुक्खनउ निधान, जेह लगी १५अनना दुक्ख पामीइ ॥ १५४ ॥

[सो] हिव कवि आपणी निन्दा करइ छइ।

[जि] अथ सुश्रावकत्त्व आजन्म पालिवउ। इसु कहइ।

पहुवयणविहिरहस्स नाऊण[1] जाव दीसए अप्पा।
ता कह सुसावगत्त[2] ज चिन्न धीरपुरिसेहिं ॥ १५५ ॥

२० [सो०] पहु० प्रभु तीर्थंकरदेव तेहने वचने,

सुविणिच्छिअएगमई धम्मम्मि अनन्नदेवओ अ पुणो।
न य कुसमए सु रज्जइ पुव्वावरवाहयत्थेसु ॥
दट्ठूण कुलिंगीण तसथावरभूअमद्दण विविह।
धम्माओ न चालिज्जइ देवेहिं सइदएहि वि ॥

२५ (उपदेशमाला, गा २३१ ३२)

1 फीडी 2 जि मे नाऊण वि 3 मे सुसावयत्तं

[मे] सघलीइ वस्तु पृथ्वीमाहि सुवर्णरत्नादिक वस्तुनउ विस्तार सोहिलउ। पणि नित्य सदैव सन्मार्गनइ विषइ निरत, खरा धर्मना प्ररूपक तेहनउ मेलावउ अति दुर्लभ। जयवीअरायमाहि 'सुहगुरुजोगो तव्वयणसेवणा' एह जि वस्तुनी प्रार्थना मागी ॥ १४३ ॥

[सो] केतलाइ 'आ[1] माहरउ देव, आ माहरउ गुरु। ए टाली बीजा गुणवन्त काई नही। हु एह जि मानउ।' इसिउ अभिमान वहइ। तेह आश्री कहइ छइ।

[जि] अथ देवा गुरुहूइ मगर्वपणइ करी कमलहुलता नोमइ।

'अहिमाणविसोवसमत्थय च थुव्वंति देवगुरुणो अ।
तेहिं पि जओ[3] माणो ही ही त पुव्वदुच्चरिअ'[4] ॥ १४४ ॥[2]

[सो] **अहिमाण॰** अहंकाररूपिआ विसना निवार उपशामनना देवगुरु कहीइ। देवगुरु सेवता अहकारादिक विकार जाइ। **तेहिं पि॰** तेहे जि देवगुरे करी केतलाहूइ[6] मान अहंकार आवइ। **ही ही॰** आहा ! ते पूर्वदुश्चरित पाछिला भवना पाप तेहनू प्रमाण, ज गुणागुण काई जोतउ नथी। दृष्टिरागिइ नाहिउ 'आपणाइ जि देवगुरु रूडा' इसिइ गर्विइ गर्व्यु हीण्इ छइ ॥ १४४ ॥

[जि] लोक परमार्थवृत्तिइ च वली बाह्यवृत्तिइ पुण अभिमान अहंकार तेहनइ वशि देवा गुरुन्हूइ वणवइ। जउ देवगुरुई अहंकारी छइ इसिइ स्तवइ। स्तविता छतउई गुण, अछतई गुण वर्णवइ। पुण तेहा देवागुरान्हूइ जउ **माण** अहंकार हूउ साचउ, तउ तेहा देवगुरना पूर्वकृत दुश्चरित जाणिवउ ॥ १४४ ॥

---

१ आ माहरउ देव' सो नी बीजी प्रतमा नथी २ आ गाथा जि मा नथी पण ते उपरनो बालावबोध छे ३ मे जाओ ४ दुच्चिरिअं ५ अभिमान अहंकार ६ केतलाइ

" दढसीलव्वयनियमो पोसहआवस्सएसु अक्खलिओ० ।
(उपदेशमाला, गा २३४)

इत्यादिके जे श्रावकनउ रहस्य बोलिउ छइ ते जाणीनइ जेनी वारइ आपणपउ जोईइ ता कह० तु किहां आपणपामाहि सुश्रावकपणु [2] ज चिन्न० जे आगलि धीर पुरिषे आनद कामदेवादिक समाचरिउ [3] तेहनु लवलेश आपणपामाहि नथी ॥ १५५ ॥

[जि] प्रभु परमेश्वर तेहतउ वचन विधि रहस्य नाऊण विनाणई अनइ जाव जां स्वगइ आत्मा नक्षस्वरूप दीसइ ता स्वगइ किसु सुश्रावकपणउ [1] जे सुश्रावकपणउ धीरपुरुषे आनीर्ण आचरिउ ॥ १५५ ॥

[से०] प्रभुसतन वीतरागनेय तेहनी भाषी विधि तेहतउ रहस्य।० जाणीनइ जउ आपणउ आत्मानउ स्वरूप जोईइ तउ किहां सुश्रावकपणउ [1] काइ [1] आगइ जे आनद कामदेवादिक धीर पुरुष श्रावक हुआ तेहनउ सउ एवलेश मात्र आपणपामाहि नहीं दीसता ॥ १५५ ॥

[सो] हिव आपणु मनोरथ चिहुं गाहे कवि करइ छइ।

[जि०] अथ श्रीनेमिचन्द्र भंडारी पाचे गाथाइ आपणा।५ मनोरथ प्रकासइ।

जइवि हु उत्तमसावयपयडीए चडणकरणअसमत्थो ।
तह वि पहुवयणकरणे मणोरहो मज्झ हिअअम्मि ॥१५६॥

[सो] जइ वि० यद्यपि[1] उत्तम श्रावकनी पगथीइ चढवू करी न सकु, तीणइ वहिरइ[2] असमर्थ छउ तह वि० तउ प्रभु।० तीर्थंकरना वचन आराधिवानइ विषइ[3] माहरइ हिअइ मनोरथइ[4] छइ। किमइ[5] वीतरागनी आज्ञा आराधाइ तु रूडउ ॥ १५६ ॥

१ त्रिहु २ 'कवि' नथी ३ यद्यपि, ४ वहरइ ५ विषय ६ मनोरथ ७ किमइइ

[मे] अहंकार ईर्ष्या विमना विकार तेहनइ उपशमाविवानइ कानि देवगुरुनी स्तुति कीजइ। काइ¹ ते स्तवना अहंकार जाइ। अनइ तेही जि देवगुरु हूतउ जे अभिमान उपजइ तउ ही इमिइ सेदि ते पूर्वदुश्चरित्र पापनउ प्रमाण जाणिवउ ॥ १४४ ॥

---

5 [सो] लोकना आचार करतउ जे आपणपउ जिनभक्त कहावइ ते आश्री वात कहइ छइ।

[जि] अथ जे जैन आचारि करी बीजा जैनहूइ न मिलइ तेह जेतूइ ओल्भउ दिइ।

जो जिणआयरणाए लोओ न मिलेइ तस्स आयारे।
¹ **हा हा मूढ करंतो कह अप्प भणसि जिणपणय॥ १४० ॥**

[सो] **जो जिण०** जिन श्रीवीतरागनी आचरणासिउ जे लोकनउ आचार न मिलइ। मूढ मूर्ख! ते आचार समाचरतउ हूतउ आपणपूं जिनभक्त किम जिनभक्त कहइ॥² 'अजम्स कडि चडिओ, अजम्म वि होइ थणपाण' ए लोकनउ उपाणउ साचउ करइ ॥ १४५ ॥

[जि] अथ जे लोक जिननी आचरणाइ करी तस्स तेह जिननइ आचारि न मिलइ, जिननी आचरणा अनइ जिननउ आचार तेह बिहूंइ भिनना जाणइ। अनइ जिनाचरण जिनाचारहूइ भेद नही। हे मूढ! हा हा खेदे। भेद करतउ, लोकाचार करतउ हूतउ आपणपउ 20जिनप्रणत जिनभक्त किमु भणइ, काइ कहइ? ॥ १४५ ॥

[मे] जे जिननी आचरणाइ लोक न मिलइ ते लोकनउ

---

१ आपणपुं २ करइं छुं

[जि०] जइवि यद्यपि हुं निश्चइं उत्तमसावयपयडीए सुगण श्रावकनइं पालिवानइ हूतउ चरणकरणि चारित्रपालनइ विषइ असमर्थ, दीक्षा पाली न सकउ तइ वि तथापिहिं मज्झ रिअअम्मि माहरा हियामाहे प्रभुवचन करिवानइ विषइ यतिधर्म ५ पालिवानइ विषइ मनोरथ होज्यो ॥ १५६ ॥

[मे०] जउ निमइं उत्तम श्रावकनी पदवीइं चढिवानइ विषइ असमर्थ छउ, पणि सउ ही प्रभु वीतराग तेहना वचननइ करिवउ तेहनइ विषइ मनोरथ माहरइ हियइ छइ ॥ १५६ ॥

ता पहु पणमिअ चलणे इक्कं पत्थेमि परमभावेण ।
१०तुह वयणरयणगहणे अइलोभो मज्झ हुज्ज सया ॥१५७॥

[सो] ता पहु० तेह भणी प्रभु परमेश्वर वीतरागना चरण नमस्करीनइ एक वानउ प्रार्थउ मागउ भावइं मानिइ। तुह० हे स्वामी ! ताहरा वचन रूपिया रत्न लेवानइ विषइ मूहरइ सदैव अतिलोभ हुज्यो । श्रीसिद्धान्तवचन उपरि आस्था आदर आवियो । १५आनल्ड काज सरइसिं ॥ १५७ ॥

[जि] ता तउ पछइ पहु प्रभु जिन तेहना प्रणमित नमस्करिया चरण पदकमलि जिणइ मइ एतावता प्रभु तणा चरणकमल नमस्करी प्रभु केन्हा परम भावि मोटी भक्तिइं करी एक वस्तु प्रार्थउ । हे प्रभो ! ताहरा वचनरूपिया रत्न तेह लेवा मनेचैव मूहइ अतिलोभ २०होज्ज हुउ ॥ १५७ ॥

[मे] सउ तेह भणी प्रभु वीतरागना चरण नमीनइ परम भावि करीनइ एक वानू मागउ । ताहरा वचनरूपीया रत्न लेवानइ विषइ मूहइ सदैव अतिलोभ हुज्यउ ॥ १५७ ॥

---

१ पियमि २ जि होज्ज ३ चरण ४ सरिसिइ

आचार जे लोक करइ। हा हा इसिउ गेहि। ते मूढ मूर्ख ते आचार करतउ आपगरउ निनमत्तरमउ किम कहइ ? ॥ १४१ ॥

[सो] वीतरागदेवनिनु वचन मानइ ते थोडा । ए' वात कहइ छइ ।

[जि] एवडउ जिनभेद काइ ? तेहनउ कारण कहइ । 5

ज चिअ लोओ मन्नइ त चिअ मन्नंति सयल लोआ वि।
ज मन्नइ जिणणाहो त चिअ मन्नंति किवि' विरला ॥१४३॥

[सो] ज चिअ० एक लोक जे वोल मानइ तेह जि बोल सघलाइ लोक मानइ। प्रवाहि पड्या प्राहि' समारामिलापी सविहु जीवना मन सरीखाइ जि हुइ । ज मन्नइ० जे जिननाथ तीर्थंकरदेव१० जे बोल मानद कहइ, केवलज्ञानिं करी जाणीनइ, तेह जि श्रीसर्वज्ञना' वचन जे मानइ, लोकनउ प्रवाह काई न मानइ ते केतलाइ विरलाइ जि थोडाइ आसन्नसिद्धिक हुइ ॥ १४६ ॥

[जि] जे आचार लोक माइ तेही ज आचार सघलाई लोक मानइ । पुण जे आचार जिननाथ मानइ ते आचार विरला थोडा१५ केईएक भाग्यवन मानइ ॥ १४६ ॥

[मे] जे वस्तु मिथ्यात्वादिक प्रवाहि लोक मानइ ते सकल लोकमाहि मानीइ । अनइ जे जिननाथ मानइ कहइ ते जइ विरलउ कोईएक भव्य जीव मानइ ॥ १४६ ॥

[सो] निश्चय नय आश्री श्रीसम्यक्त्वनु स्वरूप कहइ । २०

[जि] अथ जे सात्म्मी उपरि गाढउ स्नेह न करइ तेह उद्दिसी कहइ ।

---

१ ते २ जि क मे नवि ३ प्राहिई ४ सवज्ञनु ५ कहइ छइ

[जि] इम प्रभु आगलि प्रार्थी आपणी मनोगत चिंती कहइ।

अइमिच्छवास[1] निकिट्ठ भावओ गलिअगुरुविवेआण।
अम्हाण कह सुहाइ समाविज्जति सुमिणे[2] वि ॥१५८॥

[सो] अति गाढउ[4] घणा कालनु मिथ्यात्वनु वास[5] संस्कार तीणइ करी जे ऊसनु निकृष्ट भाव मननु परिमाण तीणइ करी गलिउ 5 गिउ गुरु विवेक छइ अम्हारउ एहवा अम्हे रहइ सुहणाइमाहि शुभ पुण्य किहा समावीइ? अथवा सुख मोक्षसुख किहा समावीइ? ते गाढउ दुर्लभ ॥ १५८ ॥

[जि] इम संसारमाहे एतला अम्हहइ **सुमिणे वि** सुहणाई माहि किमु सुख समावीइ? अपि तु न समावीइ। अम्हे किसा छा? 10 **मिच्छवास** मिथ्यात्वनउ संस्कार तिणि करी निकृष्ट विरुउ भाव तेहतउ गलिउ **गुरु** गुरुउ विवेक तत्त्वातत्त्वविचार जेहनउ छइ ॥१५८॥

[मे] इहा घणा कालनउ मिथ्यात्ववासनउ जे निकृष्टभाव तीणइ गलिउ गरुउ विवेक एहवा अम्हे तेहाइ सुहणान्माहि परम सुख मोक्षसुख किम समावीयइ? ॥ १५८ ॥

[सो] वली कवि कहइ छइ।

[जि०] वली काई मनोगत कहइ।

ज जीविअमित्त पि हु धरेमि नाम च सावयाण पि।
त पि पहु महाचुज्ज अइविसमे दूसमे काले ॥ १५९ ॥

[सो] ज दूसिइ अतिविषमि दुःखमाकालि वर्त्ततइ जीवितव्य 20 मात्रइ धरीइ अनइ श्रावकनु नामइ ज धरीइ तेहइ हे प्रभु! महा आश्चर्य। जेइ भणी ए काल अपार अनर्थसंकुल अतिधर्मरहित तेह भणी ॥ १५९ ॥

१ नि मे इह मिच्छवास' २ जि निकिट्ठ ३ जि मे सुमणे ४ गाढु
५ 'वास संस्कार ... म्हारउ एहवा' ए अे पाठ सो नी बीजी प्रतमाथी पडी गयो छे

साहम्मिआओ अहिओ बंधुसुआईसु जाण अणुराओ।
तेसिं न हु सम्मत्तं विन्नेयं समयनीईए ॥ १४७॥

[सो] साहम्मि० जेहनूइ साहम्मी पाहिं बांधव पुत्र कलत्र मित्रादिक स्वजन उपरि अनुराग घणउ अधिकउ हुइ। साहम्मी उपरि स्नेह थोडउ अनइ आपणा सगा कुटुंब ऊपरि घणउ स्नेह हुइ, मोह लाइ। **तेसिं०** सिद्धांतनी रीतिइ जोता निश्चयइं तेहनूइ सम्यक्त्व नथी इसिउ मानउ। जउ सम्यक्त्व दृढ हुइ तउ धर्मजन ऊपरि अनुराग गाढउ जोईइ। इह लोकना सगपण ऊपरि थोडउ जोईइ। इसिउ भाव ॥ १४७॥

० **[जि]** जेहा पुरुषहूइ साहम्मी पाहइ बंधु स्वजनादिक ऊपरि अधिकउ अनुराग स्नेह हुइ तेह पुरुषहूइ सम्यक्त्व नही। इसु सिद्धातनी नीतिइ **विन्नेय** जाणिवउ ॥ १४७॥

[मे] जेह जीवनइ साधर्मी पाहति बांधव पुत्र कलत्र मित्र ऊपरि अधिक अनुराग हुइ ते जीवनइ सिद्धाननी रीतिइ जोता सम्यक्त्व नथी। १५काइ ? जु सम्यक्त्व दृढ हुइ तउ साहम्मीनउ अनुराग गाढउ हुइ ॥१४७॥

[सो] शुद्ध सम्यक्त्वनउ धणी लोकाचारनउ धर्म काई न गणइ। ए वात कहइ छइ।

[जि] अथ मिथ्यात्वीनइ पक्षि हुउ जि मानइ तिहनूइं ओलभउ दिइ।

२०**जइ जाणसि जिणनाहो लोआयाराण विपक्खओ हूओ।**
ता तं तं मन्नंतो कह मन्नसि लोअआयारं ॥ १४८॥

१ जि मे सयाइसु २ मन्ने ३ सिद्धतनीइए ४ साहम्म ५ निश्चयनइं
६ जि मे लोआयाराण पक्खए ७ मे ता तव त ८ मे आयारे

[जि] हु तिम्हइ जे जीवितव्य मात्रई **धरेमि** धरउ, च वली एहि दिसनि दुस्सहायकि दुषमाकालि **सावयाण** पि श्रावकई नाम धरउ, हे प्रभो जिन ! **त पि तेहइ महाच्छुज्ज** महा आश्चर्य ॥ १५९ ॥

5 [मे] ईणइ कालि जे जीवितव्यमात्र धरउ अनइ हउ वली श्रावकनउ नाममात्रइ वन्उ, हे प्रभो ! हे स्वामी ! ते महाआश्चर्य जे अतिविषम दुखमाकालि ॥ १५९ ॥

[सो] वली गुरु प्रति कवि कहइ छइ ।

[जि] अथ तात्त्विकचिंता कहइ ।

10 **परिभाविऊण एय तह गुरु करिज्ज अम्ह सामित्त ।**
जह[1] सामग्गिसुजोगो[2] जह सुलह[3] होइ मणुअत्त[4] ॥१६०

[सो] **परिभाविऊण०** इसिउ विमासीनइ -सद्गुरु अम्हारउ स्वामीपणउ तिम अम्हारी सार करिजो, जिम आगलि अनं धर्मसामग्रीनु[5] रूडउ योग प्रामु अनइ जिम मनुष्यपणउ सुलभ थाइ

15 जेह भणी सिद्धातमाहे एह जि बोल गाढा दुर्लभ कहिया छइ—

चत्तारि परमगाणि दुल्लहाणि अ जतुणो ।
माणुसत्त सुई सद्धा सजमम्मि अ वीरिअ ॥
(उत्तराध्ययन, अध्ययन ३, गा १

तथा—

20 धन्नाण विहिजोगो विहिपक्खाराहगा सया धन्ना ।
विहिबहुमाणी धन्ना विहिपक्खअदूसगा धन्ना ॥ १६० ॥

[जि] देव आगलि वीनती करी गुरु आगलि वीनती करइ हे गुरो ! इसु पूर्वोक्त गाथास्वरूप **परिभाविऊण** परिभावी विमासी नइ **तह** तिम **अम्ह सामित्त** अम्हारी धणीप **करिज्ज** करिजो

1 पहु 2 जि सुभाग मे सजोगे 3 जि सन्हं मे सद्दं 4 जि सम्मत्तं 5 धम्मसामग्री

जइ तिन पहुसामग्गि जैन सामग्री तेहनइ संयोगि हूतइ अम्हा रहइ सम्यक्त्व सुलभ हुइ ॥ १६० ॥

[मे] इसिउ निमासीइ हे सुगुरु ! अम्हारउ स्वामीपणउ तिम करउ, जिम स्वामीनी सामग्रीनइ जोगिइ अम्हारउ मनुष्यपणउ सफल सुलभ थाइ ॥ १६० ॥ ५

[जि] अथ श्रीनेमिचन्द्र भंडारी स्वनामाङ्कित गाथा कहइ ।

एयं भंडारिअनेमिचंदरइयाओ कइवि गाहाओ ।
विहिमग्गरया भव्वा पढंतु जाणंतु जंतु सिवं ॥ १६१ ॥

[सो] एय० इम इसी रहिइ[1] नेमिचन्द्र भंडारी-रची कीधी ए केतलीइ १६० गाथा जे भव्य जीव स्वग विधिमार्गनइ विषइ तत्पर १० छइ ते[2] ए पढउ । पणतु अर्थ जाणउ । सम्यग् आराधीनइ मोक्षपदि जाउ । अनन्त सुख रहउ ॥ १६१ ॥

[जि०] एव इणि प्रकारि भाण्डागारिक श्रीनेमिचन्द्रइ रचित कीधी केतलीएक गाथा विधिमार्गरत भव्य जीव पढउ । तेह गाथानउ अर्थ जाणउ । किम शिव मोक्षि निरुपद्रवि स्थानकि जन्तु १५ जाउ । भणहार जाणहार पुरुषइ महापुण्यप्राप्ति हुइ ॥ १६१ ॥

[मे] इसी परिइ भंडारी श्रीनेमिचन्द्रिइ केतलीएक गाथा रची । अनइ जे विधिमार्गि सरी विधि तेहनइ विषइ रत जे भव्य जीव छइ ते ए पढउ । एहनउ अर्थ जाणउ । अनइ आराधतां भणतां जाणतां शिवपद पामउ । अनंत सुख रहउ ॥ १६१ ॥ २०

[सो] इति[4] षष्टिशतकबालावबोध . समाप्तो विरचित श्रीसोमसुन्दरसूरिपादैः सर्वजनोपकाराय ।

---

१ नि मे कहवि २ रहणइं ३ ते ' नथी ४ सो नी बीजी प्रतमां मात्र आटली ज पुष्पिका छे—" इति षष्टिशतकबालावबोध समाप्ता ॥ छ ॥ श्री ॥ ग्रंथाग्र १०९६ श्लोका ॥ श्री ॥ था ॥ छ ॥ '

क्ष्माऽम्बरशून्यरुइन्दुविहृपमिते १५०१ संवत्सरे श्रीतपा
गच्छे श्रीगुरुसोमसुन्दरवरैराचार्यवर्यैरियम् ।
बालावबोधविहिता हिताय कृतिना सम्यक्तवबीजे सुधा
वृष्टि षष्टिशतानुयप्रकरणव्याख्या चिरं नन्दतु ॥
५ ए प्रशस्तिनउ श्लोक महात्माउ कीधउ । संवत्[१] १५१२ वर्षे ।
ग्रन्थाग्र ९०८ श्लोका ॥ उ ॥ मण्डपदुर्गे

[जि] इति श्रीषष्टिशतकप्रकरणबालावबोधवृत्ति ॥ छ ।
संवत १५०१ वष श्रावण वदि १० भौमदिने श्रीखरतरगच्छे
श्रीजिनराजसूरिपट्टे श्रीजिनवर्द्धनसूरिस्तत्पट्टे श्रीजिनचन्द्र
१०सूरिपट्टे भव्याम्भोनदिवामणिना सविग्नचूडामणिना वाचाच्छार्थ (?)
दानचिन्तामणिना सुविहितगुरुचक्रवर्तिना महापरोपकारिणा श्रीजिन
सागरसूरिणा बालानामवबोधाय श्रीनेमिचन्द्रभाण्डागारिककृत
षष्टिशतकप्रकरणस्य स्वल्पा बालाल्पा वृत्तिः कृता । सा
श्रीसघेन वाच्यमाना चिरं नन्द्यात् ॥ छ ॥ शुभं भवतु ॥ कल्याणमस्तु
१५लिपित ॥ छ ॥ श्री ॥ श्री ॥ छ ॥

[मे.] इति श्रीनेमिचन्द्रभंडारीविरचितषष्टिशतक
विवरण । इतिरियं श्रीवृद्धखरतरगच्छीय वाचकेन श्रीमे
सुन्दरेण ॥ छ ॥

शास्त्रं बालावबोधाख्यममरम भसूरिभिः ।
२० लिखितं निजपुण्याय शोध्यमाहात्म्यहेतवे ॥
यदत्र विहितं कर्त्रा स्वबुद्धयार्थनिरूपणम् ।
प्रायः प्राकृतबाहुल्यात्त दोषोऽस्माकमत्र च ॥
शुभं भूयात् श्रीसंघस्य ॥ उ ॥द०॥ ग्रन्थसंख्या श्लोकशत ६०० ॥ ॥
छ ॥ श्रीजन

शब्दकोश

शब्दना अर्थ इत्यादिनी पछी नोंधेला अंको अनुक्रमे पृष्ठ अने पंक्ति सूचवे छे उदाहरण तरीके, अणळहळतउ शब्द पछी २ १७ ए प्रमाणे अंकनिर्देश छे अर्थात् ए शब्द पृ २ उपर १७मी पंक्तिमां छे १५३ ३ १३ ए प्रकारे एक करतां वधु अंकनो निर्देश होय त्यां पहेलो अंक पृष्ठनो अने बीजा बधा अंक पंक्तिओना समजवाना छे एक ज पृष्ठ उपर कोई शब्द एक करतां वधु वार प्रयोजायानो निर्देश ए रीते करेलो छे

संक्षेपसूचि नीचे मुजब छे —

अ	अव्यय
अनु.	अनुग
अप	अपभ्रंश
ए, व	एकवचन
अं वि	अंगविभक्ति
का	काठियावाडी (बोली)
कृ	कृदन्त
क्रि वि	क्रियाविशेषण
ग्रा गुज	ग्राम्य गुजराती
च	चतुर्थी विभक्ति
जू गुज	जूनी गुजराती
तृ	तृतीया विभक्ति
दे.	देश्य
द्वि	द्वितीया विभक्ति
न	नपुंसक लिंग
पा	पालि
पु	पुरुष
पुं	पुंलिंग
पं	पंचमी विभक्ति
प्र	प्रथमा विभक्ति

परिशिष्ट १

नेमिचन्द्र भंडारी-विरचित

जिनवल्लभसूरि गुरुगुणवर्णन

पणमवि सामिय[1] वीर जिण,[2] गणहर गोयम सामि ।
सुधर्म[3] सामिअ न[4] लगि सगणि जुगप्रधान सिवगामि ॥ १ ॥
तित्थुधरणु[6] सु मुणिरयण, जुगप्रधान क्रमि पत्तु ।
जिणवल्लहसूरि जुगपवरो,[8] जसु निम्मलउ चरित्तु ॥ २ ॥
तसु सुहगुरु गुणकित्तणइ, सुरराउ वि असमत्थु[11] ।
तो भत्तिब्भर[12] तरलियउ[13] कह[14] हउ कहि[15] सकयत्थो[16] ॥ ३ ॥
कह भवसायर दुहपवर,[17] कह पत्तउ मणयत्तु ।
किह जिणवल्लहसूरि वयणु, जाणउ[18] समय पवित्तु[19] ॥ ४ ॥
कह सबोहि[20] मणु[21] उल्लसिउ,[22] कह सुद्धउ समत्तु[23] ।
जुगममला[24] नाएण मइ, पत्तउ जिणविह[25] तत्तु ॥ ५ ॥ 10
जिणवल्लभसूरि सुहगुरह,[26] बलि विनिसु[27] गुरराय[28] ।
जसु वयणेण[29] निजाणीयए,[30] दुट्ठइ कुमय[31] कसाय ॥ ६ ॥
मूढा मिल्हहु मूढ पहु, लग्गहु[32] सुद्धइ धम्मि ।
जो जिणवल्लहसूरि कहिउ,[33] गच्छउ[34] जिम सिवरमि[35] ॥ ७ ॥

---

१ सामि २ जिणु ३ सुधरम ४ तुल्नि ५ सरणु ६ तित्थु रणडु ७ रयणु ८ जुगपवर ९ सुहगुरु १० सुरराओ ११ असमत्थो १२ भत्तिभर १३ तरलिओ १४ कहिउ १५ कहिसु १६ हियत्थु १७ पवरु १८ जाणिउ १९ पवित्तओ २० सुबोह २१ मण २२ उल्लसिय २३ सामत्तु २४ समिला २५ विहि २६ गुरहे २७ किज्जउ २८ सुरगुरुराय २९ वयणे ३० निजाणियइ ३१ कुमय ३२ लग्गहु ३३ कहिओ ३४ गच्छहुं ३५ ^
२१

प्रा	प्राकृत
फा	फारसी
ब व	बहुवचन
भू कृ	भूत कृदंत
म	मराठी
मा	मारवाडी
व कृ	वर्तमान कृदंत
वि	विशेषण
ष	षष्ठी विभक्ति
स	सप्तमी विभक्ति
सर्व	सर्वनाम
स	संस्कृत
सं कृ	संबंधक कृदंत
स्त्री	स्त्री लिंग
हि	हिन्दी
हे कृ	हेत्वर्थ कृदन्त

अ निश्चयार्थ अव्यय ७-२ [स च > प्रा च > अप ज् गुज इ] जुओ आ शब्दकोशमां इ तथा ई केटलीक वार पादपूरक तरीके पण प्रयोजाय छे उदाहरण तरीके—'नयणम्मा चिंति बिंदु नीली अ टीग ■ करी ■ कस्तूरि आडुं पान सयोगसुं सूडी अ फोफलचूरि नैवेद्य आगलि नव करी पुत्री अ मागी ■ पाइ, अस्ला आयस मागि अ भया म छेकेसि माई' (श्रीरसिंहकृत 'उपाहरण,' पं २१ १४) कहिनी अ करी अ सजाई अ माइ अ धू सिणगारी (एज पं १७०) इत्यादि

अक्खइ 'कहे छे' वर्तमान त्रीजो पु ए व ४ ११ [सं आख्याति > प्रा अक्खइ]

अक्खरु 'अक्षर' द्वि ए व पुं ४ ११ [स अक्षर > प्रा अक्खर]

अचेरु 'अचरज' प्र ए व न १४२९ अंतरप अच्छेरा १४३१ [स आश्चर्य > प्रा अच्छेरय]

अजयणावंत 'जयणा विनाना' वि प्र ब व पुं ११-१२ जुओ जयणारहित

अथिर[1] माइ पिय बंधवइ,[2] अथीर[3] रिद्धि गिहवासु ।
जिणवल्लहसूरि पय नमउ,[4] तोडउ[5] भवदुह पासु ॥ ८ ॥

परमपणइ[6] न के वि गुरु निम्मल धम्मह हुंति ।
स[7]र ति सुगुरु[8] मन्नियहि,[9] जे जिणवयण मिलंति ॥ ९ ॥

'गुरु गुरु' गाइवि[10] रंजियहि,[11] मूढउ[12] होउ[13] अयाणु ।
न मुणइ ज जिण आण विणु, गुरु हुइ सत्तु समाणु ॥ १० ॥

जिम सरणाइय[14] माणुसह, को करइ सिरछेउ[15] ।
न मुणइ ज जिणभासियउ,[16] तिम कुगुरह सजोउ[17] ॥ ११ ॥

हुंत[18] विसप्पिणि[19] भमम गुहु,[20] दूसम कालु कलिट्ठु[21] ।
जिणवल्लहसूरि भउ नमहु, जिणिउ[22] सत्तु[23] निसिट्ठु[24] ॥ १२ ॥

जा[25] जहिं[26] कुलगुरु आवियउ,[27] ते तहि भक्ति[28] करत[29] ।
विरला जोइवि जिणवयण,[30] जहि[31] गुण तहि[32] रचंति[33] ॥ १३ ॥

हा हा दसम[34] कालनडु, सल्लवक्कचण जोइ ।
नामेणिइ[35] सुविहिय तणइ, मित्तु वि वयरीय[36] होइ ॥ १४ ॥

तहि[37] चेडाहिव[38] हउ नमउ,[39] सुमणिय[40] परमत्थाह[41] ।
हीयडइ[42] जिणवर[43] इक्कपर, अनु सुद्धउ गुरु[44] जाह[45] ॥ १५ ॥

---

१ अथीर २ बंधवह ३ अथिर ४ नमओ ५ तोडइ ६ परमप्पणय ७ स व ८ दसुगुर ९ मन्नियइ १० गाइवि ११ रंजियई १२ मूढा १३ होइ १४ सरणाईय १५ सिरछेओ १६ जिणभासियओ १७ सजोओ १८ हुंना १९ अवसप्पणि २० गहु २१ किलिट्ठु २२ जेणउ २३ सुत्तु २४ नसिट्ठउ २५ जो २६ जिह २७ आइयउ २८ भत्ति २९ करंति ३० जिणवयणु ३१ जहि ३२ तहि ३३ रच्यति ३४ दूसम ३५ नामेणइ ३६ वयरिओ ३७ तिहि ३८ चेडाहिवि ३९ नमओ ४० सुमुणिय ४१ परम त्थाह ४२ हियडइ ४३ नाहटाजीनी प्रतमां 'जिण विहिरड पर' एवो पाठ छे पण ए कडियानी मूल जा ग्गे छे ४४ गुण ४५ जाह.

अजाणिउ ज्ञान ' प्र व व न १५२ ७, १५३ २ १२ जुओ जाण

अनूआल् 'अनवाडुं' प्र ए व न १०४ २१ [स उज्ज्वालयितम् > प्रा उज्जालाइअं > अप उज्जआइउ > *उज्जुआइउ > जू गुज उजुयालुं, अनुयालु, हाल गुज 'ऊजळुं']

अणन्दहतउ नहि मेळवतो व कृ प्र ए व पुं २१७ अंगमण अणान्हता १४३४ [स आ + √लभ् > प्रा अणाल्ह]

अणलहियउ नहि मळवुं ते अप्राप्ति प्र ए व न १३१५ १४९

अणगाधड अणगाध्या ' ६५२ वि प्र ए व पु जुओ गाधड

अनइ उभयान्वयी १६ [स अन्यानि > प्रा अण्णाइ > जू गुज अनइ, अस्वरित प्रथमश्रुतिलोपथी नइ, अर्वाचीन गु अनेन]

अनीरा ११८, जुओ अनेरा

अनेथि बीजे अ ९२० [स अन्यत्र > प्रा अण्णत्थ]

अनेरउ बीजो ' वि प्र ए व पुं १४५, ४११६, ६०१३२०, ६९७ १०३११७१ १२१२ अनेरउ द्वि ए व न ४८१४ ५ २ वळी जुओ अनेरइ तृ ए व ६८ १ अनरइ स ए व ४३२२ ७५११ [स अन्यतर > प्रा अण्णअर] अनेरउनु उत्तरकालीन अनेरु रूप पण छे प्र ए व न ४८१३ अनेरे स ए व न ७८७ वळी जुओ अनेरा १६१०, २६६११ ४०३, ९७-१३ १०६११ १०७-४ ११८२३ १५०११ १५३७१, अनेरानइ '१२७-९ अनेराना ११०३ , अर्वाचीन गुजरातीमां अनेरो शब्दमां अनन्य, असाधारण' एवा अर्थ विकस्यो छे ए नोंधपात्र छे

अभव्य मोक्षनो अनधिकारी वि प्र ब व पुं ११ १७ आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे

अभावडि अभाव अणगमो द्वि ए व स्त्री १३२ १९ [स अभाव + अप स्वार्थिक प्रत्यय डि]

अमकइ अमुकमां वि स ए व न ९१११ [स अमुके अप अमुकम्]

अमुनिन अज्ञान भू कृ द्वि ब व पुं १०७४ [प्रा मुण जाणवुं]

जिणि[1] जिणवर[2] पहु हीलियइ, जणु रंजियइ सहासु[3] ।
सो वि सुगुरु पणमतयह,[4] फूटि न हिया[6] हयासु ॥ १६ ॥

मिरियभवे जिउ वीर जिण इक[10] उसत्त[11] लवेण ।
कोडाकोडि सागर भमिउ,[12] कि न मणह[13] मोहेण ॥ १७ ॥

तव संजम सुत्तेण सहु,[14] सव्वु[15] वि सहलउ होइ । 5
सो वि उसुत्तलवेण सह,[16] भवदुह-लक्खइ[17] देइ ॥ १८ ॥

माया मोह चपए[18] जण, दुलहउ[19] जिणविह[20] धम्म[21] ।
जो जिणवल्लहसूरि-कहिउ,[22] सिव[23] देउ[24] सिवसमु ॥ १९ ॥

समउ[26] कोइ म करहु मणि, ससइ होइ[27] मिच्छत्तु ।
जिणवल्लहसूरि जुगपवर,[28] नमहु सु तिजग-पवितु[29] ॥ २० ॥ 10

जइ[30] जिणवल्लहसूरि गुरु, नह[31] दिट्ठउ[32] नयणेहिं ।
जुगपहाण[33] तउ जाणीयइ,[34] निच्छइ[35] गुण-चरिएहि ॥ २१ ॥

ते धन्ना सुकयत्थ नर,[36] ते संसारु[37] तरंति ।
जे जिणवल्लहसूरि तणीए,[38] आण[39] सिरेण[40] धरंति[41] ॥ २२ ॥

तह[42] न रोगु,[43] दोहग्गु नह,[44] तह मगल कल्लाण[45] । 15
जे जिणवल्लह गुरु[46] नमइ,[47] तिन्नि सया सुविहाण[48] ॥ २३ ॥

---

१ से २ जिणवरु ३ हयासु ४ पणमंतह ५ फुट्टि ६ हियइ ७ मरिय ८ जिओ ९ जिणु १० इक्कि ११ उसुत्तलवणु १२ भमिओ १३ मुणहु १४ सत्र १५ सव्व १६ सउ १७ लक्खइं १८ चपएउ १९ दुल्हउ २० जिणविहि २१ धम्मु २२ कहिओ २३ सिव २४ देइ २५ शिवसमु, २६ संसओ २७ हुइ २८ जुगपवरु २९ त्रिजग पवित्त ३० जइ ३१ नय, ३२ दिट्ठओ ३३ जुगपहाणउ ३४ विनाणियए ३५ निच्छइ ३६ नरा ३७ समार ३८ तणिय ३[९] आणा ४० सिरण ४१ धरंति ४२ तेहिं ४३ रोगो ४४ तहु ४५ कल्लाणु ४६ सूरि ४७ सुणेहि ४८ सुविहाणु

अयाणु 'अजाण' वि प्र ए व पुं १६२७ [सं अज्ञानिन् > प्रा अजाणि, अआण]

अलगउ 'अग्ग, अळगो' वि प्र ए व पुं १४९ १३ [सं अग्रगक > प्रा अग्गगओ]

असमत्थु 'असमथ' वि प्र ए व पुं १६१ [सं असमर्थ > प्रा असमत्थ]

असमाधि 'अशान्ति अस्वस्थता' प्र ए व स्त्री ११४२०

अहिनाण 'एंधाण' द्वि ए व न १३ २३ अहिनाणि तृ ए व न ११४ [सं अभिज्ञान > प्रा अहिण्णाण]

अंधण 'अंधारो' द्वि ए व न १०९ १९ अंधण'नु पाठान्तर 'अंधपणउं' मळे छे, एटले एना अर्थ विषे सन्देह रहतो नथी

आगि 'आग' प्र ए व पु ६ १२ [सं अग्नि > प्रा अग्गि > जू गुज आगि एनुं रूपु प्रयत्न य कारवानुं रूप 'आग्य' थया पछी अर्वाचीन गुजराती 'आग' थाय छे]

आयबिल 'व्रत विशेष, जेमां लूखुं सूकुं खावानुं होय छे गुज 'आंबेल' द्वि ए व न ८८ [प्रा आयबिल] आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे

आणिउ 'लावेलो, गुज 'आण्यो' भू कृ द्वि ए व पुं १३८ १४ [सं आनीत > प्रा आणिओ]

आधाकर्मी साधु माटे खास तैयार करेलुं भोजन जे जैन साधु माटे स्वीकारवुं निषिद्ध छे १३८ १९ वि प्र ए व पु [आ शब्दनुं प्राकृत रूप आहाकम्मिय ए जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे]

आनंद भगवान महावीरना दस सुप्रसिद्ध उपासक श्रावकोमांनो एक प्र ए व पुं १ १९२

आपण 'पोतानुं सर्व' द्वि ए व न ८१ ७ आपणई तृ ए व न ७७ ४ ७८ ८ वळी जुओ आपणउ ६९ ७, ११८ ३४ आपणउ ७ ३ ८९ १५ १०७ २१ ११७-१८ ११८ ८ आपणा ७० ३ ११३ ७ ११४ ३ ११८ १६ १९ १२२ १ १४५ १६ आपणा ११९ १२ आपणी १३५ १८, १३६ १ ११८ १६, आपहणी ७३ १३ १४, ७८ ६, आ देश्य शब्द साथे गुज

सुविहिय मुणिचूडारयण,[1] जिणवल्लह बहु राउ[3] ।
इष जीह किम संथुणउ,[4] भोलउ[5] भत्तिसहाउ[6] ॥ २४ ॥

संघउ ते मनावि[7] गुरु, उग्गइ उग्गइ सूरि[8] ।
जो जिणवल्लह पहु[9] कहइ,[10] गमइ उमग्गु[11] सुदूरि[12] ॥ २५ ॥

इकि[13] जिणवल्लह जाणीयइ, सव्वु[14] मुणियइ धम्मु[15] ।
अनु[16] सुहगुरु[17] सवि मनियइ,[18] तित्थु जि[20] धरहिं[21] सुहम्मु[22] ॥२६॥

इय जिणवल्लह गुरु भणिय, मुणियइ करइ कल्लाणु ।
देउ[23] बोहि चउवीस जिण, सामइ[24] सम्मनिहाणु[25] ॥ २७ ॥

जिणवल्लह[25-अ] कमि जाणियउ,[26] हिव मइ तासु[27] सुसीसु[28] ।
जिणदत्तसूरि जुगपवरो, उद्धरियउ गुरुकमो ॥ २८ ॥

तिणि निय पइ पुण ठावियउ,[29] बालउ[30] सीहकिसोरु[31] ।
परमइ[32] मइगल[33]-चलदलणु, जिणचन्दसूरि मुणि सारु[34] ॥ २९ ॥

तसु[35] सुपट्टि हिव गुरु जयउ,[36] जिणपत्तिसूरि[37] मुणिराउ[38] ।
जिणमय जिहि उज्जोयकरु, दिणयर जिम विक्खाउ[39] ॥ ३० ॥

पारतंतु जिहि विमयसुहु, वीरजिणेसर वयणु ।
जिणवइसूरि गुरु हिव कहइ,[40] निच्छइ[41] अनु[42] न कयणु ॥ ३१ ॥

---

१ चूडारयणु २ गुरु ३ गुणराओ ४ संथुणेओ ५ भोलओ ६ भत्तिसुहाओ ७ मनावि ८ सूर ९ पउ १० कहहि ११ अमग्गउ १२ दूरि १३ इक्क १४ सव्वु वि १५ धम्मुं १६ अन १७ सुहगुर १८ मनियइ १९ तित्थ २० जिम २१ धरइ २२ सुहंमु २३ देओ २४ सासय २५ सोक्खु २५-अ नाहटाजीनी वाचनामां 'जिणवल्लह' पछी 'गुरु' शब्द वधारानो छे २६ जाणियइ २७ तसु २८ सुशीसु २९ ठावियओ ३० बालओ ३१ सीह-किसोर ३२ पर ३३ मयगल ३४ मुणीसरु ३५ तस ३६ जयओ ३७ जिणपतिसूरि ३८ मुणिराओ ३९ विक्खाओ ४० कहओ ४१ निच्छइ ४२ अनुम

आपणी,' 'आपणीय' ('पोते) शब्द सरखावो [सं आत्मन् > प्रा अप्पणो अर्वाचीन गुजरातीमां थयेल आ शब्दनो अर्थविस्तार नोंधपात्र छे क्रम के आपणु एटले 'पोतानु' तेम ज बधा समेत बीजा अनेकनु]

आपणपउ पोतानो ' सत्र द्वि ए व पुं ११८ ११ आपणपउ 'पोतानी जात द्वि ए व न ५१ १५, ६० १६ ७६-९ ११, १०६ १०, १११ २ ५, ११२ ६ १२६ १७ १४६ १९, १४७-२ १ ४ आपणपई तृ ए व न ६१ १७ ७३ १७, ७८ १ २ वळी जुओ आपणपा ९७-१३, ९९ १२, आपणपानइ १४ ११ आपणपामाहि १४५ ८ ६ १३ आपणपु १४६ १३ आपणपू ७३ ७ [सं आत्मन् + आत्मन् > प्रा अप्पण + अप्प अथवा सं आत्मत्व > प्रा अप्पण]

आराधण्हार 'आराधना करनार ' द्वि ए व पुं ५७-१९ [सं आराधन + कार > प्रा आराधण + आर > 'ह' ना प्रक्षेपथी आराधणहार सर० सरजनहार, खेवनहार तारणहार, इत्यादि 'ह'नो लोप थतां आराधनार ' इत्यादि आ ग्रन्थमां मूळ पाठमां जुओ करणहार ६ १०, ९ १४, ६१ ८, ८२ १६, ९३ १६ ११३ ९ १३ २३ इत्यादि वळी कराहार एवुं एमांथी व्युत्पन्न थयेलु रूप पण छे (८७ १०) जेमांथी अर्वाचीन गुजराती 'करनार' आवे. वळी जुओ 'कहणहार (=कहेनार) ४ ८, २९ ४, ८४ ९ कहिणहार ३७-१२, २२ १२ खाणहार (=खानार < प्रा खाअणआर < सं खादनकार) १८ ७, एमांथी ज व्युत्पन्न थयेल खाण्हार १७-१७ चाखणहार (=चाखनार) ० १५ जाणणहार (=जाणनार) ९३ १० जाणहार (=जानार) ४७-२० १५९ १६ दिण्हार (=देनार) १ ३ १७ दणहार ३७-६, ८४ ९ १०३ ९ देनहार ५७-१३ देहार २४ ४ नासणहार (=नासनार) ४१ १७ प्रकासण्हार (=प्रकाशनार) १ ५ २० पाळण्हार (=पाळनार) ११५ ६ पूरण्हार (=पूरनार) १०१ १३ प्रेरण्हार (=प्रेरणा करनार) १ ३ १८ बोलण्हार (=बोलनार) २४ ११, ६१ ८ भणहार (=भणनार) १५९ १६ लेणहार (=लेनार) ३७-५ सांभलणहार (=सांभळनार) ७७-११ २९-१६ सेवणहार (=सेवनार) ८६ १९ हउणहार (=होनार थनार) ६० १९

आलोइ 'आलोचना करे छे ' वर्तमान त्रीजो पु ए व ६९ ४ [सं आलोच् > प्रा आलोअ प्रायश्चित्त करवा माटे पोताना अपराध गुरुने कहेवा ते, आलोचना] आ जैन पारिभाषिक शब्द छे

धन ति[1] पुरवरपट्टणइ, धन ति देस[2] विचित्त ।
जिहि[3] विहरइ जिणवइ सुगुरु, देसण करइ पवित्त ॥ ३२ ॥

कवणु[4] सु होसइ दिवसडउ,[5] कवणु[6] सु तिहि सुमुहुत्तु[7] ।
जिहि[8] वंदिसु जिणवइ सुगुरु, निसुणिसु[9] धम्मह तत्तु[10] ॥ ३३ ॥

सदुद्धारु[11] करेसु हउ, पालिसु[12] दिढु संमत्तु[13] । 5
नेमिचंदु[14] इम वीनवइ,[15] सुहगुरु-गुणगण-रत्तु[16] ॥ ३४ ॥

नंदउ विहि जिणमंदिरइ,[17] नंदउ विहिसमुदाउ[18] ।
नंदउ जिणपत्तिसूरि गुरु, विहि जिणधम्म-पसाउ[19] ॥ ३५ ॥

जिनेश्वरसूरि, जिनप्रबोधसूरि, जिनचन्द्रसूरि, जिनकुशलसूरि, जिनपद्मसूरि, जिनलब्धिसूरि, जिनचन्द्रसूरि, जिनोदयसूरि, जिनराजसूरि, 10 जिनवर्द्धनसूरि, श्रीसागरचन्द्रसूरि । शुभमस्तु ॥ छ ॥

---

१ तई २ देश ३ जहिं ४ कवण ५ देसडओ ६ कवण ७ सुमुहुत्त ८ जहीं ९ निसुणि १० तत्त ११ सद्धार १२ सुदृढ १३ सम्मत्तो १४ नेमिचंद १५ विनवइए १६ रत्त (रता) १७ मंदिरहिं १८ समुदाओ १९ पसाओ

आसोजी 'आसो मासनी' व ए व स्त्री ७९ ४ [स अश्वयुज् > प्रा अस्सोअ > गुज आसो] 'नी' अहीं कच्छी अने सिंधीनी जेम षष्ठीना प्रत्यय तरीके छे ए नोंधपात्र छ

आस्ता 'आस्था श्रद्धा प्र ए व स्त्री १८० ७ ३८८ द्वि ए व स्त्री ३८८ [स आस्था]

आहणतउ 'घा करतो व कृ प्र ए व पु १००१ [स आहन् > प्रा आहण]

आहणिउ घा करवामां आवेला भू कृ प्र ए व पुं ११२४ [स आहन् > प्रा आहण]

आग 'अंग, जैन आगमसाहित्यना एक विभाग द्वि ए व न ५ ९ ११ [स अङ्ग > (अनुनासिक कोमल थवाथी) आग] आगमसाहित्यमा अग' तरीके ओळखाता बार ग्रन्थो हता पण एमांनुं बारमुं अग 'दृष्टिवाद' लुप्त थयुं छे अगियार अंगो विद्यमान छे

आगमइ स्वीकारे छे, भोगवे छ' वर्तमान त्रीजो पु ए व ८९ ४ आगमी स कृ १७४ १ आंगमीनइ सं कृ १२३ ७-८ [स अङ्ग + √ गम् उपरथी जुओ आंगीगमइ]

आगीगमइ स्वीकारे छे भोगवे छे' वर्तमान त्रीजो पु ए व ८९ १६ आ रूप आगी' (अगमां) अने गमइ' (जाय छे) एवा बे शब्दोनु बनुं छे, अने ते उपर सूचवेली व्युत्पत्तिनुं समर्थन करे छे जुओ आंगमइ

आगे अंगो वडे' तृ ब व न ११६ ६ [स अङ्ग > प्रा आंग]

इ निश्चयार्थ अव्यय केटलीक वार पादपूरक तरीके पण प्रयोजाय छे ६ ७ ७-९ ६ ८ १२ १३ १५ ९ ११ १७ १ ९ १५ १८ १९ २१ १०९, १६ ५, १७-२ १८ १ २२, १९ १५ १७-१८ २० १, २१ १५ १९ २२ ३ १ १ १३ २०, ३३ २ १८, ४ १ ७-१२, २६ १२, २७ १ ४ ९ १८ ३८ ६, ३९ ३ ३१ ३ ३९ १ ४३ १०, ४६ १८, ४९ १९ २१ ५७ ७-२० ५९ ८ ६४ १२, ६५ ३ १२ १९ ६७-८, ६८ ८, ७१ ८ १० ७४ ९ २०, ७७ १२ ८१ १ १३ ८० ८२ १६ ८४ ३ ७, ८५ ४ ८७-९ ८९ ११ ९० ६ ७८ ९५ २० ९११ १४ १३ १४, ९२ १, ९३ ९, ९५ १८ ९६ १८ २३, ९८ ३, १०२ ११ १०४ १७, १०७ ७, १०८ ७८, १०९ १६, १११ ५ ११२ १८, ११३ ७,

परिशिष्ट २

नेमिचन्द्र भडारी-विरचित

पार्श्वनाथ स्तोत्र

भवगयवरगणदहण दरिद्दरोगारिदुरियनिद्दलण ।
सिद्धिपुरवयनिवास सया वि सुमरामि जिणपासं ॥ १ ॥
इह संसारअरन्ने मीमे पडियाण गुद्धजतूण ।
तुज्झ विणा जयनधर सरण न हु को वि दुहियाण ॥ २ ॥
5 त माया त च पिया त सामी बधवो गुरू देवो ।
त चिय परमनिहाण किं बहुणा मज्झ त इयो ॥ ३ ॥
न सरामि देवयाओ नो विज्जाओ न मतमूलीओ ।
ज सामिय त पत्तो जउ गनिप्फुरियमाहप्पो ॥ ४ ॥
तुह आणाभगाओ दुहाइ बहुयाई जाइ जायाइ ।
10 ताइ तुम चिय निहणसु अन्नो कइया वि न समत्थो ॥ ५ ॥
जइ वि परामवठाण जइ दीणो दुक्खिओ अह देव ।
तह वि तुह पय सरतो मन्नामि न को वि अन्न समो ॥ ६ ॥
उल्लसियाइ सुहाइ दुहाइ खीणाइ ताण निब्भत ।
जाण मणम्मि निवसिओ विहिणा त पासजिणनाह ॥ ७ ॥
15 ता हरसु मज्झ चिंता सताव माणसम्मि सकत ।
विहिजिणसुहगुरुजोग सिवसुक्ख देहि अणवरय ॥ ८ ॥
इय पासनाहदेव सरिय सज्जणसुपण अप्पहिय ।
जो त सरइ तिसझ सो पावइ वछियसुहाइ ॥ ९ ॥

भा० नेमिचन्द्रसुश्रावककृत श्रीपार्श्वनाथस्तोत्र ॥

११८ ३ ११५ ° ११७ ६ १२ १ ६ १० १४२ ४ १४३ १२ १४, १४४ ३ १८ ११ १४७-१२ १४९ १४ १ ५ २१ १५७ २१ इत्यादि जुओ म

इनि एक नि प्र ए व पुं १°४ [स एक]

इक 'एक' ना नृ प व पुं १६३ ३, १६४ २ [स एक]

इरयउ आ प्रकारनो वि प्र ए व पुं ७३ १० द्वि ए व १४ २२ वळी जुओ इसी २४° इसु ६७ ६, ६६ ३, १५७ १ [स ईदृशिक > पा इदिस > अ इ स > जू गुज एविड]

इ नि श्चयार्थ अव्यय केटलीक वार पादपूरक तरीके पण प्रयोजाय छे ८ १२ १८ १४ ११ ७६ ४ ८१ २२ ८४ ४ ८६ १२ ८७-६ जुओ म

इ निश्चयार्थ अव्यय केटलीक वार पादपूरक तरीके पण प्रयोजाय छे ८ २ २० १५ ८ ९ ११ २३ ७ १६, २४ ८, २८ १८ ३४ २२ ५० ५, ६४ १७ १८ ६६ १३, ६७-१७, ६९ ७ ७४ ११, ७९ १३, ७६ ८ ११, ८७ १६ ८८ १६, ९० १५ १७-१९ ९७ ९ ९८ ३ १४, ९९-१९, १०१ १६, १०३ १, १०७ २ ४ १०८ २, ११५ १ ११७-१२, ११८ १८, १२१ १६ १८ २० १३३ ३ १३७ १५, १३९ ९, १४१ १० १४२ १८ २१ १४५ १९, १४७-१४ १५४ १ १५७ २१ १५८ १ २, इत्यादि जुओ म

इण 'एनाथी' सर्व तृ ए व न ९१ १४ ९९ १३, ११ १७ [स एतेन > प्रा एएण > जू इण वळी जू गुज मां 'इणइं' एवुं रूप पण मळे छे जेनो आ 'इण' संक्षेप छे अर्वाचीन गुज एणे लोकबोलीमां (खास करी उत्तर गुजरातमां) 'एण' आ छेल्ला शब्दना अंतिम 'ण'नो अकार प्लुत छे]

इछइ 'इच्छे छे' वर्तमान त्रीजो पु ए व ४ ११ [सं √ ईह्]

उषाणउ कहेवत द्वि ए व पुं १४६ १४ दीर्घ 'ऊ' वाळुं रूप ऊखाणउ पण मळे छे-प्र ए व १०३ १ [स उपाख्यान > प्रा उवक्खाण अर्वाचीन गुज 'उखाणुं' म 'उखाणा' सोळमा शतकमां थयेला गुजराती कवि मांडण पोताना प्रबोधबत्रीसी मां प्रथमांश बहुसंख्य कहेवताने 'उखाणा' कहे छे जेमके– उखाणा बहु आदर करी जोयो अर्थ विधि विस्तरी (प ६४१) घणी हाथप्रतमां ए काव्यनो मांडण-धाराना उखाणा 'तरीके निर्देश छे अर्वाचीन गुज मां 'उखाणुं'नो समस्या' एवो अर्थ वधारे प्रचलित छे]

'षष्टिशतक'नी प्राकृत गाथाओनी सूचि

[गाथाओना प्रतीको सामेनो अंक पृष्ठांक सूचवे छे]

उज्ज्योतकर 'प्रकाश करनार' वि प्र ए व पुं १६४ १४ [सं संद्योतकर]

उदायन 'तटस्थ' वि प्र ब व पुं १८१ २ [स उदासीन]

उपायना 'मानता, आखडी' प्र ब व न ६१७ [स उपायन]

उमग्ग 'आडो मार्ग' द्वि ए व पु १६८८ [स उन्मार्ग > प्रा उम्मग्ग]

उलपी 'ओळखीने' सं कृ १४३२ [स उपलक्षयति > प्रा उवलक्खइ उपरथी]

उलिइ 'पेलामां, का 'ओटयामां' सर्व स ए व १५०२० [अर्थ निश्चित थई शकी नथी] जुओ ओल्या

ऊकांटउ 'रोमांच' द्वि ए व पुं १८४-१८ [सं उत्कण्टक > प्रा उक्कंटउ]

ऊघेली 'उखेळीने' सं कृ १२५४ [प्रा उक्खाल < सं ...]

ऊतारणउ 'ऊतारणुं उतारीने फेंकी देवुं ते' द्वि ए व ... ऊतारणइ तृ ए व १०८२२ [स उत्तारणकम्]

ऊपहरउ 'भ्रमण,' गुज 'ऊकडे' अनुष ६१८ [... हरते? जो एम होय तो आ 'हरउ'ने चतुर्थी बने ... रूपान्तर गणवुं जोईए]

ऊभति 'सराव भात-विश्रामण' स ए व ... मक्ति > प्रा ऊभत्ति. सर० गुज 'भात्य,' 'भात']

ऊलखतउ 'ओळखतो' व कृ प्र ए व पुं ...

ओठम 'आलंबन' द्वि ए व न १३१२ [सं ... > प्रा अवठुंभ]

ओलभउ 'उपालंभ' गुज 'ओळंभो' द्वि ए व पुं ... १९ [स उपालम्भ > प्रा उवालंभ]

ओल्या 'पेला' अंगरूप १५०२१ ...

कड्जिनइ 'कोइकना अ' दव स ए व न ४१ निश्चयार्थ अव्यय
जि' अहीं कइ' सर्वनाम अने 'नइ' प्रत्ययनी वचमां आवेलो छे ए नोंधपात्र
छे. श्राम करी जूना गुजराती गद्यमां आ प्रकारना संख्याबंध प्रयोगो मळे छे

कउतिग 'आश्चर्य' प्र ए व न ८५ १४ [स कौतुक]

कडकडता शुद्ध निशाच' व कृ प्र ब व पुं १०९ १४ आ ज अर्थना
जुओ कडकडा १०९ १४

कन्हइ 'पासे,' गुण 'कने' सप्तमीनो अनुग २७-१५, २८ ११ ११
५२ २२ ७३ १ ८७ १८ कन्हइ २९ १५, ३० १२, १२२ ११ कन्हलि
१११ ७८ १४ १७ २९ ११ कन्हां १५६ १८ [सं *कर्णिस्मिन् > अप
कण्णहिं > कन्हइ क न्ह + ल (स्वार्थिक प्रत्यय) + इ = कन्हलि 'कन्हां'मां
सप्तमीना 'आं' प्रत्यय छे अर्वाचीन गुजराती 'कने' अथवा 'कण' = पासे
स कर्णे > प्रा कण्णे उपरथी छे]

कर्मइजिनइ 'कर्मने ज' द्वि ए व न ६५ १ कर्मइजिनउ 'कर्मनुं ज'
ष ए व न ११० १० 'कर्म नाम अने एना प्रत्ययनी वचमां 'इ' अने
जि' एवा बे अव्ययो आवे छे ए नोंधपात्र छे जुओ कइजिनइ

कलिहु 'क्लिष्ट हन्ता' नि प्र ए व पुं १६२ ९ [सं क्लिष्ट > प्रा
किलिट्ठ]

कहं 'हुं कहुं (छु)' वर्तमान पहेलो पु ए व १४६ ११

कादम 'कादव' स ए व पुं ८१ २ [स कर्दम > प्रा कद्दम
गुजरातीनी केटलीक बोलीओमां हजी 'कादम' बोलाय छे]

कुउण 'कोण' प्रा गुज कुण' सर्व प्र ए व पुं १५ ८ [स
पुन > प्रा कउण > अर्वाचीन गुज 'कोण'] 'कउण' एवुं ज गुज
व्यापक रीते प्रचलित रूप पण वारंवार मळे छे—४५ ७, ५६ ५ ९, ५७
६४ ७-२१ १५ १२ इत्यादि कुण पण छे—१०८ २, ११५ १४, १५०
इत्यादि.

कूतिरउ 'कूतरा' द्वि ए व पुं १८ ७ कूतिरानइ 'कूतरान (कुते
स ए व पुं १८ २ [सं कुक्कुर > प्रा *कुक्कुर जो के कुक्कुर शब्द ज आर्य
मूळनो होय ए समवे छे अहीं 'क'नु त'मां परिवर्तन थाय छे ए साथे सरख
'कुक्कु,' कुत्तु जेवा गुज शब्दो साहित्यिक प्राकृतमां पण 'कुत्त' शब्द छे

कुमति 'खराब मति-चिंतामण' द्वि ए व स्त्री ४ १८ [सं कुमति > प्रा कुमति] जुओ ऊमति

कूकर 'कूतरो' द्वि ए व पुं १७-१७ [स कुक्कुर] सोमसुन्दरसूरि आ शब्दनो 'भुंडउ' (भुंड) एवो अर्थ करे छे एटले ए अर्थ पण प्रचलित हशे एम गणवुं जोईए

केडाइतपणउ 'अनुयायीपणु' द्वि ए व न ७५-११ वळी जुओ केडिलु 'पाछळनो,' द्वि ए व पुं ७२ १२ [केड,' 'केडी' कडो' वगेरे शब्दोनी व्युत्पत्तिने सं कटि साथे संबंध हशे ?]

कोडि 'करोड' द्वि ए व स्त्री ९१ १० [सं कोटि > प्रा कोडि एमा 'र'नो प्रक्षेप थतां ज. गुज 'क्रोडि' अने अर्वाचीन गुज 'क्रोड' अने 'करोड'] वळी जुओ कोडाकोडि 'एक करोडने एक करोडे गुणवाथी थाय एटली संख्या' द्वि ए व स्त्री १२१ ११, १२२ ११ १६, १६३ ४

खप 'श्रम' द्वि ए व स्त्री १२६ २० खपइ 'खपावे छे, दूर करे छे' वर्तमान त्रीजो पु ए व १२७-१५ खपीनइ खपावीने' स कृ ८७-९ [स √क्षप् उपरथी] जुओ खप

खइर 'खेरनु झाड' प्र ए व पुं १०३ १५ [सं खदिर > प्रा खइर]

खप श्रम, प्रयत्न' द्वि. ए व स्त्री १२६ ८९, १३४ १८ 'खप'नो उपयोग, 'गरज' एवो तुम्भाए अर्वाचीन अर्थ आमाथी निष्पन्न थयेल छे जुओ खप

खरड तृ ए व पुं ५४ १४ [मात्र एक ज प्रयोग उपरथी आ शब्दनो स्पष्ट अर्थ समजातो नथी, पण सन्दर्भ जोतां 'खरड'मां निकृष्ट कोटिनी व्यक्तिनो भाव रहेल छे]

खाणहार 'खानार. प्र ए. व पुं १८ ७ [स खादन + कार > प्रा खाअणआर] आ प्रकारना अन्य प्रयोगो माटे जुओ आराधणहार शब्द नीचे.

खुट 'निरंकुश माणस' तृ ए व पुं ५४ १३ ['सांढ ए अर्वाचीन अर्थ लक्षणाथी आव्यो जणाय छे]

खेपइ 'फेंके छे' वर्तमान त्रीजो पु ए व ४५ ९ [सं क्षप > खेप जूनी हाथप्रतोमां क्वचित् 'ष'नो उच्चार घणुं खरुं 'ख' करवानो होय छे]

શિલાલેખો પ્રાકૃતમાં અને ... વ્યક્તિવિશેષોના નામો પૂર્વ 'મહં' ... ચર્ચા ... હોય છે એને અર્થ 'મહંતક' ના સંક્ષેપ ગણવી જોઈએ]

માનઅ (તુ) માન છે વર્તમાન બીજો પુ એ વ ૧૪૯-૧ [મરુ૦ ઉત્તર ગુજરાતની અર્વાચીન બોલીમાં ... અનુસ્વાર સહિત માનૈ એવું ઉચ્ચારણ] જુઓ મક્કર્ડ

મુહિઆ 'વ્યર્થ, નિરર્થક' ૪ ૮ ૧૦ [સ મુધા > પ્રા મુહા ... પ્રાકૃતમાં મુધિકા ('વિના મૂલ્ય') શબ્દ છે, એમાંથી ... મુહિઆ દ્વારા આ વધારે સારી રીતે વ્યુત્પન્ન થઈ શકે]

મૂલ્ગા 'મૂલ્ય' પ્ર વ વ પુ ૮૧૧ ... [સ મૂલ્યક > પ્રા મૂલ્ગઓ મરુ૦ 'મૂલગો' શબ્દના અર્વાચીન અર્થાન્તર]

°**રહ** દ્વિતીયા ચતુર્થી અને ષષ્ઠીના અનુગ જે સમાસને પ્રત્યયનું રૂપ પામે છે ૬૨ ૭૧ ૮૦ ૧૧ જુઓ રહઇ અને રઇ

રહઇ દ્વિતીયા ચતુર્થી અને ષષ્ઠીનો અનુગ જે સમાસને પ્રત્યયનું રૂપ પામે છે ૪૨ ૧૦ ૪૪ ૨૧ ૬૩ ૮ ૬ ... ૬૬ ૬ ૮૩ ૧૮, ૧૩૩ ૧૫ ૧૩૬ ૮ રહઇ એનું અનુસ્વાર સહિત રૂપ પણ મળે છે ૧૬ ૮ ૧૫ ૧૦ ૨૬ ૬ ૩૮ ૬ ૩૩ ૧ ૩૩ ૧૩, ૪૧ ૧૭ ૪૫ ૧૮, ૪૭-૧૪ ૪૬ ૫ ૧૯ ૫૧ ૧૭ ૫૧ ૧ ૧૮ ૬૩ ૭ ૬૪ ૮ ૬૫ ૧ ૧૫ ૬૬ ૦ ૭૬ ૧ ૮૩ ૧૯ ૮૪ ૪ ૮૬ ૮૫ ૧૬ ૧૩૩ ૨૦, ૧૩૫ ૧૬ ૧૩૬ ૩ ૧૪૨ ૧૧ ૧૫૬ ૨૩ ૧૫૭-૬, ૧૫૯ ૨, ઇત્યાદિ [સ અરાત્મિન્ > અપ અવરહિં શ્રી ટી એન દવે એની વ્યુત્પત્તિ સ ... > પ્રા ... > અપ ... રહિં ... પ્રમાણે આપે છે જૂની ગુજરાતીમાં ... અનુગ આ રહઇ રહઇં ના સંક્ષેપ છે સત્તરમા સૈકાથી આ તરફના જૂના ગુજરાતી સાહિત્યમાં આ અનુગનો પ્રયોગ ભાગ્યે જ નજરે પડશે અર્વાચીન ગુજરાતીમાં 'અમારે તમારે' જેવાં સર્વનામિક રૂપોના અપવાદ સિવાય ... આ અનુગના અવશેષ રહ્યા નથી જ્યારે અર્વાચીન મારવાડીમાં ષષ્ઠીના 'રા' પ્રત્યય રૂપે એ ચાલુ છે આ પ્રથમાં ... સોમસુંદરસૂરિકૃત બાલાવબોધમાં, પદ્યમાં ... જૂની ... 'લોકરા' (=લોકના) રૂપ મળે છે એ નોંધપાત્ર છે] જુઓ રહ અને રઇ

રામતિ 'રમત' પ્ર એ વ સ્ત્રી ૬૩ ૧૬ [સ *રમ્યતિ > પ્રા રમ્મતિ]

રલ્હઇ 'રખડે' વર્તમાન ત્રીજો પુ એ વ ૧૧૮ ૧૩૩ ૧ રલ્હઇ વર્તમાન ત્રીજો પુ બ વ ૧૮ ૧૮ ૩૦ ૭૧ બ વ ૩૭-૨ ૮૭-૧૪ વધી જુઓ

गणहर 'गणधर, महावीरना पट्टशिष्य' द्वि ए व पु १६११ [सं गणधर]

गरुउ 'भारे' गुज 'गरवो' वि प्र ए व पु ११७-१४ गुरुउ प्र ए व पु १५५ १२ गुरुया ८ ब व पु ७१ १२ गरुयाइना 'मोगमोना पण' ष ब व पुं ७२ ६ [सं गुरुक > प्रा गुरुओ, गरुओ]

गरुयडि 'मोटाई' द्वि ए व स्त्री ५६-१२ [सं गुरुक > प्रा गरुअ + (डाप स्वार्थिक प्रत्यय) डि]

गाह गाथा द्वि ब व स्त्री ६० ३ ४ गाहइ 'गाथामां' स ए व स्त्री ११० गाहे 'गाथाओ वडे' तृ ब व स्त्री ५२ १३ १६, १५५ १४ गाहा गाथाओ' स ए व स्त्री ११० १७ [सं गाथा > प्रा गाहा]

गुणता 'पुनरावृत्ति करता, भणता' अर्वाचीन गुज 'गणता' व कृ प्र ब व पुं ५ १२ गुणतो व कृ प्र ए व पु ३ ६ गुणिवउ 'गणवुं भणवुं' द्वि ए व न ५ २०

गुरे 'गुरुआने' द्वि ब व पुं १४५ ८ २०

गयउ 'गयेलो' भू कृ प्र ए व पुं ६० ११ [सं गत > प्रा गओ > अप गिउ का गियो' अर्वाचीन गुज ग्यो'] वळी जुओ गओ 'गयो' भू कृ प्र ए व पुं ८३ १६ गिउ गयो' प्र ए व पुं ८३ १३ द्वि ए व पु ८ १५

ग्रहणा 'घराणुं अडाणुं' वि ए व न १६ १२ [सं ग्रहणकम्]

घालइ 'नाखे छे' गुज 'घाले छे' वर्तमान त्रीजो पु ब व १७-१८, १८ ८, २५ ७-८, ४७ ५ ११ १२० घातिउ 'नाख्यो घाल्यो' भू कृ प्र ए व पुं ७६ १३ १६ [प्रा घत्त 'फेंकवु']

चउग्गइ 'देव मानव नारक अने तिर्यंच ए प्रमाणे चार प्रकारनी गति' द्वि ए व स्त्री ४ ११ [सं चतुर्गति > प्रा चउग्गइ]

चडवांइजिनी चडवानी' ष ए व स्त्री १४३ १३ 'इ' अने 'जि' ए बे अव्ययो नाम अने प्रत्ययनी वच्चमां आवी गया छे ए नोंधपात्र छे [प्रा √ चड संस्कृतमां एक चट् क्रियापदनो प्रयोग छे खरो पण ए प्राकृत उपरथी लेवायुं होवानो संभव वधारे छे]

हरिसिद्द १८१ ३ गरिम्याइ १२ १४ हलिसयई ९१ ७ हलिस्तु ९९ १४ हडीम्यन् १०० ९ हन्तु ६३ ९ [स *उम्ति > प्रा हलइ]

कुनकई कुरुना पण कि ए व पुं ४४ ९ [सं कूनक > प्रा फुटक] पटकउ पण छे ४४ ९

हइ द्वितीया चतुर्थी अने षष्ठीनो अनुग ज पाछळथी घसाईने प्रत्ययनुं रूप पामे छे ५ १ ३० १०, ३४ ० ३५ १२ ४४ ८१ १ ६ ८ हइ ४ १६, ५ ३, ६ १० १७ ८ १ , ९ १ १० १० ११ १३ १५ १६ १८ १७ ५-११, १, १ १४ १४ १, १० १ १५-३ ८ १५ १५-७१, १८ ३ ४ १९ ८ १ ७ ८९ ७ १७ १५-१८ ८६ ६ ७ ७७ १० १७ १३ ३८ ६ १८, ३९ १६, ३० १७, ३ ३३ ९ १ , ३९ १९, ४१ १८ ४ ८ ११, ४६ ७ ७, ४५-३ १५ ४८ १ ३ ५० १३ ५३ ८, ५ ६ ५६ ३ ६ १२, ५७ १२, ५८ ३ ६ ५९ १५ ३१ ६० ३० ३१ ३ ६१ १७ ६४ १८, ६५ १६, ६६ ११ १९ १३ ६ ७ ९ १७ १८ ६८ ९ १०, ७१ ४, ७७ १९, ७३ ६, ७८ १६ ८० ६ ८१ ७२ ८, १७ ८ ७ ८६ ७ ३ १४, ८७ ७ १५ १९, ८८ ९-१३ १ १६ ८९ ३ ९१-१२ ९७ १, १५ ९५ १६, ९७ १२ १३, ९८ ३ ८ १७, ९९ १७ १०१ ९ ११ १७ १५ २० १०२ १, १८ १५, १०४ ९ १३ १३ १७ १ १६ ८ १ ६ १७ १००-७ १०८ १ २ १३ १ ९ १०-११ ११० ५ १९ १११ ३ ८ ११२ ७ ११३ ५-७०, ११४ १ ३ ६ ११५ ४ ११ ११८ ५ ५-११ १२ १७ १२१ १ ५-१४ १५ १२१ १५ १२४ ३ ९ १५, १२५ ८ १८, १२५-१ १२८ ९ १२ १३० १८ २१, १३१ ३ १५ १३२ १ ४-११ १३५ १९ २ १३६ १५ १३८ २०, १३९ १ ३ ८ ९ १० १३, १४२ ११ १४५ ८ १३ १८ २ १४६ ७ १८ १४८ ३ ६ १ ११ १८ १५० ३ १५३ १ १५६ १९ १ ७-९ १५९ १६, इत्यादि हिइ १२४ १२ जुओ ˚हइ अने हइ

लउडइ लाकडी वडे ’ तृ ए व पुं १२१ २२ लउडानउ ‘ लाकडीनो ’ ष ए व पुं ११२ १ [स *लगुड > प्रा लउड]

लगइ ने कारणें त्याथी मांडीने पूर्वमर्यादासूचक अनुग ३६ १, ६ ८७ ६९ ३ १४ १, १४८ ६ सुधी एवो उत्तरमर्यादासूचक अर्थ पण एकाद वार आवे छे १४० ७ १५५ ८ आनुं ज रूपान्तर लगी आ ग्रंथमां वारंवार मळे छे पण एना बधा ज प्रयोगो पूर्वमर्यादासूचक छे ११ २१, १२ १३ ८, १५ ७१, २३ ८ ३३ १ ३४ ३ ७ ३५ २० ३९ २ , ५० १

घलड 'चांगळामी' [illegible] ए. च. म ८९६ [सं चुल्लुकेन > अप चुउअइ]

चाड 'दुर्जन, कपटी.' प्र ए व पुं ६७-१२ [दे चाड]

चाही 'जोईने' स कृ १२८ १४ [प्रा चाह 'इच्छवुं' जूनी गुजरातीमां 'चाह'नो प्रयोग 'जोवा ना अर्थमां छे— अम्ह आगी मदिरिमाहि चित्रसालि परि परिनि चाहि' (वीरसिंहकृत उषाहरण पंक्ति ११८) चतुरपणुं अति चाहवा नारि अपिहुं-चाह' (ए ज, पंक्ति ६००) सरखावो अर्वाचीन गुजराती 'चाहन' (सौ शुए लेम, छुगी रीने), चाहीने' (जाणी जोईने) इत्यादि. अलबत, 'चाहवुं'नो 'इच्छवुं' ए अर्थ पण जूनी गुजरातीमां छे (सम चतु सार्दे ए हाथ, धीइ म जा का दूजण थाय —वीरसिंहकृत 'उषाहरण,' पंक्ति १०५), अने अर्वाचीन गुजरातीमां तो ए अर्थ सामान्य छे]

चिणी 'चणेली (भींत) भू कृ प्र ए व सा १२५ १० [सं चिनोति > प्रा चिणइ उपरथी चिण > पण क्रियापद व्युत्पन्न थयेल छे.]

छउमत्थ अ-सर्वज्ञ प्र. ए. व पुं ६० २१ [सं छद्मस्थ. [illegible] न होय ते बधा छद्मस्थ कहेवाय आ जैन पारिभाषिक शब्द छे.]

छाला 'बकरा' प्रा वि व व पुं ५८ २०, ७१ ४ [दे. [illegible] > प्रा. छागल]

छेहडइ 'छेडे' स ए व पुं १४० १ [सं छेद > प्रा. छेह > अप. छेह स्वार्थिक प्रत्यय ड तथा सप्तमी प्रत्यय 'इ' [illegible] छेहडइ एवुं पाठांतर छिहडइ मळे छे ए नोंधपात्र छे]

छेहनउ 'नुकसाननुं' ष ए व न २४१८ [illegible] छेहडइ बन्ने शब्दोनी व्युत्पत्ति एक ज मूळमांथी [illegible] विकास ध्यान खेंचे छे]

छोह' मूर्छानो छो' स ए व स्त्री. १२५७ [illegible] १२४ ११, १२५ ११ आदि' [illegible] [दे छुहा > प्रा छोहा]

जमलउ 'साथे' अ ११४ [सं [illegible] > प्रा. जमल [illegible] गुजरातीमां अत्यारना लेखो सुधी '[illegible]' [illegible]

५१ ७, ६४ १८ ६६ १२, ८२ १ १३२ ९ १५४ १४ [स *लग्नसिन् > अप लग्गाइ भाषाना जूना थरमां आ अनुगना पूर्वमर्यादासूचक अर्थ व्यापक छे —व्युत्पत्ति पण ए ज अर्थ सूचवे छे—पण जम अर्वाचीन काळ तरफ आवीए तेम उत्तरमर्यादासूचक अर्थ वधारे प्रचलित थतो दखाय छे त एटले सुधी के अनेक सकाथी भाषामा 'लगी नो अर्थ सुधी एटलो ज समजाय छे]

लींब लींबु 'प्र ए व न १०४२१ [स निम्बु > प्रा लिंबु]

लोला 'समज विनाना अनाडी ' वि द्वि व व पुं ४५ १ ८ ६० ६, १०२ १८ [स लोल चपळ अस्थिर आ शब्दमां थयेल अर्थफेरने नोंधपात्र छे 'षष्ठिशतक'ना बालावबोधकारोए मुग्धजन नो अर्थ 'लोला लोक एवो आप्यो होइ ए विशे कशो संदेह रहतो नथी]

ल्हीवइ नाखे छे वतमान त्रीजो पु ए व १० १९, १२५५ ल्हीविइ 'नखाय ' कमणि वतमान त्रीजो पु ए व १२५ ४ [स निक्षिपति > प्रा निक्खिवइ > जू गुज नाखइ डॉ टनर एनी व्युत्पत्ति जुदी रीते आपे छे— *नक्षति > प्रा नक्खइ > जू गुज नाखइ न नो 'ल' थवाथी 'लाखवु ' न'नुं आ प्रकारे ल'मा परिवतन ए शब्दमा दक्षिण गुजरातनी बोलीनी लाक्षणिकता गणाय छे पण उपर निर्देशेला प्रयोगो बतावे छे के एक काळे उत्तर गुजरात तथा मारवाडनी बोलीमां पण ए प्रचलित हतो]

वक्कत्तण वक्रता, वाकापणुं ' द्वि ए व न १६२ १३ [स वक्रत्वन > प्रा वक्कत्तण आ साथे सर खावो अहेवातण, शूरातन, वीरातन (जू गुज) आदि शब्दोनो अंत्य प्रत्यय]

वणवो (हुं) वणुं वतमान पहेलो पु ए व ९८ १४

वीतरागइजिनु वीतरागनुं ज ' व ए व पुं १४७ ७ प्रत्यय अने नामनी वच्चे बे अव्ययो दाखल थई गया छे ए ध्यान खेंचे छे

विरउ हलको गुण करवा नि प्र ए व [] १५७ ११ विरइ हलकी 'प्र ए व स्त्री १८ ११ ९९ ३ १८ द्वि ए व स्त्री १८२२ वळी जुओ विरअइ १३३ १६ विरअउ ४२ २ ४ विरूआ १११ २ , ११३ ७ विरूआ ३२ २ विरूइ ८५ ३ विरूइ १२० २ विरूउ ४६ ७ ६५ १३ १०६ १८ विरूउ ४१ १३ १५ ८७ ३, १०५ १ ११७ ३ ११८ १७ १५३ १७ विरूउ ४ १ विरूया ७८ ४ [स विरूप > प्रा विरूअ > अप विरूउ]

~जमारउ 'जमारो' द्वि ए व पुं ७-१५ [स जम्म+कार > प्रा जम्मआर]

जयणारहित 'हिंसा टाळवाना प्रयत्नथी रहित' वि प्र ए व पुं १३१४ [से यतनारहित] जुओ अजयणावत.

जाउल° यम' प ए व पुं ८३१ स ए व पुं ८२१६ [सं यम > प्रा जअम > अप जाउ (प)+स्वार्थिक ल' जुओ पाल्हण कविकृत 'आबुरास' (स १२८९)ने अते—'राखइ जाउ ... आवइ लेइ राख, प्रसंति सूरिर] ज, गुज मां अ यत्र थाय छे तेम, अहीं पण 'य'नो उच्चार 'ज' करवानो छे

जाण ज्ञानी' प्र ए व पुं १३१० जाणनी प ए व पुं ८ १८ [स ज्ञमन् > प्रा जाणे सर० गुज 'अजाण']

जाण ('तुं) जाणे छे' वतमान बीजो पु ए व १४९१

जाणिवउ 'जाणवो विध्यर्थ कृ प्र ए व पु ६९६१५ जाणिवउ विध्यर्थ कृ प्र ए व न ८०६ ८६६ [सं जानाति > प्रा जाणेइ, जाणइ]

जान 'वाहन' द्वि ए व न ३७ [स यान सर० गुज (वरनी) 'जान' आ ग्रंथमां प्रयोजायेल जान' शब्दमां केवळ 'वाहन' ए अर्थ उपरात समारंभपूर्वक समूहमां जवाना अर्थ पण छे ए स्पष्ट जणाय छे]

जि निश्चयार्थ अव्यय अर्वाचीन गुज ज' ६ १४ ७-३ १६, ९२, १ ९ ३७ १८, १५९ १६१ १८ २७ १९ १५ २० ९, २१२ १९, २५ १७ २६९ २७२ ११ २८७ ११ १२ २९४ ३१ १ १२ २० ३४१ ११ १७ ४६ १८, ४९ १४ १७ १९ २० २१ ५० ८ ९ २१, ५३ १८ ५७ १२, ५९ ८, ६० १२ ६२ २१, ६३ १ ६५ १, ६७ ४, ७ ४७ १७ १९ ७३ ७, ७७ ४ ८१ १ ८३ १ ८४ ७ ८६ ११ ९१ १३ ९२ २४ ११, ९३ ९ ९४ १३ ९५ १८ १०१ ८ १ ४ १७ १००-७-९ १ ८ ८, १०९ १७, ११४ ३, ११५ ६, ११७-६ १२६ १, १३१ १६, १३६ ९, १३७-१७, १३९ ११, १४० ७ १४१ १०, १४७-११ १४९ १६, १५ १३, १५१ १, इत्यादि [स एव प्रा य्येव, जेव जे अप जि]

विससमि आउ्य द्वि ए व स्त्री १४४ ३

वेच॰ व्यय करे छे वतमान त्रीजो पु ए व १६ ११ १५० ११ वेच॰ १ ० २० १५११ [ग्रा वेच व्यय करवा ' ने नोमा धार्मिक परिभाषामां आ शब्द आज पण आ अथमा चालु छे]

सइ सो गुण सेस ' द्वि व व न ७ १५ सइग्र व व न ८५ ७१ स व व ३३ १९ [स शत > प्रा सय]

सक्क (तुं) शक वतमान बीजो पु ए व ७ १ १५ [सर उत्तर गुजरातनी बोलीमांनुं कोमल अनुस्वार सहितनुं ' सकँ एवु उच्चारण] जुओ मानअ

सकयत्थो कृतार्थ वि प्र ए पु १६१ ६ [स सकृतार्थ > प्रा सकयत्थ]

सणाजा स्नेहीओ प्र व व पु १०३ १३ [स स्निग्धक > प्रा सिणिज्जओ सर गुज सणेजो ']

सयर ' शरीर ' प्र ए व न ५८ १ सयरना शरीरना ' व व व न ५७ २० [सं शरीर > अ, गुज सइर असयुक्त र नो आ प्रकारे लोप गुज ना अन्यत्र पण थाय छे परिमठ > पीमठ सरिज्जल > सइजल > सेजळ, शरीर > सइर > सेर इत्यादि]

सछुद्दार (अवर्मरूपी) शल्य दूर करवु ते द्वि ए व पु १६५ ५ [स शल्योद्धार]

सञ सध्याए स ए व स्त्री १६३ १६ [स सध्या > प्रा सझा]

सथुणउ स्तुति करु ' वतमान पहेलो पु ए व १६४ २ [स सस्तुनोमि > प्रा सथुणइ]

सतानीइ वंशने ' तृ ए व पुं ९ २१ सतानीअइ तृ ए व पुं ९ २७ [स सतानिक > प्रा सताणिअ]

सासिउ एकसो साठ (गाथानाओ ग्रन्थ) द्वि ए व पु १ २, ३ १४ [स षष्टिशत > प्रा सट्ठिसअ]

सातिउ सनातुं भूत त्रीजो पु ए व ९३ २३ [स √सिच् उपरथी इयो ? मीनुं (सात्यु)-सप्युं ए अथमां ? जूना साहित्यमां अन्यत्र पण आ

झिलिउ 'जीत्यो' भू कृ तृ ए व पुं १६२ १० [सं. जि ‹ झिल्
जिन इर जिन (तीर्थंकर)]

झिमइ 'जमे' वर्तमान त्रीजो पु ए व १३८ १५ झिमण भोजन,
जमण' द्वि ए व न ८३ १७ झिमिवउ भोजन जमवुं' द्वि ए व न
४११ जीमवउं प्र ए व न ७४ १४ जीमिवा 'जमवा' हे कृ ७८ ११
[झिमइ, जेमइ म जेवर्णे कल्पक विद्वानो आ माटे *जमति एवुं संस्कृत
रूप कल्पे छे. पण एड आता काइ अजाण्या मूळनो आ शब्द 'भोजन करवा'ना
अर्थमां संस्कृत √भुज् ने स्थानभ्रष्ट करीने प्रचलित थयो एम मानवुं वधारे
योग्य छे]

झाइ 'ध्याय धरे' तृ ए व पुं १२७ २१ झाइ तृ ए व पुं ११०,
[सं ध्यायन]

टउडवा 'अपमान करवा माटे' हे कृ १०२ १४ [व्युत्पत्ति अनिश्चित]

टली 'टळको' द्वि ए व स्त्री १७४ २२ १२ ४ प्र ए व स्त्री
१२५ १ [दे] दयारामे आ ज अर्थमां आ शब्दनो प्रयोग कर्यो छे—'मन थयुं
मारीनी टली' (रसिकवल्लभ' पद ३, कडी ५)

डाहउ 'डाह्यो' वि प्र ए व पुं ४८ ८ ४९ ६ डाहपण 'डहापण'
प्र ए व न ४८ २० वळी जुओ डाहा ५१ १७, १११ २, १२१ १० १४२ २१
१४३ १ डाहाइतउ ५२ १० डाहाइमउ ५२ ६ डाहु ४८ १० [सं दक्ष >
प्रा दक्खा, दाखा *दाहो श्री नरसिंहराव दिवेटिया सं दक्षक > प्रा
दाहिणउ उपरथी ('ण नो लोप करीने) डाह्यो नी व्युत्पत्ति कल्पे छे
पण दक्ष सं दाध > प्रा दग्ग उपरथी सूचवे छे]

डाहीयार डाह्या' वि प्र ब व पुं ११०११ [सं
*दाहआर जुओ उपर डाहउ]

डीलि जात पडे गुज डिले' तृ ए व ८४ २ [ट
प्राकृतमां एनो प्रयोग एक प्रकारना जळजंतुना अर्थमां
शब्द 'जात-शरीर ना अर्थमां सुप्रचलित छे]

ढिग ढग ढगलो' द्वि ए व १ ३ १८

ढगला द्वि ब व पु १४० ५ [दे

दिगम्बरना आ न अथवा प्रयोग छे जेम क 'कृष्णकृत पांडवायन' (स १६७७)मां — 'उदय नाग्यो भीअर ढोगले दीधुं ताडुं' (प ४४८) साथना 'नाक्यो नालवी उछ गड डोलु ओटि' (प ४५४)]

साधम्मिय समान धमना अनुयायी वि द्वि ब व पु ४१२ साधर्म्मि व व प १४८ १३ जुओ साहम्मीनउ

साहम्मीनउ 'समान धमना अनुयायीना' त्रि ए ए व पु १४८ १ जुआ—साहम्मीमाहे ५३ ६ साहम्मी पाहइ १४८ १८ साहम्मी पाहि १४८ ३ इत्यादि [सं साधर्मिन् > प्रा साहम्मी सर अर्वाचीन गुज साम्मी (सामी) भाई,' साहमीवच्छल' (साधर्मिकवात्सल्य) आ जैन परिभाषाना शब्द छे]

सिग्घ 'जलदी' अ १६३ ८ [स शीघ्र > प्रा सिग्घ]

सिज्झाइ स्वाध्याय द्वि ए व न २२४ [स स्वाध्याय उपरथी प्रा स्वाध्याय > गुज सज्झाय शब्द आवेलो छे]

सुलभ 'सुलभ वि द्वि ए व न १९८ [स सुलभ]

सुहेलउ 'सहेलुं' वि द्वि ए व न ३१ ८ [स √शुभ् > प्रा सुह उपरथी ?]

सुहेलउ सहेलुं गुज सारुं (नाथुं थी उलटुं) वि द्वि ए व न [स √शुभ् > प्रा सुह उपरथी ?] जुओ सोहिलउ

सेवल शागरवना स ए व पु ८३ १६ सेवल्नी ष ए व पु ८३ ९ [सं शेव + ल जूनी गुजरातीमां 'व' नो ज्यारे घणीवार 'म' थाय छे ए ध्यानमां राखवा जेवु छे]

सोहिलउ 'सहेलो गुज सारो' वि प्र ए व पु १४५ २ द्वि ए व पु २०९ सोहिलउ प्र ए व न २११०१, २९९ [स शोभ् > प्रा सोह उपरथी ?] जुओ सुहेलउ

हलुअकर्मउ जेना अल्प कर्म अवशिष्ट रह्यां होय एवो शीघ्र मुक्तिगामी गुज हलुकर्मी वि प्र ए व पुं १२७ १५ [स लघु > प्रा लहु व्यत्ययथी हलु + कम्म आ पण जैन धार्मिक परिभाषाना शब्द छे]

हलुपण 'हळवापणु' द्वि ए व न ५४५ [स लघुत्वन > प्रा लहुत्तण-प्पण > हलुपण]

°तड पं ए व मा प्रत्यय ७-१३, ८४, १-१५ १६, २ १३, ३१ २१, ३८ ३ १८ १° ३६ ६ ७ ५६ ३ ६० २ २२ ८० ३६, ११० ३ ११६ २, ११२ १२, १२५ १७ १३२ ४ ६, १३४ ३, १३८ २१, १३६ २, १५४ ६, ११७-१२ इत्यादि [स त]

थडह थडा उपर, डुगरानो अग्रभाग उपर ' स ए व न २ १८ [प्रा थुड]

थाक्यउ 'थाकीनं' वि द्वि ए व पुं ६४ ७ थाकतउ 'थाकीनु' द्वि ए व न ९३ १४, ६४ ११, १०६ २ थाकता 'थाकीना ' द्वि ब व पुं १०६ ६, १०७-४ ८ [स *स्थकित > प्रा थक्कित, थाक्कित]

थाकी रही स्, कृ प्र ए व स्त्री १०५ [सं *स्थकिता > प्रा थक्किआ] जुओ थाकतउ

थिकु पंचमीनो अनुग, गुज 'थको' २७-१८ [सं *स्थकित > प्रा थक्किओ > अप थक्किउ] जुओ थाकतउ, थाकी

थुइ 'स्तुति ' प्र ए व स्त्री १६४ ७ [सं स्तुति]

दुकर 'दुष्कर ' द्वि प्र ए व पुं ३५ १० २१ [सं दुष्कर]

देवी देखोने ' द्वि ब व पुं १४५ १८ २०

देसण उपदेश ' द्वि ए व स्त्री, १६५ २ [सं देशना > देसणा] -

दोहग 'दुर्भाग्य, गुज दोहग ' प्र ए व न १६३ १५ [सं दौर्भाग्य > दोहग्ग]

धणीप 'स्वामित्व ' द्वि ए व स्त्री १५८ २४ [स धनित्व > प्रा धणित्त-प्प]

धीरठ धीर ' वि प्र ब व पु ६५ १६ वळी जुओ धीरठपणइ ६५ २० धीरठपणु ६३ १ धीरठपणा १११ ४, धेठपणानइ १११ ११ धेठा ६५ १२ ६६ १० धेठामइ ४५ ७ [सं धृष्ट > प्रा *धरट्ठ > धिरट्ठ ए ज प्रमाणे स धृष्ट > प्रा धिट्ठ]

न भारदर्शक अव्यय अर्वाचीन गुज 'ने' (जेम के कहो ने बोलो ने, इत्यादि) १२ ४, ६६ ६

नइ निषेधार्थ अव्यय १६३ ११ १५ [सं नहि]

नाना सबंध गुरु नानगो द्वि य व ? २४ ? १ [स ज्ञात आ ? तथा एना तद्भवोना रूपान्तरो अने अर्थान्तरो माटे जुओ संस्कृति', ? १९० मां नारा ? नानर अने नाना]

नायइ न अपे वर्तमान त्रीजो पु व न ८८ १३ [स न + अर्पयति > प्रा न + अप्पइ]

नाराधइ 'न आराधे' वर्तमान त्रीजो पु ए व ३१ ८ [स न + आराधयति]

नावइ न आवे वर्तमान त्रीजो पु ए व १२८ ३ ब व ६५ १२, ७७ २१ [? ने प्रयोगोमां न वरी शक एवी ? पण छे जेम के ? नावइ' एमां ? स न + आयाति > प्रा न + आवइ]

निकाचित कर्म अनत ? कर्म प्र ए व न १२५ १३ १४ वळी जुओ निकाचित १२८ ११ निकाचित कर्मनउ १२४ १५ २० निकाचित कर्मा १२४ ५ [आ जैन धार्मिक परिभाषानो शब्द छे]

निधत्त कर्म एक प्रकारनुं कषायवडु कर्म ' प्र ए व न १३४ २१, १२५ ८

पइ परता अ ५७ १८ [स प्रति > प्रा पइ ? ? पाठांतर पाइइ छे आनी नीचे प्रमाणे व्युत्पत्ति पण शक्य लागे छे—स. ? > प्रा ? > ? ? > पाई-पई]

पइणइ नगरो प्र य य न १६५ १ जुओ पाटणि

पणि पण, वळी अ २८ ११ १२ ७० १६, ८२ १६ ८९ १, १ १ ३, १११ १८ १३६ २ १८० १३, १४२ २ १४६ ७, १४६ ७ इत्यादि [स पुन अपि > प्रा पुणाइ > ? पुण पुणि सर० हिं पुनि] जुओ पुण

परहड दूर वि प्र ए व पु ७४ ८ परहउ प्र ए व न १३० १, १० ११ परहू प्र ए व न २२ १२ [स परस्मिन् > अप परहि सर० गुज अरु परु ']

परीक्षियउ परखनो ' विध्यर्थ कृ प्र ए व पु १८ १० परीक्षियउ विध्यर्थ कृ प्र ए व पुं १४ १ परीक्षउ परीक्षा करता, परखता वर्तमान कृ प्र ए व पुं १३७ १ परीषी 'परखीने ' स कृ १३८ ८ १४२ १ परीषीनइ स कृ १२ ८ [स परीक्ष् > अप परिक्ख] जुओ परीक्षी

परीछी 'परीक्षा करीने, जुन अर्थमां', स कृ ९७ ११ परीछीइ 'परखाय छे' कर्मणि प्रयोग वर्तमान त्रीजो पु ए व २७ ८ [स परीक्ष् > प्रा परिच्छ] जुओ परीछिवउ

प्रभु 'मालिक' प्र ए व पुं १०१२ [स प्रभु]

प्रमुख 'इत्यादि वगेरे' अ १७, ३ १२ ४ ५ ११, ६ ३ १७ ७ ८ ३३ ४, ८० ८ ८३ १६ १२९ १८, १५४ ४, इत्यादि

पाखइ 'सिवाय' अ १५ ११ ३७ १७ ४० २०, १३१५ [स पक्षे > प्रा पक्खे > अप पक्खइ पाखइ पाखइ गुज 'पाखे-पखे'] जुओ पाखइ

पाषइ 'सिवाय' अ १६ १२, ४५ १८ ७ ३ १२११ उच्चारणमां पाखइ अने 'पाषइ' अभिन्न छे जुओ पाखइ

पाटणि 'शहेरमां' स ए व न २५७ [सं पत्तन > प्रा पट्टण सामान्य नगरवाचक आ शब्द पाछळथी निश्चित नगरवाचक बन्यो छे ए नोंधपात्र छे] जुओ पट्टणइ

पाडूइ 'अशुभ' वि प्र ए व स्त्री १८ १५ पाडुउ प्र ए व न ३३ ३ द्वि ए व न ८४ १६ [स *पातुकम् > प्रा पाडुअं आ प्रयोग जूनी गुजरातीमां आ अर्थमां व्यापक छे]

पाधरा 'सादासीधा, सामान्य' वि अं वि ब व पुं १५ १२, १०० १९ पाधरी 'सीधी (अवळी थी ऊलटी)' द्वि ब व न ५ १२ पाधरी 'सीधी' प्र ए व स्त्री १ १४ [दे पद्धर गुज पाधरुं सर० अद्धरपद्धर']

पापइजिनइ 'पापने न (विषे)' स ए व न ३४ १६ 'पाप' ए नाम अने 'नइ' प्रत्ययनी वच्चे अव्यया दाखल थइ गया छे ए नोंधपात्र छे

पाहइ 'करता' अ १०२ ११ पाहइ ४२ ५ ५८ ४, ९७ १३ १४८ १० पाहति 'करतां' १२११ पाहि ९१ ३ पाहिइ ४२ ६ पाहति पासे, द्वारा ६९ १२ १०३ ४ पाहिं १४८ ३ १२० १९ पांहति १४८ १३ [स पक्षे > प्रा पक्खे > अप पक्खइ पाखइ पाहइ 'पाहति' इत्यादि प्रयोगोनी व्युत्पत्ति सं पक्षान > अप पक्खतउ पाहतउ पाहतइ ए रीते संभवित छे] जुओ पाखइ

पामइ 'पामे छे' वर्तमान त्रीजो पु ए व १३-१४, ५३ १८ ७२ १४, १०१८ पामइ वर्तमान त्रीजो पु ब व १२ १५ २७-६ ९ ३८ २,

८७-१ १२ ९८ २ प्रामइ वर्तमान त्रीजो पु ए व २५, २० वळी जुओ प्रामिउ १३६ ८ प्रामिसिइ ६७ ६ प्रामिस्यउ ९९ १४ ११८ ९ प्रामी ९६ १७, १७ ४ प्रामीइ १०० १५ प्रामु १०८ १४ [स प्राप्नोति > पा *प्रापुणति > प्रा *प्राप्पइ पावइ > प्र गुज प्रामइ] इ कार विनानु रूप जे अर्वाचीन भाषामां व्यापक छे ते पण मळे छे–पामइ २६ ११ पामइ ५८ ५ ७४ १५ ९७ १९ पामउ १ ० २० पामिउ १२, १३ १९ पामिस्यइ ६७-१४, ७७ १४ पामीइ ९० ० ११० १४ पामीस्यइ ९८ १८ [सं प्राप्नोति > पा पापुणाति > प्रा पाउणइ पावइ > ज गुज पामइ]

प्राहइ 'घणुं करीने मोटे भागे अ ४ १४ १' प्राहि १४७-९ प्राहिइ ९२ १८ [स प्रय]

प्रियागत 'वंशपरंपरागत नि द्वि ए व पुं ४८ १४ [स प्रजागत > परजागत, परयागत सर० अर्वाचीन गुज परियागत ' गुजरातीनी केटलीक बोलीओमां 'परिया' शब्द 'प्रजा'ना अर्थमां वपराय छे 'प्रजा' शब्दनां आ 'परिया' अने 'प्रिया' रूपान्तरो ध्यानार्ह छे]

पुण पण, वळी ' अ २३ २१ ३२ २० ४१ १६ ५ २२ ७८ २, ९८ २०, १२७-१७ १८९ १० १२७ ९ १३ १३० २२ १४० १७ १४१ २१ १४५ २ १४७ १५ १५ -१९, १५४ १ ५ १६४ ११, इत्यादि. [सं पुन > प्रा पुणा > अप पुण] जुओ पणि

पूजइ पहोंचे ' वर्तमान त्रीजो पु ए व १४० ५ [सं पूर्यते > प्रा पुज्जइ न नो ज थवाथी जूनी गुज मां पूगइ अर्वाचीन गुज मां पूगे]

पूर्व जैन शास्त्रोनो एक विभाग द्वि ब व न ५९ ११ [आगम साहित्यना अंगविभागमां बारमुं अंग 'दृष्टिवाद' नामे हतुं एमां चौद 'पूर्व' हता दृष्टिवाद तेम ज पूर्वो घणा समय पहेलां लुप्त थई गयां होवानी परंपरा छे]

फलदायन 'फलदायक' वि प्र ए व पुं ११६ १४

बटीग 'मूर्ख' वि, प्र ए व पु ५४ १९

बटहूल गामनी घरीनी अदरनो खीलो' प्र ए व स्त्री ११६ ६ वळी जुओ बटहिला ११६ १३

बन्दोर 'बदीवान, बंदी' प्र व व पु ११८ १४ [स तेम ज प्रा मा 'बदी' शब्द 'बंदी'ना अर्थमां छे 'बदार' शब्द स बन्दी + कार > प्रा बन्दियार मांथी उच्चारणभेद थया हशे ? जू गुज मां अन्यत्र पण क्वचित् आ शब्द मळे छे जेम के कान्हडदेप्रबन्ध (स १५१२)मां—'एक टूरया दीसइ बंदोर (खण्ड २ कडी ७) नो क अहीं ए काव्यना संपादक श्री डाह्याभाई दरामरीए 'बंदार'नो अर्थ 'बंदर' एवो आप्यो छे ए बंधबेसतो नथी जिन सागरसूरिना बालावबोधमां 'बंदी बदार बादि झाल्या लोक' एवो अर्थ समजाव्या छे तेम ज सन्दर्भ उपरथी पण 'बन्दार'नो 'बंदी' ए अर्थ देखीतो छे]

बान्दि 'बंदीपणानो' स ए व स्त्री ११८ १८ [स बन्दि]

भट्ट भाट द्वि ब व पुं ८३ १५ १८ [स]

भणी कहु वर्तमान पहेलो पु ए व ४५ ४ ६८ ९ [स √ भण्]

'भणी' 'माटे तरफ' अनुग १ ८, ४ १७ १९ १ १५, २४ ३ ४, ४८ १६ ८३ ३ ८५ ११, ८७ १ १४, ९७-१५ १०२ १७ १ ७-२१ १०९ ७ १४ १२, १४१ २१ २२ १४९ १५, १५६ २१, १५७-२२ ['भण' क्रियापदनु आ संबंधक कृदन्त छे एनो अनुग तरीकेनो प्रयोग एक विशिष्ट अर्थ विकासनुं उदाहरण छे 'भणी' एटले 'कहीने' अर्थात् 'माटे खातर']

भवाडियउ 'शोभा देखाडवी त' द्वि ए व न १२७-११ [आ प्रयागनुं अर्वाचीन गुज रूपान्तर 'भवाडवु' एवु थाय पण अर्वाचीन काळमा एनो अर्थ नीचे ऊतर्यो छे 'भवाडो' (फजेतो) शब्द एनुं उदाहरण छे कान्हडदेप्रबन्ध'मां 'भवाड' क्रियापद सारा अर्थमां छे— चहूआणनू गिरूउ राज रूडू अह्म भवाडू आज (खण्ड २, कडी १८८) स भू (भव्) धातुमांथी एनी व्युत्पत्ति हशे गुजराती लोकनाट्यना वाचक 'भवाइ' शब्दनो व्युत्पत्तिगत संबंध आ बधा प्रयोगो साथे होय ए असंगत नथी]

मइगल 'हाथी' प्र ब व पु १,४ १२ [स मदकल > प्रा मयगल सर० गुज 'मेगळ' 'मंगळ' विशेष नाम पण छे धुवाख्यान नो कर्ता मंगळ नामे एक गुजराती कवि विक्रमना १७मा सैकामां थई गया छे]

महूता 'मंत्री' गुज महेता अं वि ब व पु ५३ १ [स महत् प्रा महत अप महंतउ जूनी गुज मां महंतउ, महतउ महुतउ महितउ महितु आदि एना रूपान्तरो छे सर० हि महता मा जूना चौलुक्ययुगीन गुजरातना